SampleTesting

06 Feb 2019 12:12 PM

kanpur

Web-C4,Web-AD,P6,Web-L3,Web-N2,\

Order No: 107529701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**06/02/2019**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**12:12:13 घंटे**
इष्ट	13:22:24 घटी
स्थान	**kanpur**
देश	India

अक्षांश	26:26:59 पूर्व
रेखांश	80:19:54 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:08:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:03:32 घंटे
वेलान्तर	-00:14:03 घंटे
साम्पातिक काल	21:08:01 घंटे
सूर्योदय	06:51:15 घंटे
सूर्यास्त	17:54:30 घंटे
दिनमान	11:03:15 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	23:03:19 मकर
लग्न के अंश	05:33:07 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**शतभिषा - 1**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	परिघ
करण	बालव
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गो-गोपाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम ________________:
पिता का नाम ________________:
माता का नाम ________________:
जाति ________________:
गोत्र ________________:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	माघ	17
पंजाबी	संवत : 2075	माघ	24
बंगाली	सन् : 1425	माघ	23
तमिल	संवत : 2075	थई	23
केरल	कोल्लम : 1194	मकरम	23
नेपाली	संवत : 2075	माघ	24
चैत्रादि	संवत : 2075	माघ	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2075	माघ	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल ____: 07:52:23
जन्म तिथि ____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल ____: 09:07:39 घंटे
जन्म योग ____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग ____: वरियान
योग समाप्ति काल ____: 09:53:26 घंटे
जन्म योग ____: परिघ
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल ____: 18:34:55 घंटे
जन्म करण ____: बालव
भयात ____: 07:41:24
भभोग ____: 67:32:49
भोग्य दशा काल ____: राहु 15 वर्ष 11 मा 14 दि

घात चक्र

मास ____: चैत्र
तिथि ____: 3-8-13
दिन ____: गुरुवार
नक्षत्र ____: आर्द्रा
योग ____: गण्ड
करण ____: किंस्तुघ्न
प्रहर ____: 3
वर्ग ____: मूषक
लग्न ____: मिथुन
सूर्य ____: वृष
चन्द्र ____: धनु
मंगल ____: मिथुन
बुध ____: वृष
गुरु ____: कर्क
शुक्र ____: सिंह
शनि ____: मेष
राहु ____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

मं
3
1
रा
4
2
12
चं
5
11
के
6
8
10
सू
गु
9
बु
7
श
शु

चन्द्र कुंडली

के
सू
बु
12
चं
10
मं
शु
1
11
9
श
गु
2
8
3
5
7
4
6
रा

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

मं ल

चं रा

के
सू
बु
श
शु गु

लग्न कुंडली

ल मं

चं
के
रा सू
बु
शु
श
गु

विंशोत्तरी

राहु 15वर्ष 11मा 14दि

राहु	
06/02/2019	
21/01/2137	
राहु	21/01/2035
गुरु	21/01/2051
शनि	20/01/2070
बुध	21/01/2087
केतु	20/01/2094
शुक्र	21/01/2114
सूर्य	22/01/2120
चन्द्र	21/01/2130
मंगल	21/01/2137

योगिनी

धान्या 2वर्ष 7मा 27दि

धान्या	
06/02/2019	
04/10/2021	
	06/02/2019
भ्रामरी	06/05/2019
भद्रिका	05/10/2019
उल्का	04/04/2020
सिद्धा	03/11/2020
संकटा	05/07/2021
मंगला	04/08/2021
पिंगला	04/10/2021

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	05:33:07	392:57:58	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
सूर्य			मक	23:03:19	01:00:50	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	शत्रु राशि
चंद्र			कुंभ	08:10:53	11:49:16	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	सम राशि
मंगल			मेष	00:21:00	00:40:38	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	मूलत्रिकोण
बुध		अ	मक	28:21:30	01:47:24	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	सम राशि
गुरु			वृश्चि	24:32:21	00:09:50	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
शुक्र			धनु	08:33:27	01:08:44	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
शनि			धनु	21:24:31	00:06:23	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	सम राशि
राहु	व		कर्क	02:36:44	00:03:12	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	02:36:44	00:03:12	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	04:52:43	00:01:33	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	मंगल	---
नेप			कुंभ	20:59:03	00:02:04	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
प्लूटो			धनु	27:40:35	00:01:52	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
दशम भाव			मक	20:24:48	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:12

लग्न-चलित

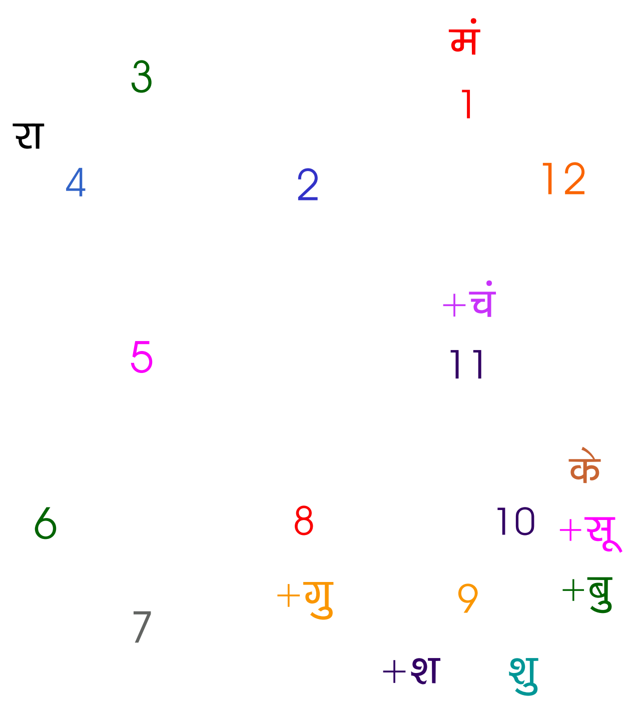

चन्द्र कुंडली

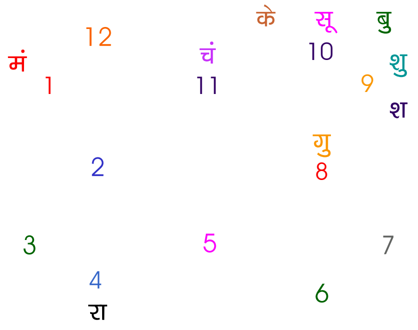

नवमांश कुंडली

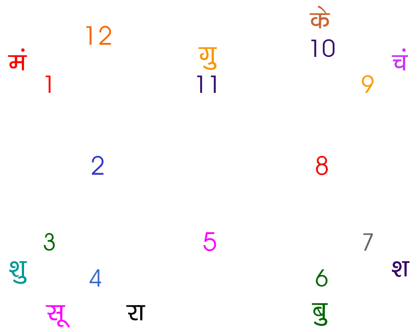

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	18:01:44	वृष	05:33:07
2	वृष	18:01:44	मिथुन	00:30:20
3	मिथुन	12:58:57	मिथुन	25:27:34
4	कर्क	07:56:11	कर्क	20:24:48
5	सिंह	07:56:11	सिंह	25:27:34
6	कन्या	12:58:57	तुला	00:30:20
7	तुला	18:01:44	वृश्चिक	05:33:07
8	वृश्चिक	18:01:44	धनु	00:30:20
9	धनु	12:58:57	धनु	25:27:34
10	मकर	07:56:11	मकर	20:24:48
11	कुम्भ	07:56:11	कुम्भ	25:27:34
12	मीन	12:58:57	मेष	00:30:20

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	05:33:07
2	मिथुन	01:32:34
3	मिथुन	25:09:50
4	कर्क	20:24:48
5	सिंह	20:40:45
6	कन्या	27:17:44
7	वृश्चिक	05:33:07
8	धनु	01:32:34
9	धनु	25:09:50
10	मकर	20:24:48
11	कुम्भ	20:40:45
12	मीन	27:17:44

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

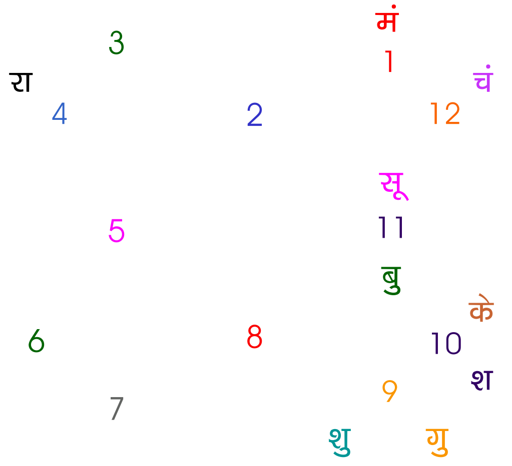

भाव कुंडली

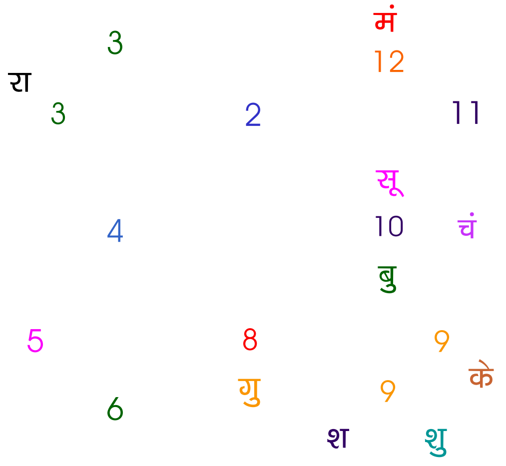

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------- कारक -------		-------- अवस्था --------				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	कुमार	खल	शयन	5.73	81 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	निपीदित	नेत्रपाणि	5.71	74 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	स्वस्थ	आगमन	6.54	39 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	विकल	नेत्रपाणि	0.00	55 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	मुदित	नेत्रपाणि	1.57	43 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	निपीदित	भोजन	3.82	24 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	निपीदित	कौतुक	3.95	30 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	खल	कौतुक	0.00	42 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	निद्रा	0.00	42 %
कुल						27.32	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

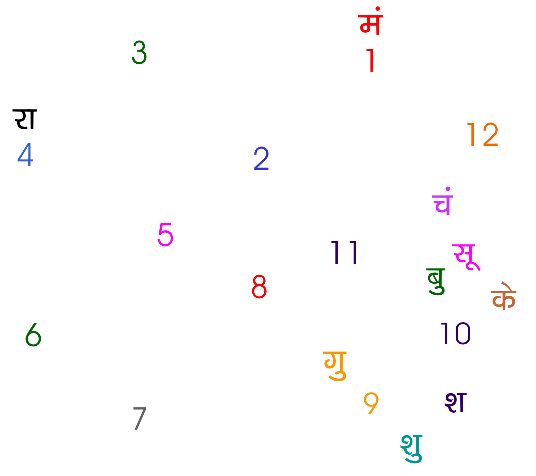

लग्न-चलित

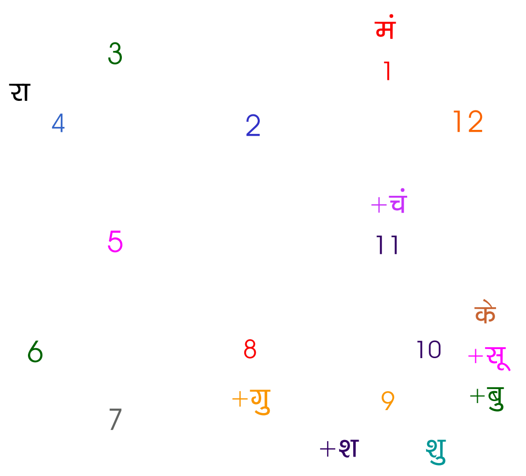

सुदर्शन चक्र

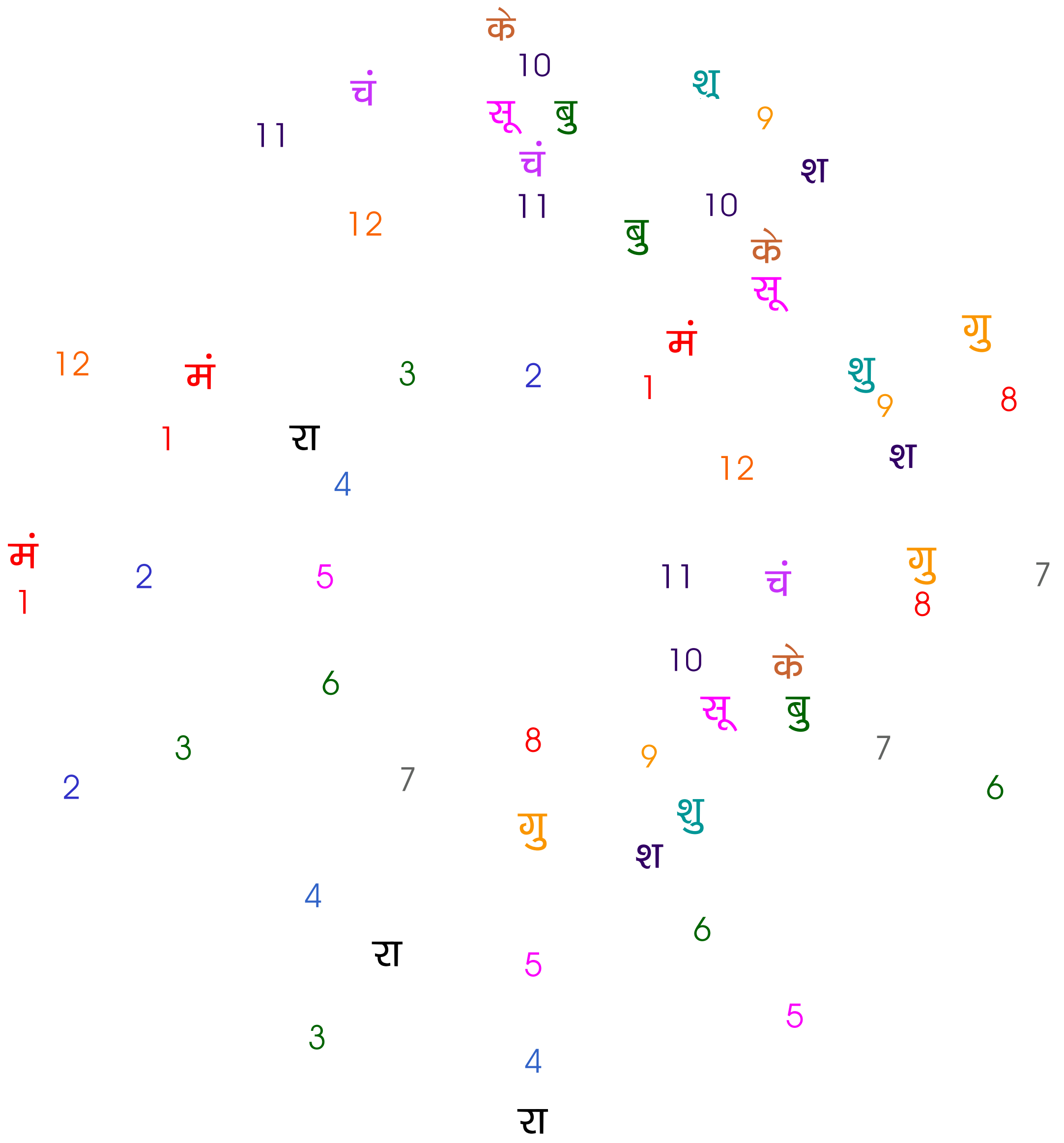

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : राहु 15 वर्ष 11 मास 14 दिन

ग्रह							
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	23:03:19	शनि	चंद्र	सूर्य	शनि
चंद्र		कुंभ	08:10:53	शनि	राहु	राहु	शुक्र
मंगल		मेष	00:21:00	मंगल	केतु	केतु	राहु
बुध		मक	28:21:30	शनि	मंगल	शनि	बुध
गुरु		वृश्चि	24:32:21	मंगल	बुध	राहु	गुरु
शुक्र		धनु	08:33:27	गुरु	केतु	गुरु	शुक्र
शनि		धनु	21:24:31	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
राहु	व	कर्क	02:36:44	चंद्र	गुरु	राहु	केतु
केतु	व	मक	02:36:44	शनि	सूर्य	गुरु	चंद्र
हर्ष		मेष	04:52:43	मंगल	केतु	मंगल	राहु
नेप		कुंभ	20:59:03	शनि	गुरु	गुरु	शुक्र
प्लूटो		धनु	27:40:35	गुरु	सूर्य	चंद्र	गुरु

निरयण भाव						
भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	05:33:07	शुक्र	सूर्य	बुध	शुक्र
2	मिथु	01:33:28	बुध	मंगल	बुध	गुरु
3	मिथु	25:10:50	बुध	गुरु	बुध	राहु
4	कर्क	20:25:18	चंद्र	बुध	शुक्र	राहु
5	सिंह	20:40:22	सूर्य	शुक्र	गुरु	बुध
6	कन्या	27:16:55	बुध	मंगल	गुरु	सूर्य
7	वृश्चि	05:33:07	मंगल	शनि	बुध	बुध
8	धनु	01:33:28	गुरु	केतु	शुक्र	मंगल
9	धनु	25:10:50	गुरु	शुक्र	बुध	राहु
10	मक	20:25:18	शनि	चंद्र	केतु	बुध
11	कुंभ	20:40:22	शनि	गुरु	गुरु	बुध
12	मीन	27:16:55	गुरु	बुध	गुरु	सूर्य

के.पी. अयनांश : 24:01:05

फॉरच्युना : वृष 20:40:41

लग्न कुंडली

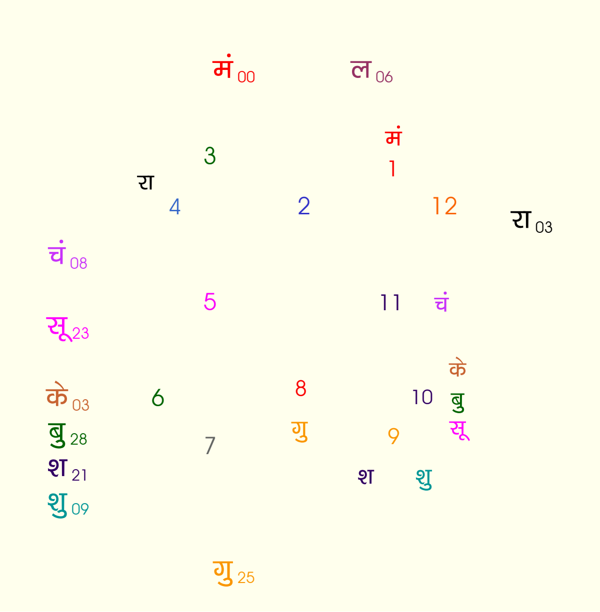

भाव कुंडली

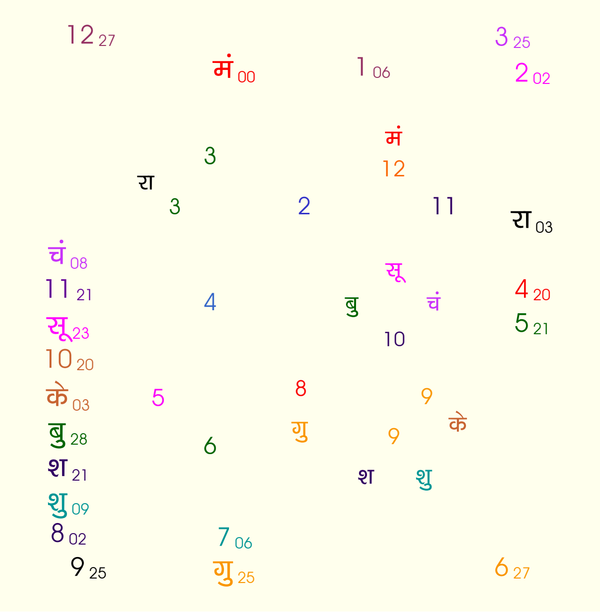

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- शनि-
2	बुध- गुरु-
3	चंद्र, बुध- गुरु- राहु,
4	सूर्य- चंद्र-
5	सूर्य- केतु-
6	बुध- गुरु-
7	मंगल- बुध- गुरु, राहु,
8	गुरु- शुक्र, शनि+ राहु-
9	मंगल, गुरु- शुक्र, राहु- केतु,
10	सूर्य+ चंद्र, बुध, गुरु, शनि- केतु,
11	शनि-
12	मंगल, बुध, गुरु- राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 10+
चंद्र	3, 4- 10,
मंगल	7- 9, 12,
बुध	2- 3- 6- 7- 10, 12,
गुरु	2- 3- 6- 7, 8- 9- 10, 12-
शुक्र	1- 8, 9,
शनि	1- 8+ 10- 11-
राहु	3, 7, 8- 9- 12-
केतु	5- 9, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	श	शु
2	--	--	गु	बु
3	चं	रा	गु	बु
4	--	--	सू	चं
5	--	--	के	सू
6	--	--	गु	बु
7	रा	गु	बु	मं
8	श	शु श	रा	गु
9	मं शु	के	रा	गु
10	सू गु के	सू चं बु	--	श
11	--	--	--	श
12	बु	मं	रा	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	मकर	10
चंद्र	4	10	कुम्भ	10
मंगल	7	2,6	मेष	12
बुध	2,3,6	4,12	मकर	10
गुरु	8,9,12	3,11	वृश्चिक	7
शुक्र	1	5,9	धनु	8
शनि	10,11	7	धनु	8
राहु	---	---	कर्क	3
केतु	---	8	मकर	9

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	10	10	5	1	10
चंद्र	---	---	3	---	---	3
मंगल	---	8	9	---	8	9
बुध	7	2,6	12	10,11	7	8
गुरु	2,3,6	4,12	10	---	---	3
शुक्र	---	8	9	8,9,12	3,11	7
शनि	1	5,9	8	8,9,12	3,11	7
राहु	8,9,12	3,11	7	---	---	3
केतु	5	1	10	8,9,12	3,11	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	293.06	308.18	0.35	298.36	234.54	248.56	261.41	92.61	272.61	4.88	320.98	267.68
सूर्य	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	पंचा	--	--
293.06	0.00	0.00	0.00	8.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	तृती	युति	--
308.18	0.00	0.00	0.00	5.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.95	2.28	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	--	--	4था	--	युति	--	--
0.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.72	0.00	8.90	0.00	0.00
बुध	युति	युति	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--	--
298.36	8.50	5.16	2.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	तृती	--	5वां	तृती	--	युति	--	--	--	5वां	चतु	--
234.54	2.78	0.00	8.20	1.62	0.00	1.03	0.00	0.00	0.00	4.69	1.79	0.00
शुक्र	अष्ट	तृती	--	--	युति	--	युति	--	--	पंच	पंचा	--
248.56	0.70	2.99	0.00	0.00	1.03	0.00	2.23	0.00	0.00	1.71	0.78	0.00
शनि	--	3रा	--	--	--	युति	--	सप्त	युति	--	3रा	युति
261.41	0.00	1.85	0.00	0.00	0.00	2.23	0.00	3.87	3.87	0.00	9.99	7.92
राहु	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	सप्त	--	--	सप्त
92.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.87	0.00	10.00	0.00	0.00	8.69
केतु	--	--	चतु	--	--	--	युति	सप्त	--	चतु	--	युति
272.61	0.00	0.00	2.49	0.00	0.00	0.00	3.87	10.00	0.00	2.49	0.00	8.69
हर्ष	--	--	युति	--	--	--	--	चतु	--	--	--	--
4.88	0.00	0.00	8.90	0.00	0.00	0.00	0.00	2.49	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	युति	नवां	--	--	--	--	--	--	--	--	--
320.98	0.00	2.28	0.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	नवां	चतु	--	--	--	युति	सप्त	युति	--	--	--
267.68	0.00	0.70	2.29	0.00	0.00	0.00	7.92	8.69	8.69	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.55	**60.51**	**85.46**	**110.41**	**145.46**	**180.51**	**215.55**	**240.51**	**265.46**	**290.41**	**325.46**	**0.51**
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
293.06	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00
चंद्र	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
308.18	2.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	तृती	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
0.35	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00	10.00	8.55	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00
बुध	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
298.36	0.00	2.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.73	0.00	2.54
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
234.54	0.00	8.11	0.00	9.08	0.00	0.00	0.00	8.11	0.00	1.41	2.91	8.11
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
248.56	0.00	6.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.65	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	अष्टां	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--
261.41	0.22	0.00	9.11	0.00	0.00	5.80	0.00	0.00	9.11	0.00	9.11	0.00
राहु	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
92.61	0.00	0.00	7.32	0.00	0.00	2.56	2.15	0.00	7.32	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु
272.61	2.15	0.00	7.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.56
हर्ष	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
4.88	0.00	1.24	0.00	0.00	0.00	8.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.97
नेप	--	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	--	नवां
320.98	0.00	0.00	1.17	0.62	8.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.73
प्लूटो	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
267.68	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	2.51	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	**अंश**	**कालांश**	**अंक**	**संक्षिप्त - दृष्टि**	**अंश**	**कालांश**	**अंक**
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.55	61.54	85.16	110.41	140.68	177.30	215.55	241.54	265.16	290.41	320.68	357.30
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
293.06	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	1.33
चंद्र	चतु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
308.18	2.32	0.00	0.00	0.00	2.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.59	0.00
मंगल	--	तृती	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
0.35	0.00	2.85	0.00	0.00	0.00	9.49	8.55	0.00	0.00	0.00	0.00	9.49
बुध	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
298.36	0.00	2.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.73	0.00	2.88
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
234.54	0.00	7.43	0.00	9.08	0.00	0.00	0.00	7.43	0.00	1.41	1.59	9.59
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--
248.56	0.00	7.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.42	0.00	0.00	0.98	0.00
शनि	अष्टां	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु
261.41	0.22	0.00	9.24	0.00	0.00	8.16	0.00	0.00	9.24	0.00	9.97	0.09
राहु	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
92.61	0.00	0.00	7.11	0.00	0.00	0.53	2.15	0.00	7.11	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु
272.61	2.15	0.00	7.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.53
हर्ष	--	तृती	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति
4.88	0.00	1.93	0.00	0.00	0.31	7.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.01
नेप	--	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
320.98	0.00	0.00	1.38	0.62	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
267.68	0.00	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

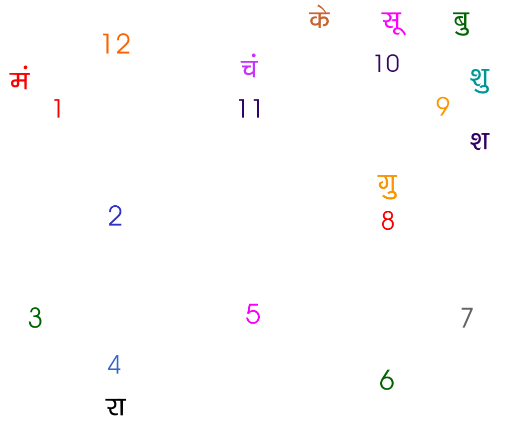

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

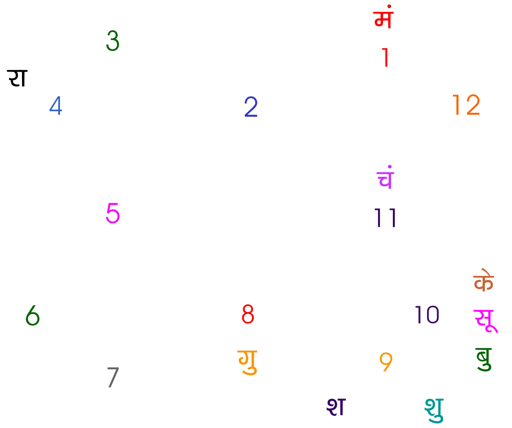

देह विचारः

होरा कुंडली

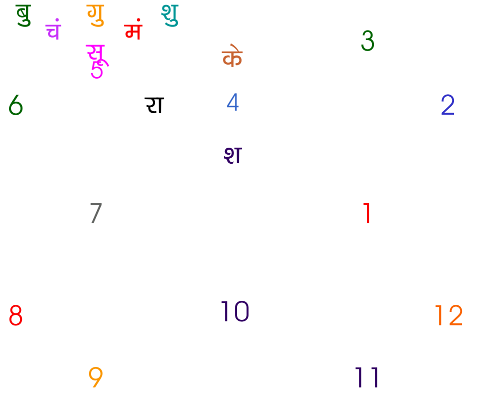

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

3 मं
गु 4 2 1 12
रा
श चं
5 11

बु 6 8 10
सू के
7 9
शु

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

श मं
रा 3 चं 1 शु
4 2 12

गु
5 11

6 8 10
7 के
9
सू बु

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

3 1
रा
4 2 12
के
सू
5 11
शु
गु 6 8 10
बु 7 चं श
मं 9

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

के रा
9 7
10 8 6
सू श
11 5
गु शु
12 2 4
बु 1 चं 3
मं

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

शु बु रा
10 8
सू गु
11 9 7

चं
12 6

श
1 3 5
मं
2 4
के

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

चं
11 9
श बु
12 10 8

मं सू
रा 1 7
के शु

2 4 6
3 5
गु

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

के
12 10
मं गु चं
1 11 9
2 8
3 5 7
शु 4 6 श
सू रा बु

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

गु रा
चं 12 10
शु
सू 1 11 9
मं
2 8
3 5 7
बु 4 6
श के

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

मं
3 1
के बु सू
4 2 12
गु श
चं
5 11
6 8 10
रा
7 शु 9

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

श गु रा
5 3
6 4 2 चं
सू मं
7 1
8 10 12
9 11 शु
बु के

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

श गु
चं 8 6
9 7 5
बु
10 4
सू
11 मं 1 3
12 शु 2
के रा

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

मं गु
1 11
रा
चं 2 12 10 शु
के
3 9
4 6 8
सू 7
5 श बु

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

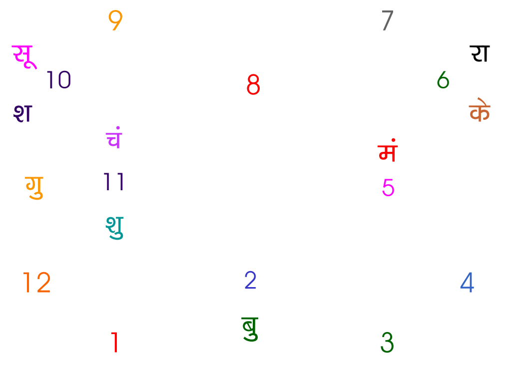

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

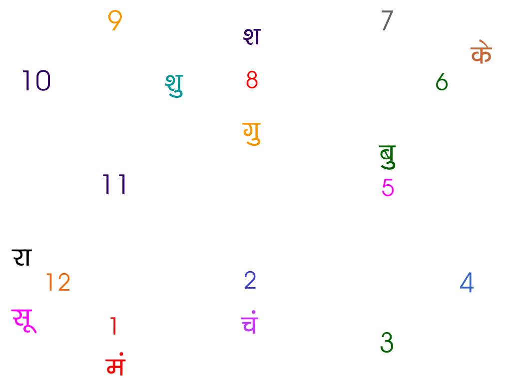

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

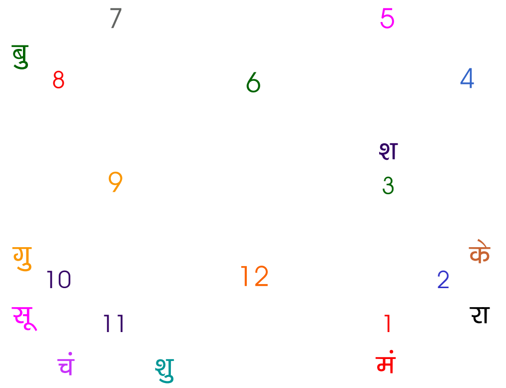

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

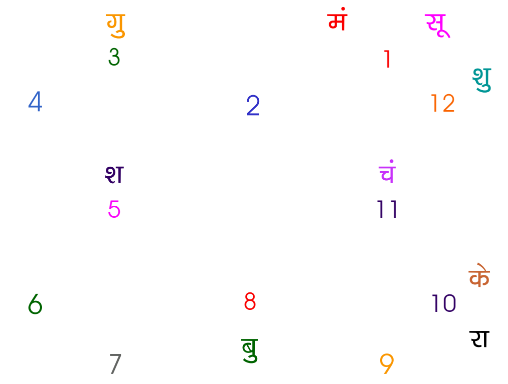

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

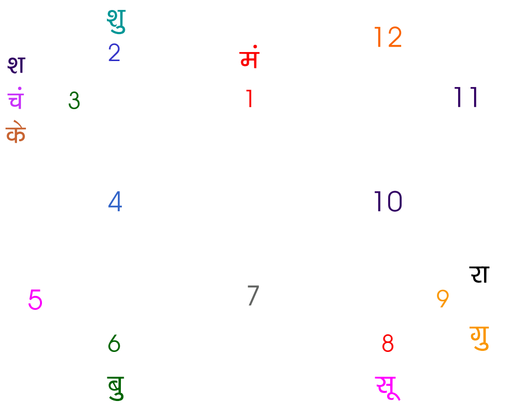

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मक	कुंभ	मेष	मक	वृश्चि	धनु	धनु	कर्क	मक
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	कन्या	कुंभ	मेष	कन्या	कर्क	धनु	सिंह	कर्क	मक
चतुर्थांश	वृष	तुला	वृष	मेष	तुला	सिंह	मीन	मिथु	कर्क	मक
सप्तमांश	धनु	धनु	मीन	मेष	मक	तुला	मक	मेष	मक	कर्क
नवमांश	कुंभ	कर्क	धनु	मेष	कन्या	कुंभ	मिथु	तुला	कर्क	मक
दशमांश	कुंभ	मेष	मेष	मेष	मिथु	मीन	कुंभ	कर्क	मीन	कन्या
द्वादशांश	कर्क	तुला	वृष	मेष	धनु	सिंह	मीन	सिंह	सिंह	कुंभ
षोडशांश	तुला	मेष	धनु	मेष	कर्क	कन्या	मेष	वृश्चि	वृष	वृष
विंशांश	मीन	कर्क	वृष	मेष	तुला	मेष	मक	तुला	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	वृश्चि	मक	कुंभ	सिंह	वृष	कुंभ	कुंभ	मक	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	वृश्चि	मीन	वृष	मेष	सिंह	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	मीन	कन्या
त्रिंशांश	कन्या	मक	कुंभ	मेष	वृश्चि	मक	कुंभ	मिथु	वृष	वृष
खवेदांश	वृष	मेष	कुंभ	मेष	वृश्चि	मिथु	मीन	सिंह	मक	मक
अक्षवेदांश	मेष	कुंभ	सिंह	मेष	तुला	सिंह	धनु	सिंह	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	मेष	वृश्चि	मिथु	मेष	कन्या	धनु	वृष	मिथु	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	4 नागपुष्प
मंगल	5 छत्र	6 कुण्डल	9 शक्रवाहन	14 शक्रसिंहासन
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
गुरु	1 ---	1 ---	3 उत्तम	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.40	15.30	19.80	16.75	14.70	15.00	11.90	5.25	10.40
सप्तवर्ग	13.35	15.30	19.80	16.38	14.18	14.30	11.03	5.88	10.40
दशवर्ग	14.93	15.98	19.85	16.63	15.80	14.38	12.60	6.78	10.23
षोडशवर्ग	14.95	15.83	19.85	16.55	14.78	14.45	12.58	6.68	10.58

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	34	32	39	16	13	24	40
सप्तवर्गज बल	101	113	218	128	113	90	69
ओजयुग्मक बल	0	0	30	0	15	0	30
केन्द्र बल	15	60	15	15	60	30	30
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	151	204	317	158	201	144	169
कुल दिग्बल	59	6	37	28	6	14	45
नतोन्नत बल	59	1	1	60	59	59	1
पक्ष बल	55	110	55	55	5	5	55
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	19	44	42	48	1	0	59
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	253	155	128	208	140	64	115
कुल चेष्टाबल	0	0	27	18	20	31	11
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	4	9	-1	6	-14	-6	-5
कुल षट्बल	527	425	525	444	387	290	343
रूप षट्बल	8.8	7.1	8.7	7.4	6.4	4.8	5.7
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.8	1.2	1.7	1.1	1.0	0.9	1.1
संबंधित पद	1	3	2	5	6	7	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	23.24	12.65	32.43	16.78	16.31	27.34	20.90
कष्ट फल	33.70	39.42	26.26	43.15	43.29	32.19	31.65

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	290	444	444	425	527	290	525	387	387	343	343	525
भावदिग्बल	30	50	40	60	10	10	60	10	50	0	40	40
भावदृष्टि बल	39	73	31	42	34	-14	-9	-8	-4	13	36	61
कुल भाव बल	359	567	515	527	572	286	576	388	433	356	419	626
रूप भाव बल	6.0	9.5	8.6	8.8	9.5	4.8	9.6	6.5	7.2	5.9	7.0	10.4
संबंधित पद	10	4	6	5	3	12	2	9	7	11	8	1

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	05:33:07	--	--	कृतिका	3	3
गुलिक	गु	वृष	08:42:26	--	--	कृतिका	4	3
काल	का	वृष	29:30:57	--	--	मृगशिरा	2	5
मृत्यु	मृ	कर्क	06:24:22	--	--	पुष्य	1	8
यमघंटक	यम	मीन	17:06:28	--	--	रेवती	1	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	18:24:29	--	--	शतभिषा	4	24
धूम	धू	मिथु	06:23:19	--	--	मृगशिरा	4	5
व्यतिपात	व्य	मक	23:36:41	--	--	धनिष्ठा	1	23
परिवेश	परि	कर्क	23:36:41	--	--	आश्लेषा	3	9
इन्द्रचाप	इ	धनु	06:23:19	उच्च	--	मूल	2	19
उपकेतु	उप	धनु	23:03:19	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20

प्राणपद	:	कर्क	07:50:32	कारकाँश लग्न	:	कन्या	15:13:29
भाव लग्न	:	कर्क	25:47:28	होरा लग्न	:	तुला	16:01:50
घटी लग्न	:	मीन	04:15:07	वर्णद लग्न	:	सिंह	08:25:03

उपग्रह कुंडली

आरूढ़ कुंडली

षन्नाडी चक्र

कर्म 6 — संघातिक 12

24 जन्म — षन्नाडी चक्र — 21 मानस

14 समुदाय — 19 विनाश

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	3	4	5	3	3	6	3	4	5	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	7
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	7
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	6	4	4	4	4	4	6	3	6	4	2	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
कुल	3	5	3	5	2	2	6	4	2	1	2	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	4	3	5	3	5	5	4	3	5	6	4	7	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
कुल	6	2	6	6	3	5	6	4	2	5	5	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	5	3	4	7	3	3	5	4	6	7	3	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	2	4	3	4	3	2	3	4	3	6	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	3	4	3	3	5	4	5	3	6	5	6	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	2	3	4	3	6	3	2	2	4	3	39
गुरु	5	6	4	2	5	5	6	6	2	6	6	3	56
मंगल	3	5	3	5	2	2	6	4	2	1	2	4	39
सूर्य	5	3	3	6	3	4	5	5	4	3	3	4	48
शुक्र	3	3	5	4	6	7	3	2	5	3	4	7	52
बुध	3	5	5	4	3	5	6	4	7	4	3	5	54
चंद्र	4	4	4	4	6	3	6	4	2	2	6	4	49
लग्न	6	2	3	4	3	3	5	4	5	3	6	5	49
बिन्दु	33	31	29	32	32	32	43	32	29	24	34	35	386
रेखा	31	33	35	32	32	32	21	32	35	40	30	29	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	1	0	0	2	1	4	0	0	0	2	0	12
गुरु	3	1	0	0	3	0	2	4	0	1	2	1	17
मंगल	1	4	1	1	0	1	4	0	0	0	0	0	12
सूर्य	2	0	0	2	0	1	2	1	1	0	0	0	9
शुक्र	0	0	2	2	3	4	0	0	2	0	1	5	19
बुध	0	1	2	0	0	1	3	0	4	0	0	1	12
चंद्र	2	2	0	0	4	1	2	0	0	0	2	0	13
लग्न	3	0	0	0	0	1	2	0	2	1	3	1	13
रेखा	13	9	5	5	12	10	19	5	9	2	10	8	107

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	1	0	0	2	1	1	0	0	0	2	0	9
गुरु	3	1	0	0	3	0	1	4	0	1	2	1	16
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	2
सूर्य	2	0	0	2	0	1	2	1	1	0	0	0	9
शुक्र	0	0	2	2	3	2	0	0	2	0	1	2	14
बुध	0	1	1	0	0	1	1	0	4	0	0	0	8
चंद्र	2	0	0	0	4	1	0	0	0	0	2	0	9
लग्न	3	0	0	0	0	1	2	0	2	1	3	0	12
रेखा	13	3	3	5	12	7	7	5	9	2	10	3	79

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	96	58	81	11	66	139	117	78
ग्रह पिंड	73	38	26	8	48	84	29	26
शोध्य पिंड	169	96	107	19	114	223	146	104

अष्टकवर्ग सारिणी

भाव	सर्वाष्टकवर्ग	सूर्य का अष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग	मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरू का अष्टकवर्ग	शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग
1	33	5	4	3	3	5	3	4	6
2	31	3	4	5	5	6	3	3	2
3	29	3	4	3	5	4	5	2	3
4	32	6	4	5	4	2	4	3	4
5	32	3	6	2	3	5	6	4	3
6	32	4	3	2	5	5	7	3	3
7	43	5	6	6	6	6	3	6	5
8	32	5	4	4	4	6	2	3	4
9	29	4	2	2	7	2	5	2	5
10	24	3	2	1	4	6	3	2	3
11	34	3	6	2	3	6	4	4	6
12	35	4	4	4	5	3	7	3	5

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 15 वर्ष 11 मास 14 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
06/02/2019	**21/01/2035**	**21/01/2051**	**20/01/2070**	**21/01/2087**
21/01/2035	**21/01/2051**	**20/01/2070**	**21/01/2087**	**20/01/2094**
राहु 03/10/2019	गुरु 10/03/2037	शनि 23/01/2054	बुध 18/06/2072	केतु 19/06/2087
गुरु 26/02/2022	शनि 21/09/2039	बुध 03/10/2056	केतु 15/06/2073	शुक्र 18/08/2088
शनि 02/01/2025	बुध 27/12/2041	केतु 11/11/2057	शुक्र 15/04/2076	सूर्य 24/12/2088
बुध 22/07/2027	केतु 03/12/2042	शुक्र 11/01/2061	सूर्य 20/02/2077	चंद्र 25/07/2089
केतु 09/08/2028	शुक्र 03/08/2045	सूर्य 24/12/2061	चंद्र 22/07/2078	मंगल 21/12/2089
शुक्र 10/08/2031	सूर्य 22/05/2046	चंद्र 25/07/2063	मंगल 19/07/2079	राहु 08/01/2091
सूर्य 03/07/2032	चंद्र 21/09/2047	मंगल 02/09/2064	राहु 05/02/2082	गुरु 15/12/2091
चंद्र 02/01/2034	मंगल 27/08/2048	राहु 10/07/2067	गुरु 12/05/2084	शनि 23/01/2093
मंगल 21/01/2035	राहु 21/01/2051	गुरु 20/01/2070	शनि 21/01/2087	बुध 20/01/2094

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
20/01/2094	**21/01/2114**	**22/01/2120**	**21/01/2130**	**21/01/2137**
21/01/2114	**22/01/2120**	**21/01/2130**	**21/01/2137**	**00/00/0000**
शुक्र 22/05/2097	सूर्य 11/05/2114	चंद्र 21/11/2120	मंगल 20/06/2130	राहु 07/02/2139
सूर्य 22/05/2098	चंद्र 10/11/2114	मंगल 22/06/2121	राहु 08/07/2131	00/00/0000
चंद्र 21/01/2100	मंगल 17/03/2115	राहु 22/12/2122	गुरु 13/06/2132	00/00/0000
मंगल 23/03/2101	राहु 09/02/2116	गुरु 22/04/2124	शनि 23/07/2133	00/00/0000
राहु 23/03/2104	गुरु 27/11/2116	शनि 21/11/2125	बुध 20/07/2134	00/00/0000
गुरु 22/11/2106	शनि 09/11/2117	बुध 23/04/2127	केतु 16/12/2134	00/00/0000
शनि 21/01/2110	बुध 16/09/2118	केतु 22/11/2127	शुक्र 15/02/2136	00/00/0000
बुध 21/11/2112	केतु 22/01/2119	शुक्र 23/07/2129	सूर्य 22/06/2136	00/00/0000
केतु 21/01/2114	शुक्र 22/01/2120	सूर्य 21/01/2130	चंद्र 21/01/2137	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 15 वर्ष 11 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
06/02/2019		**03/10/2019**		**26/02/2022**		**02/01/2025**		**22/07/2027**	
03/10/2019		**26/02/2022**		**02/01/2025**		**22/07/2027**		**09/08/2028**	
	00/00/0000	गुरु	28/01/2020	शनि	10/08/2022	बुध	14/05/2025	केतु	14/08/2027
	00/00/0000	शनि	15/06/2020	बुध	04/01/2023	केतु	07/07/2025	शुक्र	17/10/2027
	00/00/0000	बुध	17/10/2020	केतु	06/03/2023	शुक्र	09/12/2025	सूर्य	05/11/2027
	00/00/0000	केतु	07/12/2020	शुक्र	26/08/2023	सूर्य	25/01/2026	चंद्र	07/12/2027
	06/02/2019	शुक्र	02/05/2021	सूर्य	17/10/2023	चंद्र	13/04/2026	मंगल	29/12/2027
शुक्र	28/03/2019	सूर्य	15/06/2021	चंद्र	12/01/2024	मंगल	06/06/2026	राहु	25/02/2028
सूर्य	17/05/2019	चंद्र	27/08/2021	मंगल	13/03/2024	राहु	24/10/2026	गुरु	16/04/2028
चंद्र	07/08/2019	मंगल	17/10/2021	राहु	16/08/2024	गुरु	25/02/2027	शनि	15/06/2028
मंगल	03/10/2019	राहु	26/02/2022	गुरु	02/01/2025	शनि	22/07/2027	बुध	09/08/2028

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
09/08/2028		**10/08/2031**		**03/07/2032**		**02/01/2034**		**21/01/2035**	
10/08/2031		**03/07/2032**		**02/01/2034**		**21/01/2035**		**10/03/2037**	
शुक्र	07/02/2029	सूर्य	26/08/2031	चंद्र	18/08/2032	मंगल	24/01/2034	गुरु	05/05/2035
सूर्य	03/04/2029	चंद्र	22/09/2031	मंगल	19/09/2032	राहु	23/03/2034	शनि	05/09/2035
चंद्र	03/07/2029	मंगल	12/10/2031	राहु	10/12/2032	गुरु	13/05/2034	बुध	24/12/2035
मंगल	05/09/2029	राहु	30/11/2031	गुरु	21/02/2033	शनि	13/07/2034	केतु	08/02/2036
राहु	17/02/2030	गुरु	13/01/2032	शनि	19/05/2033	बुध	05/09/2034	शुक्र	17/06/2036
गुरु	13/07/2030	शनि	05/03/2032	बुध	04/08/2033	केतु	28/09/2034	सूर्य	26/07/2036
शनि	02/01/2031	बुध	20/04/2032	केतु	05/09/2033	शुक्र	30/11/2034	चंद्र	28/09/2036
बुध	07/06/2031	केतु	09/05/2032	शुक्र	06/12/2033	सूर्य	20/12/2034	मंगल	13/11/2036
केतु	10/08/2031	शुक्र	03/07/2032	सूर्य	02/01/2034	चंद्र	21/01/2035	राहु	10/03/2037

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
10/03/2037		**21/09/2039**		**27/12/2041**		**03/12/2042**		**03/08/2045**	
21/09/2039		**27/12/2041**		**03/12/2042**		**03/08/2045**		**22/05/2046**	
शनि	03/08/2037	बुध	16/01/2040	केतु	16/01/2042	शुक्र	14/05/2043	सूर्य	18/08/2045
बुध	12/12/2037	केतु	05/03/2040	शुक्र	14/03/2042	सूर्य	02/07/2043	चंद्र	11/09/2045
केतु	04/02/2038	शुक्र	21/07/2040	सूर्य	31/03/2042	चंद्र	21/09/2043	मंगल	28/09/2045
शुक्र	09/07/2038	सूर्य	31/08/2040	चंद्र	28/04/2042	मंगल	17/11/2043	राहु	11/11/2045
सूर्य	24/08/2038	चंद्र	08/11/2040	मंगल	18/05/2042	राहु	11/04/2044	गुरु	20/12/2045
चंद्र	09/11/2038	मंगल	26/12/2040	राहु	08/07/2042	गुरु	19/08/2044	शनि	04/02/2046
मंगल	02/01/2039	राहु	30/04/2041	गुरु	23/08/2042	शनि	20/01/2045	बुध	17/03/2046
राहु	21/05/2039	गुरु	18/08/2041	शनि	16/10/2042	बुध	07/06/2045	केतु	03/04/2046
गुरु	21/09/2039	शनि	27/12/2041	बुध	03/12/2042	केतु	03/08/2045	शुक्र	22/05/2046

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
22/05/2046		**21/09/2047**		**27/08/2048**		**21/01/2051**		**23/01/2054**	
21/09/2047		**27/08/2048**		**21/01/2051**		**23/01/2054**		**03/10/2056**	
चंद्र	02/07/2046	मंगल	11/10/2047	राहु	06/01/2049	शनि	14/07/2051	बुध	12/06/2054
मंगल	30/07/2046	राहु	01/12/2047	गुरु	02/05/2049	बुध	16/12/2051	केतु	08/08/2054
राहु	11/10/2046	गुरु	16/01/2048	शनि	18/09/2049	केतु	18/02/2052	शुक्र	19/01/2055
गुरु	15/12/2046	शनि	10/03/2048	बुध	20/01/2050	शुक्र	19/08/2052	सूर्य	09/03/2055
शनि	02/03/2047	बुध	27/04/2048	केतु	12/03/2050	सूर्य	13/10/2052	चंद्र	30/05/2055
बुध	10/05/2047	केतु	17/05/2048	शुक्र	06/08/2050	चंद्र	13/01/2053	मंगल	26/07/2055
केतु	08/06/2047	शुक्र	13/07/2048	सूर्य	18/09/2050	मंगल	18/03/2053	राहु	21/12/2055
शुक्र	28/08/2047	सूर्य	30/07/2048	चंद्र	30/11/2050	राहु	30/08/2053	गुरु	30/04/2056
सूर्य	21/09/2047	चंद्र	27/08/2048	मंगल	21/01/2051	गुरु	23/01/2054	शनि	03/10/2056

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
03/10/2056		**11/11/2057**		**11/01/2061**		**24/12/2061**		**25/07/2063**	
11/11/2057		**11/01/2061**		**24/12/2061**		**25/07/2063**		**02/09/2064**	
केतु	26/10/2056	शुक्र	23/05/2058	सूर्य	28/01/2061	चंद्र	10/02/2062	मंगल	18/08/2063
शुक्र	02/01/2057	सूर्य	20/07/2058	चंद्र	26/02/2061	मंगल	16/03/2062	राहु	18/10/2063
सूर्य	22/01/2057	चंद्र	24/10/2058	मंगल	18/03/2061	राहु	11/06/2062	गुरु	11/12/2063
चंद्र	25/02/2057	मंगल	31/12/2058	राहु	10/05/2061	गुरु	27/08/2062	शनि	13/02/2064
मंगल	20/03/2057	राहु	22/06/2059	गुरु	25/06/2061	शनि	26/11/2062	बुध	10/04/2064
राहु	20/05/2057	गुरु	24/11/2059	शनि	19/08/2061	बुध	16/02/2063	केतु	04/05/2064
गुरु	13/07/2057	शनि	25/05/2060	बुध	07/10/2061	केतु	22/03/2063	शुक्र	10/07/2064
शनि	15/09/2057	बुध	05/11/2060	केतु	27/10/2061	शुक्र	26/06/2063	सूर्य	30/07/2064
बुध	11/11/2057	केतु	11/01/2061	शुक्र	24/12/2061	सूर्य	25/07/2063	चंद्र	02/09/2064

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
02/09/2064		**10/07/2067**		**20/01/2070**		**18/06/2072**		**15/06/2073**	
10/07/2067		**20/01/2070**		**18/06/2072**		**15/06/2073**		**15/04/2076**	
राहु	05/02/2065	गुरु	10/11/2067	बुध	25/05/2070	केतु	09/07/2072	शुक्र	05/12/2073
गुरु	24/06/2065	शनि	05/04/2068	केतु	15/07/2070	शुक्र	08/09/2072	सूर्य	25/01/2074
शनि	06/12/2065	बुध	14/08/2068	शुक्र	09/12/2070	सूर्य	26/09/2072	चंद्र	22/04/2074
बुध	02/05/2066	केतु	07/10/2068	सूर्य	22/01/2071	चंद्र	26/10/2072	मंगल	21/06/2074
केतु	02/07/2066	शुक्र	10/03/2069	चंद्र	05/04/2071	मंगल	16/11/2072	राहु	23/11/2074
शुक्र	23/12/2066	सूर्य	25/04/2069	मंगल	26/05/2071	राहु	09/01/2073	गुरु	10/04/2075
सूर्य	13/02/2067	चंद्र	12/07/2069	राहु	05/10/2071	गुरु	27/02/2073	शनि	21/09/2075
चंद्र	10/05/2067	मंगल	04/09/2069	गुरु	31/01/2072	शनि	25/04/2073	बुध	15/02/2076
मंगल	10/07/2067	राहु	20/01/2070	शनि	18/06/2072	बुध	15/06/2073	केतु	15/04/2076

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य
15/04/2076
20/02/2077

सूर्य	01/05/2076
चंद्र	26/05/2076
मंगल	14/06/2076
राहु	30/07/2076
गुरु	10/09/2076
शनि	29/10/2076
बुध	12/12/2076
केतु	30/12/2076
शुक्र	20/02/2077

बुध - चंद्र
20/02/2077
22/07/2078

चंद्र	04/04/2077
मंगल	04/05/2077
राहु	20/07/2077
गुरु	27/09/2077
शनि	18/12/2077
बुध	02/03/2078
केतु	01/04/2078
शुक्र	26/06/2078
सूर्य	22/07/2078

बुध - मंगल
22/07/2078
19/07/2079

मंगल	12/08/2078
राहु	05/10/2078
गुरु	23/11/2078
शनि	19/01/2079
बुध	11/03/2079
केतु	02/04/2079
शुक्र	01/06/2079
सूर्य	19/06/2079
चंद्र	19/07/2079

बुध - राहु
19/07/2079
05/02/2082

राहु	06/12/2079
गुरु	08/04/2080
शनि	03/09/2080
बुध	13/01/2081
केतु	08/03/2081
शुक्र	10/08/2081
सूर्य	26/09/2081
चंद्र	12/12/2081
मंगल	05/02/2082

बुध - गुरु
05/02/2082
12/05/2084

गुरु	26/05/2082
शनि	04/10/2082
बुध	29/01/2083
केतु	19/03/2083
शुक्र	04/08/2083
सूर्य	14/09/2083
चंद्र	22/11/2083
मंगल	09/01/2084
राहु	12/05/2084

बुध - शनि
12/05/2084
21/01/2087

शनि	15/10/2084
बुध	03/03/2085
केतु	30/04/2085
शुक्र	11/10/2085
सूर्य	29/11/2085
चंद्र	19/02/2086
मंगल	17/04/2086
राहु	12/09/2086
गुरु	21/01/2087

केतु - केतु
21/01/2087
19/06/2087

केतु	29/01/2087
शुक्र	23/02/2087
सूर्य	03/03/2087
चंद्र	15/03/2087
मंगल	24/03/2087
राहु	15/04/2087
गुरु	05/05/2087
शनि	29/05/2087
बुध	19/06/2087

केतु - शुक्र
19/06/2087
18/08/2088

शुक्र	29/08/2087
सूर्य	19/09/2087
चंद्र	25/10/2087
मंगल	18/11/2087
राहु	21/01/2088
गुरु	18/03/2088
शनि	25/05/2088
बुध	24/07/2088
केतु	18/08/2088

केतु - सूर्य
18/08/2088
24/12/2088

सूर्य	24/08/2088
चंद्र	04/09/2088
मंगल	11/09/2088
राहु	01/10/2088
गुरु	18/10/2088
शनि	07/11/2088
बुध	25/11/2088
केतु	02/12/2088
शुक्र	24/12/2088

केतु - चंद्र
24/12/2088
25/07/2089

चंद्र	10/01/2089
मंगल	23/01/2089
राहु	24/02/2089
गुरु	24/03/2089
शनि	27/04/2089
बुध	27/05/2089
केतु	09/06/2089
शुक्र	14/07/2089
सूर्य	25/07/2089

केतु - मंगल
25/07/2089
21/12/2089

मंगल	02/08/2089
राहु	25/08/2089
गुरु	14/09/2089
शनि	07/10/2089
बुध	28/10/2089
केतु	06/11/2089
शुक्र	01/12/2089
सूर्य	08/12/2089
चंद्र	21/12/2089

केतु - राहु
21/12/2089
08/01/2091

राहु	16/02/2090
गुरु	09/04/2090
शनि	08/06/2090
बुध	02/08/2090
केतु	24/08/2090
शुक्र	27/10/2090
सूर्य	15/11/2090
चंद्र	17/12/2090
मंगल	08/01/2091

केतु - गुरु
08/01/2091
15/12/2091

गुरु	23/02/2091
शनि	18/04/2091
बुध	05/06/2091
केतु	25/06/2091
शुक्र	21/08/2091
सूर्य	07/09/2091
चंद्र	05/10/2091
मंगल	25/10/2091
राहु	15/12/2091

केतु - शनि
15/12/2091
23/01/2093

शनि	17/02/2092
बुध	15/04/2092
केतु	08/05/2092
शुक्र	15/07/2092
सूर्य	04/08/2092
चंद्र	07/09/2092
मंगल	30/09/2092
राहु	30/11/2092
गुरु	23/01/2093

केतु - बुध
23/01/2093
20/01/2094

बुध	15/03/2093
केतु	06/04/2093
शुक्र	05/06/2093
सूर्य	23/06/2093
चंद्र	23/07/2093
मंगल	13/08/2093
राहु	07/10/2093
गुरु	24/11/2093
शनि	20/01/2094

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र
20/01/2094
22/05/2097

शुक्र	11/08/2094
सूर्य	11/10/2094
चंद्र	21/01/2095
मंगल	02/04/2095
राहु	01/10/2095
गुरु	12/03/2096
शनि	20/09/2096
बुध	12/03/2097
केतु	22/05/2097

शुक्र - सूर्य
22/05/2097
22/05/2098

सूर्य	09/06/2097
चंद्र	10/07/2097
मंगल	31/07/2097
राहु	24/09/2097
गुरु	11/11/2097
शनि	08/01/2098
बुध	01/03/2098
केतु	22/03/2098
शुक्र	22/05/2098

शुक्र - चंद्र
22/05/2098
21/01/2100

चंद्र	12/07/2098
मंगल	16/08/2098
राहु	16/11/2098
गुरु	05/02/2099
शनि	12/05/2099
बुध	06/08/2099
केतु	11/09/2099
शुक्र	21/12/2099
सूर्य	21/01/2100

शुक्र - मंगल
21/01/2100
23/03/2101

मंगल	15/02/2100
राहु	20/04/2100
गुरु	15/06/2100
शनि	22/08/2100
बुध	21/10/2100
केतु	15/11/2100
शुक्र	25/01/2101
सूर्य	15/02/2101
चंद्र	23/03/2101

शुक्र - राहु
23/03/2101
23/03/2104

राहु	03/09/2101
गुरु	27/01/2102
शनि	20/07/2102
बुध	22/12/2102
केतु	24/02/2103
शुक्र	26/08/2103
सूर्य	20/10/2103
चंद्र	19/01/2104
मंगल	23/03/2104

शुक्र - गुरु
23/03/2104
22/11/2106

गुरु	31/07/2104
शनि	01/01/2105
बुध	19/05/2105
केतु	15/07/2105
शुक्र	24/12/2105
सूर्य	11/02/2106
चंद्र	03/05/2106
मंगल	29/06/2106
राहु	22/11/2106

शुक्र - शनि
22/11/2106
21/01/2110

शनि	24/05/2107
बुध	04/11/2107
केतु	10/01/2108
शुक्र	21/07/2108
सूर्य	17/09/2108
चंद्र	22/12/2108
मंगल	28/02/2109
राहु	20/08/2109
गुरु	21/01/2110

शुक्र - बुध
21/01/2110
21/11/2112

बुध	17/06/2110
केतु	16/08/2110
शुक्र	05/02/2111
सूर्य	29/03/2111
चंद्र	23/06/2111
मंगल	22/08/2111
राहु	24/01/2112
गुरु	10/06/2112
शनि	21/11/2112

शुक्र - केतु
21/11/2112
21/01/2114

केतु	16/12/2112
शुक्र	25/02/2113
सूर्य	18/03/2113
चंद्र	23/04/2113
मंगल	18/05/2113
राहु	21/07/2113
गुरु	16/09/2113
शनि	22/11/2113
बुध	21/01/2114

सूर्य - सूर्य
21/01/2114
11/05/2114

सूर्य	27/01/2114
चंद्र	05/02/2114
मंगल	11/02/2114
राहु	28/02/2114
गुरु	14/03/2114
शनि	01/04/2114
बुध	16/04/2114
केतु	23/04/2114
शुक्र	11/05/2114

सूर्य - चंद्र
11/05/2114
10/11/2114

चंद्र	26/05/2114
मंगल	06/06/2114
राहु	03/07/2114
गुरु	28/07/2114
शनि	25/08/2114
बुध	20/09/2114
केतु	01/10/2114
शुक्र	31/10/2114
सूर्य	10/11/2114

सूर्य - मंगल
10/11/2114
17/03/2115

मंगल	17/11/2114
राहु	06/12/2114
गुरु	23/12/2114
शनि	12/01/2115
बुध	31/01/2115
केतु	07/02/2115
शुक्र	28/02/2115
सूर्य	07/03/2115
चंद्र	17/03/2115

सूर्य - राहु
17/03/2115
09/02/2116

राहु	06/05/2115
गुरु	19/06/2115
शनि	10/08/2115
बुध	25/09/2115
केतु	14/10/2115
शुक्र	08/12/2115
सूर्य	25/12/2115
चंद्र	21/01/2116
मंगल	09/02/2116

सूर्य - गुरु
09/02/2116
27/11/2116

गुरु	19/03/2116
शनि	04/05/2116
बुध	15/06/2116
केतु	02/07/2116
शुक्र	19/08/2116
सूर्य	03/09/2116
चंद्र	27/09/2116
मंगल	14/10/2116
राहु	27/11/2116

सूर्य - शनि
27/11/2116
09/11/2117

शनि	21/01/2117
बुध	11/03/2117
केतु	01/04/2117
शुक्र	28/05/2117
सूर्य	15/06/2117
चंद्र	14/07/2117
मंगल	03/08/2117
राहु	24/09/2117
गुरु	09/11/2117

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
09/11/2117		**16/09/2118**		**22/01/2119**		**22/01/2120**		**21/11/2120**	
16/09/2118		**22/01/2119**		**22/01/2120**		**21/11/2120**		**22/06/2121**	
बुध	23/12/2117	केतु	23/09/2118	शुक्र	23/03/2119	चंद्र	16/02/2120	मंगल	04/12/2120
केतु	10/01/2118	शुक्र	15/10/2118	सूर्य	11/04/2119	मंगल	05/03/2120	राहु	05/01/2121
शुक्र	03/03/2118	सूर्य	21/10/2118	चंद्र	11/05/2119	राहु	20/04/2120	गुरु	02/02/2121
सूर्य	19/03/2118	चंद्र	01/11/2118	मंगल	01/06/2119	गुरु	30/05/2120	शनि	08/03/2121
चंद्र	14/04/2118	मंगल	08/11/2118	राहु	26/07/2119	शनि	17/07/2120	बुध	07/04/2121
मंगल	02/05/2118	राहु	27/11/2118	गुरु	13/09/2119	बुध	30/08/2120	केतु	19/04/2121
राहु	17/06/2118	गुरु	14/12/2118	शनि	10/11/2119	केतु	16/09/2120	शुक्र	25/05/2121
गुरु	29/07/2118	शनि	04/01/2119	बुध	01/01/2120	शुक्र	06/11/2120	सूर्य	05/06/2121
शनि	16/09/2118	बुध	22/01/2119	केतु	22/01/2120	सूर्य	21/11/2120	चंद्र	22/06/2121

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
22/06/2121		**22/12/2122**		**22/04/2124**		**21/11/2125**		**23/04/2127**	
22/12/2122		**22/04/2124**		**21/11/2125**		**23/04/2127**		**22/11/2127**	
राहु	12/09/2121	गुरु	25/02/2123	शनि	23/07/2124	बुध	03/02/2126	केतु	05/05/2127
गुरु	25/11/2121	शनि	13/05/2123	बुध	13/10/2124	केतु	05/03/2126	शुक्र	10/06/2127
शनि	19/02/2122	बुध	21/07/2123	केतु	15/11/2124	शुक्र	30/05/2126	सूर्य	21/06/2127
बुध	08/05/2122	केतु	19/08/2123	शुक्र	20/02/2125	सूर्य	25/06/2126	चंद्र	08/07/2127
केतु	09/06/2122	शुक्र	08/11/2123	सूर्य	21/03/2125	चंद्र	07/08/2126	मंगल	21/07/2127
शुक्र	08/09/2122	सूर्य	02/12/2123	चंद्र	08/05/2125	मंगल	06/09/2126	राहु	22/08/2127
सूर्य	06/10/2122	चंद्र	12/01/2124	मंगल	11/06/2125	राहु	23/11/2126	गुरु	19/09/2127
चंद्र	20/11/2122	मंगल	09/02/2124	राहु	05/09/2125	गुरु	31/01/2127	शनि	23/10/2127
मंगल	22/12/2122	राहु	22/04/2124	गुरु	21/11/2125	शनि	23/04/2127	बुध	22/11/2127

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
22/11/2127		**23/07/2129**		**21/01/2130**		**20/06/2130**		**08/07/2131**	
23/07/2129		**21/01/2130**		**20/06/2130**		**08/07/2131**		**13/06/2132**	
शुक्र	02/03/2128	सूर्य	01/08/2129	मंगल	30/01/2130	राहु	16/08/2130	गुरु	22/08/2131
सूर्य	02/04/2128	चंद्र	16/08/2129	राहु	21/02/2130	गुरु	06/10/2130	शनि	15/10/2131
चंद्र	23/05/2128	मंगल	27/08/2129	गुरु	13/03/2130	शनि	06/12/2130	बुध	03/12/2131
मंगल	27/06/2128	राहु	23/09/2129	शनि	06/04/2130	बुध	29/01/2131	केतु	23/12/2131
राहु	26/09/2128	गुरु	17/10/2129	बुध	27/04/2130	केतु	21/02/2131	शुक्र	17/02/2132
गुरु	17/12/2128	शनि	15/11/2129	केतु	06/05/2130	शुक्र	26/04/2131	सूर्य	05/03/2132
शनि	23/03/2129	बुध	11/12/2129	शुक्र	31/05/2130	सूर्य	15/05/2131	चंद्र	03/04/2132
बुध	17/06/2129	केतु	22/12/2129	सूर्य	07/06/2130	चंद्र	16/06/2131	मंगल	23/04/2132
केतु	23/07/2129	शुक्र	21/01/2130	चंद्र	20/06/2130	मंगल	08/07/2131	राहु	13/06/2132

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - राहु - शुक्र	
06/02/2019 12:12	
28/03/2019 18:31	
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	06/02/2019 12:12
शनि	23/02/2019 21:35
बुध	19/03/2019 04:25
केतु	28/03/2019 18:31

राहु - राहु - सूर्य	
28/03/2019 18:31	
17/05/2019 01:56	
सूर्य	31/03/2019 05:41
चंद्र	04/04/2019 08:19
मंगल	07/04/2019 05:20
राहु	14/04/2019 14:51
गुरु	21/04/2019 04:38
शनि	29/04/2019 00:01
बुध	05/05/2019 23:40
केतु	08/05/2019 20:42
शुक्र	17/05/2019 01:56

राहु - राहु - चंद्र	
17/05/2019 01:56	
07/08/2019 06:17	
चंद्र	23/05/2019 22:18
मंगल	28/05/2019 17:21
राहु	10/06/2019 01:12
गुरु	21/06/2019 00:11
शनि	04/07/2019 00:28
बुध	15/07/2019 15:53
केतु	20/07/2019 10:56
शुक्र	03/08/2019 03:40
सूर्य	07/08/2019 06:17

राहु - राहु - मंगल	
07/08/2019 06:17	
03/10/2019 18:56	
मंगल	10/08/2019 14:49
राहु	19/08/2019 05:55
गुरु	26/08/2019 22:00
शनि	05/09/2019 00:36
बुध	13/09/2019 04:12
केतु	16/09/2019 12:44
शुक्र	26/09/2019 02:50
सूर्य	28/09/2019 23:52
चंद्र	03/10/2019 18:56

राहु - गुरु - गुरु	
03/10/2019 18:56	
28/01/2020 16:03	
गुरु	19/10/2019 08:57
शनि	06/11/2019 21:05
बुध	23/11/2019 10:29
केतु	30/11/2019 06:07
शुक्र	19/12/2019 17:38
सूर्य	25/12/2019 13:53
चंद्र	04/01/2020 07:39
मंगल	11/01/2020 03:17
राहु	28/01/2020 16:03

राहु - गुरु - शनि	
28/01/2020 16:03	
15/06/2020 11:08	
शनि	19/02/2020 15:28
बुध	10/03/2020 07:22
केतु	18/03/2020 09:41
शुक्र	10/04/2020 12:52
सूर्य	17/04/2020 11:25
चंद्र	29/04/2020 01:00
मंगल	07/05/2020 03:19
राहु	27/05/2020 22:59
गुरु	15/06/2020 11:08

राहु - गुरु - बुध	
15/06/2020 11:08	
17/10/2020 15:34	
बुध	03/07/2020 01:21
केतु	10/07/2020 07:13
शुक्र	30/07/2020 23:57
सूर्य	06/08/2020 04:59
चंद्र	16/08/2020 13:21
मंगल	23/08/2020 19:12
राहु	11/09/2020 10:16
गुरु	27/09/2020 23:40
शनि	17/10/2020 15:34

राहु - गुरु - केतु	
17/10/2020 15:34	
07/12/2020 18:48	
केतु	20/10/2020 15:09
शुक्र	29/10/2020 03:42
सूर्य	31/10/2020 17:03
चंद्र	04/11/2020 23:20
मंगल	07/11/2020 22:55
राहु	15/11/2020 15:00
गुरु	22/11/2020 10:38
शनि	30/11/2020 12:57
बुध	07/12/2020 18:48

राहु - गुरु - शुक्र	
07/12/2020 18:48	
02/05/2021 21:12	
शुक्र	01/01/2021 03:12
सूर्य	08/01/2021 10:32
चंद्र	20/01/2021 14:44
मंगल	29/01/2021 03:16
राहु	20/02/2021 01:14
गुरु	11/03/2021 12:45
शनि	03/04/2021 15:56
बुध	24/04/2021 08:40
केतु	02/05/2021 21:12

राहु - गुरु - सूर्य	
02/05/2021 21:12	
15/06/2021 17:08	
सूर्य	05/05/2021 01:48
चंद्र	08/05/2021 17:28
मंगल	11/05/2021 06:49
राहु	17/05/2021 20:37
गुरु	23/05/2021 16:52
शनि	30/05/2021 15:25
बुध	05/06/2021 20:27
केतु	08/06/2021 09:48
शुक्र	15/06/2021 17:08

राहु - गुरु - चंद्र	
15/06/2021 17:08	
27/08/2021 18:20	
चंद्र	21/06/2021 19:14
मंगल	26/06/2021 01:30
राहु	07/07/2021 00:29
गुरु	16/07/2021 18:14
शनि	28/07/2021 07:50
बुध	07/08/2021 16:12
केतु	11/08/2021 22:28
शुक्र	24/08/2021 02:40
सूर्य	27/08/2021 18:20

राहु - गुरु - मंगल	
27/08/2021 18:20	
17/10/2021 21:34	
मंगल	30/08/2021 17:55
राहु	07/09/2021 10:00
गुरु	14/09/2021 05:38
शनि	22/09/2021 07:57
बुध	29/09/2021 13:48
केतु	02/10/2021 13:24
शुक्र	11/10/2021 01:56
सूर्य	13/10/2021 15:18
चंद्र	17/10/2021 21:34

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - गुरु - राहु		राहु - शनि - शनि		राहु - शनि - बुध		राहु - शनि - केतु	
17/10/2021 21:34		26/02/2022 09:20		10/08/2022 04:59		04/01/2023 16:15	
26/02/2022 09:20		10/08/2022 04:59		04/01/2023 16:15		06/03/2023 09:36	
राहु	06/11/2021 14:56	शनि	24/03/2022 11:38	बुध	31/08/2022 02:23	केतु	08/01/2023 05:16
गुरु	24/11/2021 03:42	बुध	16/04/2022 20:01	केतु	08/09/2022 16:50	शुक्र	18/01/2023 08:10
शनि	14/12/2021 23:22	केतु	26/04/2022 10:46	शुक्र	03/10/2022 06:43	सूर्य	21/01/2023 09:02
बुध	02/01/2022 14:26	शुक्र	23/05/2022 22:03	सूर्य	10/10/2022 15:41	चंद्र	26/01/2023 10:28
केतु	10/01/2022 06:31	सूर्य	01/06/2022 03:50	चंद्र	22/10/2022 22:37	मंगल	29/01/2023 23:29
शुक्र	01/02/2022 04:28	चंद्र	14/06/2022 21:28	मंगल	31/10/2022 13:05	राहु	08/02/2023 02:05
सूर्य	07/02/2022 18:16	मंगल	24/06/2022 12:13	राहु	22/11/2022 15:58	गुरु	16/02/2023 04:24
चंद्र	18/02/2022 17:14	राहु	19/07/2022 05:34	गुरु	12/12/2022 07:52	शनि	25/02/2023 19:09
मंगल	26/02/2022 09:20	गुरु	10/08/2022 04:59	शनि	04/01/2023 16:15	बुध	06/03/2023 09:36

राहु - शनि - शुक्र		राहु - शनि - सूर्य		राहु - शनि - चंद्र		राहु - शनि - मंगल	
06/03/2023 09:36		26/08/2023 21:27		17/10/2023 22:37		12/01/2024 16:32	
26/08/2023 21:27		17/10/2023 22:37		12/01/2024 16:32		13/03/2024 09:53	
शुक्र	04/04/2023 07:35	सूर्य	29/08/2023 11:55	चंद्र	25/10/2023 04:06	मंगल	16/01/2024 05:33
सूर्य	12/04/2023 23:46	चंद्र	02/09/2023 20:00	मंगल	30/10/2023 05:33	राहु	25/01/2024 08:09
चंद्र	27/04/2023 10:46	मंगल	05/09/2023 20:52	राहु	12/11/2023 05:50	गुरु	02/02/2024 10:28
मंगल	07/05/2023 13:39	राहु	13/09/2023 16:15	गुरु	23/11/2023 19:26	शनि	12/02/2024 01:12
राहु	02/06/2023 14:14	गुरु	20/09/2023 14:48	शनि	07/12/2023 13:04	बुध	20/02/2024 15:40
गुरु	25/06/2023 17:24	शनि	28/09/2023 20:35	बुध	19/12/2023 20:00	केतु	24/02/2024 04:41
शनि	23/07/2023 04:41	बुध	06/10/2023 05:33	केतु	24/12/2023 21:27	शुक्र	05/03/2024 07:34
बुध	16/08/2023 18:34	केतु	09/10/2023 06:25	शुक्र	08/01/2024 08:26	सूर्य	08/03/2024 08:26
केतु	26/08/2023 21:27	शुक्र	17/10/2023 22:37	सूर्य	12/01/2024 16:32	चंद्र	13/03/2024 09:53

राहु - शनि - राहु		राहु - शनि - गुरु		राहु - बुध - बुध		राहु - बुध - केतु	
13/03/2024 09:53		16/08/2024 13:21		02/01/2025 08:26		14/05/2025 07:09	
16/08/2024 13:21		02/01/2025 08:26		14/05/2025 07:09		07/07/2025 15:05	
राहु	05/04/2024 20:00	गुरु	04/09/2024 01:29	बुध	21/01/2025 01:03	केतु	17/05/2025 11:12
गुरु	26/04/2024 15:40	शनि	26/09/2024 00:55	केतु	28/01/2025 17:46	शुक्र	26/05/2025 12:32
शनि	21/05/2024 09:01	बुध	15/10/2024 16:49	शुक्र	19/02/2025 17:33	सूर्य	29/05/2025 05:44
बुध	12/06/2024 11:54	केतु	23/10/2024 19:08	सूर्य	26/02/2025 07:54	चंद्र	02/06/2025 18:23
केतु	21/06/2024 14:30	शुक्र	15/11/2024 22:18	चंद्र	09/03/2025 07:47	मंगल	05/06/2025 22:27
शुक्र	17/07/2024 15:05	सूर्य	22/11/2024 20:52	मंगल	17/03/2025 00:31	राहु	14/06/2025 02:03
सूर्य	25/07/2024 10:27	चंद्र	04/12/2024 10:27	राहु	05/04/2025 19:31	गुरु	21/06/2025 07:54
चंद्र	07/08/2024 10:45	मंगल	12/12/2024 12:46	गुरु	23/04/2025 09:45	शनि	29/06/2025 22:22
मंगल	16/08/2024 13:21	राहु	02/01/2025 08:26	शनि	14/05/2025 07:09	बुध	07/07/2025 15:05

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - बुध - शुक्र	
07/07/2025 15:05	
09/12/2025 20:38	
शुक्र	02/08/2025 12:01
सूर्य	10/08/2025 06:17
चंद्र	23/08/2025 04:45
मंगल	01/09/2025 06:04
राहु	24/09/2025 12:54
गुरु	15/10/2025 05:39
शनि	08/11/2025 19:32
बुध	30/11/2025 19:19
केतु	09/12/2025 20:38

राहु - बुध - सूर्य	
09/12/2025 20:38	
25/01/2026 10:18	
सूर्य	12/12/2025 04:31
चंद्र	16/12/2025 01:39
मंगल	18/12/2025 18:51
राहु	25/12/2025 18:30
गुरु	31/12/2025 23:32
शनि	08/01/2026 08:29
बुध	14/01/2026 22:50
केतु	17/01/2026 16:01
शुक्र	25/01/2026 10:18

राहु - बुध - चंद्र	
25/01/2026 10:18	
13/04/2026 01:05	
चंद्र	31/01/2026 21:32
मंगल	05/02/2026 10:12
राहु	17/02/2026 01:37
गुरु	27/02/2026 09:59
शनि	11/03/2026 16:55
बुध	22/03/2026 16:49
केतु	27/03/2026 05:28
शुक्र	09/04/2026 03:56
सूर्य	13/04/2026 01:05

राहु - बुध - मंगल	
13/04/2026 01:05	
06/06/2026 09:01	
मंगल	16/04/2026 05:08
राहु	24/04/2026 08:44
गुरु	01/05/2026 14:35
शनि	10/05/2026 05:03
बुध	17/05/2026 21:46
केतु	21/05/2026 01:50
शुक्र	30/05/2026 03:10
सूर्य	01/06/2026 20:21
चंद्र	06/06/2026 09:01

राहु - बुध - राहु	
06/06/2026 09:01	
24/10/2026 02:01	
राहु	27/06/2026 07:58
गुरु	15/07/2026 23:02
शनि	07/08/2026 01:55
बुध	26/08/2026 20:56
केतु	04/09/2026 00:31
शुक्र	27/09/2026 07:21
सूर्य	04/10/2026 07:00
चंद्र	15/10/2026 22:25
मंगल	24/10/2026 02:01

राहु - बुध - गुरु	
24/10/2026 02:01	
25/02/2027 06:27	
गुरु	09/11/2026 15:24
शनि	29/11/2026 07:19
बुध	16/12/2026 21:32
केतु	24/12/2026 03:24
शुक्र	13/01/2027 20:08
सूर्य	20/01/2027 01:10
चंद्र	30/01/2027 09:32
मंगल	06/02/2027 15:23
राहु	25/02/2027 06:27

राहु - बुध - शनि	
25/02/2027 06:27	
22/07/2027 17:44	
शनि	20/03/2027 14:50
बुध	10/04/2027 12:14
केतु	19/04/2027 02:42
शुक्र	13/05/2027 16:34
सूर्य	21/05/2027 01:32
चंद्र	02/06/2027 08:28
मंगल	10/06/2027 22:56
राहु	03/07/2027 01:49
गुरु	22/07/2027 17:44

राहु - केतु - केतु	
22/07/2027 17:44	
14/08/2027 02:39	
केतु	24/07/2027 01:03
शुक्र	27/07/2027 18:32
सूर्य	28/07/2027 21:23
चंद्र	30/07/2027 18:07
मंगल	01/08/2027 01:27
राहु	04/08/2027 09:59
गुरु	07/08/2027 09:34
शनि	10/08/2027 22:35
बुध	14/08/2027 02:39

राहु - केतु - शुक्र	
14/08/2027 02:39	
17/10/2027 00:42	
शुक्र	24/08/2027 18:19
सूर्य	27/08/2027 23:01
चंद्र	02/09/2027 06:52
मंगल	06/09/2027 00:21
राहु	15/09/2027 14:27
गुरु	24/09/2027 03:00
शनि	04/10/2027 05:53
बुध	13/10/2027 07:12
केतु	17/10/2027 00:42

राहु - केतु - सूर्य	
17/10/2027 00:42	
05/11/2027 04:55	
सूर्य	17/10/2027 23:42
चंद्र	19/10/2027 14:03
मंगल	20/10/2027 16:54
राहु	23/10/2027 13:56
गुरु	26/10/2027 03:18
शनि	29/10/2027 04:10
बुध	31/10/2027 21:22
केतु	02/11/2027 00:12
शुक्र	05/11/2027 04:55

राहु - केतु - चंद्र	
05/11/2027 04:55	
07/12/2027 03:56	
चंद्र	07/11/2027 20:50
मंगल	09/11/2027 17:34
राहु	14/11/2027 12:37
गुरु	18/11/2027 18:54
शनि	23/11/2027 20:20
बुध	28/11/2027 09:00
केतु	30/11/2027 05:45
शुक्र	05/12/2027 13:35
सूर्य	07/12/2027 03:56

राहु - केतु - मंगल	
07/12/2027 03:56	
29/12/2027 12:51	
मंगल	08/12/2027 11:15
राहु	11/12/2027 19:47
गुरु	14/12/2027 19:23
शनि	18/12/2027 08:24
बुध	21/12/2027 12:27
केतु	22/12/2027 19:47
शुक्र	26/12/2027 13:16
सूर्य	27/12/2027 16:06
चंद्र	29/12/2027 12:51

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - केतु - राहु		राहु - केतु - गुरु		राहु - केतु - शनि		राहु - केतु - बुध	
29/12/2027 12:51		25/02/2028 01:30		16/04/2028 04:44		15/06/2028 22:05	
25/02/2028 01:30		16/04/2028 04:44		15/06/2028 22:05		09/08/2028 06:02	
राहु	07/01/2028 03:57	गुरु	02/03/2028 21:08	शनि	25/04/2028 19:29	बुध	23/06/2028 14:49
गुरु	14/01/2028 20:02	शनि	10/03/2028 23:26	बुध	04/05/2028 09:56	केतु	26/06/2028 18:52
शनि	23/01/2028 22:38	बुध	18/03/2028 05:18	केतु	07/05/2028 22:57	शुक्र	05/07/2028 20:12
बुध	01/02/2028 02:14	केतु	21/03/2028 04:53	शुक्र	18/05/2028 01:51	सूर्य	08/07/2028 13:24
केतु	04/02/2028 10:46	शुक्र	29/03/2028 17:26	सूर्य	21/05/2028 02:43	चंद्र	13/07/2028 02:03
शुक्र	14/02/2028 00:52	सूर्य	01/04/2028 06:47	चंद्र	26/05/2028 04:09	मंगल	16/07/2028 06:07
सूर्य	16/02/2028 21:54	चंद्र	05/04/2028 13:04	मंगल	29/05/2028 17:10	राहु	24/07/2028 09:43
चंद्र	21/02/2028 16:58	मंगल	08/04/2028 12:39	राहु	07/06/2028 19:46	गुरु	31/07/2028 15:34
मंगल	25/02/2028 01:30	राहु	16/04/2028 04:44	गुरु	15/06/2028 22:05	शनि	09/08/2028 06:02

राहु - शुक्र - शुक्र		राहु - शुक्र - सूर्य		राहु - शुक्र - चंद्र		राहु - शुक्र - मंगल	
09/08/2028 06:02		07/02/2029 21:02		03/04/2029 15:56		03/07/2029 23:26	
07/02/2029 21:02		03/04/2029 15:56		03/07/2029 23:26		05/09/2029 21:29	
शुक्र	08/09/2028 16:32	सूर्य	10/02/2029 14:46	चंद्र	11/04/2029 06:33	मंगल	07/07/2029 16:55
सूर्य	17/09/2028 19:41	चंद्र	15/02/2029 04:21	मंगल	16/04/2029 14:23	राहु	17/07/2029 07:01
चंद्र	03/10/2028 00:56	मंगल	18/02/2029 09:03	राहु	30/04/2029 07:07	गुरु	25/07/2029 19:34
मंगल	13/10/2028 16:36	राहु	26/02/2029 14:17	गुरु	12/05/2029 11:19	शनि	04/08/2029 22:27
राहु	10/11/2028 02:03	गुरु	05/03/2029 21:36	शनि	26/05/2029 22:18	बुध	13/08/2029 23:46
गुरु	04/12/2028 10:27	शनि	14/03/2029 13:48	बुध	08/06/2029 20:46	केतु	17/08/2029 17:16
शनि	02/01/2029 08:26	बुध	22/03/2029 08:04	केतु	14/06/2029 04:36	शुक्र	28/08/2029 08:56
बुध	28/01/2029 05:21	केतु	25/03/2029 12:47	शुक्र	29/06/2029 09:51	सूर्य	31/08/2029 13:38
केतु	07/02/2029 21:02	शुक्र	03/04/2029 15:56	सूर्य	03/07/2029 23:26	चंद्र	05/09/2029 21:29

राहु - शुक्र - राहु		राहु - शुक्र - गुरु		राहु - शुक्र - शनि		राहु - शुक्र - बुध	
05/09/2029 21:29		17/02/2030 06:11		13/07/2030 08:35		02/01/2031 20:26	
17/02/2030 06:11		13/07/2030 08:35		02/01/2031 20:26		07/06/2031 01:59	
राहु	30/09/2029 13:11	गुरु	08/03/2030 17:42	शनि	09/08/2030 19:51	बुध	24/01/2031 20:13
गुरु	22/10/2029 11:08	शनि	31/03/2030 20:53	बुध	03/09/2030 09:44	केतु	02/02/2031 21:32
शनि	17/11/2029 11:43	बुध	21/04/2030 13:37	केतु	13/09/2030 12:37	शुक्र	28/02/2031 18:28
बुध	10/12/2029 18:33	केतु	30/04/2030 02:09	शुक्र	12/10/2030 10:36	सूर्य	08/03/2031 12:44
केतु	20/12/2029 08:40	शुक्र	24/05/2030 10:33	सूर्य	21/10/2030 02:47	चंद्र	21/03/2031 11:12
शुक्र	16/01/2030 18:07	सूर्य	31/05/2030 17:53	चंद्र	04/11/2030 13:47	मंगल	30/03/2031 12:31
सूर्य	24/01/2030 23:21	चंद्र	12/06/2030 22:05	मंगल	14/11/2030 16:40	राहु	22/04/2031 19:21
चंद्र	07/02/2030 16:04	मंगल	21/06/2030 10:37	राहु	10/12/2030 17:15	गुरु	13/05/2031 12:06
मंगल	17/02/2030 06:11	राहु	13/07/2030 08:35	गुरु	02/01/2031 20:26	शनि	07/06/2031 01:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - राहु - शुक्र - बुध

23/02/2019 21:35

19/03/2019 04:25

बुध	27/02/2019 04:45
केतु	28/02/2019 13:21
शुक्र	04/03/2019 10:29
सूर्य	05/03/2019 14:26
चंद्र	07/03/2019 13:00
मंगल	08/03/2019 21:36
राहु	12/03/2019 09:25
गुरु	15/03/2019 11:56
शनि	19/03/2019 04:25

राहु - राहु - शुक्र - केतु

19/03/2019 04:25

28/03/2019 18:31

केतु	19/03/2019 17:50
शुक्र	21/03/2019 08:11
सूर्य	21/03/2019 19:42
चंद्र	22/03/2019 14:52
मंगल	23/03/2019 04:18
राहु	24/03/2019 14:48
गुरु	25/03/2019 21:29
शनि	27/03/2019 09:55
बुध	28/03/2019 18:31

राहु - राहु - सूर्य - सूर्य

28/03/2019 18:31

31/03/2019 05:41

सूर्य	28/03/2019 21:29
चंद्र	29/03/2019 02:25
मंगल	29/03/2019 05:52
राहु	29/03/2019 14:44
गुरु	29/03/2019 22:38
शनि	30/03/2019 08:00
बुध	30/03/2019 16:23
केतु	30/03/2019 19:50
शुक्र	31/03/2019 05:41

राहु - राहु - सूर्य - चंद्र

31/03/2019 05:41

04/04/2019 08:19

चंद्र	31/03/2019 13:55
मंगल	31/03/2019 19:40
राहु	01/04/2019 10:27
गुरु	01/04/2019 23:36
शनि	02/04/2019 15:13
बुध	03/04/2019 05:11
केतु	03/04/2019 10:57
शुक्र	04/04/2019 03:23
सूर्य	04/04/2019 08:19

राहु - राहु - सूर्य - मंगल

04/04/2019 08:19

07/04/2019 05:20

मंगल	04/04/2019 12:20
राहु	04/04/2019 22:41
गुरु	05/04/2019 07:54
शनि	05/04/2019 18:50
बुध	06/04/2019 04:36
केतु	06/04/2019 08:38
शुक्र	06/04/2019 20:08
सूर्य	06/04/2019 23:35
चंद्र	07/04/2019 05:20

राहु - राहु - सूर्य - राहु

07/04/2019 05:20

14/04/2019 14:51

राहु	08/04/2019 07:58
गुरु	09/04/2019 07:38
शनि	10/04/2019 11:45
बुध	11/04/2019 12:53
केतु	11/04/2019 23:15
शुक्र	13/04/2019 04:50
सूर्य	13/04/2019 13:42
चंद्र	14/04/2019 04:30
मंगल	14/04/2019 14:51

राहु - राहु - सूर्य - गुरु

14/04/2019 14:51

21/04/2019 04:38

गुरु	15/04/2019 11:53
शनि	16/04/2019 12:52
बुध	17/04/2019 11:14
केतु	17/04/2019 20:26
शुक्र	18/04/2019 22:44
सूर्य	19/04/2019 06:37
चंद्र	19/04/2019 19:46
मंगल	20/04/2019 04:58
राहु	21/04/2019 04:38

राहु - राहु - सूर्य - शनि

21/04/2019 04:38

29/04/2019 00:01

शनि	22/04/2019 10:18
बुध	23/04/2019 12:51
केतु	23/04/2019 23:47
शुक्र	25/04/2019 07:01
सूर्य	25/04/2019 16:23
चंद्र	26/04/2019 08:00
मंगल	26/04/2019 18:55
राहु	27/04/2019 23:02
गुरु	29/04/2019 00:01

राहु - राहु - सूर्य - बुध

29/04/2019 00:01

05/05/2019 23:40

बुध	29/04/2019 23:46
केतु	30/04/2019 09:33
शुक्र	01/05/2019 13:29
सूर्य	01/05/2019 21:52
चंद्र	02/05/2019 11:50
मंगल	02/05/2019 21:37
राहु	03/05/2019 22:46
गुरु	04/05/2019 21:07
शनि	05/05/2019 23:40

राहु - राहु - सूर्य - केतु

05/05/2019 23:40

08/05/2019 20:42

केतु	06/05/2019 03:41
शुक्र	06/05/2019 15:12
सूर्य	06/05/2019 18:39
चंद्र	07/05/2019 00:24
मंगल	07/05/2019 04:26
राहु	07/05/2019 14:47
गुरु	07/05/2019 23:59
शनि	08/05/2019 10:55
बुध	08/05/2019 20:42

राहु - राहु - सूर्य - शुक्र

08/05/2019 20:42

17/05/2019 01:56

शुक्र	10/05/2019 05:34
सूर्य	10/05/2019 15:26
चंद्र	11/05/2019 07:52
मंगल	11/05/2019 19:22
राहु	13/05/2019 00:57
गुरु	14/05/2019 03:15
शनि	15/05/2019 10:29
बुध	16/05/2019 14:26
केतु	17/05/2019 01:56

राहु - राहु - चंद्र - चंद्र

17/05/2019 01:56

23/05/2019 22:18

चंद्र	17/05/2019 15:38
मंगल	18/05/2019 01:13
राहु	19/05/2019 01:52
गुरु	19/05/2019 23:47
शनि	21/05/2019 01:49
बुध	22/05/2019 01:06
केतु	22/05/2019 10:41
शुक्र	23/05/2019 14:05
सूर्य	23/05/2019 22:18

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - राहु - चंद्र - मंगल
23/05/2019 22:18
28/05/2019 17:21

मंगल	24/05/2019 05:00
राहु	24/05/2019 22:16
गुरु	25/05/2019 13:36
शनि	26/05/2019 07:49
बुध	27/05/2019 00:07
केतु	27/05/2019 06:50
शुक्र	28/05/2019 02:00
सूर्य	28/05/2019 07:46
चंद्र	28/05/2019 17:21

राहु - राहु - चंद्र - राहु
28/05/2019 17:21
10/06/2019 01:12

राहु	30/05/2019 13:44
गुरु	01/06/2019 05:10
शनि	03/06/2019 04:01
बुध	04/06/2019 21:56
केतु	05/06/2019 15:11
शुक्र	07/06/2019 16:30
सूर्य	08/06/2019 07:17
चंद्र	09/06/2019 07:57
मंगल	10/06/2019 01:12

राहु - राहु - चंद्र - गुरु
10/06/2019 01:12
21/06/2019 00:11

गुरु	11/06/2019 12:16
शनि	13/06/2019 05:54
बुध	14/06/2019 19:09
केतु	15/06/2019 10:30
शुक्र	17/06/2019 06:20
सूर्य	17/06/2019 19:29
चंद्र	18/06/2019 17:24
मंगल	19/06/2019 08:44
राहु	21/06/2019 00:11

राहु - राहु - चंद्र - शनि
21/06/2019 00:11
04/07/2019 00:28

शनि	23/06/2019 01:38
बुध	24/06/2019 21:52
केतु	25/06/2019 16:05
शुक्र	27/06/2019 20:08
सूर्य	28/06/2019 11:45
चंद्र	29/06/2019 13:46
मंगल	30/06/2019 07:59
राहु	02/07/2019 06:50
गुरु	04/07/2019 00:28

राहु - राहु - चंद्र - बुध
04/07/2019 00:28
15/07/2019 15:53

बुध	05/07/2019 16:03
केतु	06/07/2019 08:21
शुक्र	08/07/2019 06:55
सूर्य	08/07/2019 20:54
चंद्र	09/07/2019 20:11
मंगल	10/07/2019 12:29
राहु	12/07/2019 06:23
गुरु	13/07/2019 19:39
शनि	15/07/2019 15:53

राहु - राहु - चंद्र - केतु
15/07/2019 15:53
20/07/2019 10:56

केतु	15/07/2019 22:36
शुक्र	16/07/2019 17:46
सूर्य	16/07/2019 23:31
चंद्र	17/07/2019 09:07
मंगल	17/07/2019 15:49
राहु	18/07/2019 09:05
गुरु	19/07/2019 00:25
शनि	19/07/2019 18:38
बुध	20/07/2019 10:56

राहु - राहु - चंद्र - शुक्र
20/07/2019 10:56
03/08/2019 03:40

शुक्र	22/07/2019 17:44
सूर्य	23/07/2019 10:10
चंद्र	24/07/2019 13:33
मंगल	25/07/2019 08:44
राहु	27/07/2019 10:02
गुरु	29/07/2019 05:52
शनि	31/07/2019 09:55
बुध	02/08/2019 08:29
केतु	03/08/2019 03:40

राहु - राहु - चंद्र - सूर्य
03/08/2019 03:40
07/08/2019 06:17

सूर्य	03/08/2019 08:36
चंद्र	03/08/2019 16:49
मंगल	03/08/2019 22:34
राहु	04/08/2019 13:21
गुरु	05/08/2019 02:30
शनि	05/08/2019 18:07
बुध	06/08/2019 08:06
केतु	06/08/2019 13:51
शुक्र	07/08/2019 06:17

राहु - राहु - मंगल - मंगल
07/08/2019 06:17
10/08/2019 14:49

मंगल	07/08/2019 10:59
राहु	07/08/2019 23:04
गुरु	08/08/2019 09:48
शनि	08/08/2019 22:33
बुध	09/08/2019 09:58
केतु	09/08/2019 14:39
शुक्र	10/08/2019 04:05
सूर्य	10/08/2019 08:06
चंद्र	10/08/2019 14:49

राहु - राहु - मंगल - राहु
10/08/2019 14:49
19/08/2019 05:55

राहु	11/08/2019 21:53
गुरु	13/08/2019 01:30
शनि	14/08/2019 10:17
बुध	15/08/2019 15:38
केतु	16/08/2019 03:42
शुक्र	17/08/2019 14:13
सूर्य	18/08/2019 00:35
चंद्र	18/08/2019 17:50
मंगल	19/08/2019 05:55

राहु - राहु - मंगल - गुरु
19/08/2019 05:55
26/08/2019 22:00

गुरु	20/08/2019 06:28
शनि	21/08/2019 11:36
बुध	22/08/2019 13:41
केतु	23/08/2019 00:25
शुक्र	24/08/2019 07:06
सूर्य	24/08/2019 16:19
चंद्र	25/08/2019 07:39
मंगल	25/08/2019 18:23
राहु	26/08/2019 22:00

राहु - राहु - मंगल - शनि
26/08/2019 22:00
05/09/2019 00:36

शनि	28/08/2019 08:37
बुध	29/08/2019 15:35
केतु	30/08/2019 04:20
शुक्र	31/08/2019 16:46
सूर्य	01/09/2019 03:42
चंद्र	01/09/2019 21:55
मंगल	02/09/2019 10:40
राहु	03/09/2019 19:27
गुरु	05/09/2019 00:36

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 9 वर्ष 9 मास 0 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
06/02/2019		**06/11/2028**		**06/11/2040**		**07/11/2053**		**07/11/2067**	
06/11/2028		**06/11/2040**		**07/11/2053**		**07/11/2067**		**07/11/2082**	
	06/02/2019	मंगल	03/02/2030	गुरु	22/04/2042	शनि	17/07/2055	केतु	16/10/2069
मंगल	12/01/2020	गुरु	09/06/2031	शनि	17/11/2043	केतु	08/05/2057	चंद्र	10/11/2071
गुरु	06/04/2021	शनि	19/11/2032	केतु	23/07/2045	चंद्र	13/04/2059	बुध	21/01/2074
शनि	04/08/2022	केतु	09/06/2034	चंद्र	08/05/2047	बुध	02/05/2061	शुक्र	20/05/2076
केतु	06/01/2024	चंद्र	03/02/2036	बुध	03/04/2049	शुक्र	04/07/2063	सूर्य	22/10/2077
चंद्र	13/07/2025	बुध	07/11/2037	शुक्र	10/04/2051	सूर्य	31/10/2064	मंगल	12/05/2079
बुध	22/02/2027	शुक्र	18/09/2039	सूर्य	03/07/2052	मंगल	13/04/2066	गुरु	15/01/2081
शुक्र	06/11/2028	सूर्य	06/11/2040	मंगल	07/11/2053	गुरु	07/11/2067	शनि	07/11/2082

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
07/11/2082		**07/11/2098**		**08/11/2115**		**08/11/2133**	
07/11/2098		**08/11/2115**		**08/11/2133**		**00/00/0000**	
चंद्र	21/01/2085	बुध	06/05/2101	शुक्र	24/08/2118	सूर्य	24/11/2134
बुध	27/05/2087	शुक्र	25/12/2103	सूर्य	09/05/2120	मंगल	07/02/2135
शुक्र	19/11/2089	सूर्य	05/08/2105	मंगल	20/03/2122		00/00/0000
सूर्य	27/05/2091	मंगल	09/05/2107	गुरु	26/03/2124		00/00/0000
मंगल	21/01/2093	गुरु	04/04/2109	शनि	28/05/2126		00/00/0000
गुरु	07/11/2094	शनि	24/04/2111	केतु	24/09/2128		00/00/0000
शनि	12/10/2096	केतु	05/07/2113	चंद्र	20/03/2131		00/00/0000
केतु	07/11/2098	चंद्र	08/11/2115	बुध	08/11/2133		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल
06/02/2019
12/01/2020

	06/02/2019
गुरु	20/02/2019
शनि	11/04/2019
केतु	04/06/2019
चंद्र	31/07/2019
बुध	30/09/2019
शुक्र	04/12/2019
सूर्य	12/01/2020

सूर्य - गुरु
12/01/2020
06/04/2021

गुरु	03/03/2020
शनि	26/04/2020
केतु	23/06/2020
चंद्र	24/08/2020
बुध	29/10/2020
शुक्र	07/01/2021
सूर्य	19/02/2021
मंगल	06/04/2021

सूर्य - शनि
06/04/2021
04/08/2022

शनि	04/06/2021
केतु	06/08/2021
चंद्र	12/10/2021
बुध	22/12/2021
शुक्र	07/03/2022
सूर्य	22/04/2022
मंगल	11/06/2022
गुरु	04/08/2022

सूर्य - केतु
04/08/2022
06/01/2024

केतु	11/10/2022
चंद्र	21/12/2022
बुध	07/03/2023
शुक्र	27/05/2023
सूर्य	15/07/2023
मंगल	07/09/2023
गुरु	04/11/2023
शनि	06/01/2024

सूर्य - चंद्र
06/01/2024
13/07/2025

चंद्र	22/03/2024
बुध	12/06/2024
शुक्र	06/09/2024
सूर्य	28/10/2024
मंगल	24/12/2024
गुरु	25/02/2025
शनि	02/05/2025
केतु	13/07/2025

सूर्य - बुध
13/07/2025
22/02/2027

बुध	07/10/2025
शुक्र	07/01/2026
सूर्य	04/03/2026
मंगल	03/05/2026
गुरु	08/07/2026
शनि	18/09/2026
केतु	03/12/2026
चंद्र	22/02/2027

सूर्य - शुक्र
22/02/2027
06/11/2028

शुक्र	30/05/2027
सूर्य	28/07/2027
मंगल	30/09/2027
गुरु	09/12/2027
शनि	22/02/2028
केतु	13/05/2028
चंद्र	07/08/2028
बुध	06/11/2028

मंगल - मंगल
06/11/2028
03/02/2030

मंगल	23/12/2028
गुरु	12/02/2029
शनि	08/04/2029
केतु	05/06/2029
चंद्र	07/08/2029
बुध	12/10/2029
शुक्र	22/12/2029
सूर्य	03/02/2030

मंगल - गुरु
03/02/2030
09/06/2031

गुरु	30/03/2030
शनि	28/05/2030
केतु	31/07/2030
चंद्र	06/10/2030
बुध	17/12/2030
शुक्र	04/03/2031
सूर्य	19/04/2031
मंगल	09/06/2031

मंगल - शनि
09/06/2031
19/11/2032

शनि	12/08/2031
केतु	19/10/2031
चंद्र	31/12/2031
बुध	18/03/2032
शुक्र	08/06/2032
सूर्य	28/07/2032
मंगल	21/09/2032
गुरु	19/11/2032

मंगल - केतु
19/11/2032
09/06/2034

केतु	31/01/2033
चंद्र	19/04/2033
बुध	11/07/2033
शुक्र	07/10/2033
सूर्य	30/11/2033
मंगल	28/01/2034
गुरु	01/04/2034
शनि	09/06/2034

मंगल - चंद्र
09/06/2034
03/02/2036

चंद्र	31/08/2034
बुध	28/11/2034
शुक्र	01/03/2035
सूर्य	28/04/2035
मंगल	29/06/2035
गुरु	05/09/2035
शनि	17/11/2035
केतु	03/02/2036

मंगल - बुध
03/02/2036
07/11/2037

बुध	07/05/2036
शुक्र	15/08/2036
सूर्य	15/10/2036
मंगल	20/12/2036
गुरु	02/03/2037
शनि	19/05/2037
केतु	10/08/2037
चंद्र	07/11/2037

मंगल - शुक्र
07/11/2037
18/09/2039

शुक्र	20/02/2038
सूर्य	26/04/2038
मंगल	05/07/2038
गुरु	19/09/2038
शनि	10/12/2038
केतु	08/03/2039
चंद्र	10/06/2039
बुध	18/09/2039

मंगल - सूर्य
18/09/2039
06/11/2040

सूर्य	27/10/2039
मंगल	09/12/2039
गुरु	25/01/2040
शनि	15/03/2040
केतु	08/05/2040
चंद्र	04/07/2040
बुध	03/09/2040
शुक्र	06/11/2040

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - केतु	गुरु - चंद्र	गुरु - बुध
06/11/2040	22/04/2042	17/11/2043	23/07/2045	08/05/2047
22/04/2042	17/11/2043	23/07/2045	08/05/2047	03/04/2049
गुरु 05/01/2041	शनि 01/07/2042	केतु 04/02/2044	चंद्र 21/10/2045	बुध 18/08/2047
शनि 10/03/2041	केतु 13/09/2042	चंद्र 29/04/2044	बुध 25/01/2046	शुक्र 04/12/2047
केतु 18/05/2041	चंद्र 01/12/2042	बुध 28/07/2044	शुक्र 06/05/2046	सूर्य 08/02/2048
चंद्र 30/07/2041	बुध 23/02/2043	शुक्र 31/10/2044	सूर्य 08/07/2046	मंगल 20/04/2048
बुध 16/10/2041	शुक्र 23/05/2043	सूर्य 28/12/2044	मंगल 13/09/2046	गुरु 07/07/2048
शुक्र 07/01/2042	सूर्य 16/07/2043	मंगल 02/03/2045	गुरु 26/11/2046	शनि 29/09/2048
सूर्य 26/02/2042	मंगल 13/09/2043	गुरु 09/05/2045	शनि 13/02/2047	केतु 28/12/2048
मंगल 22/04/2042	गुरु 17/11/2043	शनि 23/07/2045	केतु 08/05/2047	चंद्र 03/04/2049

गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - मंगल	शनि - शनि	शनि - केतु
03/04/2049	10/04/2051	03/07/2052	07/11/2053	17/07/2055
10/04/2051	03/07/2052	07/11/2053	17/07/2055	08/05/2057
शुक्र 27/07/2049	सूर्य 23/05/2051	मंगल 23/08/2052	शनि 20/01/2054	केतु 10/10/2055
सूर्य 05/10/2049	मंगल 08/07/2051	गुरु 17/10/2052	केतु 10/04/2054	चंद्र 09/01/2056
मंगल 20/12/2049	गुरु 28/08/2051	शनि 16/12/2052	चंद्र 04/07/2054	बुध 15/04/2056
गुरु 12/03/2050	शनि 21/10/2051	केतु 17/02/2053	बुध 02/10/2054	शुक्र 27/07/2056
शनि 09/06/2050	केतु 18/12/2051	चंद्र 26/04/2053	शुक्र 06/01/2055	सूर्य 28/09/2056
केतु 13/09/2050	चंद्र 19/02/2052	बुध 07/07/2053	सूर्य 06/03/2055	मंगल 05/12/2056
चंद्र 23/12/2050	बुध 25/04/2052	शुक्र 21/09/2053	मंगल 09/05/2055	गुरु 17/02/2057
बुध 10/04/2051	शुक्र 03/07/2052	सूर्य 07/11/2053	गुरु 17/07/2055	शनि 08/05/2057

शनि - चंद्र	शनि - बुध	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - मंगल
08/05/2057	13/04/2059	02/05/2061	04/07/2063	31/10/2064
13/04/2059	02/05/2061	04/07/2063	31/10/2064	13/04/2066
चंद्र 13/08/2057	बुध 01/08/2059	शुक्र 02/09/2061	सूर्य 19/08/2063	मंगल 25/12/2064
बुध 25/11/2057	शुक्र 25/11/2059	सूर्य 16/11/2061	मंगल 08/10/2063	गुरु 22/02/2065
शुक्र 14/03/2058	सूर्य 04/02/2060	मंगल 06/02/2062	गुरु 02/12/2063	शनि 27/04/2065
सूर्य 20/05/2058	मंगल 22/04/2060	गुरु 06/05/2062	शनि 29/01/2064	केतु 04/07/2065
मंगल 01/08/2058	गुरु 15/07/2060	शनि 10/08/2062	केतु 01/04/2064	चंद्र 15/09/2065
गुरु 19/10/2058	शनि 13/10/2060	केतु 20/11/2062	चंद्र 07/06/2064	बुध 02/12/2065
शनि 12/01/2059	केतु 18/01/2061	चंद्र 10/03/2063	बुध 17/08/2064	शुक्र 22/02/2066
केतु 13/04/2059	चंद्र 02/05/2061	बुध 04/07/2063	शुक्र 31/10/2064	सूर्य 13/04/2066

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु	
13/04/2066	07/11/2067
गुरु	16/06/2066
शनि	24/08/2066
केतु	06/11/2066
चंद्र	25/01/2067
बुध	19/04/2067
शुक्र	16/07/2067
सूर्य	09/09/2067
मंगल	07/11/2067

केतु - केतु	
07/11/2067	16/10/2069
केतु	07/02/2068
चंद्र	14/05/2068
बुध	26/08/2068
शुक्र	14/12/2068
सूर्य	19/02/2069
मंगल	04/05/2069
गुरु	22/07/2069
शनि	16/10/2069

केतु - चंद्र	
16/10/2069	10/11/2071
चंद्र	28/01/2070
बुध	19/05/2070
शुक्र	13/09/2070
सूर्य	23/11/2070
मंगल	10/02/2071
गुरु	05/05/2071
शनि	05/08/2071
केतु	10/11/2071

केतु - बुध	
10/11/2071	21/01/2074
बुध	07/03/2072
शुक्र	09/07/2072
सूर्य	24/09/2072
मंगल	16/12/2072
गुरु	16/03/2073
शनि	21/06/2073
केतु	02/10/2073
चंद्र	21/01/2074

केतु - शुक्र	
21/01/2074	20/05/2076
शुक्र	02/06/2074
सूर्य	22/08/2074
मंगल	18/11/2074
गुरु	21/02/2075
शनि	04/06/2075
केतु	21/09/2075
चंद्र	17/01/2076
बुध	20/05/2076

केतु - सूर्य	
20/05/2076	22/10/2077
सूर्य	09/07/2076
मंगल	31/08/2076
गुरु	29/10/2076
शनि	30/12/2076
केतु	07/03/2077
चंद्र	18/05/2077
बुध	02/08/2077
शुक्र	22/10/2077

केतु - मंगल	
22/10/2077	12/05/2079
मंगल	19/12/2077
गुरु	21/02/2078
शनि	30/04/2078
केतु	13/07/2078
चंद्र	29/09/2078
बुध	21/12/2078
शुक्र	19/03/2079
सूर्य	12/05/2079

केतु - गुरु	
12/05/2079	15/01/2081
गुरु	19/07/2079
शनि	02/10/2079
केतु	20/12/2079
चंद्र	14/03/2080
बुध	12/06/2080
शुक्र	15/09/2080
सूर्य	12/11/2080
मंगल	15/01/2081

केतु - शनि	
15/01/2081	07/11/2082
शनि	04/04/2081
केतु	29/06/2081
चंद्र	28/09/2081
बुध	03/01/2082
शुक्र	16/04/2082
सूर्य	17/06/2082
मंगल	25/08/2082
गुरु	07/11/2082

चंद्र - चंद्र	
07/11/2082	21/01/2085
चंद्र	26/02/2083
बुध	24/06/2083
शुक्र	27/10/2083
सूर्य	12/01/2084
मंगल	04/04/2084
गुरु	03/07/2084
शनि	09/10/2084
केतु	21/01/2085

चंद्र - बुध	
21/01/2085	27/05/2087
बुध	26/05/2085
शुक्र	06/10/2085
सूर्य	27/12/2085
मंगल	25/03/2086
गुरु	29/06/2086
शनि	10/10/2086
केतु	29/01/2087
चंद्र	27/05/2087

चंद्र - शुक्र	
27/05/2087	19/11/2089
शुक्र	15/10/2087
सूर्य	09/01/2088
मंगल	12/04/2088
गुरु	22/07/2088
शनि	09/11/2088
केतु	06/03/2089
चंद्र	09/07/2089
बुध	19/11/2089

चंद्र - सूर्य	
19/11/2089	27/05/2091
सूर्य	11/01/2090
मंगल	09/03/2090
गुरु	10/05/2090
शनि	16/07/2090
केतु	26/09/2090
चंद्र	11/12/2090
बुध	02/03/2091
शुक्र	27/05/2091

चंद्र - मंगल	
27/05/2091	21/01/2093
मंगल	29/07/2091
गुरु	05/10/2091
शनि	17/12/2091
केतु	04/03/2092
चंद्र	26/05/2092
बुध	23/08/2092
शुक्र	25/11/2092
सूर्य	21/01/2093

चंद्र - गुरु	
21/01/2093	07/11/2094
गुरु	04/04/2093
शनि	22/06/2093
केतु	15/09/2093
चंद्र	14/12/2093
बुध	20/03/2094
शुक्र	30/06/2094
सूर्य	31/08/2094
मंगल	07/11/2094

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
07/11/2094		**12/10/2096**		**07/11/2098**		**06/05/2101**		**25/12/2103**	
12/10/2096		**07/11/2098**		**06/05/2101**		**25/12/2103**		**05/08/2105**	
शनि	31/01/2095	केतु	18/01/2097	बुध	20/03/2099	शुक्र	02/10/2101	सूर्य	19/02/2104
केतु	02/05/2095	चंद्र	02/05/2097	शुक्र	08/08/2099	सूर्य	02/01/2102	मंगल	20/04/2104
चंद्र	07/08/2095	बुध	21/08/2097	सूर्य	03/11/2099	मंगल	11/04/2102	गुरु	25/06/2104
बुध	19/11/2095	शुक्र	16/12/2097	मंगल	05/02/2100	गुरु	28/07/2102	शनि	04/09/2104
शुक्र	07/03/2096	सूर्य	26/02/2098	गुरु	18/05/2100	शनि	22/11/2102	केतु	19/11/2104
सूर्य	13/05/2096	मंगल	15/05/2098	शनि	05/09/2100	केतु	26/03/2103	चंद्र	08/02/2105
मंगल	25/07/2096	गुरु	08/08/2098	केतु	31/12/2100	चंद्र	06/08/2103	बुध	06/05/2105
गुरु	12/10/2096	शनि	07/11/2098	चंद्र	06/05/2101	बुध	25/12/2103	शुक्र	05/08/2105

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
05/08/2105		**09/05/2107**		**04/04/2109**		**24/04/2111**		**05/07/2113**	
09/05/2107		**04/04/2109**		**24/04/2111**		**05/07/2113**		**08/11/2115**	
मंगल	11/10/2105	गुरु	26/07/2107	शनि	04/07/2109	केतु	06/08/2111	चंद्र	31/10/2113
गुरु	22/12/2105	शनि	18/10/2107	केतु	09/10/2109	चंद्र	24/11/2111	बुध	05/03/2114
शनि	09/03/2106	केतु	16/01/2108	चंद्र	20/01/2110	बुध	21/03/2112	शुक्र	16/07/2114
केतु	31/05/2106	चंद्र	21/04/2108	बुध	10/05/2110	शुक्र	24/07/2112	सूर्य	05/10/2114
चंद्र	28/08/2106	बुध	01/08/2108	शुक्र	03/09/2110	सूर्य	08/10/2112	मंगल	02/01/2115
बुध	30/11/2106	शुक्र	17/11/2108	सूर्य	13/11/2110	मंगल	30/12/2112	गुरु	08/04/2115
शुक्र	10/03/2107	सूर्य	22/01/2109	मंगल	30/01/2111	गुरु	30/03/2113	शनि	20/07/2115
सूर्य	09/05/2107	मंगल	04/04/2109	गुरु	24/04/2111	शनि	05/07/2113	केतु	08/11/2115

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
08/11/2115		**24/08/2118**		**09/05/2120**		**20/03/2122**		**26/03/2124**	
24/08/2118		**09/05/2120**		**20/03/2122**		**26/03/2124**		**28/05/2126**	
शुक्र	14/04/2116	सूर्य	22/10/2118	मंगल	18/07/2120	गुरु	10/06/2122	शनि	29/06/2124
सूर्य	20/07/2116	मंगल	26/12/2118	गुरु	02/10/2120	शनि	07/09/2122	केतु	10/10/2124
मंगल	03/11/2116	गुरु	06/03/2119	शनि	23/12/2120	केतु	12/12/2122	चंद्र	27/01/2125
गुरु	25/02/2117	शनि	20/05/2119	केतु	21/03/2121	चंद्र	23/03/2123	बुध	24/05/2125
शनि	28/06/2117	केतु	09/08/2119	चंद्र	23/06/2121	बुध	09/07/2123	शुक्र	24/09/2125
केतु	07/11/2117	चंद्र	03/11/2119	बुध	01/10/2121	शुक्र	01/11/2123	सूर्य	08/12/2125
चंद्र	28/03/2118	बुध	02/02/2120	शुक्र	14/01/2122	सूर्य	09/01/2124	मंगल	28/02/2126
बुध	24/08/2118	शुक्र	09/05/2120	सूर्य	20/03/2122	मंगल	26/03/2124	गुरु	28/05/2126

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 10 वर्ष 7 मास 19 दिन

राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष	
06/02/2019		**26/09/2029**		**27/05/2040**		**26/01/2053**		**27/05/2064**	
26/09/2029		**27/05/2040**		**26/01/2053**		**27/05/2064**		**26/01/2069**	
राहु	16/07/2019	गुरु	28/02/2031	शनि	30/05/2042	बुध	04/09/2054	केतु	04/09/2064
गुरु	19/02/2021	शनि	05/11/2032	बुध	15/03/2044	केतु	03/05/2055	शुक्र	15/06/2065
शनि	14/01/2023	बुध	11/05/2034	केतु	10/12/2044	शुक्र	23/03/2057	सूर्य	08/09/2065
बुध	26/09/2024	केतु	25/12/2034	शुक्र	20/01/2047	सूर्य	16/10/2057	चंद्र	28/01/2066
केतु	09/06/2025	शुक्र	04/10/2036	सूर्य	08/09/2047	चंद्र	26/09/2058	मंगल	07/05/2066
शुक्र	09/06/2027	सूर्य	17/04/2037	चंद्र	28/09/2048	मंगल	26/05/2059	राहु	18/01/2067
सूर्य	14/01/2028	चंद्र	07/03/2038	मंगल	25/06/2049	राहु	05/02/2061	गुरु	02/09/2067
चंद्र	13/01/2029	मंगल	21/10/2038	राहु	20/05/2051	गुरु	11/08/2062	शनि	29/05/2068
मंगल	26/09/2029	राहु	27/05/2040	गुरु	26/01/2053	शनि	27/05/2064	बुध	26/01/2069

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
26/01/2069		**28/05/2082**		**28/05/2086**		**26/01/2093**		**26/09/2097**	
28/05/2082		**28/05/2086**		**26/01/2093**		**26/09/2097**		**00/00/0000**	
शुक्र	17/04/2071	सूर्य	09/08/2082	चंद्र	16/12/2086	मंगल	05/05/2093	राहु	06/02/2099
सूर्य	17/12/2071	चंद्र	08/12/2082	मंगल	08/05/2087	राहु	16/01/2094		00/00/0000
चंद्र	26/01/2073	मंगल	04/03/2083	राहु	07/05/2088	गुरु	31/08/2094		00/00/0000
मंगल	06/11/2073	राहु	09/10/2083	गुरु	27/03/2089	शनि	28/05/2095		00/00/0000
राहु	06/11/2075	गुरु	21/04/2084	शनि	17/04/2090	बुध	24/01/2096		00/00/0000
गुरु	16/08/2077	शनि	08/12/2084	बुध	28/03/2091	केतु	03/05/2096		00/00/0000
शनि	27/09/2079	बुध	03/07/2085	केतु	17/08/2091	शुक्र	11/02/2097		00/00/0000
बुध	16/08/2081	केतु	26/09/2085	शुक्र	26/09/2092	सूर्य	07/05/2097		00/00/0000
केतु	28/05/2082	शुक्र	28/05/2086	सूर्य	26/01/2093	चंद्र	26/09/2097		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु
06/02/2019
16/07/2019

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/02/2019
शुक्र	12/03/2019
सूर्य	13/04/2019
चंद्र	07/06/2019
मंगल	16/07/2019

राहु - गुरु
16/07/2019
19/02/2021

गुरु	01/10/2019
शनि	02/01/2020
बुध	25/03/2020
केतु	28/04/2020
शुक्र	03/08/2020
सूर्य	01/09/2020
चंद्र	20/10/2020
मंगल	23/11/2020
राहु	19/02/2021

राहु - शनि
19/02/2021
14/01/2023

शनि	09/06/2021
बुध	15/09/2021
केतु	26/10/2021
शुक्र	18/02/2022
सूर्य	25/03/2022
चंद्र	22/05/2022
मंगल	01/07/2022
राहु	13/10/2022
गुरु	14/01/2023

राहु - बुध
14/01/2023
26/09/2024

बुध	12/04/2023
केतु	18/05/2023
शुक्र	30/08/2023
सूर्य	30/09/2023
चंद्र	20/11/2023
मंगल	27/12/2023
राहु	29/03/2024
गुरु	20/06/2024
शनि	26/09/2024

राहु - केतु
26/09/2024
09/06/2025

केतु	11/10/2024
शुक्र	22/11/2024
सूर्य	05/12/2024
चंद्र	26/12/2024
मंगल	10/01/2025
राहु	18/02/2025
गुरु	24/03/2025
शनि	03/05/2025
बुध	09/06/2025

राहु - शुक्र
09/06/2025
09/06/2027

शुक्र	08/10/2025
सूर्य	14/11/2025
चंद्र	14/01/2026
मंगल	25/02/2026
राहु	15/06/2026
गुरु	20/09/2026
शनि	14/01/2027
बुध	27/04/2027
केतु	09/06/2027

राहु - सूर्य
09/06/2027
14/01/2028

सूर्य	20/06/2027
चंद्र	08/07/2027
मंगल	21/07/2027
राहु	23/08/2027
गुरु	21/09/2027
शनि	26/10/2027
बुध	26/11/2027
केतु	09/12/2027
शुक्र	14/01/2028

राहु - चंद्र
14/01/2028
13/01/2029

चंद्र	14/02/2028
मंगल	06/03/2028
राहु	30/04/2028
गुरु	17/06/2028
शनि	14/08/2028
बुध	05/10/2028
केतु	26/10/2028
शुक्र	26/12/2028
सूर्य	13/01/2029

राहु - मंगल
13/01/2029
26/09/2029

मंगल	28/01/2029
राहु	08/03/2029
गुरु	11/04/2029
शनि	21/05/2029
बुध	26/06/2029
केतु	11/07/2029
शुक्र	23/08/2029
सूर्य	05/09/2029
चंद्र	26/09/2029

गुरु - गुरु
26/09/2029
28/02/2031

गुरु	04/12/2029
शनि	25/02/2030
बुध	09/05/2030
केतु	08/06/2030
शुक्र	03/09/2030
सूर्य	29/09/2030
चंद्र	11/11/2030
मंगल	12/12/2030
राहु	28/02/2031

गुरु - शनि
28/02/2031
05/11/2032

शनि	05/06/2031
बुध	01/09/2031
केतु	07/10/2031
शुक्र	17/01/2032
सूर्य	17/02/2032
चंद्र	09/04/2032
मंगल	15/05/2032
राहु	15/08/2032
गुरु	05/11/2032

गुरु - बुध
05/11/2032
11/05/2034

बुध	23/01/2033
केतु	24/02/2033
शुक्र	27/05/2033
सूर्य	23/06/2033
चंद्र	08/08/2033
मंगल	10/09/2033
राहु	01/12/2033
गुरु	13/02/2034
शनि	11/05/2034

गुरु - केतु
11/05/2034
25/12/2034

केतु	25/05/2034
शुक्र	01/07/2034
सूर्य	13/07/2034
चंद्र	01/08/2034
मंगल	14/08/2034
राहु	17/09/2034
गुरु	17/10/2034
शनि	22/11/2034
बुध	25/12/2034

गुरु - शुक्र
25/12/2034
04/10/2036

शुक्र	12/04/2035
सूर्य	14/05/2035
चंद्र	07/07/2035
मंगल	14/08/2035
राहु	20/11/2035
गुरु	14/02/2036
शनि	27/05/2036
बुध	27/08/2036
केतु	04/10/2036

गुरु - सूर्य
04/10/2036
17/04/2037

सूर्य	14/10/2036
चंद्र	30/10/2036
मंगल	10/11/2036
राहु	10/12/2036
गुरु	04/01/2037
शनि	04/02/2037
बुध	04/03/2037
केतु	15/03/2037
शुक्र	17/04/2037

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र
17/04/2037
07/03/2038

चंद्र	14/05/2037
मंगल	02/06/2037
राहु	20/07/2037
गुरु	02/09/2037
शनि	23/10/2037
बुध	08/12/2037
केतु	27/12/2037
शुक्र	19/02/2038
सूर्य	07/03/2038

गुरु - मंगल
07/03/2038
21/10/2038

मंगल	21/03/2038
राहु	24/04/2038
गुरु	24/05/2038
शनि	29/06/2038
बुध	31/07/2038
केतु	13/08/2038
शुक्र	20/09/2038
सूर्य	02/10/2038
चंद्र	21/10/2038

गुरु - राहु
21/10/2038
27/05/2040

राहु	16/01/2039
गुरु	04/04/2039
शनि	06/07/2039
बुध	27/09/2039
केतु	31/10/2039
शुक्र	05/02/2040
सूर्य	05/03/2040
चंद्र	23/04/2040
मंगल	27/05/2040

शनि - शनि
27/05/2040
30/05/2042

शनि	20/09/2040
बुध	02/01/2041
केतु	14/02/2041
शुक्र	16/06/2041
सूर्य	22/07/2041
चंद्र	21/09/2041
मंगल	03/11/2041
राहु	21/02/2042
गुरु	30/05/2042

शनि - बुध
30/05/2042
15/03/2044

बुध	30/08/2042
केतु	08/10/2042
शुक्र	25/01/2043
सूर्य	27/02/2043
चंद्र	22/04/2043
मंगल	31/05/2043
राहु	06/09/2043
गुरु	02/12/2043
शनि	15/03/2044

शनि - केतु
15/03/2044
10/12/2044

केतु	31/03/2044
शुक्र	15/05/2044
सूर्य	28/05/2044
चंद्र	20/06/2044
मंगल	05/07/2044
राहु	15/08/2044
गुरु	20/09/2044
शनि	02/11/2044
बुध	10/12/2044

शनि - शुक्र
10/12/2044
20/01/2047

शुक्र	17/04/2045
सूर्य	26/05/2045
चंद्र	29/07/2045
मंगल	12/09/2045
राहु	06/01/2046
गुरु	19/04/2046
शनि	19/08/2046
बुध	06/12/2046
केतु	20/01/2047

शनि - सूर्य
20/01/2047
08/09/2047

सूर्य	01/02/2047
चंद्र	20/02/2047
मंगल	05/03/2047
राहु	09/04/2047
गुरु	10/05/2047
शनि	15/06/2047
बुध	18/07/2047
केतु	01/08/2047
शुक्र	08/09/2047

शनि - चंद्र
08/09/2047
28/09/2048

चंद्र	10/10/2047
मंगल	02/11/2047
राहु	30/12/2047
गुरु	19/02/2048
शनि	20/04/2048
बुध	14/06/2048
केतु	06/07/2048
शुक्र	09/09/2048
सूर्य	28/09/2048

शनि - मंगल
28/09/2048
25/06/2049

मंगल	14/10/2048
राहु	23/11/2048
गुरु	29/12/2048
शनि	10/02/2049
बुध	20/03/2049
केतु	05/04/2049
शुक्र	20/05/2049
सूर्य	02/06/2049
चंद्र	25/06/2049

शनि - राहु
25/06/2049
20/05/2051

राहु	07/10/2049
गुरु	07/01/2050
शनि	27/04/2050
बुध	04/08/2050
केतु	13/09/2050
शुक्र	07/01/2051
सूर्य	10/02/2051
चंद्र	09/04/2051
मंगल	20/05/2051

शनि - गुरु
20/05/2051
26/01/2053

गुरु	10/08/2051
शनि	16/11/2051
बुध	11/02/2052
केतु	18/03/2052
शुक्र	29/06/2052
सूर्य	30/07/2052
चंद्र	19/09/2052
मंगल	25/10/2052
राहु	26/01/2053

बुध - बुध
26/01/2053
04/09/2054

बुध	19/04/2053
केतु	23/05/2053
शुक्र	29/08/2053
सूर्य	27/09/2053
चंद्र	15/11/2053
मंगल	19/12/2053
राहु	17/03/2054
गुरु	03/06/2054
शनि	04/09/2054

बुध - केतु
04/09/2054
03/05/2055

केतु	18/09/2054
शुक्र	28/10/2054
सूर्य	09/11/2054
चंद्र	30/11/2054
मंगल	14/12/2054
राहु	19/01/2055
गुरु	20/02/2055
शनि	30/03/2055
बुध	03/05/2055

बुध - शुक्र
03/05/2055
23/03/2057

शुक्र	26/08/2055
सूर्य	30/09/2055
चंद्र	26/11/2055
मंगल	06/01/2056
राहु	18/04/2056
गुरु	19/07/2056
शनि	05/11/2056
बुध	11/02/2057
केतु	23/03/2057

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य

23/03/2057

16/10/2057

सूर्य	03/04/2057
चंद्र	20/04/2057
मंगल	02/05/2057
राहु	02/06/2057
गुरु	30/06/2057
शनि	01/08/2057
बुध	31/08/2057
केतु	12/09/2057
शुक्र	16/10/2057

बुध - चंद्र

16/10/2057

26/09/2058

चंद्र	14/11/2057
मंगल	04/12/2057
राहु	25/01/2058
गुरु	12/03/2058
शनि	06/05/2058
बुध	23/06/2058
केतु	14/07/2058
शुक्र	09/09/2058
सूर्य	26/09/2058

बुध - मंगल

26/09/2058

26/05/2059

मंगल	10/10/2058
राहु	16/11/2058
गुरु	18/12/2058
शनि	25/01/2059
बुध	28/02/2059
केतु	14/03/2059
शुक्र	24/04/2059
सूर्य	06/05/2059
चंद्र	26/05/2059

बुध - राहु

26/05/2059

05/02/2061

राहु	27/08/2059
गुरु	18/11/2059
शनि	24/02/2060
बुध	22/05/2060
केतु	27/06/2060
शुक्र	09/10/2060
सूर्य	09/11/2060
चंद्र	31/12/2060
मंगल	05/02/2061

बुध - गुरु

05/02/2061

11/08/2062

गुरु	19/04/2061
शनि	16/07/2061
बुध	02/10/2061
केतु	03/11/2061
शुक्र	03/02/2062
सूर्य	03/03/2062
चंद्र	18/04/2062
मंगल	20/05/2062
राहु	11/08/2062

बुध - शनि

11/08/2062

27/05/2064

शनि	22/11/2062
बुध	23/02/2063
केतु	03/04/2063
शुक्र	21/07/2063
सूर्य	23/08/2063
चंद्र	16/10/2063
मंगल	23/11/2063
राहु	01/03/2064
गुरु	27/05/2064

केतु - केतु

27/05/2064

04/09/2064

केतु	02/06/2064
शुक्र	18/06/2064
सूर्य	23/06/2064
चंद्र	02/07/2064
मंगल	08/07/2064
राहु	22/07/2064
गुरु	05/08/2064
शनि	20/08/2064
बुध	04/09/2064

केतु - शुक्र

04/09/2064

15/06/2065

शुक्र	21/10/2064
सूर्य	04/11/2064
चंद्र	28/11/2064
मंगल	14/12/2064
राहु	26/01/2065
गुरु	05/03/2065
शनि	19/04/2065
बुध	29/05/2065
केतु	15/06/2065

केतु - सूर्य

15/06/2065

08/09/2065

सूर्य	19/06/2065
चंद्र	26/06/2065
मंगल	01/07/2065
राहु	14/07/2065
गुरु	25/07/2065
शनि	08/08/2065
बुध	20/08/2065
केतु	25/08/2065
शुक्र	08/09/2065

केतु - चंद्र

08/09/2065

28/01/2066

चंद्र	20/09/2065
मंगल	28/09/2065
राहु	19/10/2065
गुरु	07/11/2065
शनि	30/11/2065
बुध	20/12/2065
केतु	28/12/2065
शुक्र	21/01/2066
सूर्य	28/01/2066

केतु - मंगल

28/01/2066

07/05/2066

मंगल	03/02/2066
राहु	18/02/2066
गुरु	03/03/2066
शनि	19/03/2066
बुध	02/04/2066
केतु	07/04/2066
शुक्र	24/04/2066
सूर्य	29/04/2066
चंद्र	07/05/2066

केतु - राहु

07/05/2066

18/01/2067

राहु	15/06/2066
गुरु	19/07/2066
शनि	28/08/2066
बुध	03/10/2066
केतु	18/10/2066
शुक्र	30/11/2066
सूर्य	13/12/2066
चंद्र	03/01/2067
मंगल	18/01/2067

केतु - गुरु

18/01/2067

02/09/2067

गुरु	17/02/2067
शनि	25/03/2067
बुध	26/04/2067
केतु	10/05/2067
शुक्र	17/06/2067
सूर्य	28/06/2067
चंद्र	17/07/2067
मंगल	30/07/2067
राहु	02/09/2067

केतु - शनि

02/09/2067

29/05/2068

शनि	15/10/2067
बुध	22/11/2067
केतु	08/12/2067
शुक्र	22/01/2068
सूर्य	04/02/2068
चंद्र	27/02/2068
मंगल	14/03/2068
राहु	23/04/2068
गुरु	29/05/2068

केतु - बुध

29/05/2068

26/01/2069

बुध	02/07/2068
केतु	16/07/2068
शुक्र	26/08/2068
सूर्य	07/09/2068
चंद्र	27/09/2068
मंगल	11/10/2068
राहु	16/11/2068
गुरु	18/12/2068
शनि	26/01/2069

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
26/01/2069		**17/04/2071**		**17/12/2071**		**26/01/2073**		**06/11/2073**	
17/04/2071		**17/12/2071**		**26/01/2073**		**06/11/2073**		**06/11/2075**	
शुक्र	10/06/2069	सूर्य	29/04/2071	चंद्र	20/01/2072	मंगल	11/02/2073	राहु	23/02/2074
सूर्य	20/07/2069	चंद्र	20/05/2071	मंगल	12/02/2072	राहु	26/03/2073	गुरु	01/06/2074
चंद्र	26/09/2069	मंगल	03/06/2071	राहु	13/04/2072	गुरु	03/05/2073	शनि	24/09/2074
मंगल	12/11/2069	राहु	09/07/2071	गुरु	06/06/2072	शनि	17/06/2073	बुध	06/01/2075
राहु	14/03/2070	गुरु	11/08/2071	शनि	09/08/2072	बुध	27/07/2073	केतु	17/02/2075
गुरु	30/06/2070	शनि	18/09/2071	बुध	06/10/2072	केतु	12/08/2073	शुक्र	19/06/2075
शनि	06/11/2070	बुध	23/10/2071	केतु	30/10/2072	शुक्र	29/09/2073	सूर्य	26/07/2075
बुध	01/03/2071	केतु	06/11/2071	शुक्र	05/01/2073	सूर्य	13/10/2073	चंद्र	25/09/2075
केतु	17/04/2071	शुक्र	17/12/2071	सूर्य	26/01/2073	चंद्र	06/11/2073	मंगल	06/11/2075

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
06/11/2075		**16/08/2077**		**27/09/2079**		**16/08/2081**		**28/05/2082**	
16/08/2077		**27/09/2079**		**16/08/2081**		**28/05/2082**		**09/08/2082**	
गुरु	01/02/2076	शनि	17/12/2077	बुध	02/01/2080	केतु	02/09/2081	सूर्य	31/05/2082
शनि	14/05/2076	बुध	05/04/2078	केतु	12/02/2080	शुक्र	19/10/2081	चंद्र	06/06/2082
बुध	14/08/2076	केतु	20/05/2078	शुक्र	06/06/2080	सूर्य	03/11/2081	मंगल	11/06/2082
केतु	20/09/2076	शुक्र	25/09/2078	सूर्य	10/07/2080	चंद्र	26/11/2081	राहु	22/06/2082
शुक्र	07/01/2077	सूर्य	03/11/2078	चंद्र	06/09/2080	मंगल	13/12/2081	गुरु	01/07/2082
सूर्य	08/02/2077	चंद्र	06/01/2079	मंगल	16/10/2080	राहु	24/01/2082	शनि	13/07/2082
चंद्र	03/04/2077	मंगल	20/02/2079	राहु	27/01/2081	गुरु	03/03/2082	बुध	23/07/2082
मंगल	11/05/2077	राहु	16/06/2079	गुरु	29/04/2081	शनि	17/04/2082	केतु	27/07/2082
राहु	16/08/2077	गुरु	27/09/2079	शनि	16/08/2081	बुध	28/05/2082	शुक्र	09/08/2082

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
09/08/2082		**08/12/2082**		**04/03/2083**		**09/10/2083**		**21/04/2084**	
08/12/2082		**04/03/2083**		**09/10/2083**		**21/04/2084**		**08/12/2084**	
चंद्र	19/08/2082	मंगल	13/12/2082	राहु	05/04/2083	गुरु	04/11/2083	शनि	27/05/2084
मंगल	26/08/2082	राहु	26/12/2082	गुरु	05/05/2083	शनि	05/12/2083	बुध	29/06/2084
राहु	13/09/2082	गुरु	06/01/2083	शनि	08/06/2083	बुध	01/01/2084	केतु	12/07/2084
गुरु	29/09/2082	शनि	20/01/2083	बुध	09/07/2083	केतु	13/01/2084	शुक्र	20/08/2084
शनि	19/10/2082	बुध	01/02/2083	केतु	22/07/2083	शुक्र	14/02/2084	सूर्य	01/09/2084
बुध	05/11/2082	केतु	06/02/2083	शुक्र	28/08/2083	सूर्य	24/02/2084	चंद्र	20/09/2084
केतु	12/11/2082	शुक्र	20/02/2083	सूर्य	08/09/2083	चंद्र	11/03/2084	मंगल	03/10/2084
शुक्र	02/12/2082	सूर्य	25/02/2083	चंद्र	26/09/2083	मंगल	22/03/2084	राहु	07/11/2084
सूर्य	08/12/2082	चंद्र	04/03/2083	मंगल	09/10/2083	राहु	21/04/2084	गुरु	08/12/2084

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध	
08/12/2084	
03/07/2085	
बुध	06/01/2085
केतु	18/01/2085
शुक्र	22/02/2085
सूर्य	04/03/2085
चंद्र	21/03/2085
मंगल	02/04/2085
राहु	03/05/2085
गुरु	31/05/2085
शनि	03/07/2085

सूर्य - केतु	
03/07/2085	
26/09/2085	
केतु	08/07/2085
शुक्र	22/07/2085
सूर्य	26/07/2085
चंद्र	02/08/2085
मंगल	07/08/2085
राहु	20/08/2085
गुरु	01/09/2085
शनि	14/09/2085
बुध	26/09/2085

सूर्य - शुक्र	
26/09/2085	
28/05/2086	
शुक्र	06/11/2085
सूर्य	18/11/2085
चंद्र	08/12/2085
मंगल	22/12/2085
राहु	28/01/2086
गुरु	01/03/2086
शनि	09/04/2086
बुध	13/05/2086
केतु	28/05/2086

चंद्र - चंद्र	
28/05/2086	
16/12/2086	
चंद्र	13/06/2086
मंगल	25/06/2086
राहु	26/07/2086
गुरु	22/08/2086
शनि	23/09/2086
बुध	22/10/2086
केतु	03/11/2086
शुक्र	06/12/2086
सूर्य	16/12/2086

चंद्र - मंगल	
16/12/2086	
08/05/2087	
मंगल	25/12/2086
राहु	15/01/2087
गुरु	03/02/2087
शनि	26/02/2087
बुध	18/03/2087
केतु	26/03/2087
शुक्र	19/04/2087
सूर्य	26/04/2087
चंद्र	08/05/2087

चंद्र - राहु	
08/05/2087	
07/05/2088	
राहु	01/07/2087
गुरु	19/08/2087
शनि	16/10/2087
बुध	07/12/2087
केतु	28/12/2087
शुक्र	27/02/2088
सूर्य	16/03/2088
चंद्र	15/04/2088
मंगल	07/05/2088

चंद्र - गुरु	
07/05/2088	
27/03/2089	
गुरु	19/06/2088
शनि	09/08/2088
बुध	24/09/2088
केतु	13/10/2088
शुक्र	07/12/2088
सूर्य	23/12/2088
चंद्र	19/01/2089
मंगल	07/02/2089
राहु	27/03/2089

चंद्र - शनि	
27/03/2089	
17/04/2090	
शनि	27/05/2089
बुध	21/07/2089
केतु	13/08/2089
शुक्र	16/10/2089
सूर्य	04/11/2089
चंद्र	06/12/2089
मंगल	29/12/2089
राहु	25/02/2090
गुरु	17/04/2090

चंद्र - बुध	
17/04/2090	
28/03/2091	
बुध	05/06/2090
केतु	25/06/2090
शुक्र	21/08/2090
सूर्य	08/09/2090
चंद्र	06/10/2090
मंगल	27/10/2090
राहु	17/12/2090
गुरु	01/02/2091
शनि	28/03/2091

चंद्र - केतु	
28/03/2091	
17/08/2091	
केतु	05/04/2091
शुक्र	29/04/2091
सूर्य	06/05/2091
चंद्र	18/05/2091
मंगल	26/05/2091
राहु	16/06/2091
गुरु	05/07/2091
शनि	28/07/2091
बुध	17/08/2091

चंद्र - शुक्र	
17/08/2091	
26/09/2092	
शुक्र	24/10/2091
सूर्य	13/11/2091
चंद्र	17/12/2091
मंगल	09/01/2092
राहु	10/03/2092
गुरु	03/05/2092
शनि	07/07/2092
बुध	02/09/2092
केतु	26/09/2092

चंद्र - सूर्य	
26/09/2092	
26/01/2093	
सूर्य	02/10/2092
चंद्र	12/10/2092
मंगल	19/10/2092
राहु	06/11/2092
गुरु	23/11/2092
शनि	12/12/2092
बुध	29/12/2092
केतु	05/01/2093
शुक्र	26/01/2093

मंगल - मंगल	
26/01/2093	
05/05/2093	
मंगल	31/01/2093
राहु	15/02/2093
गुरु	01/03/2093
शनि	16/03/2093
बुध	30/03/2093
केतु	05/04/2093
शुक्र	22/04/2093
सूर्य	27/04/2093
चंद्र	05/05/2093

मंगल - राहु	
05/05/2093	
16/01/2094	
राहु	12/06/2093
गुरु	16/07/2093
शनि	26/08/2093
बुध	01/10/2093
केतु	16/10/2093
शुक्र	28/11/2093
सूर्य	10/12/2093
चंद्र	01/01/2094
मंगल	16/01/2094

मंगल - गुरु	
16/01/2094	
31/08/2094	
गुरु	15/02/2094
शनि	23/03/2094
बुध	24/04/2094
केतु	07/05/2094
शुक्र	14/06/2094
सूर्य	26/06/2094
चंद्र	15/07/2094
मंगल	28/07/2094
राहु	31/08/2094

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 7 वर्ष 6 मास 16 दिन

राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष
06/02/2019	**24/08/2026**	**24/08/2047**	**24/08/2053**	**24/08/2068**
24/08/2026	**24/08/2047**	**24/08/2053**	**24/08/2068**	**24/08/2076**
00/00/0000	शुक्र 23/09/2030	सूर्य 24/12/2047	चंद्र 24/09/2055	मंगल 28/03/2069
00/00/0000	सूर्य 24/11/2031	चंद्र 23/10/2048	मंगल 03/11/2056	बुध 01/07/2070
06/02/2019	चंद्र 24/10/2034	मंगल 04/04/2049	बुध 15/03/2059	शनि 28/03/2071
चंद्र 24/08/2020	मंगल 14/05/2036	बुध 15/03/2050	शनि 03/08/2060	गुरु 24/08/2072
मंगल 14/07/2021	बुध 03/09/2039	शनि 04/10/2050	गुरु 25/03/2063	राहु 14/07/2073
बुध 04/06/2023	शनि 14/08/2041	गुरु 24/10/2051	राहु 23/11/2064	शुक्र 02/02/2075
शनि 14/07/2024	गुरु 24/04/2045	राहु 24/06/2052	शुक्र 24/10/2067	सूर्य 15/07/2075
गुरु 24/08/2026	राहु 24/08/2047	शुक्र 24/08/2053	सूर्य 24/08/2068	चंद्र 24/08/2076

बुध 17 वर्ष	शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष	राहु 12 वर्ष
24/08/2076	**24/08/2093**	**25/08/2103**	**25/08/2122**
24/08/2093	**25/08/2103**	**25/08/2122**	**00/00/0000**
बुध 28/04/2079	शनि 28/07/2094	गुरु 28/12/2106	राहु 25/12/2123
शनि 23/11/2080	गुरु 01/05/2096	राहु 06/02/2109	शुक्र 25/04/2126
गुरु 20/11/2083	राहु 10/06/2097	शुक्र 18/10/2112	सूर्य 25/12/2126
राहु 10/10/2085	शुक्र 22/05/2099	सूर्य 07/11/2113	चंद्र 07/02/2127
शुक्र 29/01/2089	सूर्य 11/12/2099	चंद्र 28/06/2116	00/00/0000
सूर्य 09/01/2090	चंद्र 02/05/2101	मंगल 24/11/2117	00/00/0000
चंद्र 21/05/2092	मंगल 27/01/2102	बुध 20/11/2120	00/00/0000
मंगल 24/08/2093	बुध 25/08/2103	शनि 25/08/2122	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
06/02/2019		24/08/2020		14/07/2021		04/06/2023		14/07/2024	
24/08/2020		14/07/2021		04/06/2023		14/07/2024		24/08/2026	
चंद्र	18/03/2019	मंगल	17/09/2020	बुध	31/10/2021	शनि	12/07/2023	गुरु	27/11/2024
मंगल	02/05/2019	बुध	07/11/2020	शनि	03/01/2022	गुरु	21/09/2023	राहु	20/02/2025
बुध	06/08/2019	शनि	07/12/2020	गुरु	04/05/2022	राहु	05/11/2023	शुक्र	20/07/2025
शनि	02/10/2019	गुरु	02/02/2021	राहु	20/07/2022	शुक्र	23/01/2024	सूर्य	01/09/2025
गुरु	17/01/2020	राहु	10/03/2021	शुक्र	01/12/2022	सूर्य	15/02/2024	चंद्र	17/12/2025
राहु	24/03/2020	शुक्र	12/05/2021	सूर्य	08/01/2023	चंद्र	11/04/2024	मंगल	12/02/2026
शुक्र	21/07/2020	सूर्य	30/05/2021	चंद्र	14/04/2023	मंगल	11/05/2024	बुध	14/06/2026
सूर्य	24/08/2020	चंद्र	14/07/2021	मंगल	04/06/2023	बुध	14/07/2024	शनि	24/08/2026

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
24/08/2026		23/09/2030		24/11/2031		24/10/2034		14/05/2036	
23/09/2030		24/11/2031		24/10/2034		14/05/2036		03/09/2039	
शुक्र	10/06/2027	सूर्य	17/10/2030	चंद्र	20/04/2032	मंगल	05/12/2034	बुध	20/11/2036
सूर्य	01/09/2027	चंद्र	15/12/2030	मंगल	07/07/2032	बुध	04/03/2035	शनि	12/03/2037
चंद्र	26/03/2028	मंगल	16/01/2031	बुध	22/12/2032	शनि	26/04/2035	गुरु	10/10/2037
मंगल	15/07/2028	बुध	24/03/2031	शनि	31/03/2033	गुरु	04/08/2035	राहु	21/02/2038
बुध	06/03/2029	शनि	02/05/2031	गुरु	04/10/2033	राहु	06/10/2035	शुक्र	14/10/2038
शनि	22/07/2029	गुरु	16/07/2031	राहु	31/01/2034	शुक्र	25/01/2036	सूर्य	20/12/2038
गुरु	11/04/2030	राहु	02/09/2031	शुक्र	26/08/2034	सूर्य	25/02/2036	चंद्र	06/06/2039
राहु	23/09/2030	शुक्र	24/11/2031	सूर्य	24/10/2034	चंद्र	14/05/2036	मंगल	03/09/2039

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
03/09/2039		14/08/2041		24/04/2045		24/08/2047		24/12/2047	
14/08/2041		24/04/2045		24/08/2047		24/12/2047		23/10/2048	
शनि	08/11/2039	गुरु	08/04/2042	राहु	28/07/2045	सूर्य	31/08/2047	चंद्र	04/02/2048
गुरु	12/03/2040	राहु	05/09/2042	शुक्र	09/01/2046	चंद्र	17/09/2047	मंगल	27/02/2048
राहु	30/05/2040	शुक्र	25/05/2043	सूर्य	26/02/2046	मंगल	26/09/2047	बुध	15/04/2048
शुक्र	15/10/2040	सूर्य	08/08/2043	चंद्र	24/06/2046	बुध	15/10/2047	शनि	13/05/2048
सूर्य	24/11/2040	चंद्र	12/02/2044	मंगल	26/08/2046	शनि	26/10/2047	गुरु	05/07/2048
चंद्र	02/03/2041	मंगल	22/05/2044	बुध	07/01/2047	गुरु	17/11/2047	राहु	08/08/2048
मंगल	24/04/2041	बुध	20/12/2044	शनि	27/03/2047	राहु	30/11/2047	शुक्र	06/10/2048
बुध	14/08/2041	शनि	24/04/2045	गुरु	24/08/2047	शुक्र	24/12/2047	सूर्य	23/10/2048

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल	सूर्य - बुध	सूर्य - शनि	सूर्य - गुरु	सूर्य - राहु
23/10/2048	**04/04/2049**	**15/03/2050**	**04/10/2050**	**24/10/2051**
04/04/2049	**15/03/2050**	**04/10/2050**	**24/10/2051**	**24/06/2052**
मंगल 04/11/2048	बुध 28/05/2049	शनि 02/04/2050	गुरु 10/12/2050	राहु 20/11/2051
बुध 30/11/2048	शनि 29/06/2049	गुरु 08/05/2050	राहु 22/01/2051	शुक्र 07/01/2052
शनि 15/12/2048	गुरु 29/08/2049	राहु 31/05/2050	शुक्र 07/04/2051	सूर्य 20/01/2052
गुरु 13/01/2049	राहु 06/10/2049	शुक्र 09/07/2050	सूर्य 29/04/2051	चंद्र 23/02/2052
राहु 31/01/2049	शुक्र 12/12/2049	सूर्य 20/07/2050	चंद्र 21/06/2051	मंगल 12/03/2052
शुक्र 03/03/2049	सूर्य 31/12/2049	चंद्र 18/08/2050	मंगल 20/07/2051	बुध 19/04/2052
सूर्य 12/03/2049	चंद्र 17/02/2050	मंगल 02/09/2050	बुध 18/09/2051	शनि 12/05/2052
चंद्र 04/04/2049	मंगल 15/03/2050	बुध 04/10/2050	शनि 24/10/2051	गुरु 24/06/2052

सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - बुध	चंद्र - शनि
24/06/2052	**24/08/2053**	**24/09/2055**	**03/11/2056**	**15/03/2059**
24/08/2053	**24/09/2055**	**03/11/2056**	**15/03/2059**	**03/08/2060**
शुक्र 15/09/2052	चंद्र 07/12/2053	मंगल 24/10/2055	बुध 18/03/2057	शनि 01/05/2059
सूर्य 08/10/2052	मंगल 02/02/2054	बुध 27/12/2055	शनि 06/06/2057	गुरु 29/07/2059
चंद्र 06/12/2052	बुध 02/06/2054	शनि 02/02/2056	गुरु 05/11/2057	राहु 24/09/2059
मंगल 07/01/2053	शनि 11/08/2054	गुरु 14/04/2056	राहु 09/02/2058	शुक्र 31/12/2059
बुध 15/03/2053	गुरु 23/12/2054	राहु 29/05/2056	शुक्र 26/07/2058	सूर्य 28/01/2060
शनि 23/04/2053	राहु 17/03/2055	शुक्र 16/08/2056	सूर्य 12/09/2058	चंद्र 08/04/2060
गुरु 07/07/2053	शुक्र 12/08/2055	सूर्य 07/09/2056	चंद्र 10/01/2059	मंगल 15/05/2060
राहु 24/08/2053	सूर्य 24/09/2055	चंद्र 03/11/2056	मंगल 15/03/2059	बुध 03/08/2060

चंद्र - गुरु	चंद्र - राहु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल
03/08/2060	**25/03/2063**	**23/11/2064**	**24/10/2067**	**24/08/2068**
25/03/2063	**23/11/2064**	**24/10/2067**	**24/08/2068**	**28/03/2069**
गुरु 20/01/2061	राहु 01/06/2063	शुक्र 18/06/2065	सूर्य 10/11/2067	मंगल 09/09/2068
राहु 07/05/2061	शुक्र 27/09/2063	सूर्य 16/08/2065	चंद्र 22/12/2067	बुध 13/10/2068
शुक्र 10/11/2061	सूर्य 31/10/2063	चंद्र 11/01/2066	मंगल 14/01/2068	शनि 02/11/2068
सूर्य 03/01/2062	चंद्र 23/01/2064	मंगल 31/03/2066	बुध 02/03/2068	गुरु 10/12/2068
चंद्र 17/05/2062	मंगल 09/03/2064	बुध 15/09/2066	शनि 30/03/2068	राहु 03/01/2069
मंगल 27/07/2062	बुध 12/06/2064	शनि 22/12/2066	गुरु 23/05/2068	शुक्र 14/02/2069
बुध 26/12/2062	शनि 08/08/2064	गुरु 28/06/2067	राहु 25/06/2068	सूर्य 26/02/2069
शनि 25/03/2063	गुरु 23/11/2064	राहु 24/10/2067	शुक्र 24/08/2068	चंद्र 28/03/2069

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध	मंगल - शनि	मंगल - गुरु	मंगल - राहु	मंगल - शुक्र
28/03/2069	**01/07/2070**	**28/03/2071**	**24/08/2072**	**14/07/2073**
01/07/2070	**28/03/2071**	**24/08/2072**	**14/07/2073**	**02/02/2075**
बुध 08/06/2069	शनि 26/07/2070	गुरु 27/06/2071	राहु 29/09/2072	शुक्र 02/11/2073
शनि 21/07/2069	गुरु 12/09/2070	राहु 23/08/2071	शुक्र 01/12/2072	सूर्य 03/12/2073
गुरु 10/10/2069	राहु 12/10/2070	शुक्र 01/12/2071	सूर्य 19/12/2072	चंद्र 20/02/2074
राहु 30/11/2069	शुक्र 03/12/2070	सूर्य 30/12/2071	चंद्र 02/02/2073	मंगल 03/04/2074
शुक्र 27/02/2070	सूर्य 18/12/2070	चंद्र 10/03/2072	मंगल 26/02/2073	बुध 02/07/2074
सूर्य 25/03/2070	चंद्र 25/01/2071	मंगल 17/04/2072	बुध 18/04/2073	शनि 23/08/2074
चंद्र 28/05/2070	मंगल 14/02/2071	बुध 07/07/2072	शनि 18/05/2073	गुरु 01/12/2074
मंगल 01/07/2070	बुध 28/03/2071	शनि 24/08/2072	गुरु 14/07/2073	राहु 02/02/2075

मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	बुध - बुध	बुध - शनि	बुध - गुरु
02/02/2075	**15/07/2075**	**24/08/2076**	**28/04/2079**	**23/11/2080**
15/07/2075	**24/08/2076**	**28/04/2079**	**23/11/2080**	**20/11/2083**
सूर्य 11/02/2075	चंद्र 09/09/2075	बुध 24/01/2077	शनि 20/06/2079	गुरु 03/06/2081
चंद्र 06/03/2075	मंगल 09/10/2075	शनि 25/04/2077	गुरु 29/09/2079	राहु 02/10/2081
मंगल 18/03/2075	बुध 12/12/2075	गुरु 14/10/2077	राहु 02/12/2079	शुक्र 03/05/2082
बुध 13/04/2075	शनि 19/01/2076	राहु 30/01/2078	शुक्र 23/03/2080	सूर्य 02/07/2082
शनि 28/04/2075	गुरु 30/03/2076	शुक्र 08/08/2078	सूर्य 24/04/2080	चंद्र 01/12/2082
गुरु 26/05/2075	राहु 14/05/2076	सूर्य 02/10/2078	चंद्र 13/07/2080	मंगल 20/02/2083
राहु 13/06/2075	शुक्र 01/08/2076	चंद्र 15/02/2079	मंगल 24/08/2080	बुध 11/08/2083
शुक्र 15/07/2075	सूर्य 24/08/2076	मंगल 28/04/2079	बुध 23/11/2080	शनि 20/11/2083

बुध - राहु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल
20/11/2083	**10/10/2085**	**29/01/2089**	**09/01/2090**	**21/05/2092**
10/10/2085	**29/01/2089**	**09/01/2090**	**21/05/2092**	**24/08/2093**
राहु 05/02/2084	शुक्र 02/06/2086	सूर्य 18/02/2089	चंद्र 09/05/2090	मंगल 24/06/2092
शुक्र 18/06/2084	सूर्य 08/08/2086	चंद्र 07/04/2089	मंगल 12/07/2090	बुध 04/09/2092
सूर्य 26/07/2084	चंद्र 23/01/2087	मंगल 02/05/2089	बुध 25/11/2090	शनि 17/10/2092
चंद्र 30/10/2084	मंगल 22/04/2087	बुध 25/06/2089	शनि 13/02/2091	गुरु 06/01/2093
मंगल 20/12/2084	बुध 29/10/2087	शनि 27/07/2089	गुरु 14/07/2091	राहु 26/02/2093
बुध 08/04/2085	शनि 18/02/2088	गुरु 26/09/2089	राहु 18/10/2091	शुक्र 26/05/2093
शनि 11/06/2085	गुरु 17/09/2088	राहु 03/11/2089	शुक्र 03/04/2092	सूर्य 21/06/2093
गुरु 10/10/2085	राहु 29/01/2089	शुक्र 09/01/2090	सूर्य 21/05/2092	चंद्र 24/08/2093

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि	
24/08/2093	
28/07/2094	
शनि	24/09/2093
गुरु	23/11/2093
राहु	30/12/2093
शुक्र	06/03/2094
सूर्य	25/03/2094
चंद्र	11/05/2094
मंगल	05/06/2094
बुध	28/07/2094

शनि - गुरु	
28/07/2094	
01/05/2096	
गुरु	18/11/2094
राहु	28/01/2095
शुक्र	02/06/2095
सूर्य	08/07/2095
चंद्र	05/10/2095
मंगल	22/11/2095
बुध	02/03/2096
शनि	01/05/2096

शनि - राहु	
01/05/2096	
10/06/2097	
राहु	15/06/2096
शुक्र	02/09/2096
सूर्य	24/09/2096
चंद्र	19/11/2096
मंगल	20/12/2096
बुध	21/02/2097
शनि	31/03/2097
गुरु	10/06/2097

शनि - शुक्र	
10/06/2097	
22/05/2099	
शुक्र	26/10/2097
सूर्य	05/12/2097
चंद्र	14/03/2098
मंगल	05/05/2098
बुध	25/08/2098
शनि	30/10/2098
गुरु	04/03/2099
राहु	22/05/2099

शनि - सूर्य	
22/05/2099	
11/12/2099	
सूर्य	02/06/2099
चंद्र	30/06/2099
मंगल	15/07/2099
बुध	16/08/2099
शनि	04/09/2099
गुरु	10/10/2099
राहु	01/11/2099
शुक्र	11/12/2099

शनि - चंद्र	
11/12/2099	
02/05/2101	
चंद्र	19/02/2100
मंगल	29/03/2100
बुध	16/06/2100
शनि	02/08/2100
गुरु	31/10/2100
राहु	26/12/2100
शुक्र	04/04/2101
सूर्य	02/05/2101

शनि - मंगल	
02/05/2101	
27/01/2102	
मंगल	22/05/2101
बुध	03/07/2101
शनि	28/07/2101
गुरु	14/09/2101
राहु	14/10/2101
शुक्र	06/12/2101
सूर्य	21/12/2101
चंद्र	27/01/2102

शनि - बुध	
27/01/2102	
25/08/2103	
बुध	28/04/2102
शनि	20/06/2102
गुरु	29/09/2102
राहु	02/12/2102
शुक्र	24/03/2103
सूर्य	25/04/2103
चंद्र	14/07/2103
मंगल	25/08/2103

गुरु - गुरु	
25/08/2103	
28/12/2106	
गुरु	27/03/2104
राहु	10/08/2104
शुक्र	04/04/2105
सूर्य	11/06/2105
चंद्र	28/11/2105
मंगल	26/02/2106
बुध	06/09/2106
शनि	28/12/2106

गुरु - राहु	
28/12/2106	
06/02/2109	
राहु	24/03/2107
शुक्र	21/08/2107
सूर्य	03/10/2107
चंद्र	18/01/2108
मंगल	15/03/2108
बुध	14/07/2108
शनि	24/09/2108
गुरु	06/02/2109

गुरु - शुक्र	
06/02/2109	
18/10/2112	
शुक्र	27/10/2109
सूर्य	10/01/2110
चंद्र	16/07/2110
मंगल	24/10/2110
बुध	24/05/2111
शनि	26/09/2111
गुरु	21/05/2112
राहु	18/10/2112

गुरु - सूर्य	
18/10/2112	
07/11/2113	
सूर्य	08/11/2112
चंद्र	01/01/2113
मंगल	29/01/2113
बुध	31/03/2113
शनि	06/05/2113
गुरु	12/07/2113
राहु	24/08/2113
शुक्र	07/11/2113

गुरु - चंद्र	
07/11/2113	
28/06/2116	
चंद्र	21/03/2114
मंगल	31/05/2114
बुध	30/10/2114
शनि	27/01/2115
गुरु	16/07/2115
राहु	31/10/2115
शुक्र	05/05/2116
सूर्य	28/06/2116

गुरु - मंगल	
28/06/2116	
24/11/2117	
मंगल	05/08/2116
बुध	25/10/2116
शनि	12/12/2116
गुरु	12/03/2117
राहु	08/05/2117
शुक्र	16/08/2117
सूर्य	14/09/2117
चंद्र	24/11/2117

गुरु - बुध	
24/11/2117	
20/11/2120	
बुध	15/05/2118
शनि	24/08/2118
गुरु	04/03/2119
राहु	04/07/2119
शुक्र	01/02/2120
सूर्य	02/04/2120
चंद्र	01/09/2120
मंगल	20/11/2120

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 2 वर्ष 7 मास 27 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
06/02/2019		04/10/2021		04/10/2025		05/10/2030		04/10/2036	
04/10/2021		04/10/2025		05/10/2030		04/10/2036		05/10/2043	
	06/02/2019	भ्राम	16/03/2022	भद्रि	15/06/2026	उल्क	05/10/2031	सिद्ध	13/02/2038
भ्राम	06/05/2019	भद्रि	05/10/2022	उल्क	15/04/2027	सिद्ध	04/12/2032	संक	04/09/2039
भद्रि	05/10/2019	उल्क	05/06/2023	सिद्ध	04/04/2028	संक	05/04/2034	मंग	14/11/2039
उल्क	04/04/2020	सिद्ध	15/03/2024	संक	15/05/2029	मंग	05/06/2034	पिंग	04/04/2040
सिद्ध	03/11/2020	संक	03/02/2025	मंग	05/07/2029	पिंग	05/10/2034	धांय	03/11/2040
संक	05/07/2021	मंग	15/03/2025	पिंग	14/10/2029	धांय	05/04/2035	भ्राम	15/08/2041
मंग	04/08/2021	पिंग	05/06/2025	धांय	16/03/2030	भ्राम	05/12/2035	भद्रि	05/08/2042
पिंग	04/10/2021	धांय	04/10/2025	भ्राम	05/10/2030	भद्रि	04/10/2036	उल्क	05/10/2043

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
05/10/2043		05/10/2051		04/10/2052		05/10/2054		04/10/2057	
05/10/2051		04/10/2052		05/10/2054		04/10/2057		04/10/2061	
संक	15/07/2045	मंग	15/10/2051	पिंग	14/11/2052	धांय	04/01/2055	भ्राम	16/03/2058
मंग	04/10/2045	पिंग	04/11/2051	धांय	13/01/2053	भ्राम	06/05/2055	भद्रि	05/10/2058
पिंग	16/03/2046	धांय	05/12/2051	भ्राम	05/04/2053	भद्रि	05/10/2055	उल्क	05/06/2059
धांय	14/11/2046	भ्राम	14/01/2052	भद्रि	15/07/2053	उल्क	04/04/2056	सिद्ध	15/03/2060
भ्राम	05/10/2047	भद्रि	05/03/2052	उल्क	14/11/2053	सिद्ध	03/11/2056	संक	03/02/2061
भद्रि	14/11/2048	उल्क	05/05/2052	सिद्ध	05/04/2054	संक	05/07/2057	मंग	15/03/2061
उल्क	16/03/2050	सिद्ध	15/07/2052	संक	14/09/2054	मंग	04/08/2057	पिंग	05/06/2061
सिद्ध	05/10/2051	संक	04/10/2052	मंग	05/10/2054	पिंग	04/10/2057	धांय	04/10/2061

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
04/10/2061	**05/10/2066**	**04/10/2072**	**05/10/2079**	**05/10/2087**
05/10/2066	**04/10/2072**	**05/10/2079**	**05/10/2087**	**04/10/2088**
भद्रि 15/06/2062	उल्क 05/10/2067	सिद्ध 13/02/2074	संक 15/07/2081	मंग 15/10/2087
उल्क 15/04/2063	सिद्ध 04/12/2068	संक 04/09/2075	मंग 04/10/2081	पिंग 04/11/2087
सिद्ध 04/04/2064	संक 05/04/2070	मंग 14/11/2075	पिंग 16/03/2082	धांय 05/12/2087
संक 15/05/2065	मंग 05/06/2070	पिंग 04/04/2076	धांय 14/11/2082	भ्राम 14/01/2088
मंग 05/07/2065	पिंग 05/10/2070	धांय 03/11/2076	भ्राम 05/10/2083	भद्रि 05/03/2088
पिंग 14/10/2065	धांय 05/04/2071	भ्राम 15/08/2077	भद्रि 14/11/2084	उल्क 05/05/2088
धांय 16/03/2066	भ्राम 05/12/2071	भद्रि 05/08/2078	उल्क 16/03/2086	सिद्ध 15/07/2088
भ्राम 05/10/2066	भद्रि 04/10/2072	उल्क 05/10/2079	सिद्ध 05/10/2087	संक 04/10/2088

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
04/10/2088	**05/10/2090**	**04/10/2093**	**04/10/2097**	**06/10/2102**
05/10/2090	**04/10/2093**	**04/10/2097**	**06/10/2102**	**05/10/2108**
पिंग 14/11/2088	धांय 04/01/2091	भ्राम 16/03/2094	भद्रि 15/06/2098	उल्क 06/10/2103
धांय 13/01/2089	भ्राम 06/05/2091	भद्रि 05/10/2094	उल्क 15/04/2099	सिद्ध 05/12/2104
भ्राम 05/04/2089	भद्रि 05/10/2091	उल्क 05/06/2095	सिद्ध 05/04/2100	संक 06/04/2106
भद्रि 15/07/2089	उल्क 04/04/2092	सिद्ध 15/03/2096	संक 16/05/2101	मंग 06/06/2106
उल्क 14/11/2089	सिद्ध 03/11/2092	संक 03/02/2097	मंग 06/07/2101	पिंग 06/10/2106
सिद्ध 05/04/2090	संक 05/07/2093	मंग 15/03/2097	पिंग 15/10/2101	धांय 06/04/2107
संक 14/09/2090	मंग 04/08/2093	पिंग 05/06/2097	धांय 17/03/2102	भ्राम 06/12/2107
मंग 05/10/2090	पिंग 04/10/2093	धांय 04/10/2097	भ्राम 06/10/2102	भद्रि 05/10/2108

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
05/10/2108	**06/10/2115**	**06/10/2123**	**05/10/2124**	**06/10/2126**
06/10/2115	**06/10/2123**	**05/10/2124**	**06/10/2126**	**00/00/0000**
सिद्ध 14/02/2110	संक 16/07/2117	मंग 16/10/2123	पिंग 15/11/2124	धांय 05/01/2127
संक 05/09/2111	मंग 05/10/2117	पिंग 05/11/2123	धांय 14/01/2125	भ्राम 07/02/2127
मंग 15/11/2111	पिंग 17/03/2118	धांय 06/12/2123	भ्राम 06/04/2125	00/00/0000
पिंग 05/04/2112	धांय 15/11/2118	भ्राम 15/01/2124	भद्रि 16/07/2125	00/00/0000
धांय 04/11/2112	भ्राम 06/10/2119	भद्रि 06/03/2124	उल्क 15/11/2125	00/00/0000
भ्राम 16/08/2113	भद्रि 15/11/2120	उल्क 06/05/2124	सिद्ध 06/04/2126	00/00/0000
भद्रि 06/08/2114	उल्क 17/03/2122	सिद्ध 16/07/2124	संक 15/09/2126	00/00/0000
उल्क 06/10/2115	सिद्ध 06/10/2123	संक 05/10/2124	मंग 06/10/2126	00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 11 वर्ष 11 मास 1 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : शतभिषा - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मीन 10 वर्ष	
06/02/2019		08/01/2031		08/01/2040		07/01/2045		08/01/2066	
08/01/2031		08/01/2040		07/01/2045		08/01/2066		08/01/2076	
	06/02/2019	कन्या	18/12/2031	सिंह	23/04/2040	कर्क	23/02/2050	मीन	08/03/2067
कन्या	03/09/2019	सिंह	26/06/2032	कर्क	13/07/2041	मीन	03/08/2052	कुंभ	25/08/2067
सिंह	07/08/2020	कर्क	07/09/2034	मीन	10/02/2042	कुंभ	26/07/2053	मक	11/02/2068
कर्क	04/07/2024	मीन	24/09/2035	कुंभ	06/05/2042	मक	18/07/2054	धनु	11/04/2069
मीन	15/05/2026	कुंभ	24/02/2036	मक	30/07/2042	धनु	26/12/2056	वृश्चि	02/02/2070
कुंभ	11/02/2027	मक	26/07/2036	धनु	28/02/2043	वृश्चि	11/09/2058	तुला	14/12/2071
मक	10/11/2027	धनु	12/08/2037	वृश्चि	26/07/2043	तुला	08/08/2062	कन्या	30/12/2072
धनु	19/09/2029	वृश्चि	06/05/2038	तुला	30/06/2044	कन्या	19/10/2064	सिंह	30/07/2073
वृश्चि	08/01/2031	तुला	08/01/2040	कन्या	07/01/2045	सिंह	08/01/2066	कर्क	08/01/2076

कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
08/01/2076		08/01/2080		08/01/2084		08/01/2094		08/01/2101	
08/01/2080		08/01/2084		08/01/2094		08/01/2101		00/00/0000	
कुंभ	16/03/2076	मक	16/03/2080	धनु	08/03/2085	वृश्चि	04/08/2094	तुला	01/01/2104
मक	23/05/2076	धनु	02/09/2080	वृश्चि	30/12/2085	तुला	22/11/2095	कन्या	07/02/2105
धनु	09/11/2076	वृश्चि	30/12/2080	तुला	10/11/2087	कन्या	16/08/2096		00/00/0000
वृश्चि	08/03/2077	तुला	28/09/2081	कन्या	26/11/2088	सिंह	12/01/2097		00/00/0000
तुला	05/12/2077	कन्या	27/02/2082	सिंह	26/06/2089	कर्क	28/09/2098		00/00/0000
कन्या	06/05/2078	सिंह	23/05/2082	कर्क	05/12/2091	मीन	22/07/2099		00/00/0000
सिंह	30/07/2078	कर्क	15/05/2083	मीन	02/02/2093	कुंभ	18/11/2099		00/00/0000
कर्क	22/07/2079	मीन	01/11/2083	कुंभ	22/07/2093	मक	17/03/2100		00/00/0000
मीन	08/01/2080	कुंभ	08/01/2084	मक	08/01/2094	धनु	08/01/2101		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - कन्या		तुला - सिंह		तुला - कर्क		तुला - मीन		तुला - कुंभ	
06/02/2019		**03/09/2019**		**07/08/2020**		**04/07/2024**		**15/05/2026**	
03/09/2019		**07/08/2020**		**04/07/2024**		**15/05/2026**		**11/02/2027**	
	00/00/0000	सिंह	22/09/2019	कर्क	22/07/2021	मीन	21/09/2024	कुंभ	28/05/2026
	00/00/0000	कर्क	14/12/2019	मीन	04/01/2022	कुंभ	23/10/2024	मक	09/06/2026
	00/00/0000	मीन	23/01/2020	कुंभ	11/03/2022	मक	24/11/2024	धनु	11/07/2026
	00/00/0000	कुंभ	08/02/2020	मक	17/05/2022	धनु	11/02/2025	वृश्चि	02/08/2026
	00/00/0000	मक	23/02/2020	धनु	29/10/2022	वृश्चि	07/04/2025	तुला	22/09/2026
	06/02/2019	धनु	03/04/2020	वृश्चि	23/02/2023	तुला	11/08/2025	कन्या	20/10/2026
धनु	23/03/2019	वृश्चि	01/05/2020	तुला	15/11/2023	कन्या	21/10/2025	सिंह	05/11/2026
वृश्चि	12/05/2019	तुला	03/07/2020	कन्या	12/04/2024	सिंह	30/11/2025	कर्क	10/01/2027
तुला	03/09/2019	कन्या	07/08/2020	सिंह	04/07/2024	कर्क	15/05/2026	मीन	11/02/2027

तुला - मक		तुला - धनु		तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या		कन्या - सिंह	
11/02/2027		**10/11/2027**		**19/09/2029**		**08/01/2031**		**18/12/2031**	
10/11/2027		**19/09/2029**		**08/01/2031**		**18/12/2031**		**26/06/2032**	
मक	23/02/2027	धनु	28/01/2028	वृश्चि	28/10/2029	कन्या	13/02/2031	सिंह	29/12/2031
धनु	27/03/2027	वृश्चि	23/03/2028	तुला	24/01/2030	सिंह	05/03/2031	कर्क	14/02/2032
वृश्चि	18/04/2027	तुला	27/07/2028	कन्या	15/03/2030	कर्क	28/05/2031	मीन	07/03/2032
तुला	08/06/2027	कन्या	06/10/2028	सिंह	12/04/2030	मीन	07/07/2031	कुंभ	16/03/2032
कन्या	06/07/2027	सिंह	15/11/2028	कर्क	06/08/2030	कुंभ	23/07/2031	मक	25/03/2032
सिंह	22/07/2027	कर्क	30/04/2029	मीन	30/09/2030	मक	08/08/2031	धनु	16/04/2032
कर्क	26/09/2027	मीन	18/07/2029	कुंभ	22/10/2030	धनु	17/09/2031	वृश्चि	01/05/2032
मीन	28/10/2027	कुंभ	18/08/2029	मक	13/11/2030	वृश्चि	15/10/2031	तुला	06/06/2032
कुंभ	10/11/2027	मक	19/09/2029	धनु	08/01/2031	तुला	18/12/2031	कन्या	26/06/2032

कन्या - कर्क		कन्या - मीन		कन्या - कुंभ		कन्या - मक		कन्या - धनु	
26/06/2032		**07/09/2034**		**24/09/2035**		**24/02/2036**		**26/07/2036**	
07/09/2034		**24/09/2035**		**24/02/2036**		**26/07/2036**		**12/08/2037**	
कर्क	08/01/2033	मीन	21/10/2034	कुंभ	01/10/2035	मक	02/03/2036	धनु	08/09/2036
मीन	11/04/2033	कुंभ	08/11/2034	मक	08/10/2035	धनु	20/03/2036	वृश्चि	09/10/2036
कुंभ	19/05/2033	मक	26/11/2034	धनु	26/10/2035	वृश्चि	01/04/2036	तुला	19/12/2036
मक	25/06/2033	धनु	09/01/2035	वृश्चि	07/11/2035	तुला	30/04/2036	कन्या	28/01/2037
धनु	26/09/2033	वृश्चि	09/02/2035	तुला	06/12/2035	कन्या	16/05/2036	सिंह	20/02/2037
वृश्चि	01/12/2033	तुला	21/04/2035	कन्या	22/12/2035	सिंह	24/05/2036	कर्क	24/05/2037
तुला	29/04/2034	कन्या	31/05/2035	सिंह	31/12/2035	कर्क	01/07/2036	मीन	07/07/2037
कन्या	22/07/2034	सिंह	23/06/2035	कर्क	06/02/2036	मीन	19/07/2036	कुंभ	25/07/2037
सिंह	07/09/2034	कर्क	24/09/2035	मीन	24/02/2036	कुंभ	26/07/2036	मक	12/08/2037

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - वृश्चि	कन्या - तुला	सिंह - सिंह	सिंह - कर्क	सिंह - मीन
12/08/2037	**06/05/2038**	**08/01/2040**	**23/04/2040**	**13/07/2041**
06/05/2038	**08/01/2040**	**23/04/2040**	**13/07/2041**	**10/02/2042**
वृश्चि 03/09/2037	तुला 28/08/2038	सिंह 14/01/2040	कर्क 10/08/2040	मीन 07/08/2041
तुला 22/10/2037	कन्या 31/10/2038	कर्क 09/02/2040	मीन 01/10/2040	कुंभ 17/08/2041
कन्या 19/11/2037	सिंह 06/12/2038	मीन 21/02/2040	कुंभ 22/10/2040	मक 27/08/2041
सिंह 05/12/2037	कर्क 04/05/2039	कुंभ 26/02/2040	मक 11/11/2040	धनु 20/09/2041
कर्क 08/02/2038	मीन 14/07/2039	मक 02/03/2040	धनु 02/01/2041	वृश्चि 08/10/2041
मीन 11/03/2038	कुंभ 12/08/2039	धनु 15/03/2040	वृश्चि 08/02/2041	तुला 16/11/2041
कुंभ 24/03/2038	मक 09/09/2039	वृश्चि 23/03/2040	तुला 02/05/2041	कन्या 08/12/2041
मक 05/04/2038	धनु 19/11/2039	तुला 12/04/2040	कन्या 17/06/2041	सिंह 21/12/2041
धनु 06/05/2038	वृश्चि 08/01/2040	कन्या 23/04/2040	सिंह 13/07/2041	कर्क 10/02/2042

सिंह - कुंभ	सिंह - मक	सिंह - धनु	सिंह - वृश्चि	सिंह - तुला
10/02/2042	**06/05/2042**	**30/07/2042**	**28/02/2043**	**26/07/2043**
06/05/2042	**30/07/2042**	**28/02/2043**	**26/07/2043**	**30/06/2044**
कुंभ 14/02/2042	मक 10/05/2042	धनु 24/08/2042	वृश्चि 12/03/2043	तुला 28/09/2043
मक 18/02/2042	धनु 20/05/2042	वृश्चि 10/09/2042	तुला 08/04/2043	कन्या 02/11/2043
धनु 28/02/2042	वृश्चि 27/05/2042	तुला 20/10/2042	कन्या 24/04/2043	सिंह 22/11/2043
वृश्चि 07/03/2042	तुला 12/06/2042	कन्या 11/11/2042	सिंह 03/05/2043	कर्क 13/02/2044
तुला 23/03/2042	कन्या 21/06/2042	सिंह 23/11/2042	कर्क 08/06/2043	मीन 23/03/2044
कन्या 01/04/2042	सिंह 26/06/2042	कर्क 14/01/2043	मीन 25/06/2043	कुंभ 08/04/2044
सिंह 06/04/2042	कर्क 17/07/2042	मीन 08/02/2043	कुंभ 02/07/2043	मक 24/04/2044
कर्क 27/04/2042	मीन 26/07/2042	कुंभ 18/02/2043	मक 09/07/2043	धनु 02/06/2044
मीन 06/05/2042	कुंभ 30/07/2042	मक 28/02/2043	धनु 26/07/2043	वृश्चि 30/06/2044

सिंह - कन्या	कर्क - कर्क	कर्क - मीन	कर्क - कुंभ	कर्क - मक
30/06/2044	**07/01/2045**	**23/02/2050**	**03/08/2052**	**26/07/2053**
07/01/2045	**23/02/2050**	**03/08/2052**	**26/07/2053**	**18/07/2054**
कन्या 20/07/2044	कर्क 10/04/2046	मीन 07/06/2050	कुंभ 20/08/2052	मक 11/08/2053
सिंह 31/07/2044	मीन 13/11/2046	कुंभ 18/07/2050	मक 05/09/2052	धनु 22/09/2053
कर्क 16/09/2044	कुंभ 09/02/2047	मक 29/08/2050	धनु 17/10/2052	वृश्चि 21/10/2053
मीन 08/10/2044	मक 07/05/2047	धनु 11/12/2050	वृश्चि 15/11/2052	तुला 26/12/2053
कुंभ 17/10/2044	धनु 10/12/2047	वृश्चि 21/02/2051	तुला 20/01/2053	कन्या 02/02/2054
मक 26/10/2044	वृश्चि 11/05/2048	तुला 06/08/2051	कन्या 27/02/2053	सिंह 22/02/2054
धनु 17/11/2044	तुला 24/04/2049	कन्या 07/11/2051	सिंह 19/03/2053	कर्क 21/05/2054
वृश्चि 03/12/2044	कन्या 06/11/2049	सिंह 29/12/2051	कर्क 14/06/2053	मीन 01/07/2054
तुला 07/01/2045	सिंह 23/02/2050	कर्क 03/08/2052	मीन 26/07/2053	कुंभ 18/07/2054

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 7 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 7 वर्ष
06/02/2019
06/02/2026

मेष	07/09/2019
मीन	07/04/2020
कुंभ	06/11/2020
मक	07/06/2021
धनु	06/01/2022
वृश्चि	07/08/2022
तुला	08/03/2023
कन्या	08/10/2023
सिंह	08/05/2024
कर्क	07/12/2024
मिथु	08/07/2025
वृष	06/02/2026

मेष 12 वर्ष
06/02/2026
06/02/2038

वृष	06/02/2027
मिथु	06/02/2028
कर्क	06/02/2029
सिंह	06/02/2030
कन्या	06/02/2031
तुला	06/02/2032
वृश्चि	06/02/2033
धनु	06/02/2034
मक	06/02/2035
कुंभ	06/02/2036
मीन	06/02/2037
मेष	06/02/2038

मीन 4 वर्ष
06/02/2038
06/02/2042

मेष	08/06/2038
वृष	07/10/2038
मिथु	06/02/2039
कर्क	08/06/2039
सिंह	08/10/2039
कन्या	06/02/2040
तुला	07/06/2040
वृश्चि	07/10/2040
धनु	06/02/2041
मक	07/06/2041
कुंभ	07/10/2041
मीन	06/02/2042

कुम्भ 2 वर्ष
06/02/2042
06/02/2044

मीन	08/04/2042
मेष	08/06/2042
वृष	07/08/2042
मिथु	07/10/2042
कर्क	07/12/2042
सिंह	06/02/2043
कन्या	08/04/2043
तुला	08/06/2043
वृश्चि	08/08/2043
धनु	08/10/2043
मक	07/12/2043
कुंभ	06/02/2044

मकर 1 वर्ष
06/02/2044
06/02/2045

धनु	08/03/2044
वृश्चि	07/04/2044
तुला	08/05/2044
कन्या	07/06/2044
सिंह	07/07/2044
कर्क	07/08/2044
मिथु	06/09/2044
वृष	07/10/2044
मेष	06/11/2044
मीन	07/12/2044
कुंभ	06/01/2045
मक	06/02/2045

धनु 11 वर्ष
06/02/2045
06/02/2056

वृश्चि	06/01/2046
तुला	07/12/2046
कन्या	07/11/2047
सिंह	07/10/2048
कर्क	07/09/2049
मिथु	07/08/2050
वृष	08/07/2051
मेष	07/06/2052
मीन	08/05/2053
कुंभ	08/04/2054
मक	08/03/2055
धनु	06/02/2056

वृश्चिक 2 वर्ष
06/02/2056
06/02/2058

तुला	07/04/2056
कन्या	07/06/2056
सिंह	07/08/2056
कर्क	07/10/2056
मिथु	07/12/2056
वृष	06/02/2057
मेष	07/04/2057
मीन	07/06/2057
कुंभ	07/08/2057
मक	07/10/2057
धनु	07/12/2057
वृश्चि	06/02/2058

तुला 2 वर्ष
06/02/2058
06/02/2060

वृश्चि	08/04/2058
धनु	08/06/2058
मक	07/08/2058
कुंभ	07/10/2058
मीन	07/12/2058
मेष	06/02/2059
वृष	08/04/2059
मिथु	08/06/2059
कर्क	08/08/2059
सिंह	08/10/2059
कन्या	07/12/2059
तुला	06/02/2060

कन्या 8 वर्ष
06/02/2060
06/02/2068

तुला	07/10/2060
वृश्चि	07/06/2061
धनु	06/02/2062
मक	07/10/2062
कुंभ	08/06/2063
मीन	06/02/2064
मेष	07/10/2064
वृष	07/06/2065
मिथु	06/02/2066
कर्क	07/10/2066
सिंह	08/06/2067
कन्या	06/02/2068

सिंह 7 वर्ष
06/02/2068
06/02/2075

कन्या	06/09/2068
तुला	07/04/2069
वृश्चि	06/11/2069
धनु	08/06/2070
मक	07/01/2071
कुंभ	08/08/2071
मीन	08/03/2072
मेष	07/10/2072
वृष	08/05/2073
मिथु	07/12/2073
कर्क	08/07/2074
सिंह	06/02/2075

कर्क 5 वर्ष
06/02/2075
06/02/2080

मिथु	08/07/2075
वृष	07/12/2075
मेष	08/05/2076
मीन	07/10/2076
कुंभ	08/03/2077
मक	07/08/2077
धनु	06/01/2078
वृश्चि	08/06/2078
तुला	07/11/2078
कन्या	08/04/2079
सिंह	07/09/2079
कर्क	06/02/2080

मिथुन 7 वर्ष
06/02/2080
06/02/2087

वृष	06/09/2080
मेष	07/04/2081
मीन	06/11/2081
कुंभ	08/06/2082
मक	07/01/2083
धनु	08/08/2083
वृश्चि	08/03/2084
तुला	07/10/2084
कन्या	08/05/2085
सिंह	07/12/2085
कर्क	08/07/2086
मिथु	06/02/2087

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मेष	
06/02/2019	
07/09/2019	
वृष	24/02/2019
मिथु	14/03/2019
कर्क	31/03/2019
सिंह	18/04/2019
कन्या	06/05/2019
तुला	24/05/2019
वृश्चि	10/06/2019
धनु	28/06/2019
मक	16/07/2019
कुंभ	03/08/2019
मीन	20/08/2019
मेष	07/09/2019

वृष - मीन	
07/09/2019	
07/04/2020	
मेष	25/09/2019
वृष	13/10/2019
मिथु	30/10/2019
कर्क	17/11/2019
सिंह	05/12/2019
कन्या	23/12/2019
तुला	09/01/2020
वृश्चि	27/01/2020
धनु	14/02/2020
मक	03/03/2020
कुंभ	20/03/2020
मीन	07/04/2020

वृष - कुंभ	
07/04/2020	
06/11/2020	
मीन	25/04/2020
मेष	13/05/2020
वृष	30/05/2020
मिथु	17/06/2020
कर्क	05/07/2020
सिंह	23/07/2020
कन्या	09/08/2020
तुला	27/08/2020
वृश्चि	14/09/2020
धनु	02/10/2020
मक	19/10/2020
कुंभ	06/11/2020

वृष - मक	
06/11/2020	
07/06/2021	
धनु	24/11/2020
वृश्चि	12/12/2020
तुला	29/12/2020
कन्या	16/01/2021
सिंह	03/02/2021
कर्क	21/02/2021
मिथु	10/03/2021
वृष	28/03/2021
मेष	15/04/2021
मीन	03/05/2021
कुंभ	21/05/2021
मक	07/06/2021

वृष - धनु	
07/06/2021	
06/01/2022	
वृश्चि	25/06/2021
तुला	13/07/2021
कन्या	31/07/2021
सिंह	17/08/2021
कर्क	04/09/2021
मिथु	22/09/2021
वृष	10/10/2021
मेष	27/10/2021
मीन	14/11/2021
कुंभ	02/12/2021
मक	20/12/2021
धनु	06/01/2022

वृष - वृश्चि	
06/01/2022	
07/08/2022	
तुला	24/01/2022
कन्या	11/02/2022
सिंह	01/03/2022
कर्क	18/03/2022
मिथु	05/04/2022
वृष	23/04/2022
मेष	11/05/2022
मीन	28/05/2022
कुंभ	15/06/2022
मक	03/07/2022
धनु	21/07/2022
वृश्चि	07/08/2022

वृष - तुला	
07/08/2022	
08/03/2023	
वृश्चि	25/08/2022
धनु	12/09/2022
मक	30/09/2022
कुंभ	17/10/2022
मीन	04/11/2022
मेष	22/11/2022
वृष	10/12/2022
मिथु	27/12/2022
कर्क	14/01/2023
सिंह	01/02/2023
कन्या	19/02/2023
तुला	08/03/2023

वृष - कन्या	
08/03/2023	
08/10/2023	
तुला	26/03/2023
वृश्चि	13/04/2023
धनु	01/05/2023
मक	18/05/2023
कुंभ	05/06/2023
मीन	23/06/2023
मेष	11/07/2023
वृष	28/07/2023
मिथु	15/08/2023
कर्क	02/09/2023
सिंह	20/09/2023
कन्या	08/10/2023

वृष - सिंह	
08/10/2023	
08/05/2024	
कन्या	25/10/2023
तुला	12/11/2023
वृश्चि	30/11/2023
धनु	18/12/2023
मक	04/01/2024
कुंभ	22/01/2024
मीन	09/02/2024
मेष	27/02/2024
वृष	15/03/2024
मिथु	02/04/2024
कर्क	20/04/2024
सिंह	08/05/2024

वृष - कर्क	
08/05/2024	
07/12/2024	
मिथु	25/05/2024
वृष	12/06/2024
मेष	30/06/2024
मीन	18/07/2024
कुंभ	04/08/2024
मक	22/08/2024
धनु	09/09/2024
वृश्चि	27/09/2024
तुला	14/10/2024
कन्या	01/11/2024
सिंह	19/11/2024
कर्क	07/12/2024

वृष - मिथु	
07/12/2024	
08/07/2025	
वृष	24/12/2024
मेष	11/01/2025
मीन	29/01/2025
कुंभ	16/02/2025
मक	05/03/2025
धनु	23/03/2025
वृश्चि	10/04/2025
तुला	28/04/2025
कन्या	15/05/2025
सिंह	02/06/2025
कर्क	20/06/2025
मिथु	08/07/2025

वृष - वृष	
08/07/2025	
06/02/2026	
मेष	25/07/2025
मीन	12/08/2025
कुंभ	30/08/2025
मक	17/09/2025
धनु	04/10/2025
वृश्चि	22/10/2025
तुला	09/11/2025
कन्या	27/11/2025
सिंह	14/12/2025
कर्क	01/01/2026
मिथु	19/01/2026
वृष	06/02/2026

मेष - वृष	
06/02/2026	
06/02/2027	
मेष	08/03/2026
मीन	08/04/2026
कुंभ	08/05/2026
मक	08/06/2026
धनु	08/07/2026
वृश्चि	07/08/2026
तुला	07/09/2026
कन्या	07/10/2026
सिंह	07/11/2026
कर्क	07/12/2026
मिथु	07/01/2027
वृष	06/02/2027

मेष - मिथु	
06/02/2027	
06/02/2028	
वृष	08/03/2027
मेष	08/04/2027
मीन	08/05/2027
कुंभ	08/06/2027
मक	08/07/2027
धनु	08/08/2027
वृश्चि	07/09/2027
तुला	08/10/2027
कन्या	07/11/2027
सिंह	07/12/2027
कर्क	07/01/2028
मिथु	06/02/2028

मेष - कर्क	
06/02/2028	
06/02/2029	
मिथु	08/03/2028
वृष	07/04/2028
मेष	08/05/2028
मीन	07/06/2028
कुंभ	07/07/2028
मक	07/08/2028
धनु	06/09/2028
वृश्चि	07/10/2028
तुला	06/11/2028
कन्या	07/12/2028
सिंह	06/01/2029
कर्क	06/02/2029

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - सिंह
06/02/2029
06/02/2030

कन्या	08/03/2029
तुला	07/04/2029
वृश्चि	08/05/2029
धनु	07/06/2029
मक	08/07/2029
कुंभ	07/08/2029
मीन	07/09/2029
मेष	07/10/2029
वृष	06/11/2029
मिथु	07/12/2029
कर्क	06/01/2030
सिंह	06/02/2030

मेष - कन्या
06/02/2030
06/02/2031

तुला	08/03/2030
वृश्चि	08/04/2030
धनु	08/05/2030
मक	08/06/2030
कुंभ	08/07/2030
मीन	07/08/2030
मेष	07/09/2030
वृष	07/10/2030
मिथु	07/11/2030
कर्क	07/12/2030
सिंह	07/01/2031
कन्या	06/02/2031

मेष - तुला
06/02/2031
06/02/2032

वृश्चि	08/03/2031
धनु	08/04/2031
मक	08/05/2031
कुंभ	08/06/2031
मीन	08/07/2031
मेष	08/08/2031
वृष	07/09/2031
मिथु	08/10/2031
कर्क	07/11/2031
सिंह	07/12/2031
कन्या	07/01/2032
तुला	06/02/2032

मेष - वृश्चि
06/02/2032
06/02/2033

तुला	08/03/2032
कन्या	07/04/2032
सिंह	08/05/2032
कर्क	07/06/2032
मिथु	07/07/2032
वृष	07/08/2032
मेष	06/09/2032
मीन	07/10/2032
कुंभ	06/11/2032
मक	07/12/2032
धनु	06/01/2033
वृश्चि	06/02/2033

मेष - धनु
06/02/2033
06/02/2034

वृश्चि	08/03/2033
तुला	07/04/2033
कन्या	08/05/2033
सिंह	07/06/2033
कर्क	08/07/2033
मिथु	07/08/2033
वृष	07/09/2033
मेष	07/10/2033
मीन	06/11/2033
कुंभ	07/12/2033
मक	06/01/2034
धनु	06/02/2034

मेष - मक
06/02/2034
06/02/2035

धनु	08/03/2034
वृश्चि	08/04/2034
तुला	08/05/2034
कन्या	08/06/2034
सिंह	08/07/2034
कर्क	07/08/2034
मिथु	07/09/2034
वृष	07/10/2034
मेष	07/11/2034
मीन	07/12/2034
कुंभ	07/01/2035
मक	06/02/2035

मेष - कुंभ
06/02/2035
06/02/2036

मीन	08/03/2035
मेष	08/04/2035
वृष	08/05/2035
मिथु	08/06/2035
कर्क	08/07/2035
सिंह	08/08/2035
कन्या	07/09/2035
तुला	08/10/2035
वृश्चि	07/11/2035
धनु	07/12/2035
मक	07/01/2036
कुंभ	06/02/2036

मेष - मीन
06/02/2036
06/02/2037

मेष	08/03/2036
वृष	07/04/2036
मिथु	08/05/2036
कर्क	07/06/2036
सिंह	07/07/2036
कन्या	07/08/2036
तुला	06/09/2036
वृश्चि	07/10/2036
धनु	06/11/2036
मक	07/12/2036
कुंभ	06/01/2037
मीन	06/02/2037

मेष - मेष
06/02/2037
06/02/2038

वृष	08/03/2037
मिथु	07/04/2037
कर्क	08/05/2037
सिंह	07/06/2037
कन्या	08/07/2037
तुला	07/08/2037
वृश्चि	07/09/2037
धनु	07/10/2037
मक	06/11/2037
कुंभ	07/12/2037
मीन	06/01/2038
मेष	06/02/2038

मीन - मेष
06/02/2038
08/06/2038

वृष	16/02/2038
मिथु	26/02/2038
कर्क	08/03/2038
सिंह	18/03/2038
कन्या	28/03/2038
तुला	08/04/2038
वृश्चि	18/04/2038
धनु	28/04/2038
मक	08/05/2038
कुंभ	18/05/2038
मीन	28/05/2038
मेष	08/06/2038

मीन - वृष
08/06/2038
07/10/2038

मेष	18/06/2038
मीन	28/06/2038
कुंभ	08/07/2038
मक	18/07/2038
धनु	28/07/2038
वृश्चि	07/08/2038
तुला	18/08/2038
कन्या	28/08/2038
सिंह	07/09/2038
कर्क	17/09/2038
मिथु	27/09/2038
वृष	07/10/2038

मीन - मिथु
07/10/2038
06/02/2039

वृष	17/10/2038
मेष	28/10/2038
मीन	07/11/2038
कुंभ	17/11/2038
मक	27/11/2038
धनु	07/12/2038
वृश्चि	17/12/2038
तुला	27/12/2038
कन्या	07/01/2039
सिंह	17/01/2039
कर्क	27/01/2039
मिथु	06/02/2039

मीन - कर्क
06/02/2039
08/06/2039

मिथु	16/02/2039
वृष	26/02/2039
मेष	08/03/2039
मीन	19/03/2039
कुंभ	29/03/2039
मक	08/04/2039
धनु	18/04/2039
वृश्चि	28/04/2039
तुला	08/05/2039
कन्या	18/05/2039
सिंह	29/05/2039
कर्क	08/06/2039

मीन - सिंह
08/06/2039
08/10/2039

कन्या	18/06/2039
तुला	28/06/2039
वृश्चि	08/07/2039
धनु	18/07/2039
मक	28/07/2039
कुंभ	08/08/2039
मीन	18/08/2039
मेष	28/08/2039
वृष	07/09/2039
मिथु	17/09/2039
कर्क	27/09/2039
सिंह	08/10/2039

मीन - कन्या
08/10/2039
06/02/2040

तुला	18/10/2039
वृश्चि	28/10/2039
धनु	07/11/2039
मक	17/11/2039
कुंभ	27/11/2039
मीन	07/12/2039
मेष	18/12/2039
वृष	28/12/2039
मिथु	07/01/2040
कर्क	17/01/2040
सिंह	27/01/2040
कन्या	06/02/2040

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(06/02/2019 - 21/01/2035)

राहु की महादशा 06/02/2019 को आरम्भ और 21/01/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु तृतीय भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको लाभ, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों व शत्रुओं का विरोध मिला होगा। राहु की वर्तमान दशा में आपको शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको शक्ति तथा स्फूर्ति मिलेगी। किन्तु, मौसम में परिवर्तन के कारण चर्मरोग, दाहक रोग, स्नायविक दुर्बलता और शारीरिक थकावट हो सकती है। इन मामूली रोगों को दोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति उत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको सम्पत्ति तथा लाभदायक कार्य की प्राप्ति होगी। सट्टे, निवेश में लाभ मिलेगा। नौकरी में भी सुन्दर लाभ मिलेगा। पिता से अथवा परिवार से लाभ मिल सकता है। उच्चाधिकारियों से लाभ की सम्भावना है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सेवा, राजनीति, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, यातायात, कूटनीतिक कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, पत्थर, रत्न, बिजली के उपकरण, दवा, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। व्यवसाइयों-व्यापारियों को कुछ उतार-चढ़ाव का सामना करना होगा किन्तु वे अपने रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं का नाश करेंगे। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और दशा की प्रगति के साथ-साथ व्यापार का विस्तार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। आपके निवास में परिवर्तन हो सकता है अथवा आपको एक मकान की प्राप्ति हो सकती है। आप गाड़ी की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जमीन-जायदाद के मामलों में नुकसान से बचने के लिए आपको सावधान रहना होगा। इस दशा के दौरान आपकी अनेक छोटी यात्राएं होंगी। शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्राओं की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप तेज ओर दृढ़प्रतिज्ञ हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होंगे। विज्ञान, दवा, रसायन शास्त्र, इन्जीनियरिंग, सरकारी सेवा तथा यातायात के क्षेत्र में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के लिए यह समय लाभदायक और समृद्धि दायक होगा। आपके जीवनसाथी की दूर की यात्रा और समृद्धि तथा सुन्दर भाग्य की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता की यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव हो सकता है। आपके पिता को साझेदारों, वाणिज्य-व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और उनका निवेश सफल होगा। उनके साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कुछ प्रयास करना होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गुरु की अन्तर्दशा में जीवन में सफलता मिलेगी। साझेदारों से लाभ होगा और विवाह तथा यात्रा होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन, सौभाग्य की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध के कारण यश, ख्याति, सम्पत्ति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान से सुख, यात्रा तथा सौभाग्य की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, शक्ति और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लाभ तथा जीवन का सुख मिल सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या और लाभ प्राप्त हो सकता है।

अंतर्दशा :- राहु - राहु
(06/02/2019 - 03/10/2019)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 03/10/2019 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए बहुत शुभ रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवार में कुछ कटुता आ सकती है। समाज में सम्मान और साख में वृद्धि होगी। आपके विचार प्रत्येक विषय पर सबसे अलग होंगे, चेहरे पर गंभीरता रहेगी; मूल निवास स्थान से दूर जा सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(03/10/2019 - 26/02/2022)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 03/10/2019 को प्रारंभ होकर 26/02/2022 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 9, 11, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। आप नीतिकुशल, दयालु, दूसरों की भावनाओं की कद्र करने वाले होंगे। मन में दूसरों से श्रेष्ठ होने की भावना रहेगी। दूरस्थ स्थान की तीर्थयात्रा कर सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - शनि
(26/02/2022 - 02/01/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 26/02/2022 को प्रारंभ होकर 02/01/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में स्थित शनि दीर्घायु का परिचायक होता है।

इस अवधि में आप कर्मठ होंगे। नेत्रदोष से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। निम्न स्तर के विपरीत लिंग के व्यक्ति से मित्रता हो सकती है। श्वसन तंत्र के रोगों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- राहु - बुध
(02/01/2025 - 22/07/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 02/01/2025 को प्रारंभ होकर 22/07/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे, विज्ञानादि विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। विभिन्न नगरों में व्याख्यान दे सकते हैं। पिता और गुरु से संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - केतु
(22/07/2027 - 09/08/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 22/07/2027 को प्रारंभ होकर 09/08/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अपने माता-पिता और बड़ों के साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं। दूरदर्शिता की कमी होगी, क्रोध की मात्रा बढ़ेगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा मगर इसका इस्तेमाल दूसरों को बदनाम करने के लिए कर सकते हैं।

आप दिखावापसंद, अभिमानी और अक्खड़ हो सकते हैं, मगर साहसी भी होंगे। ऊर्जा का उपयोग सकारात्मक दिशा में करना लाभप्रद रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(09/08/2028 - 10/08/2031)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 09/08/2028 को प्रारंभ होकर 10/08/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। भावनात्मक रूप से विचलित रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर दुखी हो सकते हैं। इस संबंध में सकारात्मक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(10/08/2031 - 03/07/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 10/08/2031 को प्रारंभ होकर 03/07/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में

स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पिता और गुरु के आज्ञाकारी होंगे। धर्म और अध्यात्म में आस्था होगी। पुत्र सुखकारी होंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रत्येक दिन सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें और सूर्य तांत्रिक मंत्र के कुल 28000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(03/07/2032 - 02/01/2034)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 03/07/2032 को प्रारंभ होकर 02/01/2034 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। दशम भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में कार्यक्षेत्र में आपकी दक्षता बढ़ेगी, प्रोन्नति हो सकती है। धनी बनेंगे, उच्चपद पर आसीन होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंतर्दशा :- राहु - मंगल
(02/01/2034 - 21/01/2035)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 06/02/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 02/01/2034 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 3, 6, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप भी दूसरों से गुप्त शत्रुता रख सकते हैं।

आप मंगली हैं; इसके लिए आवश्यक सावधानी बरतना श्रेयस्कर रहेगा। आप में स्वार्थ की भावना अधिक हो सकती है। धनहानि संभव है; कोई आपको धोखा दे सकता है। शरीर में अधिक गर्मी के कारण कोई बीमारी हो सकती है। सहकर्मियों से व्यवहार में सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्मा जी के गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

महादशा :- गुरु
(21/01/2035 - 21/01/2051)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 21/01/2035 को आरम्भ तथा 21/01/2051 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावत एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्त्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक मानसिकता के कारण आप अपना अधिकतर समय शास्त्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगाएंगे।

अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(21/01/2035 - 10/03/2037)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/01/2035 को प्रारंभ होकर 10/03/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नये मित्र बनेंगे। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। कई माध्यमों से धनलाभ होगा। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और प्रकाशन के लिए शुभ समय है। ललित कलाओं और नाटक आदि में रुचि हो सकती है। संचार माध्यमों से लाभ हो सकता है। पारंपरिक साहित्य और कला की ओर अधिक झुकाव होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता की विद्वानों और सत्पुरुषों से मित्रता होगी। उन्हें समाज में सफलता मिलेगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उन्हें भूमि और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम शिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाषण प्रतियोगिता आदि में भाग ले सकते हैं। अध्ययन, लेखन और ज्ञान-विज्ञान में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, अनाज और हल्दी दान करें।

अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(10/03/2037 - 21/09/2039)

आपकी बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/03/2037 को प्रारंभ होकर 21/09/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वसीयत, विरासत या उपहार द्वारा धनागम हो सकता है। अचानक, अप्रत्याशित धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। जीवनशैली में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आप शक्तिशाली, प्रसिद्ध, साहसी और प्रसन्न होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सुख-साधन और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। शिशु का जन्म संभव है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे मगर आय भी अच्छी होगी। माता सुखी और भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, सम्मान में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; नींव सुदृढ़ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, सुख-साधन उपलब्ध होंगे; अचल संपत्ति से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है, यात्रा होगी, उत्साह उत्तम रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारों से लाभ होगा।

गंभीर बीमारियों का ठीक से इलाज करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को भोजन दें।

अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(21/09/2039 - 27/12/2041)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 21/09/2039 को प्रारंभ होकर 27/12/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन, अध्यापन के लिए समय उत्तम है। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्रा हो सकती है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विज्ञान, गणित और ज्योतिष में महारत हासिल कर सकते हैं। धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर सकते हैं। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। उत्तम प्रशासनिक क्षमता और बुद्धिमानी के कारण धनार्जन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगीः उपयुक्त नियोजन और साधनों के सुप्रबंधन द्वारा धनलाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम से लाभ होगा। माता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए विवाह, व्यापार से लाभ या उसका विस्तार, शिशु का जन्म, उत्तम मित्र और विशिष्ट उपलब्धियों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और शेयरों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को विचार-विनिमय और जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(27/12/2041 - 03/12/2042)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 27/12/2041 को प्रारंभ होकर 03/12/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

आपके इस अवधि में पिता से संबंध मधुर होंगे। नेकी के कार्य करेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। दूरदृष्टि और विवेक उत्तम होंगे। धन संचित होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। किसी विवाद में फंस सकते हैं। आर्थिक प्रगति होगी; धन और सुखसाधनों में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी के मार्ग में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपके पिता अध्यात्म में रुचि ले सकते हैं; घर से बाहर कहीं पर जीवनयापन कर सकते हैं। आपकी माता के रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारों से अनबन, सफलता, समृद्धि और सुख-साधनों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, नौकरी मिल सकती है, भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो नींव मजबूत होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को हिम्मत के साथ आगे बढ़ना श्रेयस्कर रहेगा; आय उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(03/12/2042 - 03/08/2045)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 03/12/2042 को प्रारंभ होकर 03/08/2045 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा; समृद्ध बनेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। प्रसन्नचित्त रहेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके जीवनसाथी तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। आप दान-धर्म और समाजसेवा में रुचि ले सकते हैं। सुंदर वस्तुएं क्रय कर सकते हैं। बहुमुखी प्रगति का योग है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं मगर धन संचित भी होगा। माता खुश रहेंगी, धनी बनेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी

रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, प्रसिद्धि, सुख-साधन, अच्छी आय और उत्तम मित्रों का संकेत हैं।

आपकी संतान प्रसन्न और संतुष्ट रहेगी, शिक्षा उत्तम होगी, धनी बनेंगे, परिवार से उत्तम संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्रा होगी, सफल रहेंगे, आय में वृद्धि हो सकती है। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा; आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। पाचन और उत्सर्जन तंत्र की व्याधियों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(03/08/2045 - 22/05/2046)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/08/2045 को प्रारंभ होकर 22/05/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपके पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। अपने से बड़े लोग और सहकर्मी प्रशंसा करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। भाग्य में वृद्धि होगी। दर्शनशास्त्र और भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर सकते हैं। साहित्य और संचार माध्यम में सफल हो सकते हैं। बहुत सारे काम पूर्ण होंगे। कार्यक्षमता उत्तम होगी।

आपके जीवनसाथी की कार्यक्षमता उत्तम होगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके पिता सफल होंगे और प्रगति करेंगे। माता की विरोधियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी के व्यापार से लाभ, धनागम, सफलता, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं की यात्रा हो सकती है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए तांबा, गेहूं और लाल वस्त्र दान में दें।

अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(22/05/2046 - 21/09/2047)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 22/05/2046 को आरंभ होकर 21/09/2047 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा में सफलता मिलेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। सुख-साधन और वाहन उपलब्ध रहेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे। परिवार में वातावरण हंसी-खुशी का रहेगा।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता का धनार्जन उत्तम होगा, पारिवारिक जीवन उत्तम होगा, स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध होगा। माता को साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से अचानक लाभ, अध्यात्म में रुचि, उत्तम स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चो और प्रगति में बाधा का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहतों से संबंध उत्तम रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों को वर्तमान साधनों से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(21/09/2047 - 27/08/2048)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/09/2047 को प्रारंभ होकर वद 27/08/2048 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आर्थिक समस्याएं आ सकती हैं, कर्ज़ बढ़ सकता है। अध्यात्म और धर्म में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। निवेश और साझेदारी से लाभ हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; स्पर्धियों पर विजयी होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; वाहन सुख रहेगा। माता की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, स्पर्धियों पर विजय, धन के लाभ

का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकारिता से लाभ होगा; आय अच्छी होगी। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(27/08/2048 - 21/01/2051)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 21/01/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 27/08/2048 को प्रारंभ होकर 21/01/2051 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आप सब कार्यों में साहस का परिचय देंगे। मुख्य इच्छाएं पूर्ण होंगी। किस्मत चमकेगी। धनागम होगा। बाधाओं के बावजूद वांछित कार्य बन जाएंगे। लघु यात्राओं, छोटे भाई-बहन, लेखन और प्रकाशन से धनार्जन हो सकता है। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। सांसारिक सुखों में वृद्धि होगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है; सांसारिक सुखों में वृद्धि होगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ हो सकता है। माता के खर्चे बढ़ेंगे, यात्रा हो सकती है, सफलता में बाधा आ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, निवेश से लाभ, प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनके प्रभावशाली मित्र बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सामान्य देखभाल जारी रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र, उड़द की दाल, सतनजा दान करें।

महादशा :- शनि
(21/01/2051 - 20/01/2070)

महादशा शनि की अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 21/01/2051 को आरम्भ और 20/01/2070 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह स्वाभाव से एक अशुभ ग्रह है। यह बाधा-ग्रह के रूप में जाना जाता है और इसके कारण परिश्रम का फल प्राप्त होने में विलम्ब होता है हालाँकि यह फल से वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य फल की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में अष्टम, द्वितीय तथा पंचम भाव पर दृष्टि है और यह उनके कार्य को प्रभावित करता है। अष्टम भाव, जिसमें यह स्थित है, दीर्घायु, विरासत, पैतृक सम्पत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, असन्तोष, पराजय, हानि, बाधा ओर चोरी का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शनि अष्टम भाव को बल प्रदान कर रहा है। दीर्घायु का कारक होने के कारण यह लम्बी आयु तथा प्रसन्नता देता है। विदेश में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

धन-सम्पत्ति :

अष्टम भाव में शनि की स्थिति के कारण आपके जमीन, बाहन, शक्ति तथा पद की प्राप्ति होगी। यह चल-अचल सम्पत्ति की वृद्धि में आपकी सहायता करेगा और अनेक उत्तरदायित्व का भार भी वहन करना होगा। आप अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। व्यावसायिक जीवन में अनेक गम्भीर समस्याएं आ सकती हैं। पैतृक सम्पत्ति तथा व्यापार में भी बाधाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

व्यावसायिक तथा व्यापारिक जीवन की तरह ही आपका पारिवारिक जीवन भी दुर्भाग्य, बाधाओं तथा समस्याओं से घिरा है। आपको इन बाधाओं का सामना करना है। आप अपने घर से दूर ओर दूसरी जाति की औरतों की ओर आकृष्ट हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन की तरह ही आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी बाधाएं आएंगी।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(21/01/2051 - 23/01/2054)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 23/01/2054 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि शक्तिशाली और अशुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में शनि की स्थिति शुभ और दीर्घायु की परिचायक होती है।

इस अवधि में आप धैर्यवान और कर्मठ होंगे। कार्यों में बाधाएं आएंगी मगर आप कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। कठिनाइयां झेलने के कारण क्रूर हो सकते हैं या ईमानदारी में कमी आ सकती है। नेत्रों और छाती के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(23/01/2054 - 03/10/2056)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 23/01/2054 को प्रारंभ होकर 03/10/2056 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे; विदेश में भी व्याख्यान दे सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञान के कारण धनी बनेंगे। पिता और अन्य परिवारजनों से संबंध मधुर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - केतु
(03/10/2056 - 11/11/2057)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 03/10/2056 को प्रारंभ होकर 11/11/2057 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपके माता-पिता और गुरु से संबंध बिगड़ सकते हैं। आप उनके साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं। क्रोध की मात्रा अधिक होगी। यद्यपि आप साहसी होंगे मगर अपनी शक्तियों का इस्तेमाल दूसरों को बदनाम करने में लगाएंगे। स्वभाव अक्खड़ हो सकता है ; दिखावापसंद हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(11/11/2057 - 11/01/2061)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 11/11/2057 को प्रारंभ होकर 11/01/2061 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको जीवन की सभी उत्तम वस्तुएं, सुख-साधन और मनोरंजन उपलब्ध होंगे। फिर भी, भावनात्मक स्थायित्व में कुछ कमी आ सकती है, मन विचलित हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(11/01/2061 - 24/12/2061)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 11/01/2061 को प्रारंभ होकर 24/12/2061 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के तीसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से सुख में कमी आ सकती है। स्वयं के प्रयास से अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी,

पिता और गुरु की सेवा करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप महत्वाकांक्षी और उद्यमी होंगे, मगर कार्यों में बाधाएं आएंगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(24/12/2061 - 25/07/2063)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। चंद्रमा मन और माता का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं के बावजूद कार्यक्षेत्र में दक्षता और सफलता प्राप्त करेंगे। समान में लोकप्रिय होंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। घरेलू जीवन भी सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(25/07/2063 - 02/09/2064)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 25/07/2063 को प्रारंभ होकर 02/09/2064 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। मंगल अग्निप्रधान ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 3, 6, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। मंगल ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको शरीर में अधिक उष्मा से संबंधित व्याधि हो सकती है। आप स्वार्थी और नफ़रत की भावना रखने वाले हो सकते हैं। धनहानि संभव है, धोखा खा सकते हैं। नेत्ररोगों से बचाव करें।

आप क्रोधी, झगड़ालू, खर्चीले हो सकते हैं, इससे आपके गुप्त शत्रु बन सकते हैं। समाज में व्यवहार में सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि किसी पर सरलता से विश्वास करना हानिकारक हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

अंतर्दशा :- शनि - राहु
(02/09/2064 - 10/07/2067)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 02/09/2064 को प्रारंभ होकर 10/07/2067 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय में स्वतंत्र विचार होंगे। इस कारण आपको आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। अचानक कोई अप्रत्याशित समाचार सुनने को मिल सकता है। इसके लिए आप बाहरी तौर पर गंभीर बने रहेंगे मगर घर से दूर जा सकते हैं। तृतीय भाव में स्थित राहु के कारण भाई, बहनों आदि का व्यवहार आपके प्रति नकारात्मक हो सकता है अतः सावधान रहना श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - गुरु
(10/07/2067 - 20/01/2070)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 21/01/2051 को प्रारंभ होकर 20/01/2070को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 10/07/2067 को प्रारंभ होकर 20/01/2070 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको व्यापार, व्यापार में साझेदार और जीवनसाथी के माध्यम से लाभ होगा। आप नीतिवान और दयालु होंगे। धर्म में रुचि होगी, गुणवान होंगे। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

महादशा :- बुध
(20/01/2070 - 21/01/2087)

बुध की महादशा 20/01/2070 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 21/01/2087 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक-थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय-व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता हैं। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन-सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा :

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्म पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली,

कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

अंतर्दशा :- बुध - बुध
(20/01/2070 - 18/06/2072)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 20/01/2070 को प्रारंभ होकर 18/06/2072 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको उच्च शिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। धार्मिक या शैक्षणिक यात्रा से लाभ हो सकता है। विदेश से संपर्क भी लाभदायक हो सकता है। विज्ञान में दक्ष हो सकते हैं। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से लाभदायक और मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता को उच्चपद, प्रसिद्धि और ज्ञान-विज्ञान में सफलता मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; प्रगति में बाधा आ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में सफलता, नये व्यापार की शुरुआत, इच्छाओं की पूर्ति, सब सुख-सुविधाओं और विभिन्न माध्यमों से धनागम का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और सट्टेबाजी से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त होगा।

अगर आप कार्यरत हैं तो भूतकाल में किये परिश्रम से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, लोग सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मूंग की दाल दान में दें।

अंतर्दशा :- बुध - केतु
(18/06/2072 - 15/06/2073)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/06/2072 को प्रारंभ होकर 15/06/2073 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है या तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। दानधर्म में योगदान करेंगे। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे।

आप पैसे की बचत में दक्ष हैं। शिक्षा उत्तम होगी। विदेश जा सकते हैं। धनागम होगा; सुख-साधन बढ़ेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। अध्यात्म और संन्यास में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी साहसी होंगे। आपके पिता के आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी,

सफल होंगे। माता के संबंधियों से लाभदायक संबंध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, समृद्धि, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है, यात्रा होगी, धनी बनेंगे और भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख से लाभ उठाएंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, जबकि व्यापारियों को लाभ का स्तर बनाये रखने के लिए परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(15/06/2073 - 15/04/2076)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 15/06/2073 को प्रारंभ होकर 15/04/2076 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में अचानक कुछ घट सकता है; परिवर्तन हो सकता है। अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, दुर्घटनाओं से बचे रहेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। साझेदार के माध्यम से या विरासत द्वारा धनलाभ हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। उत्तम सुविधाएं, उत्तम भोजन, आभूषण और सुंदर वस्तुएं प्राप्त होंगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, सुख-साधनसंपन्न रहेंगे, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। यात्राएं होंगी। माता को निवेश या सट्टेबाजी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम मित्र और प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परिवारजनों और मित्रों से संबंध उत्तम होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुखमय होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कई माध्यमों से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। गंभीर बीमारी का ठीक से इलाज करायें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(15/04/2076 - 20/02/2077)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/04/2076 को प्रारंभ होकर 20/02/2077 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और समृद्ध बनेंगे। व्यापार में धन कमा सकते हैं। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। लंबी यात्रा हो सकती है। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। दक्षता में वृद्धि होगी। सब काम बन जाएंगे; उच्च पद और प्रसिद्धि का योग है। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनार्जन करेंगे, लघु यात्राएं और कार्यों में सफलता की संभावना है। आपके पिता को सफलता और कार्यों में प्रगति का सुख रहेगा। माता को धन, उच्चपद और आत्मिक उत्थान का संकेत है। आपके भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ होगा, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है; विवाह, सफलता, सरकार से लाभ, धन और पिता से लाभ की संभावना है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी; बौद्धिक शक्ति का विकास होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं ; यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों के लाभ और सक्रियता में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(20/02/2077 - 22/07/2078)

आपकी बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 20/02/2077 को प्रारंभ होकर 22/07/2078 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा उत्तम रहेगी। उपलब्धियों द्वारा प्रसिद्धि मिलेगी। उपहार प्राप्त हो सकते हैं, खुशियों और घरेलू सुख का संकेत है। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। साहित्यिक प्रतिभा और बारीकी से काम करने के लिए प्रशंसा मिलेगी। अचल संपत्ति और खेती से लाभ हो सकता है। वाहनसुख रहेगा। जीवन में खुशियां और सुख-सुविधाएं मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी की परिवार से घनिष्ठता बढ़ेगी । आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; परिवार से खुशियां मिलेंगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है, खुशियां मिलेंगी, उपहार-वसीयत आदि से लाभ होगा, साझेदार से लाभ होगा, व्यर्थ की यात्रा संभव है, खर्चे बढ़ेगे, कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपकी संतान परीक्षा और स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(22/07/2078 - 19/07/2079)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 22/07/2078 को प्रारंभ होकर 19/07/2079 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके कुछ व्यर्थ के खर्चे होंगे। धनसंचय में कठिनाई आ सकती है। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। तकनीकी और बारीकी के कार्यों में दक्षता हासिल होगी। स्पर्धियों और शत्रुओं पर विजय मिलेगी। मुकदमे में जीत होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी, यात्राएं हो सकती हैं, वांछित सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी स्पर्धियों पर विजयी होंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति मिल सकती है; सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। माता की यात्राएं होंगी; धार्मिक स्थान पर जा सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, प्रसिद्धि, धनलाभ, पारिवारिक सुख और खुशियों का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है, तबादला संभव है, अप्रत्याशित घटना घट सकती है, परिवर्तन हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी; आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों की स्पर्धियों पर विजय होगी; आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रविकार और पित्त से संबंधित व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- बुध - राहु
(19/07/2079 - 05/02/2082)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/07/2079 को प्रारंभ होकर 05/02/2082 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको लघु यात्राओं, प्रकाशन और लेखन से लाभ होगा। आप उत्साही, साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, धनी बनेंगे। कार्यों में लाभ होगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। उच्च पद प्राप्त होगा, सांसारिक सुख मिलेगा। सत्कार्यों में रुचि होगी। शिक्षा में नाम होगा। विदेश यात्रा हो सकती है। छोटे भाई-बहनों में किसी का विवाह हो सकता है। आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, भौतिक सुख मिलेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी, नये मित्रों से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धनलाभ, उत्तम स्वास्थ्य, नये व्यापार की स्थापना, संतानसुख, निवेश में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, अच्छे आर्थिक अवसर मिलेंगे, लोगों से मदद मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध बनेंगे, आय बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(05/02/2082 - 12/05/2084)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 05/02/2082 को प्रारंभ होकर 12/05/2084 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा, घरेलू सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। उच्चपद प्राप्त होगा। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, कार्य पूर्ण होंगे, अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। विचार-विनिमय की शक्ति उत्तम होगी; अध्यापन के लिए शुभ समय है। सफलता और समृद्धि का संकेत है।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद मिलेगा। आपके पिता सफल और समृद्ध बनेंगे। माता की अध्यात्म में रुचि होगी, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, शिक्षा में सफलता, यात्रा और अध्यात्म में रुचि का संकेत है। आपकी संतान सफल होगी, विचार-विनिमय शक्ति उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, चने और हल्दी का दान करें।

अंतर्दशा :- बुध - शनि
(12/05/2084 - 21/01/2087)

आपके लिए बुध की महादशा 20/01/2070 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 12/05/2084 को प्रारंभ होकर 21/01/2087 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या विरासत के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। कटु वचन बोलने से बचें। मितव्ययता और बचत द्वारा अचल संपत्ति और धन में वृद्धि हो सकती है। जीवन के समस्त सुख मिलेंगे, भले ही कुछ देरी हो जाए। शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण हो सकती है, संतान से सुख और धन का लाभ होगा। सावधानी से किए निवेश द्वारा लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में तरक्की के लिए समय बहुत अच्छा है।

आपके जीवनसाथी को आपके माध्यम से लाभ हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। उनका कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगी।

आपकी संतान का उत्साह उत्तम होगा, दृढ़प्रतिज्ञ होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे; शत्रुओं पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकरी सहायता करेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को बचत और निवेश से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। बीमारी का इलाज तुरंत करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

महादशा :- केतु
(21/01/2087 - 20/01/2094)

केतु की महादशा 21/01/2087 को आरम्भ और 20/01/2094 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु नवें भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि तृतीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण साझेदारों से लाभ, विवाह, यात्रा तथा जीवन में प्रगति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, अध्यात्म में रुचि, उच्च शिक्षा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में आत्मविश्वास है और आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। छूत की बीमारी, फोड़े-फुन्सी, आँख में पीड़ा, पित्त दोष, निचले अंगों में कष्ट, बुखार आदि हो सकता है। ये मौसमी होंगे। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको पिता से लाभ मिल सकता है। आपको संचार-साधन, मास मीडिया तथा सगे-संबंधियों से लाभ हो सकता है। सट्टा और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवा, योजना और प्रशासन, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, दवा, सरकारी सेवा, शिक्षण आदि का चयन कर सकते हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अनाज, चमड़े, बिजली के सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान और उच्च पद मिलेगा। यश, ख्याति और सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का शुभ परिवर्तन होगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति और विरोधियों पर विजय मिलेगी। उपार्जन और लाभ भी अच्छा होगा।

वाहन, यात्रा जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। वाहन-सुख भी मिल सकता है। शनि की अन्तर्दशा में छोटी और शुक्र की अन्तर्दशा में बड़ी यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे और अपनी पसन्द के संस्थान में आपका नामांकन होगा। इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, अध्यात्म तथा गुप्त विद्या, भाषा, तत्त्व-विज्ञान आदि में रुचि हो सकती है। आप साहसी तथा दृढ़संकल्प हैं और अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सुखी और समृद्धि शाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा।

आपकी माता का स्वास्थ्य थोड़ा खराब रहेगा और शत्रुओं पर विजय मिलेगी जबकि पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा सम्पत्ति और सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों की विदेश-यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि बड़ों की शिक्षा होगी और समृद्धि, आराम और सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी तथा बच्चों से सुख, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के कारण मामूली स्वास्थ्य समस्या, लाभ और ननिहाल पक्ष से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में धन-समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा तथा धार्मिक कार्यों में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी और अचानक लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय होगा और उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु के कारण सुख, यश और ख्याति मिलेगी तथा जमीन-जायदाद और आराम में वृद्धि होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और कुछ बाधा होगी तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान व्यवसाय में सफलता, विवाह, साझेदारों से लाभ, यात्रा आदि हो सकती है।

अंतर्दशा :- केतु - केतु
(21/01/2087 - 19/06/2087)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/01/2087 को प्रारंभ होकर 19/06/2087 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सब काम हिम्मत और विश्वास के साथ करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी, धनी बनेंगे। विवादों से बचे रहेंगे। विवेकशक्ति उत्तम होगी, प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से दूरदर्शितापूर्वक करेंगे। विवाद और बाधाओं के बावजूद इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम द्वारा लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता दृढ़प्रतिज्ञ होंगी और लक्ष्य प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, सफलता, धनार्जन और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान को शिक्षा द्वारा लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, गठिया जैसी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तिल और कंबल दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(19/06/2087 - 18/08/2088)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान-धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(18/08/2088 - 24/12/2088)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 18/08/2088 को प्रारंभ होकर 24/12/2088 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और भाग्यशाली रहेंगे। व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिक्षा या धर्म से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। साहित्य या संचार माध्यम द्वारा लाभ हो सकता है। कला में रुचि हो सकती है। प्रत्येक समस्या का सामना साहसपूर्वक करेंगे।

आपके जीवनसाथी को उत्साह के कारण सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता के आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; वे प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, वांछित स्थान पर तबादला, धन और सफलता का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अगर आप कार्यरत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, आय अच्छी होगी, सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ बाधा आ सकती है। व्यापारियों की बिक्री उत्तम होगी, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(24/12/2088 - 25/07/2089)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 24/12/2088 से प्रारंभ होकर 25/07/2089 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। नेकी के कार्य करेंगे। माता के साथ लाभकारी संबंध होंगे। आपकी उपलब्धियों की प्रशंसा होगी। खेती और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है; वाहन सुख रहेगा। आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। परिवार से भावनात्मक संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता की आय अच्छी होगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनागम होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अप्रत्याशित घटना, खर्चे, यात्रा और सफलता में बाधा का संकेत है।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा; कार्यक्षमता बढ़ेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; सुख-साधन संपन्न होंगे, माता पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय में बढ़ोत्तरी होगी। परामर्शदाता सफल और लोकप्रिय बनेंगे। व्यापारियों को भूतकाल में किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, दूध, चावल, मिश्री, सफेद चंदन का दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(25/07/2089 - 21/12/2089)

आपके लिए केतु की महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 25/07/2089 को प्रारंभ होकर 21/12/2089 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में आर्थिक कठिनाइयां आ सकती हैं पर आप उनसे निबटने में सफल रहेंगे। आपकी रोगविरोधक क्षमता उत्तम रहेगी। माता पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। भाइयों से उत्तम संबंध होंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। सब कार्यों में साहस और उत्साह का परिचय देंगे।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब कार्य पूर्ण होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी; सफल और धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। बड़े भाई-बहनों की आय पर्याप्त होगी।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकते हैं, वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए उन्हें परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है, कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, प्रोन्नति हो सकती है। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। कान और नेत्रों के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए लाल वस्त्र, मसूर की दाल दान में दें।

अंतर्दशा :- केतु - राहु
(21/12/2089 - 08/01/2091)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 21/12/2089 को प्रारंभ होकर 08/01/2091 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए उत्साही और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आप धनी बनेंगे, कार्यों में लाभ होगा। विदेश यात्रा हो सकती है। शिक्षा में प्रसिद्धि मिलेगी। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी द्वारा लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, प्रसिद्धि, व्यापार की योजना और निवेश द्वारा लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, शत्रुओं पर विजय होगी। व्यापारी धनी बनेंगे, आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु की पूजा करें, उन्हें बेसन की रोटी का भोग लगायें, फिर उसे स्वयं खा लें एवं किसी कुत्ते को भी दें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(08/01/2091 - 15/12/2091)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 08/01/2091 को प्रारंभ होकर 15/12/2091 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा। धन का संचय होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, सफल रहेंगे। धनागम उत्तम होगा। प्रोन्नति हो सकती है; सम्मान में वृद्धि होगी। छोटे भाई-बहनों से खुशियां मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी के कार्य सिद्ध होंगे। आपके पिता सफल होंगे और धनी बनेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, उनके बहुत से मित्र होंगे, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा, संतान से सुख

मिलेगा, शिक्षा उत्तम होगी। बड़े भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, पिता से उत्तम संबंध और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति और लेखन क्षमता उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है। अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाता कार्यक्षेत्र में चमकेंगे। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(15/12/2091 - 23/01/2093)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 15/12/2091 को प्रारंभ होकर 23/01/2093 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। मितव्ययता द्वारा काफी बचत कर सकते हैं। अदालत में जीत होगी। सम्मान बढ़ेगा, उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। नौकरी या व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण प्रसिद्ध बनेंगे, समृद्धि आएगी। सब काम बन जाएंगे।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; उनकी कार्यक्षमता बढ़ेगी, धन संचित होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, परिवर्तन हो सकते हैं। माता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा; संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साही होंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

मामूली बीमारी बढ़ कर गंभीर हो सकती है अतः सतर्कता आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए काली दाल, काले वस्त्र, तेल, तिल और काली गाय दान करे।

अंर्तदशा :- केतु - बुध
(23/01/2093 - 20/01/2094)

आपके लिए केतु महादशा 21/01/2087 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 23/01/2093 को प्रारंभ होकर

20/01/2094 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आपकी दूरस्थ स्थान या धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। उच्च शिक्षा में सफलता मिल सकती है। दर्शन शास्त्र में रुचि की संभावना है। दूरस्थ स्थान के मित्रों से संपर्क हो सकता है। धनी बनेंगे। विज्ञान में दक्ष बन सकते हैं। छोटे भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं, वे धनी बन सकते हैं। आपके पिता धनी और प्रसन्न होंगे; विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। माता शत्रुओं पर विजयी रहेंगी, कार्यों में सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, इच्छाओं की पूर्ति, साझेदारी से लाभ, संभवतः विवाह का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों की यात्राएं होंगी; संचार माध्यम से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

महादशा :- शुक्र
(20/01/2094 - 21/01/2114)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 20/01/2094 को आरंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्र पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते है अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(20/01/2094 - 22/05/2097)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ होकर 22/05/2097 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। वाहन आदि सभी सुख उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं, अतः भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें और निम्न उपाय करें :

• चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
• कन्याओं को खीर खिलाएं।
• लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य
(22/05/2097 - 22/05/2098)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 22/05/2097 को प्रारंभ होकर 22/05/2098 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी। पिता और गुरु के भक्त बनेंगे। आध्यात्मिक और धार्मिक कार्यों में मन लगेगा।

पुत्रों से खुशी प्राप्त होगी। उनके और स्वयं के प्रयत्नों से अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप महत्वाकांक्षी और उद्यमी होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य मंत्र का नित्य जाप करें और सूर्य के तांत्रिक मंत्र के 28000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(22/05/2098 - 21/01/2100)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ हुई थी और 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 22/05/2098 से प्रारंभ होकर 21/01/2100 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

दशम भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। समाज और कार्यक्षेत्र में उत्थान होगा। कार्यक्षमता उत्तम होने के कारण आप कार्य में परिवर्तन कर प्रगति करेंगे। समाज में लोकप्रिय बनेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्र को चंद्र मंत्र पढ़ते हुए दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(21/01/2100 - 23/03/2101)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 21/01/2100 को प्रारंभ होकर 23/03/2101 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। मंगल ऊर्जा का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 3, 6, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप भी दूसरों के प्रति शत्रुता की भावना रख सकते हैं। आप तनावयुक्त, झगड़ालू, उच्छृंखल और निर्दय हो सकते हैं। शरीर में अधिक गर्मी के कारण कोई व्याधि हो सकती है। आप स्वार्थी और घृणा करने वाले हो सकते हैं। धोखा खा सकते हैं या धनहानि हो सकती है। सहकर्मियों से संबंधों में सावधानी रखें क्योंकि

कोई संत के रूप में सांप हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्मा के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(23/03/2101 - 23/03/2104)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 23/03/2101 को प्रारंभ होकर 23/03/2104 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकीं स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

तृतीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय पर स्वतंत्र विचार होंगे, इससे आपके आलोचकों की संख्या बढ़ेगी। मूल निवास से दूर जा सकते हैं। यात्राएं खूब होंगी। आपके भाई-बहनों को कुछ कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(23/03/2104 - 22/11/2106)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/01/2094 को आरंभ हुई थी और 21/01/2114 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/03/2104 को प्रारंभ होकर 22/11/2106 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन मे खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ, विशाल हृदय वाले, पुण्यात्मा व्यक्ति होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार और अन्य माध्यमों से धनलाभ होगा। निवेश में रुचि होगी।

दूरस्थ तीर्थों की यात्रा करेंगे, धर्म में गहन रुचि होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(22/11/2106 - 21/01/2110)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ हुई थी और वद 21/01/2114 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 22/11/2106 को प्रारंभ होकर 21/01/2110 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि आयुष्कारक है। अष्टम भाव में इसकी स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आपको कई जिम्मेदारियां मिलेंगी जिन्हें आप धैर्य और परिश्रम से निबाहेंगे। मार्ग में कई बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें हिम्मत से पार कर लेंगे। दमे और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। बेईमानी और निर्दयता से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए नीलम सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार को रात्रिभोज के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर धारण करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(21/01/2110 - 21/11/2112)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ हुई थी और वद 21/01/2114 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 21/01/2110 जो आपके लिए 21/11/2112 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और धनी बनेंगे। ज्ञान का प्रसार देश-विदेश में व्याख्यान आदि द्वारा कर सकते हैं। पिता और ज्येष्ठजनों से संबंध उत्तम रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - केतु
(21/11/2112 - 21/01/2114)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/01/2094 को प्रारंभ हुई थी और 21/01/2114 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 21/11/2112 को प्रारंभ होकर 21/01/2114 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

केतु अशुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 3वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा हैं।

इस अवधि में आप अपने पिता और आयु में बड़ों के साथ उग्रता और क्रोध का व्यवहार कर सकते हैं। दूसरों की बुराई करेंगे, धन खर्च करने में कंजूसी करेंगे। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध प्रगट कर सकते हैं। दिखावा पसंद करेंगे।

अरिष्ट के बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

महादशा :- सूर्य
(21/01/2114 - 22/01/2120)

सूर्य की महादशा 21/01/2114 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 22/01/2120 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन-शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा :

गुप्त विद्या में आपकी रुचि होगी अथवा आप चिकित्सा का क्षेत्र भी अपना सकते हैं।

अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(21/01/2114 - 11/05/2114)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 11/05/2114 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

यह अंतर्दशा आपके लिए बहुत भाग्यशाली है। आपको धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। प्रशासन द्वारा सम्मानित होंगे। अधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। किसी धार्मिक समारोह से आप संबद्ध रहेंगे और धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे। सेवाकार्य से संबद्ध जातक प्रगति करेंगे। स्वतंत्र कार्यरत विद्वानों और व्यापारियों का खर्च बढ़ सकता है।

आपके पिता के धन में वृद्धि होगी। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। भाई-बहनों को रोजगार प्राप्त होगा। मामा के परिवारजन लाभान्वित होंगे। विरोधियों पर आप विजयी रहेंगे। छोटे-भाई बहनों से कुछ मतभेद हो सकते हैं, जिन्हें आप धैर्य और नीति से निबटा सकते हैं।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर सामान्य सावधानियों का पालन करें। भाग्यसंवर्धन के लिए लाल पुष्प, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र का दान रविवार के दिन करें और गायत्री का जाप करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(11/05/2114 - 10/11/2114)

आपकी सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 10/11/2114 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अवधि में सलाहकारों को प्रसिद्धि मिलेगी। सेवारत जातकों को प्रशंसा और प्रोन्नति प्राप्त होगी। व्यापारीगणों को धन की प्राप्ति होगी। उनकी संकल्पशक्ति दृढ़ होगी।

क्रय, उपहार या विरासत द्वारा जायदाद प्राप्त हो सकती है। माता के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। पिता की आय बढ़ सकती है। विरासत की जायदाद में लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। मुकदमेबाजी खत्म होगी। भाई-बहनों से संबंधों में अचानक बदलाव आ सकता है। मामापक्ष के लोगों का भाग्य चमकेगा। विद्यार्थीगण विज्ञान और समाज विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त करेंगे।

खेलकूद में आपकी रुचि रहेगी।

स्नायविक उत्तेजना और अत्यधिक श्रम से बचाव करें। घुटनों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(10/11/2114 - 17/03/2115)

आपकी सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 17/03/2115 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में उत्साह और पहल करने में उत्तम होने के कारण आपको उच्च पद प्राप्त हो सकता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। आपके शत्रु और विरोधी पनप नहीं सकेंगे और आप से परास्त होंगे। जीवनसाथी और व्यापार के साझेदार की देखभाल जरुरी है क्योंकि उनको कोई बीमारी हो सकती है। आपकी कोई दूरस्थ स्थान की या विदेश यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे।

आपकी संतान को अचल संपदा प्राप्त हो सकती है। अगर वे सेवारत हैं तो जायदाद की खरीद/बेच कर सकते हैं। माता की यात्रा हो सकती है। पिता को जायदाद, सत्ता और अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। छोटे भाई-बहन अपने कार्यस्थल पर सक्रिय रहेंगे। सेवारत जातकों को प्रोन्नति और धनलाभ प्राप्त होंगे। परामर्शदाताओं के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारीगण सौभाग्यशाली रहेंगे और धनसंचय करेंगे। नेत्ररोग, पैरों की चोट, ज्वर आदि से बचाव करें। अशुभत्व से रक्षा के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(17/03/2115 - 09/02/2116)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 17/03/2115 को प्रारंभ होकर 09/02/2116 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

यह अवधि आपके लिए भाग्यशाली रहेगी। आपका स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति उत्तम होंगे; बहुत से मित्र होंगे। शत्रु और विरोधी परास्त होंगे क्योंकि आप साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ हैं। संचार साधन, लेखन, प्रकाशन आदि लाभदायक रहेंगे। पड़ौसी और बांधवों से लाभ होगा।

आपके पिता के व्यापार में वृद्धि होगी। आपके उनसे संबंध मधुर रहेंगे। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शत्रुओं पर विजय होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी और निवेश से लाभ होगा। आपकी संतान का समय उत्तम होगा; वे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके बहुत से मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में व्यस्त रहेंगे। परामर्शदाताओं को प्रतिस्पर्धी परेशान कर सकते हैं। व्यापारी लाभ कमाएंगे। यह समय भाग्यशाली रहेगा। गले या कान की मामूली समस्याओं से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान जी की पूजा और पाठ करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(09/02/2116 - 27/11/2116)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 09/02/2116 को प्रारंभ होकर 27/11/2116 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धनवान, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। अनुबंधों से लाभ होगा। मुकदमें में विजय मिलेगी। विवाह संभव है। ससुराल से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन-धान्य से युक्त रहेंगे। लघु यात्राएं हो सकती हैं। कला और साहित्य में रुचि हो सकती है। सब प्रकार से धन मिलेगा, पुरस्कृत होंगे, इच्छाओं की पूर्ति होगी।

जीवनसाथी को समृद्धि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; यात्राएं होंगी, सर्जनात्मक कार्यों में रुचि और सट्टेबाजी में लाभ संभावित हैं। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपके पिता को धन की प्राप्ति होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, निवेश से लाभ मिलेगा। माता की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी होगी। भाई-बहनों का समय समृद्ध रहेगा। उन्हें सफलता प्राप्त होगी। आपकी संतान वाक्शक्ति में पटु होगी और शिक्षा में प्रगति करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारीवर्ग को यथास्थिति बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। पेट की शिकायतों, मधुमेह और मोटापे से बचाव करें। दुखों से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(27/11/2116 - 09/11/2117)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 27/11/2116 को प्रारंभ होगी और 09/11/2117 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको धन मिलेगा। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। अचल संपत्ति पर्याप्त होगी। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करना होना। निवेश से लाभ होगा। कार्य-व्यवसाय में बाधाएं आ सकती हैं। प्राच्यविद्या में रुचि रहेगी।

जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। पिता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। छोटे भाई-बहन बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ होगा। आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सबका सहयोग प्राप्त होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को गठबंधन और अनुबंधों से लाभ हो सकता है।

बीमार होने से सावधान रहें। शनि यदि जन्मपत्रिका में शुभ है तो हानि कम होगी। नेत्र के और वात से संबंधित रोग हो सकते हैं। अरिष्ट से बचने के लिए शनि की पूजा करें और तिल, काले वस्त्र, काले जूते, लोहे का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
(09/11/2117 - 16/09/2118)

आपकी सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 09/11/2117 को प्रारंभ होकर 16/09/2118 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक किसी यात्रा के लिए निमंत्रण मिल सकता है। आपकी रुचि अध्यात्म और ज्ञान/विज्ञान में हो सकती है। लेखन, प्रकाशन ओर तीर्थयात्रा के लिए समय शुभ है। कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। मानसिक शक्ति प्रबल रहेगी और अध्यापन आदि में सफल रहेंगे। सौभाग्य और समृद्धि आपका इंतज़ार कर रहे हैं। अध्यात्म में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को वाक्विद्या से लाभ होगा और भाइयों से सुख मिलेगा। पिता का मन अध्यात्म में लगेगा। माता को मातहतों से लाभ प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शत्रुओं पर विजय होगी। भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, किसी से साझेदारी हो सकती है और धन कमा सकते हैं। आपकी संतान का ज्ञान बढ़ सकता है, साहित्य वाणिज्य, लेखा-जोखा आदि में चमक सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे और यात्राएं बढ़ सकते हैं। व्यापारियों के लिए सुखद परिवर्तन आएंगे।

जांघों के आसपास के अंगों की व्याधियों से बचें। स्नायुतंत्र कमजोर हो सकता है। कष्टों से बचने के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - केतु
(16/09/2118 - 22/01/2119)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/01/2114 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/09/2118 को आरंभ होकर 22/01/2119 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि रहेगी। विदेशियों के माध्यम से भाग्योदय हो सकता है। धन और प्रसिद्धि का संकेत है। पिता के साथ संबंध कुछ कटु हो सकते हैं। उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं। हिम्मत बढ़ेगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध मधुर बनाने के लिए प्रयास करना होगा।

जीवनसाथी को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना आवश्यक है। उनकी लघु यात्राएं होंगी। आपके पिता की धर्म में रुचि होगी; मान-सम्मान मिलेंगे। माता को धन का लाभ होगा, सफलता मिलेगी, शत्रुओं की पराजय होगी। भाई-बहनों के अनुबंध पर हस्ताक्षर होंगे; खूब लाभ होगा और शोहरत मिलेगी।

आपकी संतान को तकनीकी शिक्षा में सफलता मिल सकती है, निवेश से लाभ मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से उत्तम संबंध रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन का संकेत है।

बलगम वाली व्याधियों और हाथ-पैरों के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की आराधना करें और श्वान को भोजन दें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शुक्र
(22/01/2119 - 22/01/2120)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपका दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ होगा। व्यापार में धनार्जन होगा। विरासत में अचल संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। दुर्घटना से रक्षा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की प्राच्य विद्या, तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। उन्हें अप्रत्याशित धन मिल सकता है। घरेलू सुख उत्तम होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे, उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को निवेश या सट्टे से धनलाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, कर्ज़ से मुक्ति का योग है। आपकी संतान लोकप्रिय, प्रसन्न, संतुष्ट होगी; परिवार के सदस्यों और मित्रों का उन्हें सहयोग मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आपको सफलता मिलेगी, कार्यालय में संबंध उत्तम रहेंगे, वाक्शक्ति उत्तम रहेगी। परामर्शदाताओं को लाभकारी परिणाम मिलेंगे। व्यापारीगण सकारात्मक अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्सर्जन तंत्र, नेत्र और गले के रोगों से बचें। अशुभ से बचने के लिए श्वेत वस्त्र, चावल, चीनी दान में दें।

महादशा :- चन्द्र
(22/01/2120 - 21/01/2130)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 22/01/2120 को आरंभ और 21/01/2130 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अध्यात्म की उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। आप पुराणों और आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करेंगे।

अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(22/01/2120 - 21/11/2120)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ होकर 21/01/2130 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ होकर 21/11/2120 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। इस अवधि में आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। धनकोष में वृद्धि होगी; उच्चपद और लोकप्रियता की प्राप्ति का योग है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र के 11000 जाप करें और शाम के समय चंद्र मंत्र उच्चारित करते हुए चंद्रमा को दूध अर्पित करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(21/11/2120 - 22/06/2121)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ होकर 21/01/2130 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 21/11/2120 को प्रारंभ होकर 22/06/2121 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 3, 6 ,7 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आंखों की दृष्टि कमजोर हो सकती है, क्रोध अधिक होगा, झगड़ालू प्रवृत्ति हो सकती है, फ़िज़ूलखर्ची बढ़ सकती है। आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप भी दूसरों के गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप स्वार्थी हो सकते हैं, नफ़रत की भावना बलवती होगी। धन की हानि हो सकती है। कोई व्यक्ति धोखा दे सकता है। सहकर्मियों से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(22/06/2121 - 22/12/2122)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 22/01/2120 को प्रारंभ हुई और 21/01/2130 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/06/2121 को प्रारंभ होकर 22/12/2122 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का

रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसका अस्तित्व नहीं है मगर शक्तिशाली होने के कारण महत्वपूर्ण है। अपने भाव की स्थिति और राशि के अनुसार यह शुभ या अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको अचानक अप्रत्याशित समाचार प्राप्त हो सकते हैं। आप घर से दूर जा सकते हैं। प्रत्येक विषय में आपके विचार अधिकांश व्यक्तियों से भिन्न हो सकते हैं, जिससे आप आलोचना का शिकार बन सकते हैं। तृतीय भाव में राहु सामान्यतः भाइयों के संबंध में अशुभ समझा जाता है, अतः उनके साथ व्यवहार में सावधानी रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(22/12/2122 - 22/04/2124)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 22/12/2122 को प्रारंभ होकर 22/04/2124 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरे का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। सप्तम में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1 और 3 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है और इनके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ और दयालु होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे। तीथयात्राएं संभव हैं। धर्म में रुचि रहेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(22/04/2124 - 21/11/2125)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 22/01/2120 को प्रारंभ हुई और 21/01/2130 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 22/04/2124 को प्रारंभ होकर 21/11/2125 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि आयुष्कारक है। इसके अष्टम भाव में स्थित होने से आपकी आयु लंबी रहेगी। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप उत्तरदायित्वों का निर्वाह धैर्य और परिश्रम द्वारा सभी बाधाओं को पार करने के बाद करेंगे। नेत्र और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। ईमानदारी और

दयाभाव बनाए रखें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी की अंगूठी में नौमुखी रुद्राख को शनिवार के दिन शिवजी की पूजा करने के बाद शनि के वैदिक मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(21/11/2125 - 23/04/2127)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 22/01/2120 को प्रारंभ हुई थी और 21/01/2130 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 21/11/2125 को प्रारंभ होकर 23/04/2127 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध नवम भाव में स्थित होकर कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप ज्ञान और धन अर्जित करेंगे। आपका दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहेगा। आप देश-विदेश में व्याख्यान दे सकते हैं। विदेश से आपके लिए आमंत्रण आ सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(23/04/2127 - 22/11/2127)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 22/01/2120 को प्रारंभ हुई ओर 21/01/2130 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 23/04/2127 को प्रारंभ होकर 22/11/2127 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आपका क्रोध बढ़ सकता है। छोटी-छोटी बातों पर मिज़ाज गर्म हो

सकता है। वाक्शक्ति प्रबल रहेगी मगर इसका इस्तेमाल दूसरों को बदनाम करने के लिए कर सकते हैं। दिखावापसंद होंगे मगर स्वभाव अक्खड़ रहेगा। माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार और कटुता संभव है। मितव्ययता द्वारा धन संचित करेंगे। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(22/11/2127 - 23/07/2129)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ होकर 21/01/2130को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/11/2127 को प्रारंभ होकर 23/07/2129 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली होंगे। धन-धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। भावनात्मक समस्याओं से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - सूर्य
(23/07/2129 - 21/01/2130)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 22/01/2120 को प्रारंभ होगी और 21/01/2130 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 23/07/2129 से प्रारंभ होकर 21/01/2130 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य सबसे शक्तिशाली ज्योतिपुंज है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और धर्म में प्रगति होगी। पुत्रों से लाभ होगा और स्वयं के प्रयास से जायदाद का निर्माण करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो

महादशा :- मंगल
(21/01/2130 - 21/01/2137)

मंगल की महादशा 21/01/2130 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 21/01/2137 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नही होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु

आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याए उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सट्टा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(21/01/2130 - 20/06/2130)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 21/01/2130 को प्रारंभ होकर 20/06/2130 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं जिनमें कुछ व्यर्थ हो सकती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग में काम करने करने वाले लाभान्वित होंगे। लाभदायक अनुबंध या समझौता संभव है। जीवनसाथी से कुछ मनमुटाव हो सकता है। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है पर वे प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद में मरम्मत आदि करवा सकते हैं। माता सौभाग्यशाली रहेंगी; उनकी कुछ यात्राएं हो सकती हैं। आपके छोटे भाई-बहन कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा या कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध हो सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदातओं को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

नेत्र, पैर के रोग, पित्तविकार से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(20/06/2130 - 08/07/2131)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 20/06/2130 को प्रारंभ होकर 08/07/2131 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उत्साह से परिपूर्ण और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु और स्पर्धी परास्त होंगे। आप उद्यमी, भाग्यवान और धनी होंगे। लाभकारी लघु यात्राएं हो सकती हैं। आप साहसी होंगे और विरोधियों की परवाह नहीं करेंगे। परिवार में कोई विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता व्यापारिक अनुबंधों में सफल रहेंगे, यात्राएं होंगी, मुकदमे में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा। आपकी माता को स्वास्थ्य की मामूली समस्या हो सकती है। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को किसी से अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता और लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(08/07/2131 - 13/06/2132)

आपकी मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/07/2131 को प्रारंभ होकर 13/06/2132 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। चुनाव और अदालत में विजयी होंगे। नौकरी में उच्चाधिकारियों से लाभ और प्रोन्नति का योग है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, मित्र बढ़ेंगे और कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा, लेखन, यात्रा और प्रकाशन के लिए समय शुभ है। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा, सम्मान और धन प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, धन का लाभ होगा। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता चुनाव में विजयी हो सकते हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बदपरहेजी से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(13/06/2132 - 23/07/2133)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/06/2132 को प्रारंभ होकर 23/07/2133 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप विवाह द्वारा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार या विरासत

से भी धन आ सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। परिवार की जिम्मेदारियों को ठीक प्रकार से निभाएंगे। घर में शांति रहेगी। खानपान में देखभाल ओर नियंत्रण रखें। खुद की कमाई आमदनी भी पर्याप्त होगी। संतान से सुख मिलेगा। प्रसिद्धि और उच्चपद का योग है। प्रोन्नति के साथ तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता अध्यात्म में रुचि रखेंगे। माता को पहले किये गये निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन सब बाधाओं को पार कर लेंगे, उनकी प्रोन्नति हो सकती है।

आपकी संतान को नींव मजबूत करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति से आय हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधी परास्त होंगे, सफलता मिलेगी। व्यापारियों और परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। नेत्ररोग और पित्त के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्र और सरसों का तेल दान में दें।

अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(23/07/2133 - 20/07/2134)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 23/07/2133 को प्रारंभ होकर 20/07/2134 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की

दाल दान में दें।

अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(20/07/2134 - 16/12/2134)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/07/2134 को प्रारंभ होकर 16/12/2134 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप सत्कार्य करेंगे और दान-धर्म में रुचि लेंगे। पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। किस्मत साथ देगी; सब सुख उपलब्ध होंगे। शिक्षा द्वारा प्रसिद्धि मिल सकती है। विदेश यात्रा हो सकती है। किसी भाई या बहन का विवाह हो सकता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प और साहस का परिचय देंगे। बाधाओं को पार कर लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी धन और सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। आपके पिता उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध होंगे और धन का लाभ होगा। माता को शत्रुओं और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, लाभ में वृद्धि होगी, उन्हें प्रभावशाली मित्रों से लाभ होगा।

आपकी संतान की उच्च शिक्षा हो सकती है; दार्शनिक विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो वर्तमान कार्यस्थल से लाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारी संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मामूली चोट आदि से कुछ परेशानी हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(16/12/2134 - 15/02/2136)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 16/12/2134 को प्रारंभ होकर 15/02/2136 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान-धर्म में रुचि लेंगे। परिवाजन और मित्र इज्ज़त करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(15/02/2136 - 22/06/2136)

आपकी मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 15/02/2136 को प्रारंभ होकर 22/06/2136 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम रहेंगी। आपके पिता को सफलता और उन्नति मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, खुशी मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे और धनलाभ होगा। भाई-बहनों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, वांछित स्थान पर तबादला होगा, विवाह और व्यापार में लाभ संभव है। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण होगी, इच्छाओं की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर आप सेवारत हैं तो उन्नति, उच्चाधिकारियों से लाभ और सम्मान का संकेत है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों से कर्मचारी सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - चन्द्र
(22/06/2136 - 21/01/2137)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/01/2130 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 22/06/2136 को प्रारंभ होकर

21/01/2137 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपको सफलता, धन और लोकप्रियता प्राप्त होंगे। आपकी उपलब्धियों को सम्मान मिलेगा। घरेलू सुख और प्रसन्नता प्राप्त होंगे। समाज में कल्याणकारी कार्य करेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अचल संपत्ति, खेती आदि से लाभ प्राप्त होगा। वाहन सुख मिलेगा। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। सुख-संतुष्टि से जीवन बसर होगा। निवास में परिवर्तन संभव है। आपके जीवनसाथी को सब सुख मिलेंगे; अचल संपत्ति से धनलाभ होगा। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से आय होगी। माता को व्यापार से लाभ हो सकता है; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। भाई-बहनों को अचानक लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता मिलेगी, विस्तृत कार्य में दक्ष होंगे, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत है तो सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, धन कमाएंगे, उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे, जबकि व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 2
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	हीरा	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, सुख

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
राहु	पन्ना	97%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
06/02/2019	गोमेद	70%	शनिवार,तिल, सरसों, खड्ग, कम्बल, तेल
21/01/2035	नीलम	69%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
गुरु	पन्ना	84%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
21/01/2035	माणिक्य	83%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
21/01/2051	मोती	64%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शनि	पन्ना	100%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
21/01/2051	नीलम	75%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
20/01/2070	माणिक्य	64%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
बुध	पन्ना	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
20/01/2070	माणिक्य	83%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
21/01/2087	नीलम	62%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
केतु	पन्ना	97%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
21/01/2087	माणिक्य	64%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
20/01/2094	हीरा	58%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुक्र	पन्ना	100%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
20/01/2094	नीलम	69%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
21/01/2114	माणिक्य	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
सूर्य	पन्ना	97%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
21/01/2114	माणिक्य	89%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, तेल
22/01/2120	मोती	64%	भाग्योदय, सुख, शत्रु व रोग मुक्ति

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ॐ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ॐ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ॐ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ॐ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ॐ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ॐ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ॐ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ॐ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ॐ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-------------------------	-------------------------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	सूर्य, केतु, शुक्र
		मारक	-	राहु, चंद्र, गुरु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	64%	भाग्योदय, सुख
चन्द्र	39%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मंगल	48%	कम खर्च, दम्पति
बुध	53%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
गुरु	45%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	56%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	55%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	33%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
केतु	58%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राहु	21/01/2035	38	25	44	45	57	59	58	79	35
गुरु	21/01/2051	63	63	55	32	85	34	46	51	47
शनि	20/01/2070	38	25	46	57	41	90	90	47	35
बुध	21/01/2087	94	25	55	89	41	59	46	35	79
केतु	20/01/2094	69	25	67	76	41	59	33	22	91
शुक्र	21/01/2114	38	25	59	57	41	90	90	47	60
सूर्य	22/01/2120	94	50	67	76	53	34	33	22	66
चन्द्र	21/01/2130	63	82	42	57	55	46	46	22	35
मंगल	21/01/2137	77	50	86	46	53	63	62	35	74

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मार्जार, गण राक्षस, योनि अश्व, नाड़ी आद्य तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गो" अक्षर से होगा यथा गोविन्द, गौतम आदि।

आप प्रायः ठण्ड से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे तथा इससे सहन करने में अपने को असमर्थ महसूस करेंगे। आप स्वभाव से ही साहसी होंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य उद्यत रहेंगे। साथ ही आप में कठोरता की प्रभाव अधिक रहेगा। आप स्वभाव से ही अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे इससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं आपको हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शत्रुओं को पराजित करने में भी आप हमेशा सफल रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

आप ज्योतिष शास्त्र में भी रूचिशील रहेंगे तथा इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगे तथा उग्रता का प्रदर्शन यदा कदा ही किया करेंगे। इसके अतिरिक्त अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा तथा अपनी इस प्रवृति का आप पूर्ण रूप से पालन करते रहेंगे।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ऽल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

अतुल धन सम्पत्ति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रसिद्ध भी रहेंगे परन्तु आपमें कृपणता का भाव भी विराजमान रहेगा। अतः धन का व्यय आप अल्प मात्रा में ही किया करेंगे तथा संचय अधिक मात्रा में रखेंगे। इसके साथ ही महिला वर्ग के प्रति आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार इनसे मित्रतापूर्ण संबंध भी आप स्थापित रखेंगे एवं उनकी सेवा आदि करने में भी तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर विदेश भ्रमण में भी अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे अथवा देशान्तर में निवास भी कर सकेंगे। साथ ही कामभावना की भी आप में प्रबलता रहेगी।

कृपणो धनपूर्णः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप एक स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा हमेशा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से कहेंगे। आपकी स्पष्टवादिता से कई लोग आपसे प्रसन्न होंगे तो अन्य कई असन्तुष्ट भी होंगे। साथ ही आप कई प्रकार के व्यसनों से भी युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनका शौक करेंगे। आपकी प्रवृति दुराग्रह की भी रहेगी तथा जो आपको अच्छा लगेगा उसी को अन्य जनों पर थोपने की चेष्टा करेंगे अतः आपकी इस प्रवृति से कई अन्य लोग तथा संबंधी आपसे प्रायः अप्रसन्न ही रहेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कुम्भ राशि में जन्म होने के कारण आपकी नासिका ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत आकार के रहेंगे। साथ ही हाथ, पैर एवं कमर में भी स्थूलता रहेगी। आपके शरीर में कोमलता अल्प मात्रा में विद्यमान रहेगी तथा सौन्दर्य पूर्ण रूप से आकर्षक एवं दर्शनीय रहेगा। साथ ही विद्रोह करने का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं अवसरानुकूल इस भाव का आप प्रदर्शन भी करेंगे। साथ ही उग्रता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप में धार्मिकता का भाव भी विद्यमान रहेगा आप कभी कभी दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे एवं आलसपन भी आप

में रहेगा। चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी एवं इसमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप समय समय पर मानसिक कष्टानुभूति से भी व्याकुल रहेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आपको नाना प्रकार के शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा अतः एक विद्वान के रूप में आप समाज में आदरणीय रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप प्रवीण रहेंगे। आप का स्वभाव शान्त होगा तथा उग्रता का भाव आप में यदा कदा ही दृष्टिगोचर होगा। साथ ही आप शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में प्रायः सफल रहेंगे तथा वे आपसे अत्यन्त ही भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोऽति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कार्यों को करने वाले होंगे या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से ही यात्रा तथा भ्रमण करने में विशेष रूचि रखेंगे तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत भी करेंगे। धन के प्रति आप में लोलुपता रहेगी तथा अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी आप मन में रखेंगे तथा इसके लिए स्वयं भी प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी एवं इसमें प्रायः क्षय वृद्धि होती रहेगी। साथ ही सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पों के प्रति भी आपके मन में आसक्ति रहेगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोऽध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में सर्वत्र आपका यश रहेगा लेकिन अन्य विद्वान जनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे इससे लोगों में आपके प्रति सम्मान की भावना में अल्पता आएगी। साथ ही स्वभाव में भी शिष्टता का भाव भी मध्यम रूप से विद्य मान रहेगा

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में सर्वत्र विजय तथा सफलता अर्जित करते रहेंगे तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करेंगे। आपका आचरण अन्य जनों के लिए उदाहरण के रूप में अनुकरणीय रहेगा।

धनवैभव से भी आप युक्त रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आप के मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी निस्वार्थ सेवा तथा सहायता के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। महिलाओं के मध्य भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। आप के परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक होगी तथा जाति एवं वर्ग के लोगों के कल्याण के कार्यों के लिए आप सर्वदा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगे अतः इसके मध्य आप पूर्ण आदरणीय तथा सम्माननीय रहेंगे। इसके अतिरिक्त सर्वप्रकार से आप गुणवान रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घाकृति की होगी एवं नसे भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। महिलावर्ग से भी आपके मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे एवं मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा उनके सहयोग के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऽध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में प्रारम्भ से ही दानशीलता की प्रवृति रहेगी अतः समय समय पर आप दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस प्रवृति का यथा शक्ति अनुपालन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों के कल्याण कारी कार्यों में भी आप नित्य अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अन्य जनों के उपकार को स्वीकार करके तथा उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अर्पण करके अपने सामाजिक सम्मान में वृद्धि करेंगे। साथ ही जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखों की सुन्दरता दर्शनीय होगी तथा बुद्धि भी सरल ही रहेगी तथा किसी को भी आप धोखा देने का प्रयत्न नही करेंगे। इस प्रकार अपने स्नेह शील व्यवहार तथा सत्कार्यो से आप समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपमें करुणा के भाव की रहेगी परन्तु साहसी स्वभाव 9होने के कारण अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। आप में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी एवं छोटी छोटी बातों में आप सहसा ही उत्तेजित हो जाया करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद भी उत्पन्न होता रहेगा। लेकिन शारीरिक बल की आप में कमी नहीं रहेगी तथा इससे आप हमेशा युक्त रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की अनुभूति भी कर सकते हैं। साथ ही आप का शारीरिक सौन्दर्य में कामान्यतया रहेगा तथा कभी कभी आप अपने सम्भाषण में कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जन आपसे प्रायः ही रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को बिना किसी हस्तक्षेप से स्वछन्दता पूर्वक सम्पन्न करना पसन्द करेंगे। आप सर्वप्रकार से गुणवान रहेंगे। आप तेजस्वी पुरूष होंगे एवं आपकी तेजस्विता से सभी लोग आपसे प्रायः प्रभाति रहेंगे। इसके साथ ही वीणा या अन्य संगीत यंत्रो को बजाने में भी आप प्रवीणता को प्राप्त होंगे। साथ ही आप अपने कार्यों को पूर्ण ईमानदारी से सम्पन्न करेंगे तथा जहां भी आप कार्य करेंगे लोग आंख मूंद कर आप पर विश्वास करेंगे। अतः अपने कार्य क्षेत्र में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा प्रायः अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गंड योग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कय विकयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं या महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐस, समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो को दान करना चाहिए एवं शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी एवं अन्य अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होकर सर्वत्र शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददेश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रुचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रवृति धनवान एवं अधिक व्ययशील प्रवृति का मनुष्य होता है परन्तु शुभ ग्रह बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान बुद्धिमान गुणवान तथा धर्म के प्रति श्रद्धा वाला होता है एवं धर्म या परोपकार संबंधी कार्यो में अधिक व्यय करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विदुषी बुद्धिमती एवं गुणवती महिला होगी तथा धर्म के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी फलतः धार्मिक कार्य कलाप समय समय पर होते रहेंगे। बृहस्पति के शुभ प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता की भावना भी होगी एवं सामाजिक तथा पारिवारिक जनों के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी लोगों पर प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा कद भी मध्यम होगा। उनका सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा एवं शरीर के अंग प्रत्यंग सुंदर पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी परन्तु आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। इसके लिए उन्हें नियमित रूप से व्यायाम या योगिक क्रिया करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उच्च साहित्य के अध्ययन के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर कलात्मक वस्तुओं के प्रति भी मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह अपने किसी श्रेष्ठ संबंधी या सम्मानीय व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न होगा जिससे आपको सन्तुष्टि होगी। विवाह के बाद आप एक दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर करेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग देंगे। साथ ही कोई भी सांसारिक महत्व का कार्य आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा दाम्पत्य जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा जो अन्य जनों के लिए एक उदाहरण भी हो सकता है।

आपका विवाह किसी उच्च तथा प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही उनसे नैतिक सहयोग आपको अवसरनुकूल मिलता रहेगा तथा सास ससुर के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा वे भी आपको पुत्रवत स्नेह प्रदान करेंगे जिससे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी उन्हें प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सहव्यवहार से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ एवं अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसके अधिक लाभ की संभावना रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क वितर्कों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही चन्द्रमा भी दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि वायु एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र परिवर्तनशील होगा तथा इसमें बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की प्रधानता रहेगी लेकिन परिवर्तन से आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सफलता मिलती रहेगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जल से उत्पन्न पदार्थों यथा शंख मोती प्रबाल, मछली, मिट्‌टी के खिलौने, बालू ईट आदि का व्यापार से वांछित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही द्रव्य पदार्थो यथा दूध, घी, दही, सफेद एवं मूल्यवान वस्त्र, रेशम या मदिरा आदि से भी आप वांछित लाभ अर्जित कर सकते है। यदि आप जीवन में विशेष लाभ उन्नति एवं धन अर्जित करना चाहते है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार को प्रारम्भ करना चाहिए। इससे आपके स्तर में वृद्धि होगी तथा कार्य क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे।

चन्द्रमा की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आपको जीवन में वांछित सम्मान एवं किसी उच्चपद की प्राप्ति होगी परन्तु चन्द्रमा की अपनी राशि से अष्टम भाव में स्थिति के प्रभाव से इसमें विलम्ब होगा तथा वांछित सम्मान एवं पद प्राप्त करने में अनावश्यक समस्याओं का सामना भी करना पड़ेगा लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्य मार्ग पर तत्पर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त किसी महिला के सहयोग से आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सम्मान अर्जित करेंगे।

आपके पिताजी शांत एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। अपने कार्य क्षेत्र में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करेंगे एवं आपको जीवन में एक योग्य व्यक्ति देखकर सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सहयोग का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन में तत्पर होंगे लेकिन तृतीयेश की अपने भाव से अष्टम भाव में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में यदा कदा वैमनस्य या कटुता का भाव उत्पन्न हो सकता है। अतः आप दोनों को ऐसी स्थिति की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

फलादेश - 2019

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए अनुकूल रहेगा तथा इच्छित सफलता प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारियों से आपके सम्बन्ध बनेंगे एवं उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। साथ ही राज्यस्तर पर आपको कोई विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। इस समय पारिवारिक सुख समृद्धि तथा शान्ति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम से रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस समय कार्यों को करने में अत्यन्त ही परिश्रमशील रहेंगे। अतः विश्राम का अभाव रहेगा। साथ ही अन्य जनों से मधुर व्यवहार रखने में भी सावधानी से काम लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल तथा दशा भी अनुकूल रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि गोचरवश एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके व्यापारिक, राजनैतिक या अन्य कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा इसमे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में सर्वत्र वृद्धि होगी तथा प्रचुरमात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी समाज में आपकी कीर्ति बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं प्रतिभा के अनुरूप ही आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इनमें उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु सन्तति पक्ष एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए साथ ही आय गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं भाग्यशाली सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

राहु की महादशा में राहु का अंतर 03/10/2019 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं जबकि गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपमें प्रबल साहस एवं आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न होगा जिससे आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे साथ ही प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होगा जिनसे भविष्य में वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा आर्थिक दृष्टि से स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। एवं आयसस्रोतो में भी वृद्धि होगी व्यापार के लिए समय अच्छा रहेगा तथा लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी इसके अतिरिक्त कुछ लाभदायक दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिनसे लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा साथ ही शत्रुवर्ग आपका विरोध करने में समर्थ रहेंगे।

यह समय आपके लिए उत्तम रहेगा इस समय सर्वत्र आपके इच्त्ति सफलताएं मिलेंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। आपमें सक्रियता का भाव उत्पन्न होगा दैनिक कार्यकलापों में पूर्ण रुचि लेंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा तथा उनसे मित्रता का भाव रहेगा। परिवार का वातावरण सुख एवं शान्ती से युक्त रहेगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इस समय परिवार के सदस्यों में वृद्धि भी हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा मान अर्जित होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं से लाभ होगा तथा भविष्य के लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त होगें सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी ऐसे समय में वृद्धि होगी तथा मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा अतः समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करें।

फलादेश - 2020

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में आपकी कुँडली में शनि द्वादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ अधिक मात्रा में होंगी साथ ही कोई विदेश संबंधी यात्रा भी सम्पन्न हो सकती हैं। इस समय आपके मन में बडी बडी योजनाएं उत्पन्न होंगी तथा स्थिति अत्यन्त ही संघर्षपूर्ण होगी। इस समय अन्य जनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। साथ ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। इस समय बन्धु मित्र या किसी भी अन्य शुभचिन्तक से आपको कोई विशेष सहयोग एवं सहायता नहीं मिलेगी तथा अपने बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर ही आप संघर्ष करते रहेंगे तथा अन्ततोगत्वा उनमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इस समय अन्य गोचर फल तथा दशाफल भी अनुकूल ही रहेंगे। अतः आपको उपर्युक्त फलों में शुभता अधिक प्राप्त होगी। शुभ एवं अच्छे फलों की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन एवं दान आवश्य करें।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

इस वर्ष राहु की महादशा में गुरु का अंतर रहेगा। गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा। इस समय सुअवसरों में

न्युनता रहेगी फलतः लाभ एवं उन्नतिमार्ग अवरुद्ध रहेगें आर्थिक स्थिति में भी विषमता रहेगी तथा आयसाधनो में कमी के कारण समय समय पर आर्थिक परेशानी का सामना करना करना पड़ेगा काम में इस समय नवीन कार्य या पूंजीनिवेश में हानि की स्म्भावना रहेगी यदि नोकरी में है तो पदोन्नति संबधी विलम्ब तथा व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में तनाव रहेगा। यदि बेरोजगार है तो रोजगार मिलने में विलम्ब होगा तथा इच्छित रोजगार नहीं मिलेगा इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी विशेष सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु सामाजिक मान प्रतिष्ठा में अनुकूलता रहेगी अतः ऐसे समय को धैर्य एवं सयंमपुर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2021

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किचिंत मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुण्ॅली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों

में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में गुरु का अंतर रहेगा। गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपके रुके हुए कार्य पूर्ण नहीं होंगे तथा अन्यत्र भी उन्नति एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों में भी कमी आएगी। फलतः यदा कदा आथिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है व्यापार के लिए भी समय भी अनुकुल नहीं रहेगा तथा लाभ की अपेक्षा हानि की संभावना रहेगी। नौकरी में भी पदोन्नति संबंधी विलम्भ तथा व्यवधान उत्पन्न होंगे साथ ही परिवारजनों से भी सुख एवं सहयोग कम ही मिलेगा तथा परिवार में अशान्ति भी बनी रहेगी। धर्म एवं दर्शन आपकी रुचि नहीं रहेगी एवं अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएँ सम्पन्न होंगी जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। लेकिन शत्रु वर्ग को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ अतः समय को ध्यानपूर्वक व्यतीत करें।

फलादेश - 2022

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्विग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण आपकी राशि में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह पराक्रम तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा उनमें आपको सफलता भी समय समय पर मिलती रहेगी। इस समय आपका दाम्पत्य जीवन भी सामान्य रूप से सुखी रहेगा तथा संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नौकरी एवं राजनीति आदि के क्षेत्र में पदोन्नति की संभावना रहेगी साथ ही आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी एवं पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे।

साथ ही अन्य गोचर एवं दशाफल भी इस समय शुभ फलदायक रहेंगे। अतः वर्ष में सांसारिक कार्यों में आप सामान्य रूप से सफलता अर्जित करेंगे। लेकिन शनि की साढ़ेसाती होने के कारण अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करें इससे आपको सर्वत्र सफलता प्राप्त होंगी ।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं

सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

राहु की महादशा में गुरु का अंतर 26/02/2022 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विषेष अनुकुल नहीं रहेगा। इस समय यद्यपि आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति भी होगी परन्तु कुछ आंतरिक परिवर्तन अवश्य होंगे। साथ ही सामाजिक कार्यकलापों में आपकी कोई रुचि नहीं रहेगी तथा व्यापार में भी विशेष उन्नति नहीं होगी तथा लाभमार्ग में बाधाएं आएंगी। यदि आप नौकरी में हैं तो सुअवसरों में कमी आएगी तथा पदोन्नति में विलंब होगा पारिवारिक सुख समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी तथा परस्पर सहयोग एवं स्नेह का अभाव रहेगा। इस समय आपकी अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राए संपन्न होंगी जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होगा तथा सन्तों एवं विद्वानों से संपर्क भी स्थापित होगा अतः संयमपूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। तथा समस्याओं तथा व्यवधानों का समय समय पर सामना करना पड़ेगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं तथा कार्य पूर्ण नहीं होंगे। तथा व्यापार में परिश्रम करने पर भी अनुकूल परिणाम नहीं मिलेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में भी अधिकारी वर्ग से समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में भी सुख शान्ति की न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में स्नेह एवं सहयोग का भाव नहीं रहेगा। साथ ही किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभवित हो सकता है। इसके अतिरिक्त अनिच्छित एवं व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी तथा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा।

फलादेश - 2023

बृहस्पति का इस वर्ष में गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण होगा। अतः इसके प्रभाव से आप दूर समीप की यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको न्यूनाधिक लाभ की प्राप्ति होगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति इस समय आपके मन में अध्ययन की रुचि भी उत्पन्न हो सकती हैं। पुराने मित्रवर्ग से इस वर्ष आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अवीन नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिनसे भविष्य में आपको लाभ एवं सहयोग की संभावना रहेंगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशाल हृदयता का प्रदर्शन करेंगे। फलतः समाज में भी मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल इस समय अच्छा नहीं रहेगा लेकिन दशा फल शुभ रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में आपको यदा कदा न्यूनता दृष्टिगोचर होगी परन्तु अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष से आप शुभ फल अर्जित कर सकेंगे।

गोचरवश शनि की स्थिति इस समय आपकी राशि में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति तथा असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी शनि के विशेष अनुकूल न होने के कारण परिश्रम एवं संघर्ष से ही सम्पन्न होंगे तथा इसमें आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय मध्यम रहेगा परन्तु संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति भी मध्यम रहेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक सफलता मिल सकेगी। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति में विलम्ब की भी संभावना रहेगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी।

इसके साथ ही अन्य दशा एवं गोचर फल भी सामान्य फलदायक रहेंगे अतः इच्छित सफलता अर्जित करने के लिए आपको परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही शनि के साढ़ेसाती के प्रभाव को भी अल्प करने के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करें। इससे आप मानसिक शान्ति तथा अन्यत्र सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति तृतीय तथा केतु की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके पराक्रम एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी पराजित होंगे वे आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे। मानसिक स्थिति इस वर्ष में अच्छी रहेगी तथा निश्चिन्त एवं शान्त होकर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम पूर्वक स्वपराक्रम से किसी विशिष्ट उन्नति या सफलता को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। मित्रवर्ग से इस समय आपको इच्छित सहयोग मिलेगा परन्तु बन्धुवर्ग से कोई चिन्ता हो सकती है। इसके साथ ही अन्य गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः इस वर्ष में उपर्युक्त शुभ

फलों की ही अधिकता रहेगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में यदा कदा ही प्राप्त होंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय व्यापार में आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा तथा लाभमार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग आपसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में असुविधा तथा तनाव का वातावरण बना रहेगा। परिवार में सदस्यों से भी अनुकूल सहयोग नहीं मिलेगा तथा परस्पर वैमनस्य के भाव के कारण अशान्ति का वातावरण रहेगा। साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आपको कोई नवीन कार्य या पूंजी निवेश नहीं करना चाहिएं। मित्रवर्ग से भी लाभ एवं सहयोग में न्यूनता रहेगी अतः ऐसे समय में किसी पर भी विश्वास न करें। इसके अतिरिक्त जायदाद के विभाजन में सम्बंधियों या बंधुओं से कोई विवाद भी हो सकता हैं।

फलादेश - 2024

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

गोचरवश शनि की स्थिति इस समय आपकी राशि में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति तथा असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी शनि के विशेष अनुकूल न होने के कारण परिश्रम एवं संघर्ष से ही सम्पन्न होंगे तथा इसमें आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय मध्यम रहेगा परन्तु संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति भी मध्यम रहेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक सफलता मिल सकेगी। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति में विलम्ब की भी संभावना रहेगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी।

इसके साथ ही अन्य दशा एवं गोचर फल भी सामान्य फलदायक रहेंगे अतः इच्छित सफलता अर्जित करने के लिए आपको परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही शनि के साढ़ेसाती के प्रभाव को भी अल्प करने के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करें। इससे आप मानसिक शान्ति तथा अन्यत्र सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष राहु की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय अधिक परिश्रम करने पर भी महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही मिलेगी साथ ही योजनाओं में भी समस्याएं एवं व्यवधान उत्पन्न होंगे। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक सुख शान्ति में भी न्यूनता रहेगी तथा परस्पर विवादों तथा वैमनस्य के कारण प्रेमभाव का अभाव रहेगा। यदि नौकरी में है तो आपको कार्य क्षेत्र में चिन्ता रहेगी एवं अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में कटूता के कारण परेशानियां उत्पन्न होंगी। लेकिन उतरार्ध में पूवार्ध की अपेक्षा कुछ शुभ फलों की प्राप्ति होगी तथा रुके हुए कार्य भी पूर्ण होंगे। अतः पूवार्ध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें तथा बुद्धिमता एवं संयमपूर्वक अपना समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2025

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

राहु की महादशा में शनि का अंतर 02/01/2025 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि बुध नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया मिश्रत फलदायक रहेगा परन्तु अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में मिलेंगे। पूवार्ध में व्यापार की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी तथा आवश्यक लाभ एवं उन्नति भी होती रहेगी साथ ही कुछ महत्वाकांक्षी योजनाएं तथा कार्य भी सफल होंगी पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। मित्रवर्ग से भी आपको सहयोग मिलेगा तथा एक दूसरे के प्रति विश्वसनीयता का भाव रहेगा। नौकरी में भी स्थिति सन्तोषजनक रहेगी तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध रहेंगे। लेकिन उतरार्ध अच्छा नहीं रहेगा इस समय कार्य सिद्धि में विलम्ब होगा तथा आर्थिक नयूनता की भी सम्भावना रहेगी। साथ ही किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। अतः ऐसे समय में जोखिम के कार्यों से दूर रहें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आप सर्वत्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आएंगे एवं उनसे मित्रता पूर्ण संबध स्थापित होंगे व्यापार में आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा इसमें विस्तार की भी संभावना रहेगी यदि आप नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में मधुरता रहेगी साथ ही कुछ दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी सम्पन्न होगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिल जुलकर प्रेम पूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दर्शन शास्त्र आदि में भी रुचि उत्पन्न होगी अतः समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करें।

फलादेश - 2026

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा इसके प्रभाव से आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध तथा चिडचिडे पन का भाव उत्पन्न होगा तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। मानसिक स्थिति भी इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेंगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह पूर्वक करने में असमर्थ रहेंगे लेकिन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आपको न्यूनाधिक सफलता इसमें मिलती रहेगी । व्यापार में इस समय उन्नति मार्ग में व्यवधान आएंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी शत्रु या विरोधी पक्ष के प्रबल होने से आपकी पदोन्नति में विलम्ब होगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में ही धन एवं लाभ अर्जित होगा लेकिन यदा कदा व्यय की अधिकता से आर्थिक न्यूनता की अनुभूति होगी तथापि आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

इसके साथ ही ऐसे समय में अन्य गोचर तथा दशा भी विशेष अनुकूल नहीं रहेगी अतः आपको सर्वत्र अतिरिक्त पराक्रम परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी आपको न्यूनाधिक सुख एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का नियमित रूप से उपवाश, पूजन तथा दान करना चाहिए ।

शनि की स्थिति गोचर वश इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा परस्पर तनाव एवं मतभेद रहेंगे। साथ ही सहयोग के भाव की भी अल्पता रहेगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथापि अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप पराक्रम एवं परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता समय समय पर मिलती रहेगी। लेकिन शत्रु या विपक्षी इस समय आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः व्यापार या नौकरी के क्षेत्र में आपको उन्नति मार्ग में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही इस समय धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में ही होगा।

इस वर्ष में गोचर तथा अन्य दशाफल भी आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे साथ ही शनि की साढ़े साती की अन्तिम दशा भी रहेगी जिससे आपको पारिवारिक सामाजिक व्यापारिक एवं नौकरी तथा राजनीति आदि में अनावश्यक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। परन्तु अपने परिश्रम एवं संघर्ष से आप न्यूनाधिक मात्रा में लाभ एवं सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को ही बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी ।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में रहेगी। अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से यदा कदा कष्ट एवं परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता की अल्पता रहेंगी तथा यदा कदा मतभेद एवं तनाव रहेगा। इस समय

आपकी आर्थिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा। परन्तु व्यय की अधिकता के कारण आप को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। कार्य क्षेत्र में भी उन्नति एवं सफलता के लिए अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तथा इसमें भी अल्प मात्रा में ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। इस समय आपके नवीन सम्पर्क बनेंगे परन्तु पुराने सम्पर्कों में न्यूनता रहेगी परन्तु नवीन सम्पर्कों में आपको भविष्य में लाभ की संभावना रहेगी।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अच्छे नहीं रहेंगे। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम एवं संघर्ष से ही आपको न्यूनाधिक सफलता मिलेगी। अतः शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन तथा दान करना चाहिए। इससे परिस्थितियों में अनुकूलता आएगी तथा मन में शान्ति भी बनी रहेगी।

इस वर्ष राहु की महादशा में बुध का अंतर रहेगा। बुध नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया उत्तम रहेगा इस समय आपकी महत्वाकांक्षी योजनाएं पूर्ण होंगी तथा इच्छित सफलताएं भी प्राप्त होंगी। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि इस समय अच्छी रहेगी तथा सभी सदस्य परस्पर मिल जुलकर रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे इस समय में परिवार किसी शुभ या मांगलिक कार्य के सम्पन्न होने की पूर्ण संभावना रहेगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे व्यापारिक क्षेत्र के लिए समय उन्नति कारक रहेगा एवं इसमें विस्तार आदि में भी सफलता मिल सकती है यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी तथा अधिकारी वर्ग से मधुर संबध स्थापित होंगे। अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2027

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

राहु की महादशा में बुध का अंतर 22/07/2027 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु का अंतर प्रारंभ होगा। दोनों अंतर्दशाओं के स्वामी ग्रह एक ही भाव एवं राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति होगी तथा प्रभावशाली लोगों से आपके संपर्क स्थापित होंगे जिससे महत्वपूर्ण योजनाओं में सफलता मिलेगी साथ व्यापर में भी लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त

रहेंगे एवं विस्तार आदि की भी संभावना रहेगी। यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से संबधों में मधुरता रहेगी तथा पदोन्नति के भी प्रबल अवसर मिलेंगे ऐसे समय में पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा परस्पर विश्वास के भाव में वृद्धि होगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में भी अभिवृद्धि होगी एवं लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी सम्पन्न होंगी तथा पारिवारिक सुख शांति एवं समृद्धि भी बनी रहेगी। अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा तथा आपकी महत्वकांक्षी योजनाओं को सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। व्यापार मे आपकी स्थिति सन्तोषजनक रहेगी तथा उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के योग बनेंगे तथा अधिकारी वर्ग से भी सम्बंधों में मधुरता रहेगी जिससे वे आपसे प्रभावित रहेंगे इस समय प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे अवसरानुकूल लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा पारिवारिक दृष्टि से भी सुख शान्ति बनी रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेम एवं सहयोग से रहेंगे। इस समय धर्म एवं दर्शन के प्रति आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा इसी संदर्भ में धार्मिक लोगों से आपके सम्पर्क स्थापित होंगे इसके अतिरिक्त दूर समीप की कुछ महत्वपूर्ण यात्राएं सम्पन्न होंगी जिससे वांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा।

फलादेश - 2028

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा अनायास ही किसी सफलता के योग बनेंगे। इस समय वेरोजगारो के रोजगार मिलने के भी अवसर आएंगे। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न हो सकता है। स्त्री से आप इस वर्ष पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धो में भी मधुरता रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय समाज में आपके प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। परन्तु यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आय गोचरफल अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। अतः शुभ फलों की अधिकता रहेगी परन्तु यदा कदा अशुभ फल भी घटित होंगे।

इस वर्ष में तृतीय भाव में गोचर वश शनि भ्रमण करेगा। यह समय आपके लिए शुभ फल दायक समझा जाएगा। इस समय आपके लिए सभी रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करेंगे। साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति में भी उन्नति होगी जिससे आप उचित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसवर्ष में आपकी लम्बी दूरी की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा उनसे आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय शुभ रहेगा तथा इस समय आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। साथ ही इस वर्ष गोचरफल की भी प्रतिकूलता रहेगी परन्तु दशा फल शुभ रहेगा अतः यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास होगा तथापि आपका सामान्य समय इस वर्ष अच्छा ही व्यतीत होगा एवं सुखपूर्वक आप अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

राहु की महादशा में केतु का अंतर 09/08/2028 को समाप्त होगा। उसके बाद शुक्र का अंतर प्रारंभ होगा। केतु नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि शुक्र अष्टम् भाव में ध
नु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए प्रतिकूल रहेगा तथा आपके कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या योजना सफल नहीं होगी। व्यापार में भी स्थिति संतोषजनक नहीं रहेगी तथा लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे साथ ही किसी नवीन कार्य या योजना का भी प्रारम्भ नहीं होगा। यदि नौकरी में है तो कार्यक्षेत्र में परेशानी रहेंगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंध मधुर न होने के कारण वे आपके लिए अतिरिक्त समस्याएं उत्पन्न करेंगे इस समय अनावश्यक अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा इनसे कोई लाभ नहीं होगा। मित्रवर्ग से भी लाभ एवं सहयोग में कमी आएगी तथा विश्वसनीयता भी प्रभावित होगी लेकिन पारिवारिक शान्ति भी बनी रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा संतोषजनक परिणाम प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। व्यापारिक क्षेत्र में भी आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जिससे उन्नति मार्ग अवरुद्ध रहेंगे। साथ ही परिश्रम करने पर भी आपके रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं होंगे। यदि आप नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध रखने चाहिए तथा जोखिम पूर्ण कार्यों से बचना चाहिएं अन्यथा कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी मध्यम रहेगी तथा सदस्यों का आपस में स्नेह तथा सहयोग का अभाव रहेगा साथ ही वे आपको वांछित सहयोग नहीं देंगे। साथ ही ऐसे समय में किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से भी अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों मैं कमी आएगी। इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपको सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु यात्राओं से सम्भावना रहेगी। अतः समय संयम तथा धैर्यपूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2029

इस वर्ष में बृहस्पति का गोचरीय भ्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे परन्तु यदा कदा मानसिक तनाव से आपको किंचित मात्रा में परेशानी हो सकती है। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी राजनीति या व्यापारिक क्षेत्र में शत्रु तथा विरोधी पक्ष के द्वारा समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी लेकिन आप परिश्रम पूर्वक इनका समाधान करेंगे। इस वर्ष में आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति इस समय मध्यम रहेगी तथा आय के साथ साथ व्यय की भी अधिकता होगी परन्तु लाभमार्ग प्रशस्त करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। इस समय आपको किसी विशिष्ट लाभ की प्राप्ति की संभावना रहेगी साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं न्यूनाधिक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सर्वत्र आप अतिरिक्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजा तथा दानादि कार्य करना चाहिए।

इस वर्ष में तृतीय भाव में गोचर वश शनि भ्रमण करेगा। यह समय आपके लिए शुभ फल दायक समझा जाएगा। इस समय आपके लिए सभी रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करेंगे। साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति में भी उन्नति होगी जिससे आप उचित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसवर्ष में आपकी लम्बी दूरी की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा उनसे आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय शुभ रहेगा तथा इस समय आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। साथ ही इस वर्ष गोचरफल की भी प्रतिकूलता रहेगी परन्तु दशा फल शुभ रहेगा अतः यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास होगा तथापि आपका सामान्य समय इस वर्ष अच्छा ही व्यतीत होगा एवं सुखपूर्वक आप अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगी। इस समय आपको सांसारिक कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा व्यापार में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे जिससे उन्नति एवं लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी ऐसे समय में आपको सहयोग नहीं मिलेगा। तथा परिवार में अशान्ति का वातावरण रहेगा और एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको समय पर लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा। लेकिन ऐसे समय में अकस्मात लाभ योग बनेंगे। अतः यत्नशील रहें।

फलादेश - 2030

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों के परोपकार सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण रुके हुए कार्य बन जाएँगे तथा व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी नवीन लाभदायक योजनाओं का प्रारम्भ होगा। साथ ही नौकरी या राजनैतिक क्षेत्र में भी आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। समाज में इस समय आप एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभर सकेंगे तथा मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा फल शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्पता का आभास होगा परन्तु सामान्यतया परिणाम सुखद ही रहेंगे।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके

लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आप व्यापारिक क्षेत्र में गम्भीरतापूर्वक कार्य करेंगे फलतः इसमें आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति होगी साथ ही उन्नति एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना रहेगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। एवं वे आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आर्थिक स्थिति से भी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। पारिवारिक जनों का भी आपके प्रति सहयोग का भाव रहेगा तथा परिवार में सुख शान्ति बनी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे। साथ ही मित्र वर्ग से वांछित सहयोग मिलता रहेगा तथा आपस में विश्वास का भाव बना रहेगा। लेकिन ऐसे समय में अकस्मात हानि के भी योग बन सकते हैं। अतः सावधान रहें।

फलादेश - 2031

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके

लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

राहु की महादशा में शुक्र का अंतर 10/08/2031 को समाप्त होगा। उसके बाद सूर्य का अंतर प्रारंभ होगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि सूर्य नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा परन्तु शुभफलों की प्राप्ति में अधिकता रहेगी। व्यापार में आपको सुअवसरों की प्राप्ति होगी तथा उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे इस समय अन्यत्र लाभ या उन्नति भी हो सकती है। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी तथा वे आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे पारिवारिक सुख एवं शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी। तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं से भी लाभ होगा तथा भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे साथ ही सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी एवं सून्दरता के प्रति आकर्षण में वृद्धि होगी। इस समय अचानक धनलाभ के भी योग बनेंगे। अतः यत्नशील रहें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आप को कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं तथा कार्यों में भाग्यबल से सफलता की प्राप्ति होगी। इससे आपमें विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास के भाव की उत्पत्ति होगी। साथ ही प्रभावशाली व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से मित्रता भी होगी एंव भविष्य में उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस समय की गई यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा भविष्य में उन्नति के नये आयाम प्रशस्त होंगे। मित्र एवं शुभ चिन्तकों से आप यथोचित सहयोग प्राप्त करने में समर्थ होंगे। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुदूर क्षेत्रों में भ्रमण आदि से भी आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। अतः ऐसे समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2032

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति द्वादश भाव में भ्रमण करेगा अतः इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप उद्विग्नता की अनुभूति कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु व्यय की अधिकता रहेगी। इस वर्ष में आप किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर व्यय कर सकते है। कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष परिश्रमशील रहेगा परन्तु उन्नति एवं सफलताएं प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी यद्यपि इसमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य के लिए लाभ दायक सम्पर्क बनेंगे जिससे लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अनुकूल रहेंगे जिससे आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम एवं पराक्रम से सफलता मिलती रहेगी तथा व्यय के साथ साथ उचित धनार्जन भी होगा अतः आप किंचित शान्ति की अनुभूति अवश्य करेंगे।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति नवम तथा केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे तथा भाग्यबल में भी प्रबलता रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य इस समय आपका अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में क्रोधकी प्रबलता रहेगी जिससे यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न होगी। केतु के प्रभाव से इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही आय गोचरफल एवं दशा भी इस समय अनुकूल रहेगी। अतः इस वर्ष में आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

राहु की महादशा में सूर्य का अंतर 03/07/2032 को समाप्त होगा। उसके बाद चन्द्र का अंतर प्रारंभ होगा। सूर्य नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र दशम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा इस समय आपको कई सुअवसरों की प्राप्ति होगी तथा कोई उल्लेखनीय परिवर्तन आपके कार्य क्षेत्र या सामाजिक स्तर में हो सकता है साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग या प्रभावशाली लोगों के सम्पर्क में आएंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। इस समय आपकी दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेगी तथा उनसे भविष्य के लिए लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति में स्थायित्व रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता होगा। इस समय आपके मान सम्मान तथा प्रसिद्धि में वृद्धि होगी एंव शत्रुपक्ष को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त सूर्य की इस अंतर्दशा में आकस्मिक धन प्राप्ति के भी योग बन सकते है।

यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण उन्नतिदायक रहेगा। इस समय आप में सक्रियता के भाव की प्रबलता रहेगी तथा साहस एवं आत्मविश्वास द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आपको ऐसे समय भी किसी असाधारण उपलब्धि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने वर्तमान कार्य कलापों में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे इस समय कोई नवीन व्यापार या कार्य भी प्रारम्भ कर सकते है। यदि नौकरी पर है तो पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी। आपके उच्चाधिकारी वर्ग या प्रभावशाली लोगों से मधुर संबध स्थापित होंगे जिससे उनसे लाभ एवं सहयोग में अनुकूलता रहेगी। सामाजिक मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा में इस समय वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख शांति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग प्रेम पूर्वक रहेंगे इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र संबधी यात्राएं सम्पन्न होगी तथा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा साथ ही यात्राओं के मध्य कुछ प्रभावशाली मित्र भी बनेंगे। अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2033

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से इस समय आपके मानसिक शारीरिक एवं सामाजिक धरातल में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे तथा कार्यक्षेत्र में आपको विशिष्ट उन्नति प्राप्त होगी। इस वर्ष में अविवाहितों के लिए विवाह का योग बनेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा धार्मिक कार्य कलपों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि भी सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होकर प्रचुर मात्रा में धन लाभ होगा। आपके विगत रुके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने को अनुभवी व्यक्ति समझेंगे परन्तु विश्राम का अभाव रहेगा तथा कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

इस वर्ष राहु की महादशा में चन्द्र का अंतर रहेगा। चन्द्र दशम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए उन्नति कारक रहेगा इस समय अपनी सकारात्मक विचारशक्ति के द्वारा अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा इस समय आपके सामाजिक स्तर में भी वृद्धि होगी तथा प्रभावशाली लोगों के सम्पर्क में आएंगे जिससे आपको लाभ होगा। नौकरी में पदोन्नति की पूर्ण संभावना रहेगी। मान सम्मान में इस समय वृद्धि होगी तथा किसी वाहन आदि का भी कय करने में समर्थ रहेंगे। पारिवारिक सुख शांति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग मिलजुलकर रहेंगे इसके अतिरिक्त लाभदायक यात्राओं के भी योग बनेंगे। अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2034

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्विग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की

वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

इस वर्ष गुरु की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ राहु की महादशा में चन्द्र के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति गुरु की महादशा में गुरु के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया उत्तम रहेगा इस समय आप सुअवसरों का पूर्ण लाभ उठाएंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे व्यापारिक क्षेत्र में आपका विस्तार होगा तथा किसी नवीन योजना का प्रारंभ भी कर सकते है। इस समय प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बनेंगे तथा सामाजिक क्षेत्र में विस्तारिता आएगी आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी नौकरी में पदोन्नति या स्थान परिवर्तन का भी इस समय प्रबल योग बनता है। पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपस में मिल जुलकर रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी। तथा परिवार में कोई शुभ या मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होगा। अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए उत्तम रहेगा इस समय र्सवत्र आपके इच्त्ति सफलताएं मिलेंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। आपमें सक्रियता का भाव उत्पन्न होगा दैनिक कार्यकलापों में पूर्ण रुचि लेंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा तथा उनसे मित्रता का भाव रहेगा। परिवार का वातावरण सुख एवं शान्ती से युक्त रहेगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इस समय परिवार के सदस्यों में वृद्धि भी हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा मान अर्जित होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं से लाभ होगा तथा भविष्य के लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त होगें सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी ऐसे समय में वृद्धि होगी तथा मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा अतः समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करें।

फलादेश - 2035

बृहस्पति का इस वर्ष में गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण होगा। अतः इसके प्रभाव से आप दूर समीप की यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको न्यूनाधिक लाभ की प्राप्ति होगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति इस समय आपके मन में अध्ययन की रुचि भी उत्पन्न हो सकती हैं। पुराने मित्रवर्ग से इस वर्ष आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अवीन नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिनसे भविष्य में आपको लाभ एवं सहयोग की संभावना रहेंगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशाल हृदयता का प्रदर्शन करेंगे। फलतः समाज में भी मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल इस समय अच्छा नहीं रहेगा लेकिन दशा फल शुभ रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में आपको यदा कदा न्यूनता दृष्टिगोचर होगी परन्तु अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष से आप शुभ फल अर्जित कर सकेंगे।

गोचरवश शनि इस वर्ष में षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आप व्यापार अथवा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस समय व्यापार में आपकी आश्चर्यजनक एवं उन्नति कारक परिवर्तन की संभावना रहेगी। साथ ही नौकरी आदि में आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रु को पराजित करेंगे तथा किसी प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में भी सफल रहेंगे। इस समय आपकी लाभ एवं सम्मानित यात्राओं का भी योग बनता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। इसके प्रभाव से यदा कदा आपको उपर्युक्त शुभ फलों में अल्पता का आभास होगा परन्तु स्वयं के परिश्रम एवं बुद्धिबल से आप इच्छित सफलता प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु सप्तम तथा केतु की स्थिति प्रथम पर रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आपको मानसिक अशान्ति एवं असन्तुष्टि का सामना करना पड़ेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता प्राप्त होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय पत्नी का स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं परस्पर संबंध भी मध्यम रहेंगे। साथ ही व्यापार या कार्य क्षेत्र में साझेदार या सहयोगियों से भी कोई समस्या हो सकती है। अतः सतर्क रहना चाहिए। इस समय सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी सामान्य रहेगी तथा आर्थिक दृष्टि से भी आपका अत्यधिक परिश्रम के उपरांत ही आवश्यक धनार्जन होगा लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। फलतः वर्ष सामान्य रहेगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ एवं दशा मध्यम रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों में परिश्रम पूर्वक सफलता मिलेगी तथा अन्यत्र भी समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः शुभ फलों की वृद्धि तथा अशुभ फलों में कमी करने के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

महादशा एवं अंर्तदशा स्वामी सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

फलादेश - 2036

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति का भ्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतःयह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर स्नेहपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष आपकी विगत सोचे हुए योजनाएँ तथा महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में भी इस समय आपकी उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। साथ ही समाज से आपको यथोचित मान सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप आवास, जायदाद या वाहन संबन्धी सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस वर्ष माता तथा ससुराल से भी लाभ के योग बनेंगे। साथ ही इस वर्ष में आयगोचरफल तथा दशा भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण होगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण यात्राएँ सम्पन्न होंगी तथा व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से भी आप सुदृढ़ रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में भी आप सफल होंगे। व्यापार में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। शत्रु पक्ष आपसे भयभीत रहेगा तथा किसी प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में आपको सफलता मिलेगी। साथ ही अन्य गोचर एवं दशा फल भी शुभ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सर्वत्र आदर प्राप्त होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए साान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप समर्थ रहेंगे। अतः कोई प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में आपको इस वर्ष में सफलता प्राप्त हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा आय स्रोतों में वृद्धि होगी। जिससे प्रचुर मात्रा में आप धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय मन में इच्छाओं की वृद्धि होगी फलतः मानसिक उद्विग्नता रहेगी परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा शुभ रहेगी। अतः सामान्यतया आपको शुभ फल ही अधिक प्राप्त होंगे।

महादशा एवं अंतर्दशा स्वामी सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

फलादेश - 2037

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति पंचम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय ज्ञानार्जन करने में आपकी रुचि रहेगी तथा विभिन्न विषयों का आप रुचि पूर्वक अध्ययन करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आय होगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो प्रेमप्रसंग चलने की संभावना रहेगी। व्यापारिक क्षेत्र में तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय अनुकूल रहेगा। इस समय मंत्रीगण या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा उनसे आप वांछित मात्रा में लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सन्तति पक्ष से इस समय आप निश्चिंत रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उत्तम रहेगा।

इस वर्ष गोचर वश शनि सप्तम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा नौकरी या राजनीति में भी आप सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही यदा कदा आप मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे परन्तु इसका सामान्य कार्य कलापों पर कोई प्रभाव नहीं होगा तथा उत्साह एवं पराक्रम से आप अपने कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा साथ ही किसी लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल आपके लिए अनुकूल रहेंगे अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको सफलता मिलेगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आवास या जायदाद संबंधी कोई कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ फल ही प्रदान करेगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए साान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप समर्थ रहेंगे। अतः कोई प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में आपको इस वर्ष में सफलता प्राप्त हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा आय स्रोतों में वृद्धि होगी। जिससे प्रचुर मात्रा में आप धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय मन में इच्छाओं की वृद्धि होगी फलतः मानसिक उद्विग्नता रहेगी परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा शुभ रहेगी। अतः सामान्यतया आपको शुभ फल ही अधिक प्राप्त होंगे।

गुरु की महादशा में गुरु का अंतर 10/03/2037 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए उत्तम रहेगा इस समय सर्वत्र आपके इच्चित सफलताएं मिलेंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। आपमें सक्रियता का भाव उत्पन्न होगा दैनिक कार्यकलापों में पूर्ण रुचि लेंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा तथा उनसे मित्रता का भाव रहेगा। परिवार का वातावरण सुख एवं शान्ती से युक्त रहेगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इस समय परिवार के सदस्यों में वृद्धि भी हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा मान अर्जित होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं से लाभ होगा तथा भविष्य के लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त होगें सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी ऐसे समय में वृद्धि होगी तथा मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा अतः समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए सन्तोषजनक रहेगा इस समय आपके कुछ सोचे हुए कार्य तथा योजनाएं सफल होंगी तथा व्यापार में भी उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा एवं आय स्रोतों में वृद्धि की सम्भावना रहेगी। नौकरी के कार्यस्तर में वृद्धि होगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी जिससे वे आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति भी अनुकूल रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आप निश्चिंत रहेंगे। इसके अतिरिक्त लाभदायक दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिनसे भविष्य में उन्नति के नए मार्ग बनेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु जोखिम के कार्यों की उपेक्षा करनी चाहिए।

फलादेश - 2038

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

गोचर इस वर्ष राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की एकादश भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। इस समय मानसिक रूप से आप शान्त रहेंगे तथा मन में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ नहीं रहेंगी। सन्तति पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक या मानसिक रुप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इस समय इच्छित मात्रामें धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी अचानक धनलाभ के योग बनेंगे। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति के मार्ग पर

अग्रसर रहेंगे। इस वर्ष किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या उच्चाधिकारी से आपका निकट का सम्बन्ध बनेगा जिससे भविष्य में आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। परन्तु गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल देंगे लेकिन दशा शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी तथा मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी।

इस वर्ष गुरु की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा परन्तु शुभ फलों की प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। व्यापार में आपके लिए समय अच्छा रहेगा तथा इच्छित लाभ एवं उन्नति करने में समर्थ रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की प्रबल सम्भावना बनेगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे। एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार के क्षेत्र में कुछ बुद्धिमतापूर्ण पूंजी निवेश भी होगा मित्रवर्ग से आपको अवसरानुकूल लाभ मिलेगा एवं आपस में विश्वास की भावना बनी रहेगी। लेकिन सम्बंधियों से जायदाद सम्बंधी विवाद हो सकता है।

फलादेश - 2039

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा अनायास ही किसी सफलता के योग बनेंगे। इस समय वेरोजगारो के रोजगार मिलने के भी अवसर आएंगे। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न हो सकता है। स्त्री से आप इस वर्ष पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धो में भी मधुरता रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय समाज में आपके प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। परन्तु यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आय गोचरफल अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। अतः शुभ फलों की अधिकता रहेगी परन्तु यदा कदा अशुभ फल भी घटित होंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुण्ँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं।

इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

गुरु की महादशा में शनि का अंतर 21/09/2039 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि बुध नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अनुकूल फलदायक रहेगा। इस समय आपकी चिरकाल की सोची हुई महत्वकांक्षा पूर्ण होगी तथा अन्यत्र भी सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। व्यापार में आप उन्नति करेंगे तथा लाभ भी होता रहेगा। तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं आय स्रोतों में वृद्धि भी होगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे। एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी उतरार्ध पूवार्ध की अपेक्षा उत्तम रहेगा तथा कुछ रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे। अतः समय को बुद्धिमतापूर्वक व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आप सर्वत्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आएंगे एवं उनसे मित्रता पूर्ण संबध स्थापित होंगे व्यापार में आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा इसमें विस्तार की भी संभावना रहेगी यदि आप नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में मधुरता रहेगी साथ ही कुछ दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी सम्पन्न होगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिल जुलकर प्रेम पूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दर्शन शास्त्र आदि में भी रुचि उत्पन्न होगी अतः समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करें।

फलादेश - 2040

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति अष्टम भाव में भ्रमण करेगा इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप अशान्ति एवं असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे तथा क्रोध की भी प्रबलता रहेगी। अतः आपके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत पराक्रम एवं परिश्रम से सफल होंगे तथा संघर्ष से ही आपको इच्छित सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा व्यापार नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में इस समय व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु इनका सामना करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय की भी अधिकता रहेगी। परन्तु आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस वर्ष ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इनका ज्ञानार्जन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे।

इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशाफल भी विशेष शुभ नहीं रहेंगे अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान आएंगे तथा परिश्रम पूर्वक ही आप समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। अतः बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभाव में वृद्धि करने के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजन तथा दान आदि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष में शनि का संक्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आपकी स्थिति अच्छी नहीं रहेंगी। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें सफलता अल्प ही प्राप्त होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी समय समय पर अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें। इस वर्ष में दाम्पत्य संबंधों में भी सामान्यतया तनाव का वातावरण रहेगा । तथा पत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। बन्धु मित्र एवं पारिवारिक जनों से भी आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। अतः मानसिक तनाव से भी आप ग्रस्त होंगे।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल फल प्रदान नहीं करेंगे। अतः आपके उन्नति मार्ग अवरुद्ध होंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष के उपरांत ही न्यूनाधिक सफलता की प्राप्ति हो सकेगी। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः शनि के प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से इसका पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपको शुभ फलों की प्राप्ति हो सकेगी।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य ही समझा जाएगा। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा परिश्रमपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस वर्ष में आप जमीन जायदाद सम्बन्धी क्रय विक्रय भी कर सकते हैं या वाहनादि के

प्राप्ति की संभावना रहेगी । आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सामान्य रहेगी तथा मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा। कार्यक्षेत्र में भी आप इस वर्ष परिश्रमपूर्वक उन्नतिशील रहेंगे। लेकिन माता पिता का स्वास्थ्य इस समय मध्यम रहेगा तथा समय समय पर वे शारीरिक एवं मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इसके साथ ही इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी सम्पन्न होंगी परन्तु अन्य गोचरफल तथा दशा फल इस समय अशुभ रहेंगे।अतः उपर्युक्त शुभ फलों मैं न्यूनता होगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

इस वर्ष गुरु की महादशा में बुध का अंतर रहेगा। बुध नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वांछित उन्नति नहीं होगी तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में न्यूनता रहेगी सदस्यों का परस्पर असहयोग तथा वैमनस्य का भाव रहेगा आर्थिक दृष्टि से समय प्रतिकूल रहेगा तथा आय स्रोतों में कमी आएगी जिससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है। व्यापार के लिए भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पडेगा नौकरी में पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा एवं अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा लेकिन ऐसे समय में यात्राएं लाभदायक रहेगी तथा दूर समीप की यात्राओं से लाभ तथा सम्मान प्राप्त होगा अतः धैर्य एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2041

इस वर्ष में बृहस्पति का गोचरीय भ्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे परन्तु यदा कदा मानसिक तनाव से आपको किंचित मात्रा में परेशानी हो सकती है। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी राजनीति या व्यापारिक क्षेत्र में शत्रु तथा विरोधी पक्ष के द्वारा समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी लेकिन आप परिश्रम पूर्वक इनका समाधान करेंगे। इस वर्ष में आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति इस समय मध्यम रहेगी तथा आय के साथ साथ व्यय की भी अधिकता होगी परन्तु लाभमार्ग प्रशस्त करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। इस समय आपको किसी विशिष्ट लाभ की प्राप्ति की संभावना रहेगी साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं न्यूनाधिक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सर्वत्र आप अतिरिक्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजा तथा दानादि कार्य करना चाहिए।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति तृतीय तथा केतु की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके पराक्रम एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी पराजित होंगे वे आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे। मानसिक स्थिति इस वर्ष में अच्छी रहेगी तथा निश्चिन्त एवं शान्त होकर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम पूर्वक स्वपराक्रम

से किसी विशिष्ट उन्नति या सफलता को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। मित्रवर्ग से इस समय आपको इच्छित सहयोग मिलेगा परन्तु बन्धुवर्ग से कोई चिन्ता हो सकती है। इसके साथ ही अन्य गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः इस वर्ष में उपर्युक्त शुभ फलों की ही अधिकता रहेगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में यदा कदा ही प्राप्त होंगे।

गुरु की महादशा में बुध का अंतर 27/12/2041 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु का अंतर प्रारंभ होगा। दोनों अंतर्दशाओं के स्वामी ग्रह एक ही भाव एवं राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति होगी तथा प्रभावशाली लोगों से संपर्क में न्यूनता आएगी। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में सुदृढ़ता नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध होंगे इससे आपको यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पडसकता है। नौकरी में भी समस्याओं का सामना करना पडेगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा फलतः पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा। मित्रों से ऐसे समय में अनुकूल सहयोग नहीं मिलेगा एवं आपस में विश्वास के भाव में न्यूनता आएगी। सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी मध्यम ही रहेगी इसके अतिरिक्त ऐसे समय में अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा इनसे कोई लाभ भी नहीं होगा साथ ही पारिवारिक अशांति तथा तनाव भी बना रहेगा अतः ऐसे समय को धैर्य तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। इस समय व्यापार में समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा हानि की भी सम्भावना बनेगी तथा कोई भी महत्वपूर्ण योजनाएं सफल नहीं होंगी जिससे आपके मन में निराशा उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा धनाभाव का सामना करना पड़ सकता है। पारवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों का आपस में प्रेमपूर्वक सहयोग के भाव की कमी रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा धार्मिक प्रवृति के लोगों से आपके सम्पर्क नहीं होंगे लेकिन दूर समीप की यात्राएं से आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

फलादेश - 2042

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह समय आपके लिए अत्यन्त सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा परोपकार संबन्धी कार्यों को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके विगत सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। तथा नवीन व्यापारिक या अन्य लाभदायी योजनाएँ भी बनेंगी साथ ही कार्य क्षेत्र में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा मान सम्मान की वृद्धि होगी तथा प्रसिद्धि भी दूर दूर तक फैलेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आप धन तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही कोई भाग्योदय संबन्धी कार्य भी सम्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आय दशाफल तथा गोचरफल भी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। अतः वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय भाव तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। अतः आपके लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे को अपना यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे तथापि इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा परन्तु व्यय भी यदा कदा अधिक होगा। इससे कोई खास परेशानी नहीं होगी। साथ ही जायदाद संबंधी लाभ की भी संभावना बनेंगी।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की संभावना रहेंगी। इस प्रकार आपके लिए यह समय सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

गुरु की महादशा में केतु का अंतर 03/12/2042 को समाप्त होगा। उसके बाद

शुक्र का अंतर प्रारंभ होगा। केतु नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपकी आकांक्षाए तथा इच्छाएं पूर्ण होंगी तथा व्यापार में भी अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे जिससे मानसिक समृद्धि बनी रहेगी। यदि नौकरी में है तो आपको पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग से मित्रतापूर्वक सम्बंध रहेंगे जिससे वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी जिससे आपको वांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा एवं भविष्य के लिए भी नवीन आयाम स्थापित होंगे। मित्रवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी इसके अतिरिक्त परिवार के सदस्यों से भी आपको वांछित सहयोग मिलता रहेगा तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सहानुभूति का भाव रखेंगे।

यह समय आपके लिए शुभ एवं फलदायक रहेगा। इस समय आप अपनी महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने में असमर्थ होंगे तथा व्यापार में लाभ एवं उन्नति होगी साथ ही कुछ व्यापारिक योजनाएं भी कार्यान्वित होंगी। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना रहेगी तथा अधिकारी एवं वरिष्ठ सहयोगियों से मधुर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे। मित्रवर्ग से भी आपको अवसरानुकूल वांछित लाभ तथा एवं सहयोग मिलत रहेगा एवं आपस में विश्वसनीयता का भाव रहेगा। लेकिन यात्राओं की उपेक्षा करें क्योकि इसमें विशेष लाभ नहीं हो सकता।

फलादेश - 2043

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय भाव तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। अतः आपके लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे को अपना यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे तथापि इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा परन्तु व्यय भी यदा कदा अधिक होगा। इससे कोई खास परेशानी नहीं होगी। साथ ही जायदाद संबंधी लाभ की भी संभावना बनेंगी।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की संभावना रहेंगी। इस प्रकार आपके लिए यह समय सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

इस वर्ष गुरु की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगी। इस समय आपको सांसारिक कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा व्यापार में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे जिससे उन्नति एवं लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी ऐसे समय में आपको सहयोग नहीं मिलेगा। तथा परिवार में अशान्ति का वातावरण रहेगा और एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको समय पर लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा। लेकिन ऐसे समय में अकस्मात लाभ योग बनेंगे। अतः यत्नशील रहें।

फलादेश - 2044

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति द्वादश भाव में भ्रमण करेगा अतः इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप उद्विग्नता की अनुभूति कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु व्यय की अधिकता रहेगी। इस वर्ष में आप किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर व्यय कर सकते है। कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष परिश्रमशील रहेगा परन्तु उन्नति एवं सफलताएं प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी यद्यपि इसमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य के लिए लाभ दायक सम्पर्क बनेंगे जिससे लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अनुकूल रहेंगे जिससे आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम एवं पराक्रम से सफलता मिलती रहेगी तथा व्यय के साथ साथ उचित धनार्जन भी होगा अतः आप किंचित शान्ति की अनुभूति अवश्य करेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

गोचर वश इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में रहेगी अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। इस समय आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम रहेगा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता हो सकती है। इस समय आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी लेकिन स्त्री का स्वास्थ्य न्यूनाधिक रूप से प्रभावित रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। कार्य क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलती रहेगी। साथ ही मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी आएगी तथा नवीन सर्म्पकों में वृद्धि होगी जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा। इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशाफल अनुकूल रहेंगे अतः आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा।

इस वर्ष गुरु की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आप व्यापारिक क्षेत्र में गम्भीरतापूर्वक कार्य करेंगे फलतः इसमें आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति होगी साथ ही उन्नति एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना रहेगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। एवं वे आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आर्थिक स्थिति से भी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। पारिवारिक जनों का भी आपके प्रति सहयोग का भाव रहेगा तथा परिवार में सुख शान्ति बनी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे। साथ ही मित्र वर्ग से वांछित सहयोग मिलता रहेगा तथा आपस में विश्वास का भाव बना रहेगा। लेकिन ऐसे समय में अकस्मात हानि के भी योग बन सकते हैं। अतः सावधान रहें।

फलादेश - 2045

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से इस समय आपके मानसिक शारीरिक एवं सामाजिक धरातल में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे तथा कार्यक्षेत्र में आपको विशिष्ट उन्नति प्राप्त होगी। इस वर्ष में अविवाहितों के लिए विवाह का योग बनेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा धार्मिक कार्य कलपों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि भी सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होकर प्रचुर मात्रा में धन लाभ होगा। आपके विगत रुके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने को अनुभवी व्यक्ति समझेंगे परन्तु विश्राम का अभाव रहेगा तथा कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

इस वर्ष शनि गोचरवश दशम भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आपकी महत्वपूर्ण उन्नति होगी तथा उन्नतिकारक किसी परिवर्तन की भी संभावना रहेगी तथा राजनैतिक क्षेत्र के लिए यह समय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको इस क्षेत्र में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति हो सकती है। नौकरी या अन्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल एवं दशाफल भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय अत्यन्त ही उन्नतिकारक एवं शुभ रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

गुरु की महादशा में शुक्र का अंतर 03/08/2045 को समाप्त होगा। उसके बाद सूर्य का अंतर प्रारंभ होगा। शुक्र अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि सूर्य नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा परन्तु शुभफलों की प्राप्ति में अधिकता रहेगी। व्यापार में आपको सुअवसरों की प्राप्ति होगी तथा उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे इस समय अन्यत्र लाभ या उन्नति भी हो सकती है। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति

के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी तथा वे आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे पारिवारिक सुख एवं शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी। तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं से भी लाभ होगा तथा भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे साथ ही सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी एवं सून्दरता के प्रति आकर्षण में वृद्धि होगी। इस समय अचानक धनलाभ के भी योग बनेंगे। अतः यत्नशील रहें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आप को कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं तथा कार्यों में भाग्यबल से सफलता की प्राप्ति होगी। इससे आपमें विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास के भाव की उत्पत्ति होगी। साथ ही प्रभावशाली व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से मित्रता भी होगी एंव भविष्य में उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस समय की गई यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा भविष्य में उन्नति के नये आयाम प्रशस्त होंगे। मित्र एवं शुभ चिन्तकों से आप यथोचित सहयोग प्राप्त करने में समर्थ होंगे। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुदूर क्षेत्रों में भ्रमण आदि से भी आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। अतः ऐसे समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2046

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्धिग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष शनि गोचरवश दशम भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय आपकी महत्वपूर्ण उन्नति होगी तथा उन्नतिकारक किसी परिवर्तन की भी संभावना रहेगी तथा राजनैतिक क्षेत्र के लिए यह समय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको इस क्षेत्र में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति हो सकती है। नौकरी या अन्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल एवं दशाफल भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय अत्यन्त ही उन्नतिकारक एवं शुभ रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

गुरु की महादशा में सूर्य का अंतर 22/05/2046 को समाप्त होगा। उसके बाद चन्द्र का अंतर प्रारंभ होगा। सूर्य नवम् भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र दशम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा इस समय आपको कई सुअवसरों की प्राप्ति होगी तथा कोई उल्लेखनीय परिवर्तन आपके कार्य क्षेत्र या सामाजिक स्तर में हो सकता

है साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग या प्रभावशाली लोगों के सम्पर्क में आएंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। इस समय आपकी दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेगी तथा उनसे भविष्य के लिए लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति में स्थायत्वि रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता होगा। इस समय आपके मान सम्मान तथा प्रसिद्धि में वृद्धि होगी एंव शत्रुपक्ष को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त सूर्य की इस अंतर्दशा में आकस्मिक धन प्राप्ति के भी योग बन सकते है।

यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण उन्नतिदायक रहेगा। इस समय आप में सक्रियता के भाव की प्रबलता रहेगी तथा साहस एवं आत्मविश्वास द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आपको ऐसे समय भी किसी असाधारण उपलब्धि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने वर्तमान कार्य कलापों में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे इस समय कोई नवीन व्यापार या कार्य भी प्रारम्भ कर सकते है। यदि नौकरी पर है तो पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी। आपके उच्चाधिकारी वर्ग या प्रभावशाली लोगों से मधुर संबध स्थापित होंगे जिससे उनसे लाभ एवं सहयोग में अनुकूलता रहेगी। सामाजिक मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा में इस समय वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख शांति उत्तम रहेगी तथा सभी लोग प्रेम पूर्वक रहेंगे इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र संबधी यात्राएं सम्पन्न होगी तथा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा साथ ही यात्राओं के मध्य कुछ प्रभावशाली मित्र भी बनेंगे। अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2047

इस वर्ष बृहस्पति गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। ये यात्राएँ आपके लिए शुभ रहेगी तथा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होगा जिससे आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा इसके अध्ययन में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष पुराने मित्रों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही इस मित्रता से भविष्य में आपके कई महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे एवं लाभ स्रोतों में भी वृद्धि की संभावना रहेगी। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप सामान्य स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे तथा संकीर्णता की भावना भी दूर होगी एवं विशाल हृदय का आप प्रदर्शन करेंगे फलतः सामाजिक स्तर में भी वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा आपको परिश्रम अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति एकादश भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया सुख एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आप अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा धन लाभ भी होता रहेगा। साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपकी कीर्ति में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर भी प्रदान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन इस वर्ष में आपका तथा सन्तति का स्वास्थ्य यदा कदा प्रभावित हो सकता है। साथ ही अन्य गोचर फल तथा दशा फल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता हो सकती हैं तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता हैं।

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की स्थिति एकादश भाव में रहेगी। अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य फल दायक रहेगा तथा समय समय पर अशुभ फल भी प्रापत होंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आप इस वर्ष कोई वांछित सफलता प्राप्त करेंगे तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आप किसी पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इससे आपकी समाज में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष शुभ रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि करके आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी परन्तु इस समय आपके स्वभाव में उग्रता रहेगी तथा बात बात पर आप क्रोध का प्रदर्शन करेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी आप चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल एवं दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आपके शुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा अशुभ फल भी होते रहेंगे। अतः इस समय को धैर्य एवं बुद्धिमतापूर्वक व्यतीत करें।

गुरु की महादशा में चन्द्र का अंतर 21/09/2047 को समाप्त होगा। उसके बाद मंगल का अंतर प्रारंभ होगा। चन्द्र दशम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं जबकि मंगल द्वादश

भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आप में निराशा के भाव में वृद्धि होगी तथा आत्मविश्वास की कमी के कारण समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में असमर्थ रहेंगे आर्थिक दृष्टि से भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध होंगे फलतः आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में भी यदा कदा आपको असुविधा होगी तथा पदोन्नति संबधी व्यवधान तथा विलम्ब होंगे। आपका सामाजिक स्तर सामान्य रहेगा तथा प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा भी मध्यम रहेगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में भी इस समय न्यूनता रहेगी तथा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद तथा तनाव का वातावरण रहेगा। लेकिन इस समय लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होगी तथा इनसे भविष्य के लिए लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा समय बीतने का इन्तजार करें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपको कई प्रकार से व्यवधान तथा विलम्ब का सामना करना पड़ेगा व्यापार में भी इस समय हानि की संभावना हो सकती है यदि नौकरी में है तो पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में कटुता रहेगी। आर्थिक स्थिति में मध्यम रहेगी तथा यदा कदा लाभ मार्ग अवरुद्ध होने से आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों के परस्पर मन मुटाव तथा मतभेद रहेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी इस समय परेशानी का सामना करना पड़ेगा अतः इनसे आपको सावधान रहना चाहिए सांसारिक व्यय में इस समय अधिकता रहेगी इस लिए व्यापार भी नियंत्रण रखें इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होगी अतः धैर्य एवं संयम पूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2048

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष शनि की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ गुरु की महादशा में मंगल के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति शनि की महादशा में शनि के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी अष्टम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय व्यापार में उन्नति तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध होंगे तथा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होगी। साथ ही सांसारिक व्यय में भी वृद्धि होगी जिससे आर्थिक परेशानी का समय समय पर सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से मधुर संबध रखें अन्यथा पदोन्नति में या अन्य कोई समस्या या कार्य में विलम्ब हो सकता है। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी मध्यम रहेगी तथा परिवार में किसी एक सदस्य का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा लेकिन आध्यात्म के प्रति आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा अल्प मात्रा मनोवैज्ञानिक अनुभव भी प्राप्त होंगे। इस बिना सोचे समझे आपको कोई भी पूंजी निवेश नहीं करना चाहिए अन्यथा हानि की संभावना रहेगी इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग तथा अन्य लोगों पर इस समय कम ही विश्वास करना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। तथा समस्याओं तथा व्यवधानों का समय समय पर सामना करना पड़ेगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं तथा कार्य पूर्ण नहीं होंगे। तथा व्यापार में परिश्रम करने पर भी अनुकूल परिणाम नहीं मिलेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में अस्थिरता रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में भी अधिकारी वर्ग से समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में भी सुख शान्ति की न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में स्नेह एवं सहयोग का भाव नहीं रहेगा। साथ ही किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। इसके अतिरिक्त अनिच्छित एवं व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी तथा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा।

लालकिताब जन्मपत्रिका

लाल किताब की इस जन्मपत्रिका में जन्मकुण्डली, दशा, ग्रह स्पष्ट, लाल किताब कुण्डली व वर्ष कुण्डली के साथ यह भी बताया गया है कि आपका एवं परिवार का स्वास्थ्य कैसा रहेगा एवं उनका आपके प्रति व्यवहार कैसा रहेगा। इसमें रत्न कौन सा धारण करें व अन्य उपायों के साथ ग्रह फल, दशा फल व वर्षफल आदि भी दिए गए हैं। प्रयत्न किया गया है कि जातक को जिस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है वह पूरी तरह दी जा सके।

लालकिताब जन्मपत्रिका को ध्यान से पढ़ने पर आपको यह मालूम होगा कि आपके साथ क्या घटना घटित हो रही है। ग्रहों के आधार पर यह भी बताया गया है कि अमुक जातक को पूजा-पाठ करना चाहिए या नहीं। वर्षफल में जिन सावधानियों को बरतने के लिये कहा गया है, उन सावधानियों के प्रति आजीवन सतर्क रहें। जो बातें आपके लिये शुभ लिखी गयी है, उनको अपने जीवन में अवश्य अपनाएं एवं जिन बातों को आपके लिये अशुभ लिखा गया है उन बातों को निश्चय कर हमेशा के लिये त्याग दें।

इस लालकिताब में व्यवसाय, कारोबार, नौकरी आदि के बारे में भी बतलाया गया है। इनसे संबंधित आपके लिये क्या लाभदायक रहेगा और क्या हानिकारक रहेगा इसकी विशेष जानकारी दी गयी है। जीवन में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए लालकिताब के उपाय जिस समय तथा जिन आयु में करने के लिए कहे गये हैं उन्हीं आयु में ही करें।

लालकिताब में जीवन में आने वाली कठिनाईयों का समय भी दर्शाया गया है। जीवन में कब कहां और जीवन के किस मोड़ पर कौन सी परेशानी आ सकती है यह तो बताया ही गया है साथ ही इनसे बचने के उपाय भी बताये हैं। यदि आपका समय अच्छा चल रहा है और आप अपने लिए दिये गये उपाय कर रहे हैं तो आपके भाग्य का फल कई गुना बढ़ जायेगा और यदि प्रतिकूल समय में आप यह उपाय कर रहे हैं तो आपका बुरा समय धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगा एवं सफलता आपके कदमों को चूमेगी।

सभी जातकों से अनुरोध है कि इस लालकिताब जन्मपत्रिका को अपने जीवन में केवल मार्गदर्शक के रूप में ही उपयोग करें व इसके अक्षराक्षर पर निर्भर न रहें। इस पत्रिका में हमने अनेक शास्त्रों की सहायता लेकर आपके लिए फलादेश दिए हैं लेकिन विभिन्न कारणवश इसकी कोई गारंटी नहीं ली जा सकती कि यह पूर्ण रुपेण सत्य ही हो। अतः जातक इस पत्रिका पर आधारित निर्णय के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होंगे।

बिमारी का बगैर दवाई भी इलाज है, मगर मौत का कोई इलाज नहीं।
ज्योतिष दुनियाबी हिसाब-किताब है, कोई दावाऐ खुदाई नहीं।

लिंग : पुल्लिंग
जन्म तिथि : 06/02/2019
दिन : बुधवार
जन्म समय : 12:12:13 घंटे
इष्ट : 13:22:24 घटी
स्थान : kanpur
देश : India

अक्षांश	26:26:59 पूर्व
रेखांश	80:19:54 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:08:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:03:32 घंटे
वेलान्तर	-00:14:03 घंटे
साम्पातिक काल	21:08:01 घंटे
सूर्योदय	06:51:15 घंटे
सूर्यास्त	17:54:30 घंटे
दिनमान	11:03:15 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	23:03:19 मकर
लग्न के अंश	05:33:07 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**शतभिषा - 1**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	परिघ
करण	बालव
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गो-गोपाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम ____________:
पिता का नाम ____________:
माता का नाम ____________:
जाति ____________:
गोत्र ____________:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	माघ	17
पंजाबी	संवत : 2075	माघ	24
बंगाली	सन् : 1425	माघ	23
तमिल	संवत : 2075	थई	23
केरल	कोल्लम : 1194	मकरम	23
नेपाली	संवत : 2075	माघ	24
चैत्रादि	संवत : 2075	माघ	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2075	माघ	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ______: 2
तिथि समाप्ति काल ______: 07:52:23
जन्म तिथि ______: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ______: धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल ______: 09:07:39 घंटे
जन्म योग ______: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग ______: वरियान
योग समाप्ति काल ______: 09:53:26 घंटे
जन्म योग ______: परिघ
सूर्योदय कालीन करण ______: बालव
करण समाप्ति काल ______: 18:34:55 घंटे
जन्म करण ______: बालव
भयात ______: 07:41:24
भभोग ______: 67:32:49
भोग्य दशा काल ______: राहु 15 वर्ष 11 मा 14 दि

घात चक्र

मास ______: चैत्र
तिथि ______: 3-8-13
दिन ______: गुरुवार
नक्षत्र ______: आर्द्रा
योग ______: गण्ड
करण ______: किंस्तुघ्न
प्रहर ______: 3
वर्ग ______: मूषक
लग्न ______: मिथुन
सूर्य ______: वृष
चन्द्र ______: धनु
मंगल ______: मिथुन
बुध ______: वृष
गुरु ______: कर्क
शुक्र ______: सिंह
शनि ______: मेष
राहु ______: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

मं
3
1
रा
4
2
12
चं
5
11
के
6
8
10
सू
गु
9
बु
7
श
शु

चन्द्र कुंडली

के
सू
बु
12
चं
10
मं
शु
1
11
9
श
गु
2
8
3
5
7
4
6
रा

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

मं ल

चं रा

के
सू
बु

श गु
शु

लग्न कुंडली

ल
मं

चं

के
रा सू
बु

शु
श
गु

विंशोत्तरी

राहु 15वर्ष 11मा 14दि

राहु	
06/02/2019	
21/01/2137	
राहु	21/01/2035
गुरु	21/01/2051
शनि	20/01/2070
बुध	21/01/2087
केतु	20/01/2094
शुक्र	21/01/2114
सूर्य	22/01/2120
चन्द्र	21/01/2130
मंगल	21/01/2137

योगिनी

धान्या 2वर्ष 7मा 27दि

धान्या	
06/02/2019	
04/10/2021	
	06/02/2019
भ्रामरी	06/05/2019
भद्रिका	05/10/2019
उल्का	04/04/2020
सिद्धा	03/11/2020
संकटा	05/07/2021
मंगला	04/08/2021
पिंगला	04/10/2021

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
लग्न	वृष	05:33:07	---	--	--	--	नेक
सूर्य	मकर	23:03:19	शत्रु राशि	--	--	--	मन्दा
चन्द्र	कुम्भ	08:10:53	सम राशि	--	--	--	मन्दा
मंगल	मेष	00:21:00	मूलत्रिकोण	--	--	--	नेक
बुध	मकर	28:21:30	सम राशि	--	--	--	मन्दा
गुरु	वृश्चिक	24:32:21	मित्र राशि	--	--	--	मन्दा
शुक्र	धनु	08:33:27	सम राशि	--	--	--	मन्दा
शनि	धनु	21:24:31	सम राशि	--	--	--	नेक
राहु	व कर्क	02:36:44	शत्रु राशि	--	--	--	नेक
केतु	व मकर	02:36:44	शत्रु राशि	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना नं.	मालिक	पक्का घर	किस्मत जगानेवाला	सोया	उच्च	नीच
1	मंगल	सूर्य	मंगल	हाँ	सूर्य	शनि
2	शुक्र	गुरु	चंद्र	--	चंद्र	--
3	बुध	मंगल	बुध	--	राहु	केतु
4	चंद्र	चंद्र	चंद्र	हाँ	गुरु	मंगल
5	सूर्य	गुरु	सूर्य	हाँ	--	--
6	बुध	बुध,केतु	केतु	हाँ	बुध,राहु	शुक्र,केतु
7	शुक्र	शुक्र,बुध	शुक्र	--	शनि	सूर्य
8	मंगल	मंगल,शनि	चंद्र	--	--	चंद्र
9	गुरु	गुरु	शनि	--	केतु	राहु
10	शनि	शनि	शनि	--	मंगल	गुरु
11	शनि	शनि	गुरु	--	--	--
12	गुरु	गुरु,राहु	राहु	--	शुक्र,केतु	बुध,राहु

लग्न कुंडली

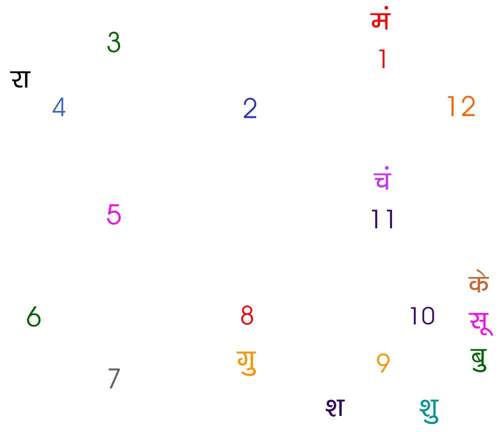

लालकिताब कुंडली

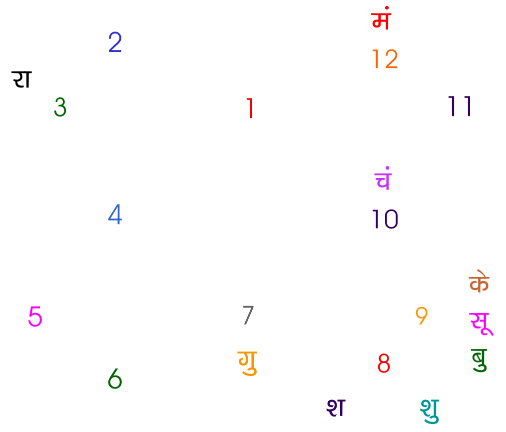

मैत्रीचक्र सारिणी

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
मंगल	मित्र	मित्र	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
बुध	मित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र
शनि	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	सम	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	---	मित्र
केतु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---

ग्रह/राशि फल

ग्रह	वर्णन	फल
सूर्य	लंबी उम्र/ भारी कबीला।	--
चंद्र	आक मदार का दूध, जहरीला पानी।	--
मंगल	गर्म स्वभाव, मनमर्जी से चलने वाला नेक।	--
बुध	कोढ़ी तथा राजा।	--
गुरु	पिछले जन्म का साधु ।	राशि
शुक्र	जली मिट्टी की चंडाल औरत।	--
शनि	हैड क्वार्टर।	--
राहु	आयु और धन का मलिक और रईस	--
केतु	बाप का हुक्म मानने वाला बेटा।	--

चन्द्र कुंडली

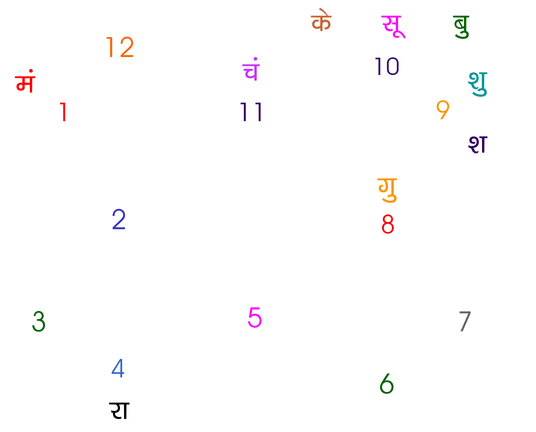

लालकिताब चन्द्र

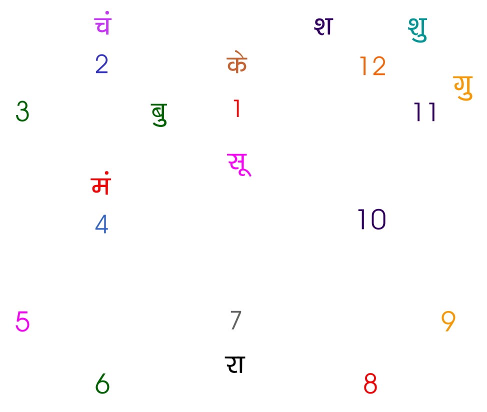

लालकिताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष		गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष	
06/02/2019		**06/02/2025**		**06/02/2031**		**06/02/2034**		**06/02/2040**	
06/02/2025		**06/02/2031**		**06/02/2034**		**06/02/2040**		**06/02/2042**	
राहु	06/02/2021	मंगल	06/02/2027	शनि	06/02/2032	केतु	06/02/2036	सूर्य	07/10/2040
बुध	06/02/2023	केतु	06/02/2029	राहु	06/02/2033	गुरु	06/02/2038	चंद्र	07/06/2041
शनि	06/02/2025	राहु	06/02/2031	केतु	06/02/2034	सूर्य	06/02/2040	मंगल	06/02/2042

चंद्र 1 वर्ष		शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष		शनि 6 वर्ष	
06/02/2042		**06/02/2043**		**06/02/2046**		**06/02/2052**		**06/02/2054**	
06/02/2043		**06/02/2046**		**06/02/2052**		**06/02/2054**		**06/02/2060**	
गुरु	08/06/2042	मंगल	06/02/2044	मंगल	06/02/2048	चंद्र	07/10/2052	राहु	06/02/2056
सूर्य	07/10/2042	शुक्र	06/02/2045	शनि	06/02/2050	मंगल	07/06/2053	बुध	06/02/2058
चंद्र	06/02/2043	बुध	06/02/2046	शुक्र	06/02/2052	गुरु	06/02/2054	शनि	06/02/2060

राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष		गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चंद्र 1 वर्ष	
06/02/2060		**06/02/2066**		**06/02/2069**		**06/02/2075**		**06/02/2077**	
06/02/2066		**06/02/2069**		**06/02/2075**		**06/02/2077**		**06/02/2078**	
मंगल	06/02/2062	शनि	06/02/2067	केतु	06/02/2071	सूर्य	08/10/2075	गुरु	07/06/2077
केतु	06/02/2064	राहु	06/02/2068	गुरु	06/02/2073	चंद्र	07/06/2076	सूर्य	07/10/2077
राहु	06/02/2066	केतु	06/02/2069	सूर्य	06/02/2075	मंगल	06/02/2077	चंद्र	06/02/2078

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष		शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष	
06/02/2078		**06/02/2081**		**06/02/2087**		**06/02/2089**		**06/02/2095**	
06/02/2081		**06/02/2087**		**06/02/2089**		**06/02/2095**		**07/02/2101**	
मंगल	06/02/2079	मंगल	06/02/2083	चंद्र	08/10/2087	राहु	06/02/2091	मंगल	06/02/2097
शुक्र	06/02/2080	शनि	06/02/2085	मंगल	07/06/2088	बुध	06/02/2093	केतु	06/02/2099
बुध	06/02/2081	शुक्र	06/02/2087	गुरु	06/02/2089	शनि	06/02/2095	राहु	07/02/2101

केतु 3 वर्ष		गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चंद्र 1 वर्ष		शुक्र 3 वर्ष	
07/02/2101		**07/02/2104**		**07/02/2110**		**07/02/2112**		**07/02/2113**	
07/02/2104		**07/02/2110**		**07/02/2112**		**07/02/2113**		**07/02/2116**	
शनि	07/02/2102	केतु	07/02/2106	सूर्य	08/10/2110	गुरु	08/06/2112	मंगल	07/02/2114
राहु	07/02/2103	गुरु	07/02/2108	चंद्र	09/06/2111	सूर्य	08/10/2112	शुक्र	07/02/2115
केतु	07/02/2104	सूर्य	07/02/2110	मंगल	07/02/2112	चंद्र	07/02/2113	बुध	07/02/2116

मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष		बुध 2 वर्ष		बुध 2 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
07/02/2116		**07/02/2122**		**07/02/2122**		**07/02/2122**		**07/02/2122**	
07/02/2122		**07/02/2124**		**07/02/2124**		**07/02/2124**		**07/02/2124**	
मंगल	07/02/2118	चंद्र	08/10/2122	चंद्र	08/10/2122	चंद्र	08/10/2122	चंद्र	08/10/2122
शनि	07/02/2120	मंगल	09/06/2123	मंगल	09/06/2123	मंगल	09/06/2123	मंगल	09/06/2123
शुक्र	07/02/2122	गुरु	07/02/2124	गुरु	07/02/2124	गुरु	07/02/2124	गुरु	07/02/2124

नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है।
उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

टेवे की श्रेणी

रतांध ग्रह/अंधा टेवा

लाल किताब के अनुसार रतांध ग्रह को नहोराता के ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह दिन में देखते हैं, परंतु यही ग्रह रात्रि में अंधे हो जाते हैं। ये ग्रह अर्द्ध-अंधे कहे जाते हैं अर्थात् चौथे खाने में सूर्य और सातवें खाने में शनि हो तो वह टेवा आधा अंधा टेवा कहलाएगा।

इस प्रकार का टेवा जातक के व्यावसायिक जीवन में, मन की शांति के लिए और गृहस्थ सुख के लिए काफी हद तक अशुभ असर पड़ता है। सातवें खाने में बैठा शनि बहुत शक्तिशाली हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम खाने के शनि को दिग्बल प्राप्त हो जाता है। इस भाव का शनि अपनी दसवीं संपूर्ण दृष्टि से सुख स्थान में स्थित सभी ग्रहों को प्रभावित करता है। शत्रु दृष्टि से सूर्य के शुभ फल अशुभता में परिणत हो जाएगा। चतुर्थ स्थान से सूर्य की सप्तम दृष्टि कर्म भाव पर पड़ कर कर्म फल को अशुभ कर देगा। सभी प्रकार की मन की शांति को पूर्ण रूपेण कम कर सभी प्रकार के सुखों को नष्ट कर देगा। कुंडली पर अशुभ प्रभाव देने वाला शनि और उसकी दृष्टि है। अतः सूर्य के उपाय की उपयोगिता नहीं। मात्र शनि की अशुभता नष्ट करने के लिए शनि का उपाय करना चाहिए।

निष्कर्ष

आपकी पत्री रतांध ग्रह से प्रभावित नहीं है।

धर्मी टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ धर्मी टेवा होते हैं। धर्मी टेवा के अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है। जिस टेवा में बृहस्पति के साथ शनि किसी भी घर में अर्थात् शुभ घर में स्थित हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा हो जाता है। धर्मी टेवा वाला जातक मुश्किल या कष्ट के समय, जब उसकी सभी राहें अवरुद्ध हो जाती हैं उस समय ईश्वर अपने हाथों से उसकी सहायता करते हैं। शनि ग्रह मुश्किलों का एवं हमारे भाग्य का कारक भी लाल किताब के अनुसार होता है। टेवा में बृहस्पति के साथ अथवा बृहस्पति की राशि में शनि बैठ जाए तो शनि के स्वभाव में शुभता आ जाती है। बृहस्पति और शनि का संबंध बहुत से दोषों को दूर कर देता है। 6ठें, 9वें, 11वें एवं 12वें घरों में शनि बृहस्पति का संयोग होना बड़ी समस्याओं का शमन एवं जीवन के उतार-चढ़ाव को नियंत्रित कर देता है। इसके प्रभाव से (कुंडली) टेवा की अशुभता समाप्त और सारी विपदाओं का अंत हो जाता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री धर्मी टेवा नहीं है।

नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ हालातों में बारह साल की आयु तक कुछ नाबालिग

टेवे होते हैं। उस दशा में बारह साल तक के बालक की कुंडली का प्रभाव नहीं उसके पिछले जन्म के भाग्य का असर ही प्रभावी रहता है। नाबालिग टेवा उसको कहते हैं जबकि टेवा 1, 4, 7 और 10 खाने अर्थात् केंद्र स्थान खाली हो अथवा सिर्फ पापी ग्रह शनि, राहु और केतु ही हो या अकेला बुध ही हो तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा होगा।

उसकी किस्मत का हाल 12 साल तक शक्की होगा।

लाल किताब के अनुसार नाबालिग टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक-एक ग्रह का प्रभाव निम्नरूपेण पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1. उम्र के पहले साल में सातवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
2. उम्र के दूसरे साल में चौथे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
3. उम्र के तीसरे साल में नौवे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
4. उम्र के चौथे साल में दसवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
5. उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
6. उम्र के छठे साल में तीसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
7. उम्र के सातवें साल में दूसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
8. उम्र के आठवें साल में पांचवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
9. उम्र के नवमें साल में छठे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
10. उम्र के दसवें साल में बारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
11. उम्र के ग्यारहवें साल में पहले घर के ग्रह का असर पड़ता है।
12. उम्र के बारहवें साल में आठवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री नाबालिग ग्रहों का टेवा नहीं है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरु हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दॉंतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्‌ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्‌ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप भाग्यवान होंगे। आपको उत्तम वाहन सुख मिलेगा। बड़े परिवार से युक्त रहेंगे। आप परोपकारी होंगे। आप अपनी सात पुश्तों को तारने वाले होंगे। आप अपने खानदान के लिए पूरा जीवन न्यौछावर कर देंगे। 22वें वर्ष में आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। माता-पिता की कृपा से राजदरबार में इज्जत मिलेगी। तीर्थ यात्रा करने से आपके जीवन पर अच्छा असर पड़ेगा। आपके परंपरागत काम या सरकारी ठेकेदारी के धंधे से लाभ होगा। आपको माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी बचपन में परवरिश खानदानी ढंग तथा सुख साधन से होगी। आप खानदान के लिए त्याग करेंगे और आप परोपकारी होंगे। आप पोते-पड़पोते के जन्म की खुशियां देखेंगे। पैसे की तंगी नहीं रहेगी। आप दूसरों की बीमारी दूर करने में मदद करेंगे। आपके पिता को सरकार पक्ष से लाभ होगा। बहुत बड़े परिवार को पालने का जिम्मा आप पर हो सकता है। धार्मिक कार्यों से तरक्की और कीर्ति मिलेगी। स्वपराक्रम से अपनी किस्मत का सितारा चमकायेंगे। सरकारी विभाग में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा, राजा या राजा तुल्य जीवन होगा, नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

यदि आपकी रसोई में उल्टे या बहुत समय से पुराने खाली बर्तन पड़े रहे, मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, भाई-बहन से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से स्वभाव अति उग्र या अति नम्र स्वभाव रहने से सर्वस्व खोना पड़ सकता है। गिफ्ट/मुफ्त का माल या दान खाने से हर तरफ हानि होगी, यात्रा में कष्ट होगा, बहन-भाई द्वारा विरोध और किस्मत का बुरा असर शुरु हो जायेगा। कई बार आपको नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है और जिसके साथ आप संबंध रखेंगे उसी की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. मुफ्त या दान के माल से दूर रहें।
2. बहुत नर्म या बहुत गर्म स्वभाव न रखें।

उपाय :
1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल में प्रवाहित करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप

चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में बारहवे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से मंगल का अच्छा फल मिलेगा। आपकी आवाज बुलंद रहेगी। वैसे आप पत्नी, धन-संपत्ति से सुखी रहेंगे। पुत्र के जन्म के बाद आपका भाग्योदय होगा। शत्रु आप से बहुत भयभीत रहेंगे। 24 वर्ष आयु में पुत्र सुख प्राप्त होगा। आपका स्वभाव गर्म रहेगा। आप अपनी मनमर्जी से चलेंगे। आप गरीब से धनवान हो जाएंगे। मुसीबतें टल जाएगी। बीमारी से आपका बचाव होता रहेगा। आपका जन्म बहुत बड़े परिवार में होगा या आपके जन्म के बाद वह परिवार बड़ा हो जाएगा। स्त्री पक्ष से धन लाभ होगा। गुरु और ब्राह्मण की आप सेवा करेंगे। वृद्धों और निर्धनों की सहायता करना आपका स्वभाव रहेगा।

यदि आपने अपने पास हथियार रखा, सुबह उठते ही नमकीन चीजों या नमक का प्रयोग किया, परिवार के लोगों पर जुल्म किया, किसी का अहसान न माना तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके बारे में झूठी अफवाहें फैल सकती हैं। आपकी प्रकृति नीच रहेगी। पत्नी से अच्छा संबंध नहीं रहेगा या पत्नी सुख में न्यूनता आने की आशंका है। आप बुरी संगति से परेशानी में पड़

सकते हैं। अपनी बेवकूफी से अपनी नौकरी-व्यवसाय चौपट कर बैठेंगे। आपको नेत्र रोग हो सकता है। आपकी बांह पर चोट का निशान या विकलांग होने का भय है। नाड़ियों या खून का रोग हो ऐसी आशंका है। आपका धन बेकार के कामों में खर्च नहीं होगा। आपको चोरी और क्षति से सावधान रहना पड़ेगा। आपका बड़ा भाई हो तो वह 28 वर्ष आयु तक जीरो हो जाएगा या आपको उससे भाईपन न रहेगा। बड़ा भाई जीवित है तो कई बार जीवन से तंग होकर आत्महत्या करने का विचार पैदा होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
2. किसी पर भरोसा न रखें।

उपाय :

1. हलुवा या चीनी की रोटी खावें।
2. सुबह उठते ही शहद खावें।

बुध

आपकी कुंडली में नौवें घर में बुध पड़ा है। इसकी वजह से संगीत या ज्योतिष में रुचि रह सकती है। आप परिवार का भरण-पोषण करते रहेंगे। आपको अपना भाग्य बनाने में अधिक समय लगेगा। धन-दौलत में बरकत होने में समय लगेगा फिर भी आप खुश रहेंगे। आपके काम-धन्धे पर तथा राजदरबार में आपका अच्छा असर रहेगा। जन्मस्थान से दूर विदेश तक की यात्रा करनी पड़ सकती है परंतु विदेश प्रवास का फल भी अच्छा या अनुकूल रहेगा।

यदि आपके घर में गाने-बजाने का सामान और रेडियो-घड़ियां आदि खराब पड़े होंगे, जुबान में तोतलापन, हरे रंग की चीजें अधिक होंगी या साधू-महात्मा आदि ताबीज़ लेकर रखा तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके काम से आपके पिता की बदनामी हो सकती है। धोखेबाजी से कदम-कदम पर मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। गृहस्थ जीवन और औलाद से संबंध में खराबियां पैदा होंगी। मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अधर्म के कार्य करेंगे तो भाग्य में भी रुकावटें आती रहेंगी। जीवन में उत्थान-पतन से तंग आ जाएंगे। जीवन के हालात से तंग आकर साधू-फकीर बनने की इच्छा होगी परंतु साधू-फकीर बनना अच्छा नहीं होगा। आप पिता के लिए मनहूस रहेंगे। पिता के सुख का अभाव हो सकता है। आप अपने पिता की आयु पर भारी हैं। पिता के नौकरी-व्यापार में बाधा हो सकती है। जलील और खराब काम करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. जल-भभुतिया, धागे-ताबीज न रखें।
2. मकान की सीढ़ियां गिरा कर दुबारा न बनायें बल्कि उसकी मरम्मत करें।

उपाय :
1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति सातवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से अधिक उम्र में या विवाह के बाद देर से संतान सुख प्राप्त होगा। पुत्र प्राप्ति के बाद पिछले कष्ट दूर हो जाएंगे। आप पूर्ण सुखी हो जाएंगे। पत्नी नौकरी करेगी उसकी कमाई से धन में वृद्धि होती रहेगी। आप स्वस्थ एवं पत्नी से सुखी रहेंगे। आप पिता से अलग होकर, साझेदारी का व्यवसाय चलाएंगे। संतान का भी सामान्य सुख ही मिलेगा। आप 40 वर्ष की उम्र तक ऐय्याशी करेंगे। ससुराल से मिली चीजों में बरकत होगी। आप धार्मिक कामों में हमेशा रुचि रखेंगे। आप ज्योतिष विद्या के जानकार और माहिर होंगे और ज्योतिष के द्वारा धन की प्राप्ति भी होगी। आपको दलाली या व्यापार के कामों से लाभ होगा। आपके धन से दूर के रिश्तेदार लोग सुख पायेंगे परंतु आपके जीवन में आराम नही मिलेगा। आपको लोहे, मशीनरी, काली चीजों का व्यापार, मकान बनाने की चीजें (लोहा, ईट, पत्थर सीमेंट, लकड़ी आदि) का व्यापार शुभ फल देगा। आप जीवन में अपनी जवानी में खूब ऐशो-आराम करेंगे। पिता और ससुर से लाभ और सुख मिलेगा।

यदि आपके घर के मंदिर में मूर्तियां होंगी (तस्वीरों का वहम नहीं), चांदी आदि धातु की मूर्तियों वाले सिक्के होंगे या धार्मिक ग्रंथ बंद पड़े होंगे, रत्तियां (जिससे पहले समय में सुनार सोना आदि तोलते थे) पड़ी होंगी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप भाई से दुःखी रहेंगे। घूमने-फिरने वाले साधू की संगति से भाग्य मंदा हो जाएगा। आपको आमदनी होने के बावजूद आप पर कर्ज का बोझ भी पड़ेगा। आपके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। पत्नी के अतिरिक्त दूसरी औरत से हानि होगी। पिता का सुख कम मिलेगा। आप संगति के प्रभाव से चोर या डाकू भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घूमने-फिरने वाले पीले वस्त्र धारी साधू से दूर रहें।
2. घर में तुलसी, घंटी, ठाकुर न रखें।

उपाय :
1. सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आपके ससुराल वाले आपको कुछ न कुछ देते रहेंगे तो इससे दोनों परिवारों का कल्याण

होगा।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपकी अच्छी आमदनी होगी। किसी भी लड़ाई-झगड़े में आपकी जीत होगी। औलाद की बीमारी के प्रति चौकन्ना रहें। आप में काम शक्ति की अधिकता रहेगी। अपने भोजन खाने-पीने पर पूरी चौकसी बरतें। आप परिश्रम करने में संकोच नहीं करेंगे। परंतु आलस्य आपको कर्महीन बना सकता है। आपको पत्नी और औलाद का अच्छा सुख मिलेगा। जन्म स्थान से दूर, देश से विदेश तक कहीं भी निवास स्थान बनाना पड़ेगा। जल से संबंधित कामों या समुद्री यात्रा में तथा विदेशी औरतों से सावधान रहना जरूरी है। आपकी पत्नी की जुबान से निकला शब्द पत्थर पर लकीर होगा अर्थात् आप अपनी पत्नी को न कष्ट देवें और न सतायें।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, ससुराल वालों को धोखा दिया या झगड़ा किया, सफेद बिना सींग की गाय घर में रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप पर हमेशा ही कर्ज का बोझ बना रहेगा। अधिकतर बीमार रहा करेंगे। आपकी पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की कुटिल होगी। आप किसी की जमानत न दें, वरना जमानत आपको भरनी पड़ सकती है। जिसका भाग्य पर बुरा असर पड़ेगा। 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें अन्यथा पत्नी सुख में बाधा आ सकती है। आपकी बदनामी भी हो सकती है। आपके गुप्तांग में रोग हो सकता है। आलस्य के कारण भी शराबी और कबाबी होना तथा पराई स्त्री से संबंध रखने से, गुप्त रोग हो सकते हैं और आपके कामों में रुकावट पैदा होने के कारण बनेंगे। आप अपने जीवन में कुछ ऐसा कर गुजरेंगे जिससे आपको पश्चात्ताप होता रहेगा। पत्नी से झगड़ा करना आप को हार और हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दान या भिक्षा न मांगें।
2. ससुराल से धन आदि का धोखा न करें।

उपाय :
1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्मस्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी। भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगें, ऐसी पूरी

संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुईं, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :
1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका भविष्य उज्जवल रहेगा। आपका सितारा बुलंद रहेगा। आपके सामने दुश्मन सिर नहीं उठा सकेंगे। आप भविष्य में जीवन में घटने वाली घटना को पहले ही जान जाएंगे। किसी भी घटना के बारे में भविष्य का हाल दो वर्ष पहले जान जाएंगे। आपके सभी अरमान पूरे होंगे। आपकी कलम से लिखी बात में तलवार से भी पैनी धार साबित होगी। काफी धन-संपत्ति के स्वामी और शत्रुहंता होंगे। संतान का पूरा सुख मिलेगा। आपके जीवन का 22वां वर्ष उन्नतिकारक होगा। आप शाही जीवन बिताएंगे। आप धर्म में कम श्रद्धा रखेंगे। आप अपनी उम्र में पूरी तरह सुखी होंगे। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप दिलेर और निर्भय रहेंगे। आपकी गिनती बड़े लोगों में होगी। पत्नी-दौलत का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी औलाद भी धनवान होगी।

यदि आपने अपने पास या घर में हाथी दांत रखा, हाथियों के 3-3 खिलौने रखे, हाथियों से संबंधित कामों का व्यापार किया, बहन-बेटी-लड़की का धन प्रयोग किया तो आपका

राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। आपके भाई के लिए इस ग्रह का फल मंदा रहेगा। आपका भाई धोखाधड़ी करके आपका धन हड़प लेगा। आप पर कर्ज का बोझ पड़ेगा परंतु अपनी बुद्धिमता से कर्ज का बोझ उतार लेंगे। नौकरी-व्यापार में परेशानी होगी, संतान पर 34 वर्ष आयु तक बुरा फल हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत पास न रखें।
2. तीन-तीन हाथी के खिलौने घर में न रखें।

उपाय :

1. ठोस चांदी घर में न रखें।
2. कन्याओं की सेवा या दुर्गा पाठ करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के नौवें खाने में केतु पड़ा है। जिसकी वजह से आपकी प्रगति होती रहेगी तबदीली कम होगी। आप पिता के आज्ञाकारी होंगे। सामने वाले व्यक्ति के मन को भाप लेंगे। आप धनवान और भाग्यवान होंगे। आप जन्मस्थान से दूर रहेंगे। आपकी संतानें दूरदर्शी होंगी। आपकी 48 वर्ष की आयु तक पिता की स्थिति अच्छी रहेगी। आप बलवान, भरोसेमंद और अपनी कमाई से बड़े आदमी बनेंगे। आप समाज सेवक होंगे। आपका जीवन परदेश में बीतेगा। धन-संपत्ति और घर के प्रभाव की वृद्धि होगी। आपकी सोलह वर्ष आयु के बाद शुभ असर शुरु होगा। आप अपने बेटे की सलाह से कोई काम करेंगे तो शुभफल प्राप्त होगा। आप माता-पिता और खानदान को तारेंगे। आपका अपना अच्छा रुतबा रहेगा। आप कोई बड़े अफसर बन सकते हैं। आपके यदि पुत्र होंगे तो दीर्घायु होंगे। आपका आर्शीवाद नामर्द को मर्द बना सकता है।

यदि आपने कुत्ते को चोट मारी या कुत्ते से नफरत की, चोर-डाकू को यदि आप साथ रखेंगे, परस्त्री से चाल-चलन खराब करेंगे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से शारीरिक कष्ट या जोड़ का दर्द होगा। धन की चिंता बनी रहेगी। प्रगति कम और तबदीली अधिक होगी। विवाह के 7 वर्ष बाद संतान पैदा हो, ऐसी आशंका है। आपकी बहन को पुत्र प्राप्ति न होगी या पुत्र सुख न होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू का साथ न रखें।

2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. शुद्ध सोने की ननतियां कानों में पहनें।
2. शुद्ध सोने की चौरस ईंट घर में रखें।

लाल किताब - वर्ष कुंडली

2019

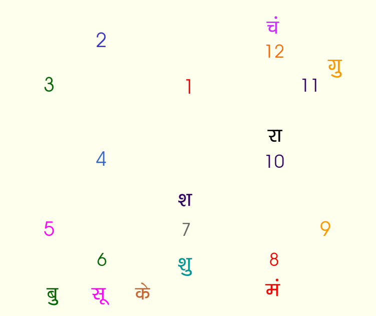

2020

2021

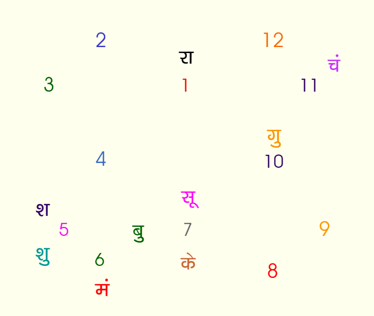

2022

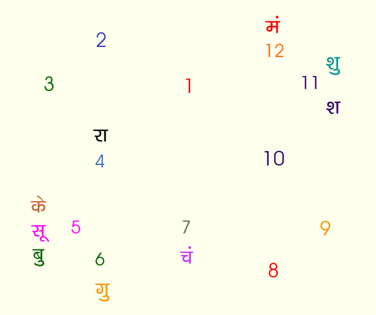

2023

2024

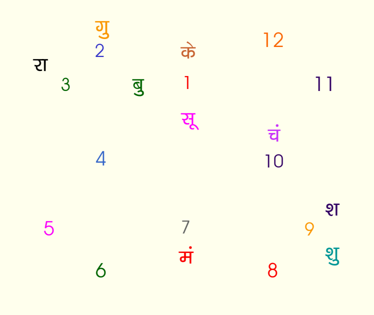

2025

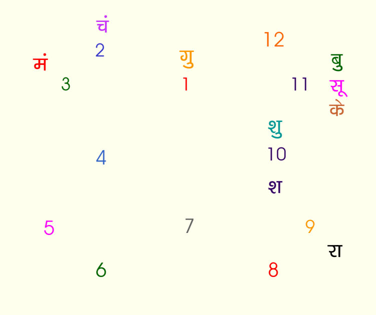

2026

2027

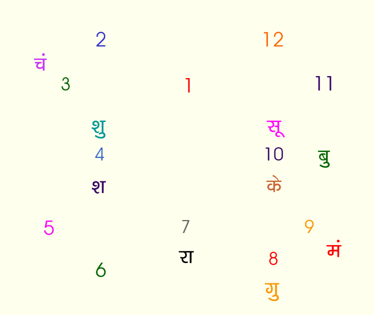

2028

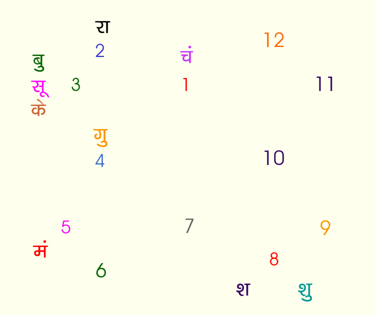

2029

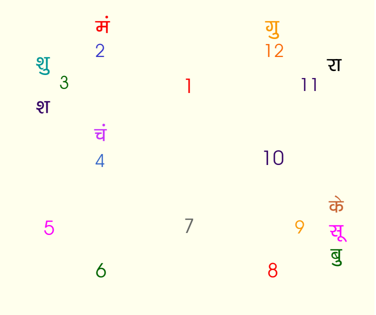

2030

लाल किताब वर्षफल 2019-2020

वर्त्तमान आयु - 1
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	मन्दा
बुध	--	हाँ	--	मन्दा
गुरु	--	--	--	मन्दा
शुक्र	--	--	--	नेक
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	--	--	नेक
केतु	--	हाँ	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	--	हाँ	हाँ	हाँ	--	--	--	हाँ	--	--	--

वर्ष कुंडली 2019 – 2020

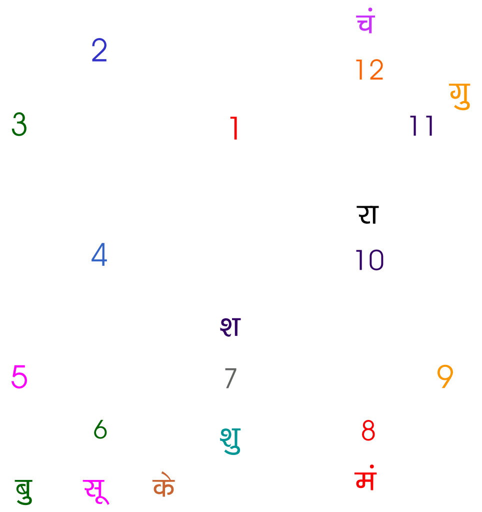

वर्ष चन्द्र कुंडली 2019 – 2020

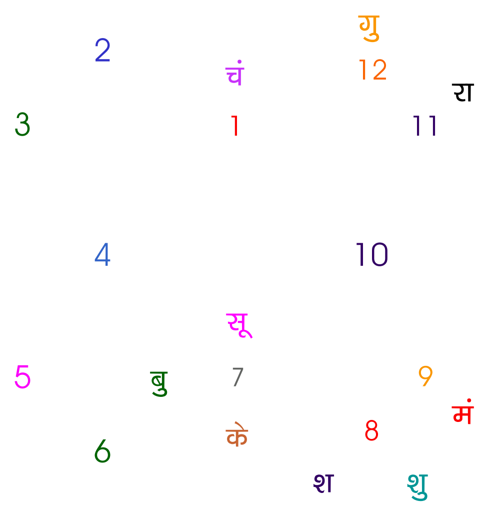

लाल किताब वर्षफल 2019-2020

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 6 में है, जिसकी वजह से इस वर्ष आपको अधिक गुस्सा आना आपके लिये हानिकारक है, रक्तचाप घट/बढ़ जाये ऐसी आशंका है, आप आपने पिता या पुत्र के साथ एक ही शहर/गांव/ऑफिस में इकटठे काम नहीं कर सकते। हर समय दूसरों के सहारे या दूसरों के धन पर आस न लगाएं ऐसा करने से आपको लाभ नहीं होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी या गंगा जल घर पर रखें।
2. बंदरों को गुड़ या भुने हुए गेहूँ को गुड़ लगा कर खिलाएं।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस-तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रुकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई-झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लेवें।
2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से इस वर्ष ननिहाल से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे। गृहस्थ जीवन में परेशानी हो सकती है। लड़ाई-झगड़े से दूर रहें मुकददमें में धन हानि के बाद जीत होगी। जुबान से किसी को अपशब्द न कहें। गर्म मिजाज हो तो उस पर काबू रखने से मान-सम्मान बढ़ेगा और शुभ फल मिलेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।
2. मिट्टी के बर्तन में दूध भर कर वीराने में दबायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चाल-चलन खराब हो सकता है। चाल-चलन संभालना आप के लिये एक जरूरी चीज़ है। दादा-पिता को कष्ट, सोने के आभूषणों की हानि, आंखों की नजर कमज़ोर हो सकती है। किस्मत का फल कुछ मध्यम रहेगा। परिवार के लोगों की हिफाजत करना आपके लिए एक जरूरी कर्म होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मकान-वाहन का सुख मिलेगा। काले रंग की स्त्री का साथ, आपका भाग्य को जगाने और आपकी तरक्की में सहायक हो सकती है। विवाह से संबंधित चीजों के कारोबार से लाभ मिले। जदद्दी घर से दूर जाना पड़ सकता है। पत्नी-माता में मां-बेटी जैसा संबंध रहेगा। पत्नी सुशीला और सेवा करेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन-जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल-चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका हर काम सरहानीय होगा। सरकारी विभाग में नौकरी करते हैं तो उच्च पद मिले या सरकार द्वारा आपको लाभ होगा। आपके सिर के बाल सफेद होने शुरु हो जायें या हो चुके हों तो आपकी तरक्की की निशानी है। आपका चरित्र भी ऊंचा होना शुरू हो जायेगा और मान-सम्मान बढ़ेगा।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष सोना न बिके और न ही गुम हो, खासकर विवाह समय मिली सोने की अंगूठी। यात्रा से हानि हो ऐसी आंशका है। चमड़ी, पांव में कष्ट हो सकता है। फिजूल खर्च बढ़ने की संभावना है। मामा को कष्ट का भय, संतान सुख की चिंता। शत्रु अकारण उभरेंगे और उनसे हानि का भय रहेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बांये हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• चांदी की बेजोड अंगुठी बायें हाथ में पहनें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2020-2021

वर्त्तमान आयु - 2
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	हाँ	--	मन्दा
शनि	--	हाँ	--	मन्दा
राहु	--	--	--	नेक
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	--	हाँ	हाँ	--	--	हाँ	--	--	हाँ	--	--

वर्ष कुंडली 2020 – 2021

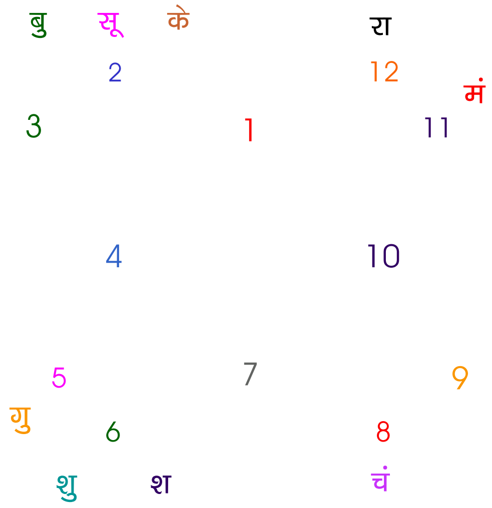

वर्ष चन्द्र कुंडली 2020 – 2021

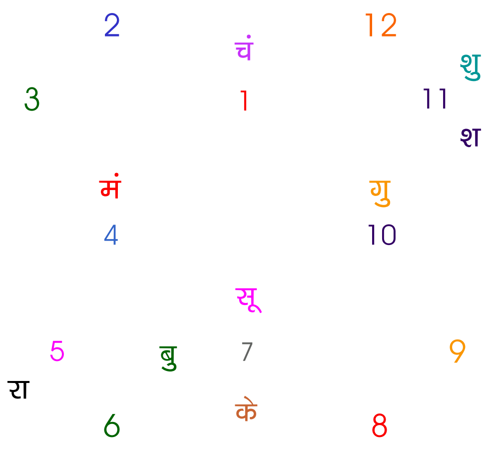

लाल किताब वर्षफल 2020-2021

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष किसी की अमानत को हड़प करने से आपका आने वाला समय खराब हो सकता है, किसी से दूध, चावल, चांदी आदि मुफ्त या दान न लेवें। चाल-चलन खराब या अनैतिक रखने से आप की अवनति हो सकती है। धन/जमीन/स्त्री के झगड़े मे न पड़ें इससे धन-मान की हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. बादाम, नारियल या सरसों का तेल धर्म स्थान में देवें।
2. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता-पिता का सुख कम मिलेगा। जौहरी-जुएं के कामों में हानि होगी। ननिहाल को कष्ट या उनसे झगड़ा होगा। मन की शक्ति क्षीण, विद्या में रुकावट या माता का सुख मिले, घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। सर्दी-जुकाम और पानी से कष्ट का भय, हृदय रोग का भय रहेगा। बुजुर्गों को सांस-दमा रोग की आशंका है।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गंदम धर्म स्थान में देवें।
2. अमावस्या के दिन दूध-चावल धर्म स्थान में देवें।
3. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वभाव न्यायप्रिय रहेगा, अपनी किस्मत स्वयं अपने हाथों से बनाएगें, कारोबार में तरक्की होगी, जमीन-जायदाद का लाभ मिलेगा और इस वर्ष आपको सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा, आपको शत्रुओं से कोई भय नहीं रहेगा या शत्रु भी मित्र बन जायेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. किसी पर भी भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता से जुदाई या पिता की चिंता रहेगी या पिता की आयु कम हो सकती है। आप पर अकारण लांछन लग सकता है सतर्क रहें, धागे-ताबीज, जल-भभूति आदि के चक्कर में पड़ने पर आपकी तरक्की रुक सकती है, जुआ, शेयर मार्किट आदि में धन हानि का योग है अतः कार्य सोच-विचार कर करें।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. 2 किलो मूंग साबित धर्म स्थान में देवें।
2. सफेद धागे या चांदी की तार से नाक छेदन बांयी तरफ से करायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष तरक्की हो या मान-सम्मान मिलेगा। इस वर्ष अगर आपके परिवार में लड़का पैदा होता है तो परिवार की अथाह तरक्की होना शुरु हो जाएगी। पिता-दादा की मदद शक्की हो सकती है। वर्ष शुरु होते ही आपकी तरक्की होगी। वंश वृद्धि/संतान सुख प्राप्त होगा। लेखन द्वारा लाभ मिलेगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. नाव के कामों से सम्बन्ध न रखें।
2. नास्तिक न बनें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी बुद्धि भ्रमित हो सकती है। पत्नी के पैरों में या ऐड़ियों में दर्द, पत्नी के साथ झगड़ा न करें। काम शक्ति में कमी या स्त्री के गुप्तागों में रोग रह सकता है, पुत्र संतान की चिंता रहेगी। धन चोरी या गुम हो सकता है इसके पीछे किसी स्त्री का हाथ होगा। समाज में आपकी प्रतिष्ठा गिर सकती है।

शुक्र की अशुभता दूर करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. पत्नी लाल दवाई से गुप्तांग धोएं।
2. ठोस शुद्ध चांदी घर में रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुडली में शनि खाना नं. 6 में अशुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष पूर्णिमा के दिन कोई नया काम न शुरू करें। कारण, इस दिन शुरू नये काम से लाभ न होगा। चमड़े का समान मुफ्त/गिफ्ट न लें इससे आपका मान-सम्मान कम होगा या अकारण बेइज्जती का कारण बनेंगे। परिवार में किसी को गुर्दे या पथरी रोग का भय रहेगा।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. काले कुत्ते की सेवा/पालन करें।
2. नया जूता किसी को पहनाकर पहनें या खरीदने के 6 दिन बाद पहनें।
3. बादाम गंदे नाले में डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका धन शुभ कामों या विवाह आदि पर खर्च हो सकता है। यदि आप पर ऋण का बोझ हो जाये तो वह उतर जायेगा, शत्रु दबे रहेंगे। अध्यात्म विचार आपको शायद ही लाभ देंगे। अपने बलबुते पर सभी कार्य सिद्ध कर लेंगे। रात को सुख की नींद मिलेगी और सुख के साधन बढ़ेंगे।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. रसोई से बाहर बैठ कर खाना न खावें।
2. घर के आंगन में धुंआ न करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जुआ-सट्टा आदि के कामों में हानि होगी, आपकी कर्कशवाणी या जबान से निकला अपशब्द आपके मान-सम्मान को हानि पहुंचा सकता है। नौकरी-व्यापार में या जीवन में उतार-चढ़ाव भी आ सकता है। तबदीली हो सकती है मगर तरक्की की शर्त नहीं है। खराब चाल-चलन संतान सुख न देगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा करें।
2. स्त्रियों की सेवा करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 8 दिन नाश्ते में पनीर खावे या पनीर का बचा शेष पानी पिये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

वर्त्तमान आयु - 3
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	नेक
मंगल	--	हाँ	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	--	--	मन्दा
शुक्र	--	हाँ	--	मन्दा
शनि	--	हाँ	--	मन्दा
राहु	--	--	--	नेक
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	हाँ	हाँ	हाँ	--	--	--	हाँ	--	--	--	हाँ

वर्ष कुंडली 2021 – 2022

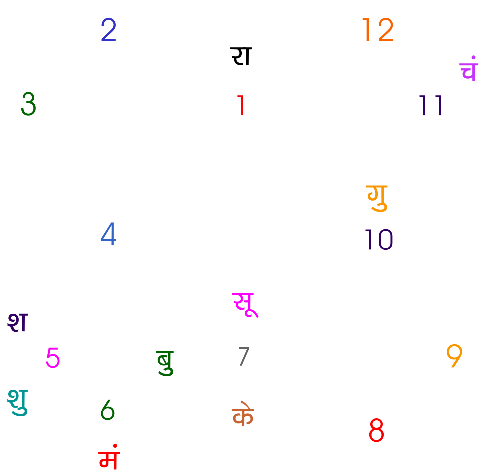

वर्ष चन्द्र कुंडली 2021 – 2022

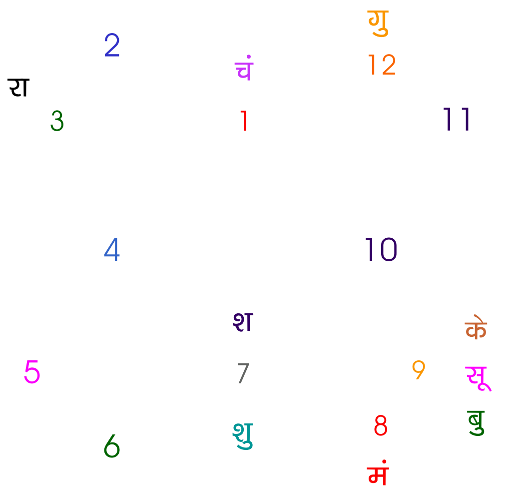

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग से परेशानी होगी तथा गृहस्थ जीवन में कुछ क्लेश का अनुभव करेंगे। अधिक गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामद करवाना आपके पतन का कारण बन सकता है, भागीदार से विरोध या झगड़ा हो सकता है। आप दुकानदार या प्राइवेट नौकरी करते हैं तो नर्म स्वभाव रखें, सरकारी अधिकारी हैं तो गर्म स्वभाव रखना चाहिए।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. रात्रि समय खाना बनाने के बाद गैस चूल्हा या चूल्हा/अंगीठी आदि की आग को कच्चे दूध के छींटे देकर बुझाएं। वह बुझा हुआ गैस चूल्हा या अंगीठी/चूल्हा सूर्योदय से पहले न जलावें।
2. कार्य पर जाने से पहने चीनी खा कर पानी पी कर जावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से लाभ होगा, सुख के साधन मिलेगें, आपको स्त्रियों द्वारा सहयोग प्राप्त होगा, माता-संतान का सुख मिलेगा, कोर्ट, इंजीनियरिंग, डाक्टरी से संबंधित कामों से लाभ मिलेगा, कारोबार में बरकत होगी। रात्रि समय विद्या पढ़ने या रात्रि समय विद्या से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. विद्या पढ़ने में अरुचि न रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में खुशी का योग बनेगा, छोटे भाई की मदद करेंगे, शत्रुओं में कमी होगी या शत्रु दबे रहेंगे, साहुकारा (लिखा-पढ़ी करके ब्याज पर रुपया-पैसा देना) करने से लाभ होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे और दूसरों को भी प्रसन्न रखेंगे। साधू-संन्यासी की तरह जीवन व्यतीत करेंगे और जनता की सेवा करेंगे। परिवार व समाज में सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. भाई से झगड़ा न करें।

2. पुत्र का जन्म हो तो जन्म पर मीठा या मिठाई न बांटे यदि मिठाई बांटनी हो तो मिठाई के साथ नमकीन चीज जरूर देवें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष साझेदारी में सतर्क रहना पड़ेगा, कारण धोखा हो सकता है। भाई-बन्धु आपका विरोध कर सकते हैं। खराब चाल-चलन से कारोबार में हानि और शरीर कष्ट होगा। मुकददमे बाजी या झगड़े से दूर रहें यह परेशानी ही देगें बेशक फैसले पर जीत आपकी होगी। विदेश संबंधी यात्रा या कामों में हानि का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. हीरा पहनें (हीरे के अभाव में पन्ना भी पहना जा सकता है)
2. चीनी खा कर पानी पी कर कार्य पर जायें या कार्य शुरु करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता-दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर) ।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपका मिजाज आशिकाना और आप परस्त्री पर कामुक हो सकते हैं। इस वर्ष यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का योग बनेगा। अंर्तजातीय या माता-पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें वरना संतान सुख खराब हो सकता है। स्त्री के गर्भपात का भय रहेगा। बुआ-बेटी, बहन-साली के धन का आपके हाथों नुकसान हो सकता है।

शुक्र की अशुभता दूर करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. गुप्तांग दूध या दही से साफ करें।

2. गायों को चारा खिलाये।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 5 मे है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाई-बंधुओं के साथ लड़ाई-झगड़ा या धोखा न करें। मांस-मदिरा का सेवन करना आपको हार और हानि देगा। परिवार में समस्याएं बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें विशेष कर पेट/गुर्दे में पथरी का। आपके नाम पर अगर मकान बनेगा तो पुत्र सुख में बाधा आ सकती है।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. शुद्ध सोना या केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकार या सरकारी विभाग द्वारा लाभ, ननिहाल के लिये समय ठीक, नया कारोबार भी शुरू हो सकता है। आप में कुछ रिश्वत लेना या करप्शन सोच आपके दिलो-दिमाग में आ सकती है। आपको हर समय बोलते रहने की आदत या बीमारी भी हो सकती है, इसका ध्यान रखें।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. आंगंन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी झूठ बोलने की आदत हुई या परस्त्री से शारीरिक संबंध रखे तो वह रोग व हानि के सिवाय कुछ न देंगे। आपकी संतान ही आपको डुबो सकती है। झूठा वायदा करना आपको अवनति दे सकता है। आपको अभिमान नहीं करना चाहिए। सच बोलें किसी से झूठा वायदा न करें ऐसा करने से आपकी तरक्की होगी।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. 4 केले 4 दिन जल प्रवाह करें।
2. 4 नींबू (पीले) 4 दिन जल प्रवाह करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• हीरे की अंगुठी पहने/हीरे के अभाव में पन्ना पहनें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

वर्त्तमान आयु - 4
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	नेक
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	--	--	मन्दा
शनि	--	--	हाँ	नेक
राहु	--	हाँ	हाँ	नेक
केतु	--	हाँ	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	हाँ	--	--	--	--	हाँ	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2022 – 2023

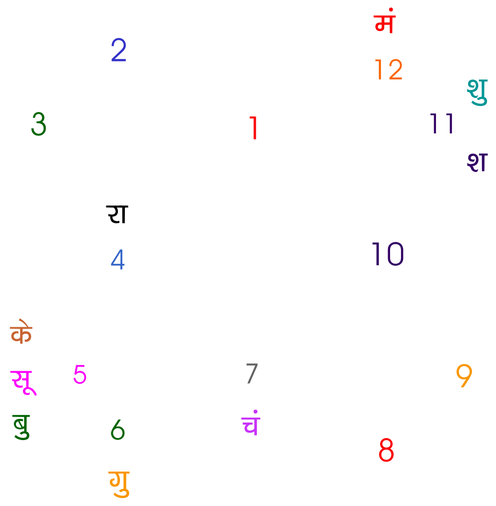

वर्ष चन्द्र कुंडली 2022 – 2023

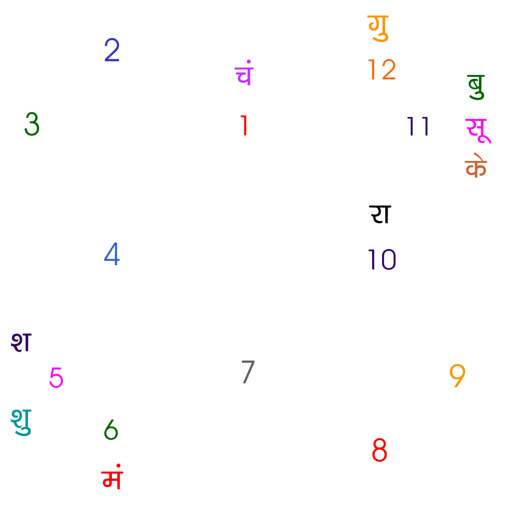

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार में अगर झूठ और बेईमानी का धन आना शुरू हुआ तो वह धन रोग में नष्ट होगा, पैर में खराबी, संतान तथा आर्थिक स्थिति का आपको विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। पत्नी की तरफ से चिंता रहेगी। आपको सब के साथ मिल-जुल कर कार्य करना चाहिए। राजा और साधू से नेक संबंध रखें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुजुर्गों के रीति-रिवाज जरूर मानें।
2. साला, जीजा, दोहता/भांजे की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके माता-पिता को अधिक धन लाभ होगा। आपको किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। ज्योतिष विद्या, योगाभ्यास तथा शायरी में आपका शौक रहेगा। जल से संबंधित कामों से लाभ होगा। नये विषयों की खोज भी कर सकते हैं, विदेश यात्रा या विदेश से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूध-पानी का व्यापार न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन-ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा-भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
2. लोग आपका नमक खाकर नमक-हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी अधिकारियों से अनबन नहीं करनी चाहिये, कन्या संतान की चिंता रहेगी या आपकी यादास्त कमजोर हो सकती है। खराब चाल-चलन और अनैतिक सम्बन्ध, आपकी नैया को डुबो देंगे। कर्कश वाणी में बात करना या गाली-गलौज करके बात करने से आपको नीचा देखना पड़ सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. शुद्ध चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।
2. तांबे के पैसे में सूराख करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष नकद धन की कमी नहीं होगी। हर चीज़ बिना मांगे आपको मिल सकती है। कम मेहनत अधिक लाभ। शत्रु अपने आप नष्ट हो जाएगें या शत्रुओं पर आपकी जीत होगी, बुजुर्गों के नाम पर दान करेंगे या धर्मार्थ चीज़े बनवायेंगे। हर समय अपने कामों को निपटाने के लिये ध्यान देना पड़ेगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. कर्ज/दान या गिफ्ट न लेवें या भीख न मांगे।
2. आवारा न घूमें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अप्राकृतिक सैक्स के शिकार हो सकते है। कामुक बन कर पापी भी बनेंगे। काम शक्ति कमजोर पड़ सकती है। कन्या संतान की चिंता रहेगी। आपसे मुर्खतापूर्ण कार्य हो सकते हैं। जिसका बाद में आपको पछतावा होगा। किसी स्त्री के कारण आपका धन-समय और कारोबार बरबाद होगा।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. माता या पत्नी के हाथों से सरसों का तेल दान करायें।
2. कपिला गाय का दान करें।
3. नपुंसकता के समय मछली का तेल, सोने-चांदी का कुश्ता प्रयोग में लायें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिट्टी के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके बुजुर्गों को बहुत लाभ होगा, पिछला समय आपको आर्थिक तंगी का रहा हो तो इस वर्ष धन लाभ होगा। माता/सास से लाभ होगा। मकान वाहन सुख और सभी प्रकार के सुख के साधन उपलब्ध होंगे। सरकारी विभाग में या किसी संस्था में उच्च पद प्राप्त हो सकता है।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/अपनी आयु से बड़ी स्त्री से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से इस वर्ष अगर आपका चाल-चलन खराब हुआ तो संतान को कष्ट होगा, गुर्दा रोग का भय रहेगा, श्वास या दमे का रोग उत्पत्र हो सकता है। चाल चलन ठीक रखें और दुश्चरित्र लोगों से दूर रहें वह आपके मान और सम्मान पर धब्बा लगा सकते हैं। गुरु/पिता से झगड़ा करने हर तरफ हार व हानि होगी।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दादा-पिता, गुरु की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्ध्य देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• बंदरों को गुड़ और चना/केले खिलायें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2023-2024

वर्त्तमान आयु - 5
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	हाँ	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	--	--	नेक
शुक्र	--	--	--	नेक
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	--	हाँ	हाँ	हाँ	--	हाँ	--	--	--	हाँ	--

वर्ष कुंडली 2023 – 2024

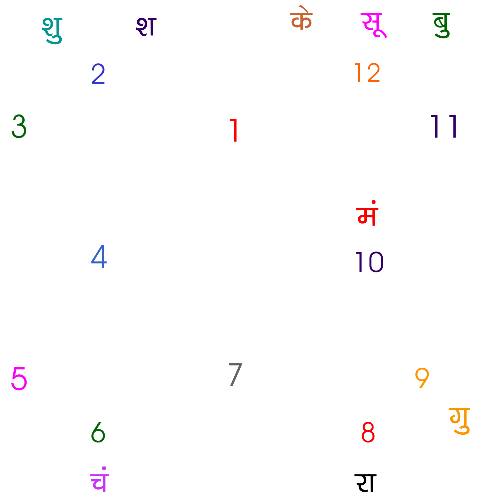

वर्ष चन्द्र कुंडली 2023 – 2024

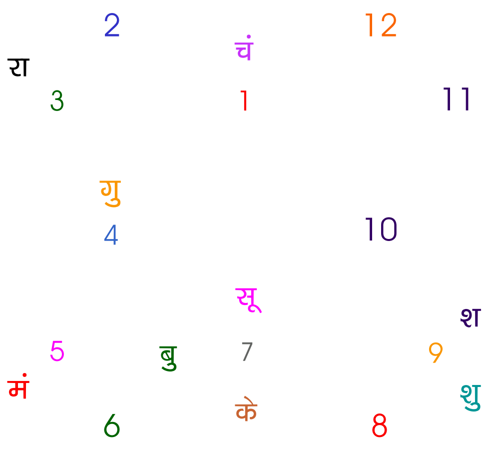

लाल किताब वर्षफल 2023-2024

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आंखों में कष्ट का भय है। नीच या विधवा स्त्री से संबंध आपको हानि होगी, बिजली का सामान मुफ्त या गिफ्ट न लेवें। किसी की अमानत में ख्यानत न करें आप भी ख्याल रखें कि आपकी अमानत में ख्यानत न हो। मकानों से संबंधित और मैकेनिकल काम में हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. जल में चीनी डाल कर सूर्य को अर्ध्य देवें।
2. भूरी चीटियों को सूर्यास्त के समय त्रिचौली (शक्कर-तिल-चावल का टुकड़ा) डालें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी माता को शरीर कष्ट रहेगा। आप के परिवार को माता की चिंता रहेगी या विद्या संबंधी परेशानी भी आ सकती है। आम जनता के लिये पानी पिलाने का पानी का स्रोत लगाना, आपको और आपकी संतान को कष्ट तथा परेशानी ही देगा। बिना सोचे-समझे किये गये कामों में आपको परेशानी उठानी पड़ सकती है, समझदारी से काम लें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. चंद्र ग्रहण के मध्य काल में 4 सूखे नारियल (बजने वाले) जल प्रवाह करें।
2. माता को कष्ट हो तो खरगोश पालें।
3. नाश्ते में कच्चा पनीर खायें। रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पीयें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप की गिनती उच्च/प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी। आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। कोई सरकारी विभाग या पुलिस/सेना विभाग में कार्यरत है तो तरक्की मिलेगी नौकरी व्यापार में अधिक धन लाभ होगा। आप राजसी समय व्यतीत करेंगे। अच्छे या बुरे तरीके से आप धन कमाएंगे, जायदाद और वाहन का सुख होगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. सोना न बेचे न गिरवी रखें।
2. दूध उबाल कर रसोई में गैस चूल्हे/ अंगीठी /चूल्हे आदि पर गिर कर न जले इसका विशेष

ध्यान रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष मादक द्रव्यों या चीज़ों का प्रयोग आपको बदजुबान बना सकता है जो आपके लिये हानिकारक होगा, ख्याली कारोबार (सोच-विचार कर करने वाले काम) या सट्टा/जुआं, लाटरी, शेयर आदि आपके लिये अनुकूल नहीं है। भ्रम या अज्ञानता के कारण आपका नुकसान हो सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. स्टील की बेजोड़ अंगूठी बांये हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में पहनें।
2. खाली घड़ा ढक्कन लगाकर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अपने पूर्वजों के द्वारा लाभ होगा, ज्योतिष और गुप्त विद्याओं में रूचि रहेगी। परिवार के लोगों का मान-सम्मान बढ़ेगा। आप दुनिया में अपने परिवार का नाम चमकाएंगे। जौहरी/सर्राफी के कामों से लाभ हो सकता है। आपकी आदत राजाओं जैसी बनेंगी। प्राण जाये पर वचन न जाये ही आपका धर्म होगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. किया हुआ वायदा पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। जिससे दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होगी। ईश्वर पर भरोसा रहेगा जिससे आपके सभी काम पूर्ण होंगे। साधू वेश में आशिकाना ख्याल रहेंगे। चरित्र सुधार कर रखेंगे। प्रेम संबंधों में धोखा हो सकता है इसलिये प्रेम संबंध के चक्कर से बचें।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. पशुओं पर जुल्म न करें।
2. शेर मुंह मकान में रिहाइश न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष ईश्वर भक्ति में आपका विश्वास बढ़ेगा। पिता/ससुराल से धन-संपति का लाभ होगा। कोयला, चमड़ा, मशीनरी के कामों से लाभ होगा। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अक्ल की बारीकी से उलझनों को सुलझा लेंगे। बने बनाये मकान का लाभ मिल सकता है। धन की कमी नहीं रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. माथे पर सरसों का तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर-नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43-43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष भाई-बंधुओं से झगड़ा करना और समाज विरोधी कार्य करना ठीक नहीं, आवारा घूमने से आपकी तरक्की में रूकावट पैदा होगी, संतान का मंदा हाल होगा ऐसी आशंका है। कुत्ते के काटने का भय या आपके द्वारा कुत्ता मारा जाना आपके लिए और सेतान के लिए हानिकारक है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें

उपाय :
1. घर में काला-सफेद कुत्ता पालें या काले-सफेद कुत्ते को कम मीठे की रोटी खिलायें।
2. जीजा, साला और दोहता की सेवा करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• खाली घड़ा ढक्कन देकर जल प्रवाह करें या स्टील की अगुंठी बायें हाथ की कनिष्ठका अंगुली में पहनें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2024-2025

वर्त्तमान आयु - 6
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	--	--	मन्दा
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	--	--	नेक
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	हाँ	हाँ	--	--	हाँ	--	--	--	हाँ

वर्ष कुंडली 2024 – 2025

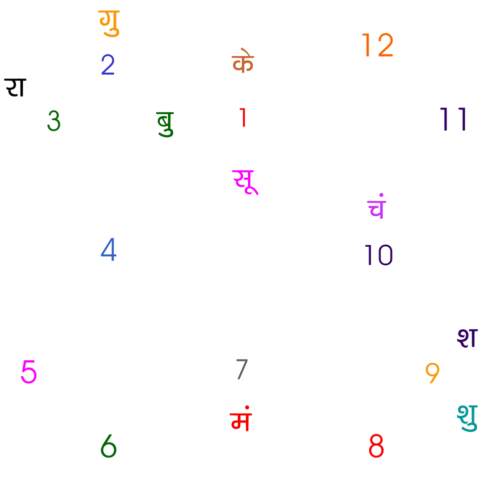

वर्ष चन्द्र कुंडली 2024 – 2025

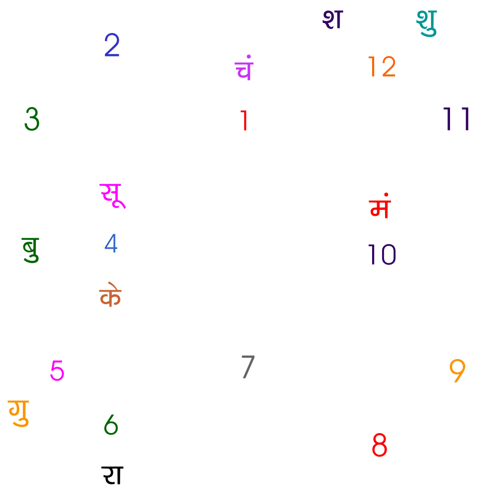

लाल किताब वर्षफल 2024-2025

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मकान में अंधेरा कमरा है तो उसे रोशनी में बदलने से, माया का सांप, दौलत का हाथी आपके घर से चला जाएगा अर्थात् धन की कमी या हानि होगी, हड्डी संबंधित चोट/रोग का भय, दिल की धड़कन बढ़ जाना, रक्त चाप घट या बढ़ जाये, ऐसी आशंका है, मान-सम्मान की हानि भी हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य का अर्घ्य देवें।
2. बन्दरों को गुड़/केला खिलायें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष खराब स्वास्थ्य के समय या वैसे ही रात के समय लिक्वड दवाई का प्रयोग आपके लिए हानिकारक है। विद्या संबंधी कामों में भी परेशानी आ सकती है। चोरों-जुआरियों, शराबी लोगों द्वारा आपका नुकसान होगा। किसी स्त्री या प्रेमिका द्वारा गलत सलाह से आपका धन-सम्मान नष्ट हो सकता है, सतर्क रहें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. दूध को फाड़ कर उसका पानी पीयें अर्थात पनीर का पानी पियें (स्वास्थ्य खराब के समय)
2. 10 दिन सुबह नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।
3. रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पिये।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार की तरक्की और वृद्धि होगी। रोते हुए व्यक्ति को हंसाना और उसको ढांढस देकर मदद करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे, इन्साफ पसन्द, ज्योतिष विद्या में रुचि रहेगी, विष्णु भगवान की तरह संसार के पालक सिद्ध हो सकते हैं। जज, सरपंच, नेता जैसे आदि पद का अधिकार भी मिल सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।

2. घर में बेलदार पौधे या बेलें न लगावें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. में 1 है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अपनी सेहत का ध्यान रखें विशेषकर पेट का, तामसी भोजन आपके लिये हानिकारक हो सकता है। अधर्म के कार्य या वशीकरण विद्या में रूचि रहेगी, आपको समझ-सोच कर हर बात करनी चाहिये, आपकी कंजूसी दूसरे के साथ अलगाव पैदा कर सकती है। विदेश यात्रा या संबंधी कामों में हानि का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. धर्म-कर्म के कार्य करें।
2. घर पर आये मेहमानों की सेवा करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ मिल सकता है। आपको कुछ भी होने वाला हो उसकी खबर पहले हो जाएगी, शिाा और ज्ञान से लोगों का मार्ग दर्शन कराएंगे। आपके सभी कार्य अपने आप बनते चले जाएंगे मगर आपको व्यर्थ की चिंता रहेगी। स्त्री और शासन या सरकारी विभाग की तरफ से लाभ मिल सकता है।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. सर्राफी या जौहरी का काम न करें।
2. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल-चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई-बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. नीम के पेड़ के तने में चांदी के 9 चौरस टुकड़े दबायें (अगर आपके पुत्र संतान है तो)।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई-बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान-वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके शत्रु आपके ऊपर हावी नहीं हो सकते, भविष्य में होने वाली घटना का आपको पहले पता चल जायेगा। आपकी कलम में तलवार से अधिक ताकत होगी, आपको उच्च पद या सम्मान प्राप्त होगा। नौकरी-व्यापार में खूब तरक्की होगी, खराब चाल-चलन से संतान की चिंता रहेगी।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. हाथी दांत पास न रखें।
2. तीन-तीन हाथी के खिलौने घर में न रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में किसी व्यक्ति के संतान योग हो तो लड़के की बजाय लड़की पैदा होगी। अगर यात्रा हो तो यात्रा में हानि होगी। नौकरी में स्थायी काम करना अधिक लाभ देगा। घर से दूर स्थानान्तरण हो या विदेश योग बने तो 100 दिन में वापिस आना पड़ेगा। तबदीली हो जाये तो रुक सकती है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें या पालें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• ज्योतिष, कर्म-कांड में रुचि रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2025-2026

वर्त्तमान आयु - 7
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	हाँ	--	मन्दा
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	--	--	नेक
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	हाँ	हाँ	--	--	हाँ	--	--	--	हाँ

वर्ष कुंडली 2025 – 2026

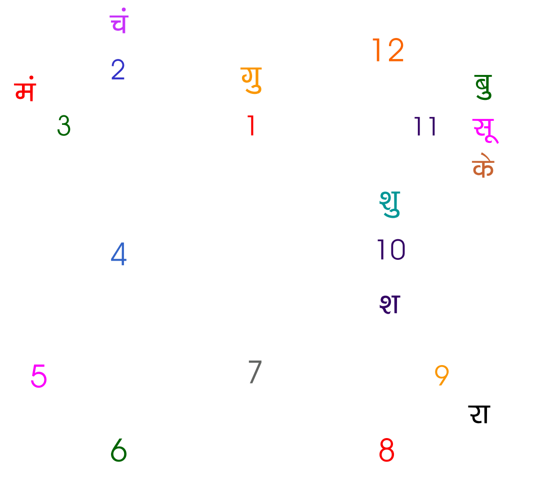

वर्ष चन्द्र कुंडली 2025 – 2026

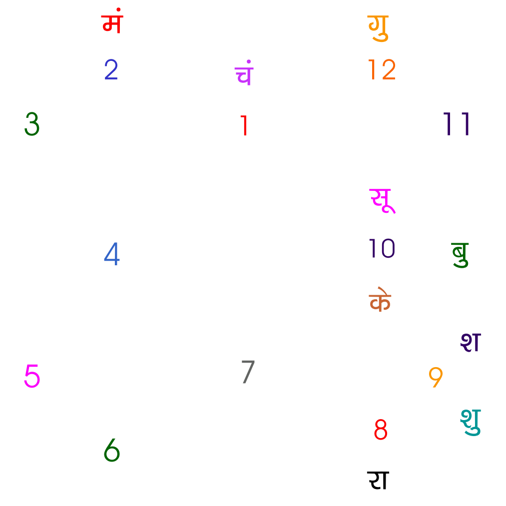

लाल किताब वर्षफल 2025-2026

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष सुस्ती और लापरवाही से जीवन में तरक्की के कई अवसर खो सकते हैं। मांस-शराब के इस्तेमाल करना संतान को कष्ट होगा या संतान सुख की चिंता रहेगी। दूसरे लोगों को गाली देना, झूठी गवाही देना, लड़ाई-झगड़ा करना आपके लिये ठीक नहीं है इन बातों से बचें। सरकारी विभाग द्वारा दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. झूठ न बोलें, जूठा भोजन न खावें और न खिलावें।
2. मांस-मछली न खावें और शराब आदि न पिये मादक चीजों का सेवन न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको बूढ़ी स्त्री या माता से झगड़ा करना आपकी तरक्की में रूकावट होगा, मांस-शराब का सेवन संतान विद्या या संतान की चिंता हो सकती है। आँखों में रोग का भय रहेगा, बहन-बेटी की चिंता रहेगी। जमीन-जायदाद के लाभ में रूकावट का कारण आपके अपने भाई-बंधु होंगे फिर भी उनसे झगड़ा न करें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. माता या माता समान स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लेवें।
2. माता से दूरी के समय माता से चावल-चांदी सफेद कपड़े में बांध कर पास रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। धन-परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बुरे कामों से दूर रहना चाहिये, साधू-फकीर से धागा-ताबीज, जल-भभूति आदि से आपकी लंका में आग लगेगी अर्थात् आपका सुख और सुख के साधन नष्ट हो सकते हैं। बहन-बेटी का गृहस्थ जीवन कुछ कष्टमयी व्यतीत होगा, मांस खाना संतान के लिये हानिकारक या कष्टकारी रहेगा। अपशब्द न बोलें और गर्म मिजाज न रखें।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. कण्ठी वाला तोता पालें।
2. तांबे के पैसे में या तांबे के चौरस टुकड़े में सुराख करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पढ़ने-पढ़ाने में रुचि या विद्या सम्बन्धित कामों से लाभ मिलेगा। आपको मान-सम्मान मिलेगा। पिता, दादा का रुतवा बढ़ेगा और उनका नाम रोशन होगा। नशों से दूर रहेंगे, सबके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। गुरु-साधू की सेवा करेंगे, सरकारी विभाग या शासन द्वारा भी आपको लाभ मिल सकता हैं।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बिना मेहनत का माल, गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखना शुभ रहेगा।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 10 में शुभ हैं जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष कामशक्ति की अधिकता होगी। पत्नी के साथ रहते कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी और आपको किसी प्रकार का दुःख नहीं झेलना पड़ेगा। पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। आपमें लोभ और शक करने की भावना बढ़ सकती है। दस्तकारी के कामों से अधिक लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. शराब-बीयर न पियें, मछली न खावें।
2. आशिक मिजाज न बनें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग या सरकार द्वारा लाभ मिलेगा। इस वर्ष का हर दसवां दिन और दसवां महीना आपके लिये शुभ और लाभकारी है। धर्मात्मा होना आपके लिये ठीक नहीं रहेगा। स्थायी कामों अर्थात एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से मान-सम्मान बढ़ेगा और अधिक धन लाभ मिलेगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मादक द्रव्यों/चीजों का प्रयोग न करें और मछली न खायें।
2. भाग-दौड़ के काम न करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पुलिस/कोर्ट का भय या चोरी का माल खरीदने का लांछन लग सकता है। पिता और ससुर को कष्ट या उनके द्वारा आपको हानि का भय है। साधू-फकीर का साथ फिजूल खर्ची ही बढ़ायेगा। तीर्थ यात्रा में रुकावट आ सकती है। धार्मिक कामों में रूचि रहेगी जो आपके लिये ठीक नहीं।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. धर्म मंदिर में सिर झुकावें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो कार्य पर न जायें या कुछ समय के लिए रुक कर जाएयें। माता/सास का विरोध करना आपके लिये शुभ नहीं। संतान से झगड़ा न करें बल्कि उसकी सेवा करने से भाग्योदय होगा। व्यतीत समय के किस्से-कहानियाँ लोगों को सुना कर समय न गुजारें।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते की सेवा करें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन रेत का तकिया बना कर रात को सिर के नीचे रख कर सोये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2026-2027

वर्त्तमान आयु - 8
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	मन्दा
चंद्र	--	हाँ	--	नेक
मंगल	--	हाँ	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	हाँ	--	नेक
शनि	--	हाँ	--	नेक
राहु	--	हाँ	--	नेक
केतु	--	हाँ	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2026 – 2027

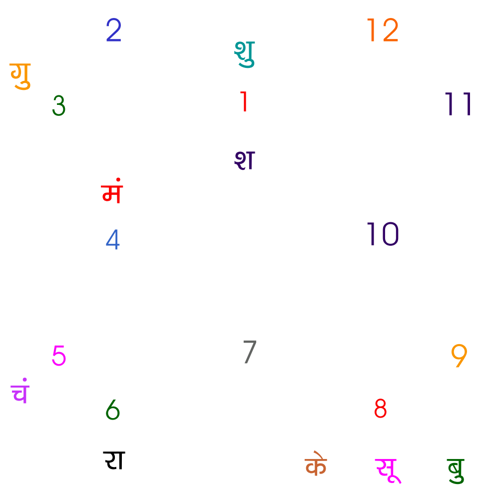

वर्ष चन्द्र कुंडली 2026 – 2027

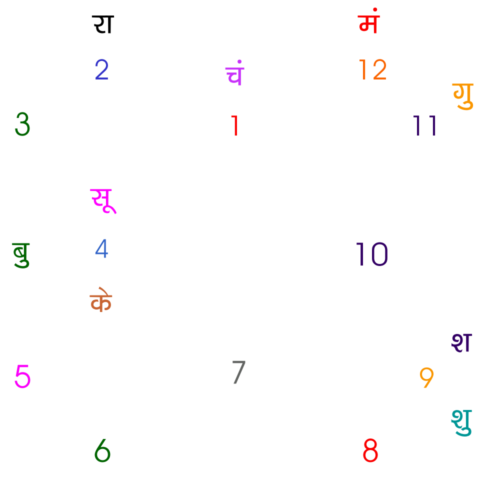

लाल किताब वर्षफल 2026-2027

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष चाल-चलन खराब हुआ तो गुप्त रोग से दुःखी हो सकते हैं। गंदी सोहबत से आपके सम्मान पर धब्बा लगेगा और धन नष्ट हो, ऐसी आंशका है। अतः आपको इन बातों से बचना होगा। जहरीले कीट-पंतगे के काटने का भय है। टैक्स विभाग की चिंता रहेगी। चोरी-ठगी भी हो सकती है सतर्क रहें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. बड़े भाई की सेवा करें या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने-चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुख के साधनों से सुख नहीं मिलेगा। माता, नानी-सास और पत्नी से लाभ मिलेगा, गृहस्थ जीवन सुखमयी व्यतीत होगा, संतान की चिंता रहेगी, मेहमानों का आपके घर में आना-जाना लगा रहेगा। मकान/वाहन का सुख मिलेगा। दूसरों को नसीहत दे कर उनको सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रत्यनशील रहेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार के मकान में रिहाईश न करें।
2. काले-काने, अंगहीन, निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू-टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल-चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष भाई-बन्धुओं का सुख मिलेगा, आप जिस पर मेहरबान होंगे उसको बहुत लाभ होगा। बुजुर्गों की सेवा में अपना धन-दौलत न्यौछावर कर सकते हैं। कारोबार में तरक्की मिलेगी। आँख की होशियारी से दूसरों के अच्छे-बुरे व्यवहार को जान लेंगें। आप धार्मिक कामों में अहम भूमिका निभायेंगे।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. सूखा या कटा पीपल घर में न रखें।
2. घर में मन्दिर हो तो उसमें दोनों समय पूजा अर्चना करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सुंदर बनना, संवराना आपकी आदत बन जायेगी, आशिकाना मिजाज भी हो सकता है। अपनी आयु के लोगों में आप प्रधान बन सकते हैं। धार्मिक होते हुए भी आप में इश्क की हवस रहेगी। उत्तम भवन व वाहन का सुख प्राप्त हो सकता है। लोगों से मार्ग दर्शन लेंगे।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल-चलन खराब न करें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. धर्म-कर्म में रुचि रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा-लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता-पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस-मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके शत्रु दबे रहेंगे, किसी व्यक्ति को आप दंड या सजा मुक्त करवा सकते हैं। आपमें अहंकार की भावना भी आ सकती है। ऐशो आराम की सभी चीजें़ आपको प्राप्त होंगी, कर्ज हो तो कमी होगी अर्थात् धन की कारोबार में वृद्धि होगी, किसी संस्था या सरकारी विभाग में उच्च पद मिलेगा।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चोरी न करें। चोरी का माल न लेंवें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपके लिए इस वर्ष शराब-मीट का सेवन हानिकारक है। खराब चाल चलन या अनैतिक संबंध गुप्त रोग देगा। संतान सुख चाहते हैं तो चाल-चलन ठीक रखें। संतान की चिंता रहे ऐसी आशंका है। कारोबार में हानि और यात्रा में परेशानी या अपव्यय होगा। किसी को अपना भेद न बतायें, कारण आपका भेदी तबाह करेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. काले-सफेद कंबल धर्म स्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिए)।
2. काले-सफेद कंबल के टुकड़े में केतु के साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (जब बच्चे जीवित न रहते हों)।
(1) सूर्य-गेहूँ, (2) चंद्र-चावल, (3) मंगल-दाल मसूर, (4) बुध-मूंग, (5) गुरू-चने की दाल, (6) शुक्र-चरी, (7) शनि-काली उड़द, (8) राहु-जौं, (9) केतु-काले-सफेद तिल।

3. कुत्ते को भोजन का हिस्सा देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• तांबे की बर्तन मूँग भरकर जल प्रवाह करें ।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2027-2028

वर्त्तमान आयु - 9
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	--	--	मन्दा
चंद्र	--	--	--	नेक
मंगल	--	--	--	नेक
बुध	--	--	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	--	--	मन्दा
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	--	--	मन्दा
केतु	--	--	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	--	--	--	हाँ	हाँ	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2027 – 2028

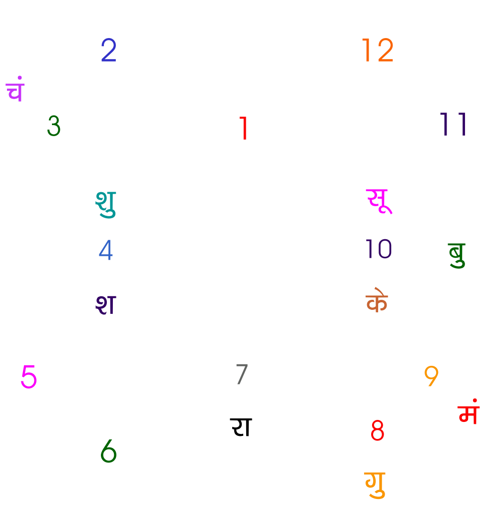

वर्ष चन्द्र कुंडली 2027 – 2028

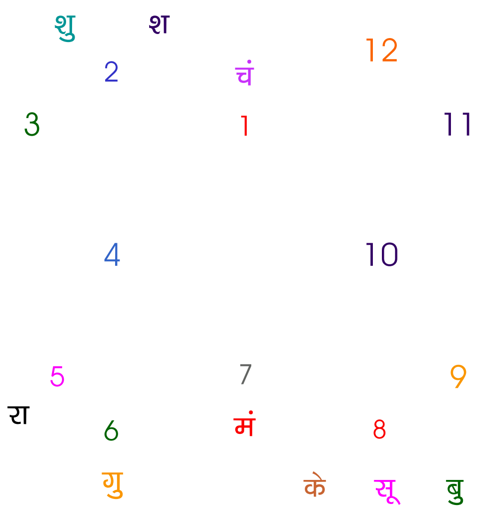

लाल किताब वर्षफल 2027-2028

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अपना भेद किसी को न बतायें आपका भेदी ही आपको तबाह करने की कोशिश कर सकता है, मशीनरी, लकड़ी के कामों में हानि हो सकती है। कोयला-बिजली के कामों में अधिक लाभ नहीं मिलेगा। पिता का सुख कम या पिता से लाभ न मिलेगा। आंखों में कष्ट का भय है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।
2. सिर पर सफेद-शरबती, टोपी पहनें या पगड़ी/स्कार्फ बांधें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रूचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति में वृद्धि और उसका लाभ मिलेगा, परिवार में धार्मिक उत्सव भी हो सकता है। नौकरी-व्यापार में अधिक धन लाभ मिलेगा। विवाहित भाई के साथ रहेंगे या उसकी पत्नी की सेवा करेंगे तो आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हैसियत से उभरेंगे और आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. परदेश में रिहाईश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मादक चीजों का सेवन अहितकर है, शराब पीना, मछली खाना आपको हार और हानि का मुंह दिखायेगा, बहन-बेटी, साली-बुआ का धन उपभोग करने से आपको हानि हो सकती है। आप दूसरों के लिये बेवकूफ दोस्त के समान हो सकते हैं, हर कार्य सोच-समझ कर करें।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मजदूर पेशा (बोझा उठाने वाले) व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको अगर कोई शारीरिक कष्ट होता है तो अपने आप टल जायेगा, पिता-दादा का सुख मिलेगा, भाई-बंधु आपके धन का उपभोग करेंगे। धन, आयु की वृद्धि होगी। गुप्त विद्याओं में रूचि रहेगी। आपके कामों मे कोई रूकावट नहीं आएगी। यदि आप साधू भी बन जाये तो दुःखी न रहेंगे।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पीले वस्त्र पहनने वाले साधू से दूर रहें।
2. घर में तुलसी घंटी, ठाकुर न रखें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से संबंध रह सकता है जो आपके लिये हानिकारक है और संतान के लिये चिंताजनक। चाल-चलन चाल-चलन पर धब्बा लगेगा, चाल-चलन संभालना एक जरूर चीज है। माता, पत्नी का झगड़ा होगा। कारोबार में हानि, मानसिक तनाव रहेगा। मामा को कष्ट हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर कुएं में डाले।
2. चार आडू की गिटकों में सुरमा भर कर वीराने में दबाये।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें। (पुत्र सुख के लिए)

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर से दूर विद्या अध्ययन करने या कारोबार करने से लाभ होगा। विदेश संबंधित काम या विदेश यात्रा भी हो सकती है। नौकरी-व्यापार में बदली, चाल-चलन ठीक रखेंगे। खराब स्वास्थ्य के समय अल्कोहल से लाभ होगा मगर ठीक स्वास्थ्य के समय अल्कोहल का प्रयोग हानिकारक है।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब न पियें, मछली न खावें
2. काला कपड़ा न पहनें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बिजली या पुलिस विभाग से संबंधित कामों में हानि का भय, ट्रांसपोर्ट का काम करने से हानि या आयु शक्की हो सकती है। साझेदारों से झगड़ा। कारोबार में उथल-पुथल भी हो सकती है। पत्नी को सिर दर्द का रोग हो सकता है। पत्नी से तनाव या पत्नी से जुदाई भी हो सकती है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नारियल का दान करें।
2. शुद्ध चांदी की दो ईंटे घर में कायम करें।
3. प्लास्टिक की डिब्बी में शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से यदि आपने इस वर्ष परस्त्री से संबंध रखे तो संतान को कष्ट या संतान की चिंता रहेगी, भाई से झगड़ा करना आपकी अवनति का कारण बनेगा। भाई अगर गलती भी करता है तो उसे माफ करने से आपको लाभ होगा। आपकी तरक्की होती रहेगी। माता/सास की सेहत खराब या चिंता रहेगी।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन सिर पर सफेद-शरबती टोपी/पगड़ी/रुमाल/स्कॉर्फ से ढाप कर रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2028-2029

वर्त्तमान आयु - 10
वर्त्तमान दशा – शनि

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	--	हाँ	--	मन्दा
चंद्र	--	हाँ	--	नेक
मंगल	--	हाँ	--	नेक
बुध	--	हाँ	--	मन्दा
गुरु	--	हाँ	--	नेक
शुक्र	--	--	--	मन्दा
शनि	--	--	--	नेक
राहु	--	हाँ	--	नेक
केतु	--	हाँ	--	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

वर्ष कुंडली 2028 – 2029

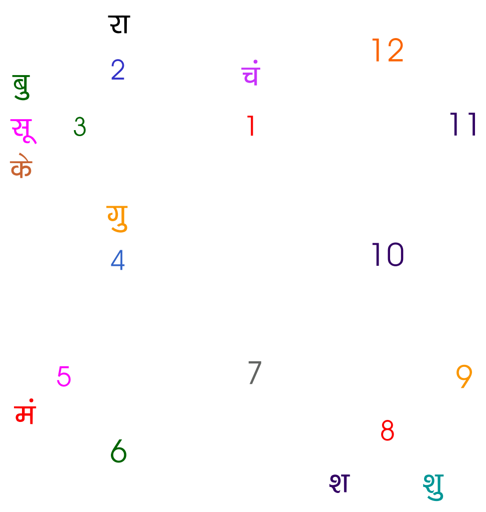

वर्ष चन्द्र कुंडली 2028 – 2029

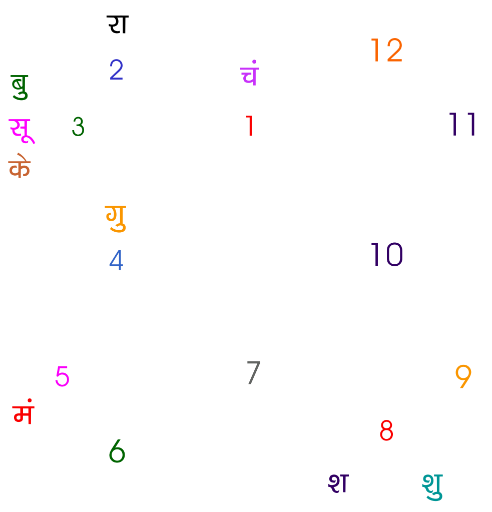

लाल किताब वर्षफल 2028-2029

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी किस्मत में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकता है, परिवार में बीमारी पर धन का अपव्यय होगा। गुप्त शत्रु दबे रहेंगे, धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ननिहाल पर कुछ समय अशुभ रहेगा। भाई-बंधुओं से धोखा हो सकता है सतर्क रहें। अधिक मेहनत करने से लाभ मिलेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. माता या माता समान स्त्री के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
2. परस्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुंदर और सफेद कपड़े पहनने का शौक रहेगा, विद्या से लाभ, किसी की अमानत आपके पास रह सकती है माता-पिता की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, कभी यात्रा पर जायें तो यात्रा से वापस आकर माता के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने से लाभ होगा। परिवार में बहुत देर बाद किसी के पुत्र संतान होगी।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक और अनैतिक संबंध न रखें।
2. माता या माता समान स्त्री से झगड़ा न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 5 में शुभ है। जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गृहस्थ/संतान का सुख मिलेगा, परिवार में उन्नति होगी, यात्रा बहुत होगी। इस जन्म दिन के बाद धन दिनों-दिन बढ़ता जाएगा, पिता-दादा की हैसियत भी बढ़ेगी, चाल-चलन आपको उम्दा रखना होगा, शत्रु को भी मित्र बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे और शत्रु आपका सहायक बन जाएगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब-बीयर न पिये, मांस-मछली का भोजन न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बहन-लड़की, साली-बुआ से धन लेकर कोई कार्य किया तो कार्य में हानि हो सकती है। आपके भाग्योदय में रुकावट आ सकती है या आप कर्जदार हो सकते हैं। जबान के रोग होने का भय है। भाई-बहन की चिंता या उनसे झगड़ा करने पर हानि हो सकती है। नाड़ियों चमड़ी रोग का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूर्गा पूजन या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा करें।
2. तोता पाले या तोते को चूरी खिलायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ होगा। दिमाग में आयी बात को अवश्य पूरा करेगें। आपको हर कोई मान-सम्मान देगा। सभी की मदद करने से और उच्च पद/तरक्की की प्राप्ति होगी। बुजुर्गों से सुख मिलेगा और रुतबा दिनों-दिन बढ़ेगा। वाहन, मकान का सुख मिलेगा और परिवारों में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बच्चों के टुटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गुप्त रोग का भय है। चाल-चलन ठीक रखें वरना पत्नी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। पत्नी से झगड़ा करना आपके लिये हार और हानि का कारण होगा। पत्नी की हर बात में हां में हां जरूर मिलायें मगर करें अपने मन की। आपके द्वारा दी गई जमानत आपको भरनी पड़ सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका मनमौजी स्वभाव रहेगा। एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से लाभ होगा। भाग-दौड़ के काम न करें। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। पुत्र संतान की ख़ुशी मिले, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके मकान के साथ बंद गली हो उस मकान में आप रिहाइश नहीं रखेंगे तो लाभ होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. अपने नाम पर मकान न खरीदें।
2. सांप न मारें।
3. मकान के मुख्य द्वार की दहलीज की पूजा करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष ननिहाल या ससुराल से लाभ मिलेगा। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर-नीचे चलने वाला होगा जो कि अच्छा या बुरा दोनों ही तरह का हो सकता है। चोरी के माल से सावधान रहें चोरी का इल्जाम लगने का भय होगा, धन कोष में वृद्धि होगी। दान और मुफ्त माल से परहेज करेंगें।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. सट्टा-जुआ आदि न खेलें।
2. धर्म स्थान में रिहाईश न करें या धर्म स्थान में न जायें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष दूसरों की सलाह लेना आपके लिये हानिकारक हैं। आवारा घूमना या भाई से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करना ठीक नहीं, शरीर पर फोड़े-फुंसी की शिकायत भी हो सकती है। किसी के किये पेशाब पर पेशाब करना आप को गुप्तांग में रोग और शरीर कष्ट देगा या संतान सुख की चिंता रहे ऐसा भी संभव है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. कानों में शुद्ध सोने की ननतियां पहनें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• कन्याओं को हलवा/बिस्कुट देकर आशीर्वाद लेवे या मूंग रात को भिगो कर सुबह पक्षियों को डालें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

अंक ज्योतिष फल

नाम	SampleTesting
जन्म तिथि	06/02/2019
मूलांक	6
भाग्यांक	2
नामांक	4
मूलांक स्वामी	शुक्र
भाग्यांक स्वामी	चन्द्र
नामांक स्वामी	हर्षल/राहु
मित्र अंक	3, 9, 2
शत्रु अंक	1, 8
सम अंक	4, 5, 7
मुख्य वर्ष	2031,2040,2049,2058,2067,2076,2085,2094
शुभ आयु	12,21,30,39,48,57,66,75
शुभ वार	शुक्र, गुरु, मंगल
शुभ मास	मार्च, जन, सित
शुभ तारीख	6, 15, 24
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन,ओपल
अनुकूल देव	देवी
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
मंत्र	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
शुभ यंत्र	शुक्र यंत्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

अंक जीवन ग्राफ

आपका मूलांक एवं भाग्यांक वर्ष के अंकों से एवं आयु के अंको से जो संबंध बनाते हैं वे एक ग्राफ के रूप में नीचे दिए गए हैं। इस ग्राफ द्वारा आप यह साफ साफ जान सकते हैं कि कौन सा आयु का वर्ष आपके लिए लाभकारी हो सकता है या कौन सा वर्ष अनिष्टकारी हो सकता है। इस ग्राफ को बनाने के लिए मूलांक एवं भाग्यांक के आयु वर्ष एवं उनके अलग अलग अंकों से संबंध को लिया गया है। यदि ग्राफ में 60 से ऊपर नंबर आ रहे हैं तो वह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है एवं जिसे 40 से कम नंबर प्राप्त हुए हैं वह वर्ष आपको कुछ कष्टदायक हो सकता है।

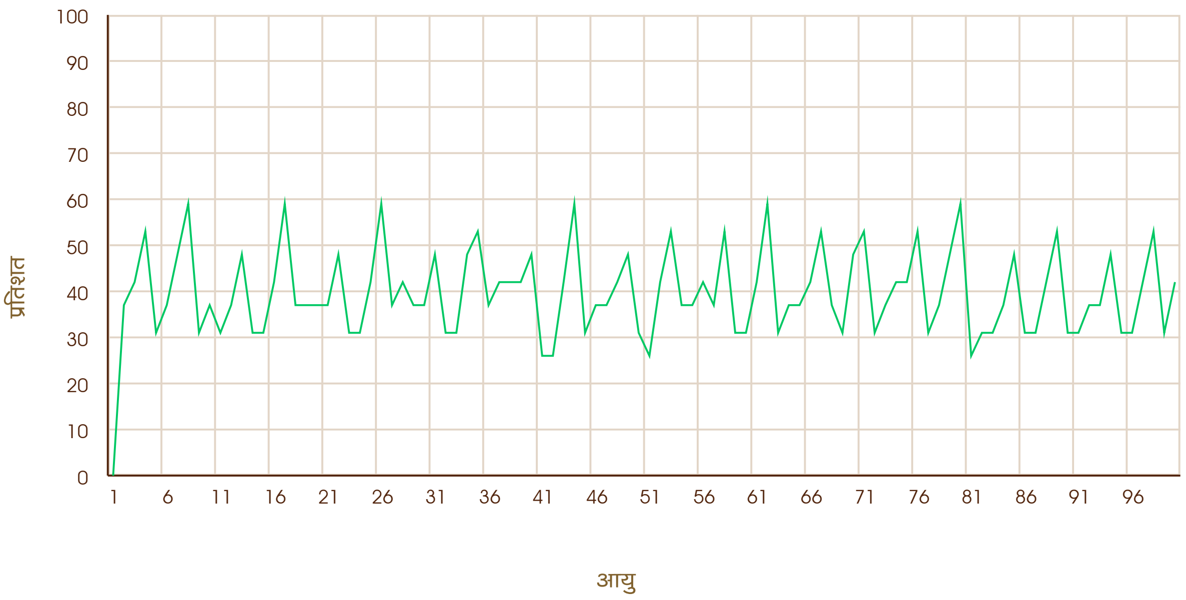

मुख्य वर्ष 2031,2040,2049,2058,2067,2076,2085,2094

शुभ आयु 12,21,30,39,48,57,66,75

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक छः होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक छः होता है। इसका अधिष्ठाता शुक्र ग्रह है। मूलांक छः के प्रभाववश आप के अन्दर आकर्षण शक्ति तथा मिलन सारिता अधिक रहेगी। इस गुण के कारण आप लोक प्रियता प्राप्त करेंगे। सुन्दरता, सुन्दर वस्तुओं की ओर आकृष्ट होना आपकी सहज प्रवृत्ति होगी। विपरीत सेक्स के प्रति आपका आकर्षण रहेगा एवं सुन्दर नर-नारियों से संबंध बनाना, वार्तालाप करना आपकी प्रकृति में रहेगा।

विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में आपकी अभिरुचि रहेगी एवं कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार-व्यापार भी बना सकते हैं। संगीत-साहित्य, ललितकला, चित्रकला इत्यादि में रुचि रखेंगे। सुन्दर वस्त्र धारण करना एवं सुसज्जित मकान में रहना आपको अच्छा लगेगा।

अतिथियों का आदर सत्कार करने में आपको गर्व महसूस होगा। घर या ऑफिस में सभी वस्तुऐं ढंग से सजावट के साथ रखना, सुरुचिपूर्ण फर्नीचर, परदे इत्यादि रखना आपको रास आयेगा।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं आपकी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि आपकी बात को सामने वाला मान जाया करे। किसी बात पर अड़े रहना तथा ईर्ष्या की मात्रा आपके अन्दर अधिक रहेगी। आप कार्यक्षेत्र में किसी की प्रतिद्वन्दिता को आसानी से सहन नहीं कर पायेंगे। जिसके कारण कभी-कभी मानसिक तनाव एवं आत्मग्लानि का भी सामना करना पड़ेगा। आप दूसरों को अपना बना लेने की कला में पारंगत रहेंगे। शीघ्र मित्र बनाने की कला आपके अन्दर अधिक मात्रा में होने से आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 2 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक 6 और भाग्यांक 2 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश

आप एक कलाप्रिय व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आपकी चौंसठ कलाओं में से एकाधिक कलाओं में अच्छी रुचि रहेगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप अपनी कलाओं का भरपूर उपयोग करेंगे एवं आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें कला के द्वारा अच्छा आर्थिक लाभ प्राप्त होता रहे। शुक्र एवं चंद्र के योग से आप एक लोकप्रिय तथा भाग्यशाली व्यक्ति के रूप मे उच्च कोटि की ख्याति अर्जित करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। लेकिन भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं पर आप अत्यधिक धन व्यय करेंगे, जिससे कभी-कभी आपको थोड़ी बहुत आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपकी सामान्य रुचियां ललित कला एवं साहित्य इत्यादि में हो सकती है। सामाजिक स्तर पर आप एक मिलनसार, शीघ्र सफलताएं प्राप्त करने वाले, उच्च कोटि के व्यक्ति के रूप में स्थापित होंगे। नगद धन संग्रह की अपेक्षा आपको भौतिक सुख-संपदा का अधिक लाभ प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 38 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 47 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

नामांक विचार

संसार में नाम नहीं तो कुछ भी नहीं। मनुष्य का सही नाम ही गगन चुम्बी होता है। सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश-विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए जो आपको समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्रदान करे और सदियों तक समाज में आदर के साथ याद किया जाए। आपका नाम आपके भाग्य व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना साथ दे रहा है निम्न गणना से आप जान सकते हैं एवं नाम को ठीक कर अपने भाग्य की वृद्धि कर सकते हैं।

S a m p l e T e s t i n g
3+1+4+8+3+5+4+5+3+4+1+5+3
नाम का योग : 49 नामांक : 4

आपके नाम का कुल योग उन्नचास है। चार एवं नौ के योग से तेरह तथा एक एवं तीन के योग से चार आपका नामांक होता है। चार का स्वामी हर्षल एवं नौ का स्वामी मंगल है।। इन दोनों ग्रहों के गुण-अवगुण आपके नाम को प्रभावित करेंगे। हर्षल के प्रभाव से आप अपने कार्य-क्षेत्र में पुरानी प्रथाओं को बदलने की कोशिश करेंगे। आप धन संग्रह अधिक नहीं कर पाएंगे। लेकिन नाम और यश अधिक प्राप्त करेंगे। समाज में आपको ख्याति अच्छी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये। अनुशासन में रहना आपको अच्छा लगेगा तथा दूसरों से यही आपकी अपेक्षा रहेगी। आपको हमेशा खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सावधान रहना होगा अन्यथा हानि मिलेगी। आपके शत्रुओं की संख्या कम रहेगी। आप अग्नितत्व रोगों के शिकार हो सकते हैं। अतः आप कोमल हृदय से व्यवहार करें।

आपके नाम का नामांक 4 है। इसका आपके मूलांक 6 एवं भाग्यांक 2 से सम संबंध है। अतः आपको मूलांक स्वामी एवं भाग्यांक स्वामी ग्रहों के शुभ फल आपके नाम को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होंगे। इसके प्रभाव से आपका नाम समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। यदि आप मूलांक एवं भाग्यांक के ग्रहों का सम्पूर्ण फल प्राप्त करना चाहते हैं तो आप अपने नाम में इस प्रकार से परिवर्तन करें कि आपका नाम आपके मूलांक तथा भाग्यांक के साथ उत्तम तालमेल स्थपित करले। नाम में परिवर्तन करने के कारण आपको मूलांक स्वामी एवं भाग्यांक स्वामी ग्रह के पूर्ण फल प्राप्त होंगे तथा आपका नाम समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रियता प्राप्त करने में सफल रहेगा।

अपने नाम का अच्छा फल पाना चाहते हैं तो आप ऐसे नाम का चुनाव कीजिये जोकि आपके मूलांक तथा भाग्यांक दोनों से ही मिलान करें तथा उसका नामांक 9 आता हो और 8 न हो तो ऐसा नाम आपकी रुकी हुई प्रगति के द्वार खोलेगा तथा आप पूर्ण रूपेण सांसारिक सफलताएं अर्जित करेंगे। नाम परिवर्तन हेतु आपके लिए 3,7,2,6 अंक शुभ रहेंगे तथा 1,5 अंक अहितकर होंगे।

नाम में परिवर्तन करने हेतु अंग्रेजी वर्णाक्षरों को अंकों में परिवर्तन करने की विधि

उदाहरण सहित नीचे दी जा रही है। जिसकी सहायता से आप आसानी से नाम परिवर्तन अथवा नाम में वांछित संशोधन कर अपने अनुकूल नामांक बना सकते हैं। नाम परिवर्तन से आप मूलांक तथा भाग्यांक के साथ-साथ अपने नाम को सार्थक कर सकेंगे।

A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

1 2 3 4 5 8 3 5 1 1 2 3 4 5 7 8 1 2 3 4 6 6 6 5 1 7

उदाहरणार्थः-

एक अंक घटानाः-	G A N E S H A 3+1+5+5+3+5+1=23=5	G A N E S H 3+1+5+5+3+5=22=4
एक अंक :-	R A M 2+1+4=7	R A M A 2+1+4+1=8
दो अंक :-	B I N D R A 2+1+5+4+2+1=15=6	B R I N D R A 2+2+1+5+4+2+1=17=8
तीन अंक :-	R A M C H A N D 2+1+4+3+5+1+5+4=25=7	R A M C H A N D R A 2+1+4+3+5+1+5+4+2+1=28
चार अंक :-	K R I S H N A 2+2+1+3+5+5+1=19=1	K R E S H N A 2+2+5+3+5+5+1=23=5
पाँच अंक :-	T E W A R I 4+5+6+1+2+1=19=1	T I W A R I 4+1+6+1+2+1=15=6
छः अंक :-	A G G A R W A L 1+3+3+1+2+6+1+3=20=2	A G A R W A L 1+3+1+2+6+1+3=17=8

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीयर्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

पुल्लिंग	लिंग	पुल्लिंग
06/02/2019	जन्म तिथि	**06/02/2019**
बुधवार	दिन	बुधवार
घंटे 12:12:13	जन्म समय	12:12:13 घंटे
घटी 13:22:24	जन्म समय(घटी)	13:22:24 घटी
India	देश	India
kanpur	स्थान	kanpur
पूर्व 26:26:59	अक्षांश	26:26:59 पूर्व
उत्तर 80:19:54	रेखांश	80:19:54 उत्तर
पूर्व 82:30:00	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:40	स्थानिक संस्कार	-00:08:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:51:15	सूर्योदय	06:51:15
17:54:30	सूर्यास्त	17:54:30
24:07:12	चित्रपक्षीय अयनांश	24:07:12

वृष	लग्न	वृष
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
कुम्भ	राशि	कुम्भ
शनि	राशि-स्वामी	शनि
शतभिषा	नक्षत्र	शतभिषा
राहु	नक्षत्र स्वामी	राहु
1	चरण	1
परिघ	योग	परिघ
बालव	करण	बालव
गो-गोपाल	जन्म नामाक्षर	गो-गौतमी
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
अश्व	योनि	अश्व
राक्षस	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	आद्य
मार्जार	वर्ग	मार्जार
0	गत/तत्कालिक वर्ष	1

जन्म - विवरण   वर्ष - विवरण

नक्षत्र	पद	अंश	राशि	व	अ	ग्रह	व	अ	राशि	अंश	पद	नक्षत्र
कृतिका	3	05:33:07	वृष			लग्न			वृष	05:33:07	3	कृतिका
श्रवण	4	23:03:19	मक			सूर्य			मक	23:03:19	4	श्रवण
शतभिषा	1	08:10:53	कुंभ			चंद्र			कुंभ	08:10:53	1	शतभिषा
अश्विनी	1	00:21:00	मेष			मंगल			मेष	00:21:00	1	अश्विनी
धनिष्ठा	2	28:21:30	मक		अ	बुध		अ	मक	28:21:30	2	धनिष्ठा
ज्येष्ठा	3	24:32:21	वृश्चि			गुरु			वृश्चि	24:32:21	3	ज्येष्ठा
मूल	3	08:33:27	धनु			शुक्र			धनु	08:33:27	3	मूल
पूर्वाषाढ़ा	3	21:24:31	धनु			शनि			धनु	21:24:31	3	पूर्वाषाढ़ा
पुनर्वसु	4	02:36:44	कर्क	व		राहु	व		कर्क	02:36:44	4	पुनर्वसु
उत्तराषाढ़ा	2	02:36:44	मक	व		केतु	व		मक	02:36:44	2	उत्तराषाढ़ा
अश्विनी	2	04:52:43	मेष			मु			वृष	05:33:07	3	कृतिका

व - वक्री   स - स्थिर

अ - अस्त   पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:12

लग्न-चलित

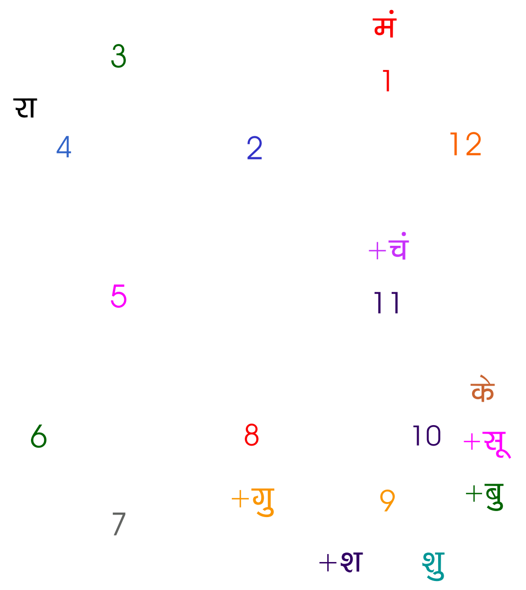

वर्ष लग्न कुंडली

चन्द्र कुंडली

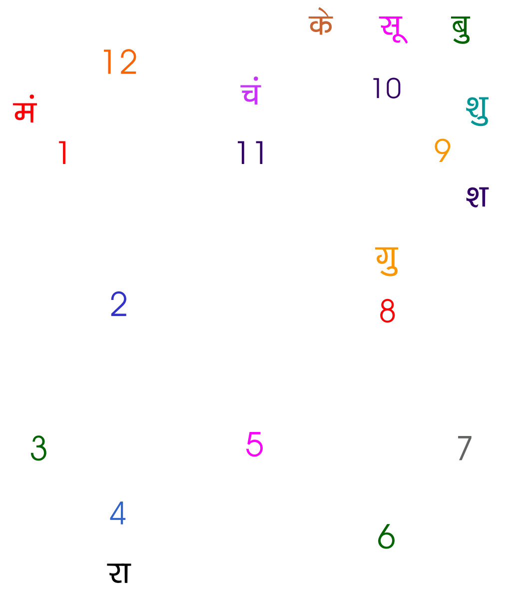

वर्ष चन्द्र कुंडली

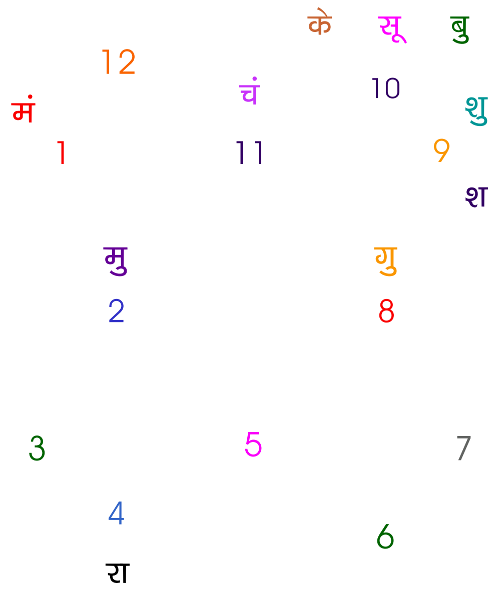

नवमांश कुंडली

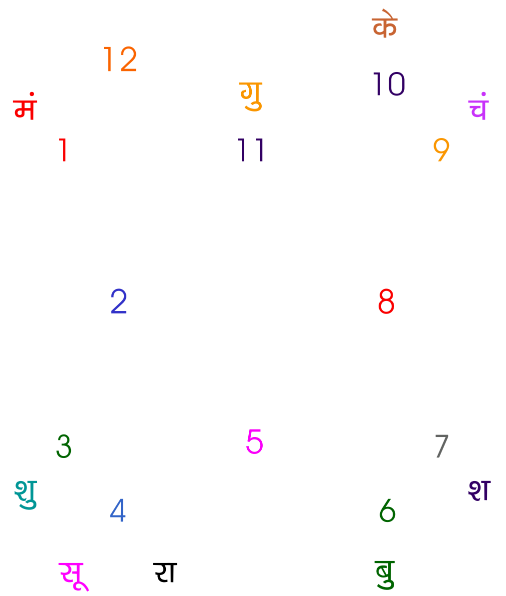

वर्ष नवमांश कुंडली

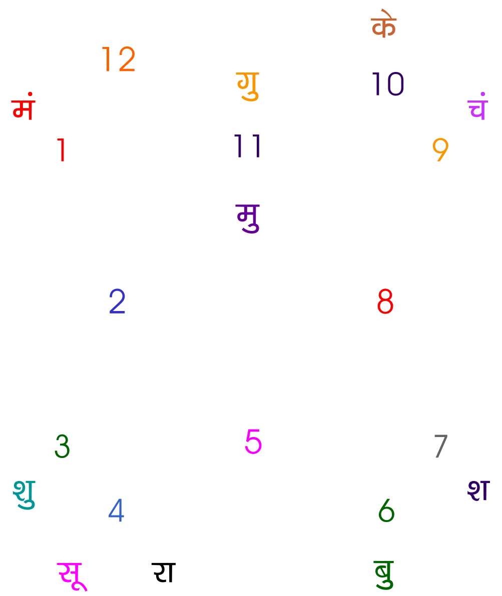

मैत्री सारिणी

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	---	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
चन्द्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	सम	शत्रु	---	मित्र	सम	सम
गुरु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	---	सम	सम
शुक्र	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	---	शत्रु
शनि	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	शत्रु	---

द्वादशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	वृष	मक	कुंभ	मेष	मक	वृश्चि	धनु	धनु
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क
द्रेष्काण	कन्या	सिंह	तुला	मेष	सिंह	वृष	मिथु	कुंभ
चतुर्थांश	वृष	तुला	वृष	मेष	तुला	सिंह	मीन	मिथु
पंचमांश	वृष	मक	कुंभ	मेष	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	मिथु
षष्ठांश	वृश्चि	कुंभ	वृष	मेष	मीन	कुंभ	वृष	सिंह
सप्तमांश	धनु	धनु	मीन	मेष	मक	तुला	मक	मेष
अष्टमांश	कन्या	तुला	तुला	मेष	वृश्चि	कुंभ	कर्क	तुला
नवमांश	कुंभ	कर्क	धनु	मेष	कन्या	कुंभ	मिथु	तुला
दशमांश	कुंभ	मेष	मेष	मेष	मिथु	मीन	कुंभ	कर्क
एकादशांश	मिथु	सिंह	मीन	मीन	तुला	मिथु	कुंभ	मिथु
द्वादशांश	कर्क	तुला	वृष	मेष	धनु	सिंह	मीन	सिंह

द्वादशवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	सम	मित्र	स्व	सम	सम	सम	सम
होरा	स्व	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र
द्रेष्काण	स्व	मित्र	स्व	शत्रु	सम	सम	स्व
चतुर्थांश	सम	मित्र	स्व	सम	मित्र	सम	सम
पंचमांश	सम	मित्र	स्व	शत्रु	सम	शत्रु	सम
षष्ठांश	सम	मित्र	स्व	मित्र	सम	स्व	सम
सप्तमांश	मित्र	शत्रु	स्व	सम	सम	शत्रु	मित्र
अष्टमांश	सम	मित्र	स्व	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु
नवमांश	सम	शत्रु	स्व	स्व	सम	सम	शत्रु
दशमांश	शत्रु	मित्र	स्व	स्व	स्व	शत्रु	मित्र
एकादशांश	स्व	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम
द्वादशांश	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र	सम	सम
शुभ	4	8	10	4	5	2	4
सम	7	1	1	4	7	6	6
अशुभ	1	3	1	4	0	4	2
कुल	शुभ	शुभ	शुभ	सम	शुभ	अशुभ	शुभ

हर्ष बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम बल	5	0	0	0	0	0	0
द्वितीय बल	0	0	5	0	0	0	0
तृतीय बल	0	0	5	5	0	5	5
चतुर्थ बल	5	0	5	0	5	0	0
कुल	10	0	15	5	5	5	5
बल	सामान्य	अतिक्षीण	बली	क्षीण	क्षीण	क्षीण	क्षीण

पंचवर्गीय बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
क्षेत्रीय बल	15.00	22.50	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00
उच्च बल	11.45	10.58	13.07	5.18	4.50	7.95	13.18
हददा बल	7.50	7.50	7.50	3.75	7.50	15.00	11.25
द्रेष्काण	10.00	7.50	10.00	2.50	5.00	5.00	10.00
नवमांश	2.50	1.25	5.00	5.00	2.50	2.50	1.25
कुल	46.45	49.33	65.57	31.43	34.50	45.45	50.68
विंशोपक	11.61	12.33	16.39	7.86	8.62	11.36	12.67
बल	शुभ	शुभ	बली	सामान्य	सामान्य	शुभ	शुभ

वर्षेश निर्णय

स्वामित्व	ग्रह	बल	लग्न पर दृष्टि	वर्षेश
जन्म लग्नाधिपति	शुक्र	11.36	दृष्टि नहीं	
वर्ष लग्नाधिपति	शुक्र	11.36	दृष्टि नहीं	
मुन्था लग्नाधिपति	शुक्र	11.36	दृष्टि नहीं	शनि
दिवापति	शनि	12.67	दृष्टि नहीं	
त्रिराशिपति	शुक्र	11.36	दृष्टि नहीं	

सहम

सहम जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रदर्शित करने वाली विशेष स्थिति या बिन्दु है। ग्रह या भावों के विपरीत सहम जीवन की एक ही घटना से संबंध रखता है। आचार्य नीलकंठ के अनुसार सहम 50 हैं। यदि सहम और इसका स्वामी शुभ हो या शुभदृष्ट हो तो यह सांकेतिक घटना के लिए शुभ फल प्रदान करता है। ताजिक शास्त्र के अनुसार किसी भी घटना की अवधि को इसकी स्थिति, स्वामी तथा उस राशि की स्थिति से ज्ञात किया जाता है जिसमें यह स्थित है। नीचे सहमों की गणना करके उनकी संभावित तिथियां दी गई हैं जो अग्रिम फलादेश में सहायक सिद्ध हो सकेंगी।

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
पुण्य	मिथुन	20:40:41	बुध	28/06/2019
गुरु	मेष	20:25:32	मंगल	20/02/2019
ज्ञान	मेष	20:25:32	मंगल	20/02/2019
यश	वृश्चिक	09:24:46	मंगल	14/10/2019
मित्र	तुला	08:18:18	शुक्र	06/01/2020
माहात्म्य	कर्क	25:52:47	चन्द्र	11/08/2019
आशा	मिथुन	18:24:11	बुध	26/06/2019
समर्थ	धनु	29:44:27	गुरु	17/03/2019
भ्रातृ	मेष	08:40:56	मंगल	11/02/2019
गौरव	धनु	09:24:46	गुरु	22/02/2019
राजा	मेष	03:54:19	मंगल	08/02/2019
पितृ	मेष	03:54:19	मंगल	08/02/2019
मातृ	सिंह	05:10:33	सूर्य	15/09/2019
सुत	कुम्भ	21:54:34	शनि	29/03/2019
जीव	कर्क	02:25:17	चन्द्र	16/07/2019
अम्बु	सिंह	05:10:33	सूर्य	15/09/2019
कर्म	सिंह	07:32:37	सूर्य	18/09/2019
रोग	सिंह	02:55:20	सूर्य	12/09/2019
कामदेव	सिंह	05:10:33	सूर्य	15/09/2019
कलि	धनु	29:44:27	गुरु	17/03/2019
क्षेम	धनु	29:44:27	गुरु	17/03/2019
शास्त्र	मकर	01:29:19	शनि	15/02/2019
बन्धु	मेष	25:43:43	मंगल	23/02/2019
बंधक	मिथुन	15:22:30	बुध	23/06/2019
मृत्यु	वृश्चिक	13:43:58	मंगल	19/10/2019

सहम

सहम	राशि	अंश	स्वा	घटना तिथि
परदेश	कर्क	06:28:20	चन्द्र	21/07/2019
अर्थ	कन्या	07:41:57	बुध	10/10/2019
परदारा	मीन	21:03:14	गुरु	03/05/2019
अन्यकर्म	कर्क	22:19:29	चन्द्र	07/08/2019
वणिक	मिथुन	15:22:30	बुध	23/06/2019
कार्यसिद्धि	वृश्चिक	19:45:43	मंगल	26/10/2019
विवाह	मेष	22:42:02	मंगल	21/02/2019
प्रसूति	मीन	01:43:57	गुरु	19/04/2019
संताप	सिंह	13:43:58	सूर्य	25/09/2019
श्रद्धा	मकर	13:45:33	शनि	28/02/2019
प्रीति	मेष	05:17:58	मंगल	09/02/2019
बल	वृश्चिक	09:24:46	मंगल	14/10/2019
देह	वृश्चिक	09:24:46	मंगल	14/10/2019
जाडय	वृष	07:17:59	शुक्र	05/06/2019
व्यापार	सिंह	07:32:37	सूर्य	18/09/2019
जलपतन	वृष	07:17:59	शुक्र	05/06/2019
शत्रु	कन्या	14:29:36	बुध	18/10/2019
शौर्य	कर्क	25:52:47	चन्द्र	11/08/2019
उपाय	कर्क	02:25:17	चन्द्र	16/07/2019
दरिद्रता	मिथुन	20:40:41	बुध	28/06/2019
गुरुता	सिंह	22:29:48	सूर्य	05/10/2019
जलपथ	वृश्चिक	29:08:36	मंगल	06/11/2019
बंधन	वृश्चिक	04:49:16	मंगल	09/10/2019
कन्या	मीन	05:55:40	गुरु	22/04/2019
अश्व	कर्क	23:04:56	चन्द्र	08/08/2019

वर्ष त्रिपताकी कुंडली

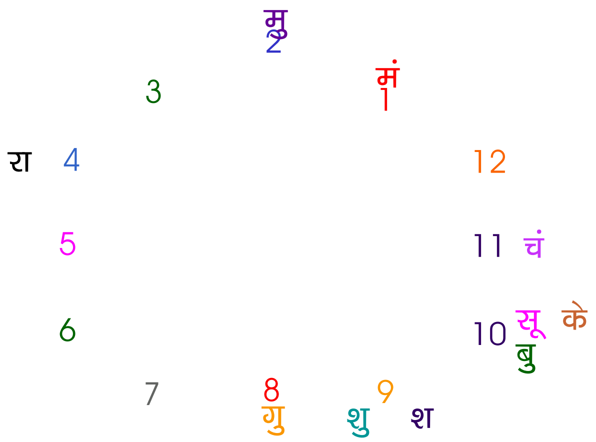

पात्यंश दशा

मंगल		लग्न		चंद्र		शुक्र		शनि	
06/02/2019		**11/02/2019**		**19/04/2019**		**22/05/2019**		**27/05/2019**	
11/02/2019		**19/04/2019**		**22/05/2019**		**27/05/2019**		**09/11/2019**	
	06/02/2019	लग्न	23/02/2019	चंद्र	22/04/2019	शुक्र	22/05/2019	शनि	10/08/2019
लग्न	07/02/2019	चंद्र	01/03/2019	शुक्र	22/04/2019	शनि	25/05/2019	सूर्य	20/08/2019
चंद्र	07/02/2019	शुक्र	02/03/2019	शनि	07/05/2019	सूर्य	25/05/2019	गुरु	29/08/2019
शुक्र	07/02/2019	शनि	01/04/2019	सूर्य	09/05/2019	गुरु	25/05/2019	बुध	20/09/2019
शनि	09/02/2019	सूर्य	05/04/2019	गुरु	11/05/2019	बुध	26/05/2019	मंगल	22/09/2019
सूर्य	10/02/2019	गुरु	09/04/2019	बुध	16/05/2019	मंगल	26/05/2019	लग्न	22/10/2019
गुरु	10/02/2019	बुध	18/04/2019	मंगल	16/05/2019	लग्न	27/05/2019	चंद्र	07/11/2019
बुध	11/02/2019	मंगल	19/04/2019	लग्न	22/05/2019	चंद्र	27/05/2019	शुक्र	09/11/2019

सूर्य		गुरु		बुध		मंगल	
09/11/2019		**30/11/2019**		**19/12/2019**		**06/02/2020**	
30/11/2019		**19/12/2019**		**06/02/2020**		**00/00/0000**	
सूर्य	10/11/2019	गुरु	01/12/2019	बुध	26/12/2019	मंगल	06/02/2020
गुरु	11/11/2019	बुध	04/12/2019	मंगल	26/12/2019		00/00/0000
बुध	14/11/2019	मंगल	04/12/2019	लग्न	04/01/2020		00/00/0000
मंगल	14/11/2019	लग्न	07/12/2019	चंद्र	09/01/2020		00/00/0000
लग्न	18/11/2019	चंद्र	09/12/2019	शुक्र	10/01/2020		00/00/0000
चंद्र	20/11/2019	शुक्र	09/12/2019	शनि	01/02/2020		00/00/0000
शुक्र	20/11/2019	शनि	18/12/2019	सूर्य	04/02/2020		00/00/0000
शनि	30/11/2019	सूर्य	19/12/2019	गुरु	06/02/2020		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
पात्यंश दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

मुद्दा दशा

राहु		गुरु		शनि		बुध		केतु	
06/02/2019		02/04/2019		20/05/2019		17/07/2019		07/09/2019	
02/04/2019		20/05/2019		17/07/2019		07/09/2019		28/09/2019	
राहु	14/02/2019	गुरु	08/04/2019	शनि	30/05/2019	बुध	25/07/2019	केतु	08/09/2019
गुरु	22/02/2019	शनि	16/04/2019	बुध	07/06/2019	केतु	28/07/2019	शुक्र	12/09/2019
शनि	02/03/2019	बुध	23/04/2019	केतु	10/06/2019	शुक्र	05/08/2019	सूर्य	13/09/2019
बुध	10/03/2019	केतु	26/04/2019	शुक्र	20/06/2019	सूर्य	08/08/2019	चंद्र	15/09/2019
केतु	13/03/2019	शुक्र	04/05/2019	सूर्य	23/06/2019	चंद्र	12/08/2019	मंगल	16/09/2019
शुक्र	22/03/2019	सूर्य	06/05/2019	चंद्र	28/06/2019	मंगल	15/08/2019	राहु	19/09/2019
सूर्य	25/03/2019	चंद्र	10/05/2019	मंगल	01/07/2019	राहु	23/08/2019	गुरु	22/09/2019
चंद्र	30/03/2019	मंगल	13/05/2019	राहु	10/07/2019	गुरु	30/08/2019	शनि	25/09/2019
मंगल	02/04/2019	राहु	20/05/2019	गुरु	17/07/2019	शनि	07/09/2019	बुध	28/09/2019

शुक्र		सूर्य		चंद्र		मंगल		राहु	
28/09/2019		28/11/2019		17/12/2019		16/01/2020		06/02/2020	
28/11/2019		17/12/2019		16/01/2020		06/02/2020		00/00/0000	
शुक्र	09/10/2019	सूर्य	29/11/2019	चंद्र	19/12/2019	मंगल	17/01/2020	राहु	06/02/2020
सूर्य	12/10/2019	चंद्र	01/12/2019	मंगल	21/12/2019	राहु	20/01/2020		00/00/0000
चंद्र	17/10/2019	मंगल	02/12/2019	राहु	25/12/2019	गुरु	23/01/2020		00/00/0000
मंगल	20/10/2019	राहु	04/12/2019	गुरु	29/12/2019	शनि	27/01/2020		00/00/0000
राहु	29/10/2019	गुरु	07/12/2019	शनि	03/01/2020	बुध	30/01/2020		00/00/0000
गुरु	06/11/2019	शनि	10/12/2019	बुध	08/01/2020	केतु	31/01/2020		00/00/0000
शनि	16/11/2019	बुध	12/12/2019	केतु	09/01/2020	शुक्र	03/02/2020		00/00/0000
बुध	25/11/2019	केतु	13/12/2019	शुक्र	14/01/2020	सूर्य	04/02/2020		00/00/0000
केतु	28/11/2019	शुक्र	17/12/2019	सूर्य	16/01/2020	चंद्र	06/02/2020		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
मुद्दा दशा पूरे 1 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - राहु - शुक्र	
06/02/2019 12:12	
28/03/2019 18:31	
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	00/00/0000 00:00
	06/02/2019 12:12
शनि	23/02/2019 21:35
बुध	19/03/2019 04:25
केतु	28/03/2019 18:31

राहु - राहु - सूर्य	
28/03/2019 18:31	
17/05/2019 01:56	
सूर्य	31/03/2019 05:41
चंद्र	04/04/2019 08:19
मंगल	07/04/2019 05:20
राहु	14/04/2019 14:51
गुरु	21/04/2019 04:38
शनि	29/04/2019 00:01
बुध	05/05/2019 23:40
केतु	08/05/2019 20:42
शुक्र	17/05/2019 01:56

राहु - राहु - चंद्र	
17/05/2019 01:56	
07/08/2019 06:17	
चंद्र	23/05/2019 22:18
मंगल	28/05/2019 17:21
राहु	10/06/2019 01:12
गुरु	21/06/2019 00:11
शनि	04/07/2019 00:28
बुध	15/07/2019 15:53
केतु	20/07/2019 10:56
शुक्र	03/08/2019 03:40
सूर्य	07/08/2019 06:17

राहु - राहु - मंगल	
07/08/2019 06:17	
03/10/2019 18:56	
मंगल	10/08/2019 14:49
राहु	19/08/2019 05:55
गुरु	26/08/2019 22:00
शनि	05/09/2019 00:36
बुध	13/09/2019 04:12
केतु	16/09/2019 12:44
शुक्र	26/09/2019 02:50
सूर्य	28/09/2019 23:52
चंद्र	03/10/2019 18:56

राहु - गुरु - गुरु	
03/10/2019 18:56	
28/01/2020 16:03	
गुरु	19/10/2019 08:57
शनि	06/11/2019 21:05
बुध	23/11/2019 10:29
केतु	30/11/2019 06:07
शुक्र	19/12/2019 17:38
सूर्य	25/12/2019 13:53
चंद्र	04/01/2020 07:39
मंगल	11/01/2020 03:17
राहु	28/01/2020 16:03

राहु - गुरु - शनि	
28/01/2020 16:03	
15/06/2020 11:08	
शनि	19/02/2020 15:28
बुध	10/03/2020 07:22
केतु	18/03/2020 09:41
शुक्र	10/04/2020 12:52
सूर्य	17/04/2020 11:25
चंद्र	29/04/2020 01:00
मंगल	07/05/2020 03:19
राहु	27/05/2020 22:59
गुरु	15/06/2020 11:08

राहु - गुरु - बुध	
15/06/2020 11:08	
17/10/2020 15:34	
बुध	03/07/2020 01:21
केतु	10/07/2020 07:13
शुक्र	30/07/2020 23:57
सूर्य	06/08/2020 04:59
चंद्र	16/08/2020 13:21
मंगल	23/08/2020 19:12
राहु	11/09/2020 10:16
गुरु	27/09/2020 23:40
शनि	17/10/2020 15:34

राहु - गुरु - केतु	
17/10/2020 15:34	
07/12/2020 18:48	
केतु	20/10/2020 15:09
शुक्र	29/10/2020 03:42
सूर्य	31/10/2020 17:03
चंद्र	04/11/2020 23:20
मंगल	07/11/2020 22:55
राहु	15/11/2020 15:00
गुरु	22/11/2020 10:38
शनि	30/11/2020 12:57
बुध	07/12/2020 18:48

राहु - गुरु - शुक्र	
07/12/2020 18:48	
02/05/2021 21:12	
शुक्र	01/01/2021 03:12
सूर्य	08/01/2021 10:32
चंद्र	20/01/2021 14:44
मंगल	29/01/2021 03:16
राहु	20/02/2021 01:14
गुरु	11/03/2021 12:45
शनि	03/04/2021 15:56
बुध	24/04/2021 08:40
केतु	02/05/2021 21:12

राहु - गुरु - सूर्य	
02/05/2021 21:12	
15/06/2021 17:08	
सूर्य	05/05/2021 01:48
चंद्र	08/05/2021 17:28
मंगल	11/05/2021 06:49
राहु	17/05/2021 20:37
गुरु	23/05/2021 16:52
शनि	30/05/2021 15:25
बुध	05/06/2021 20:27
केतु	08/06/2021 09:48
शुक्र	15/06/2021 17:08

राहु - गुरु - चंद्र	
15/06/2021 17:08	
27/08/2021 18:20	
चंद्र	21/06/2021 19:14
मंगल	26/06/2021 01:30
राहु	07/07/2021 00:29
गुरु	16/07/2021 18:14
शनि	28/07/2021 07:50
बुध	07/08/2021 16:12
केतु	11/08/2021 22:28
शुक्र	24/08/2021 02:40
सूर्य	27/08/2021 18:20

राहु - गुरु - मंगल	
27/08/2021 18:20	
17/10/2021 21:34	
मंगल	30/08/2021 17:55
राहु	07/09/2021 10:00
गुरु	14/09/2021 05:38
शनि	22/09/2021 07:57
बुध	29/09/2021 13:48
केतु	02/10/2021 13:24
शुक्र	11/10/2021 01:56
सूर्य	13/10/2021 15:18
चंद्र	17/10/2021 21:34

वर्ष योग

इक्कबाल योग

यदि वर्ष कुंडली में सभी ग्रह केन्द्र (1, 4, 7, 10) और पणफर (2, 5, 8, 11) स्थानों में हो तो इक्कबाल नामक योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इन्दुवार योग

वर्ष कुंडली में यदि सूर्यादि सभी ग्रह आपीक्लिम (3, 6, 9, 12) स्थानों में हो तो इन्दुवार योग होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

इत्थशाल योग

यदि लग्नेश और अन्य ग्रह (कार्येश) की परस्पर दृष्टि हो तथा दोनों ग्रह दीप्तांशों के अन्तर्गत हों तो इत्थशाल योग होता है। यह तीन प्रकार का होता है। वर्तमान, सम्पूर्ण और भविष्यत। सम्पूर्ण इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगति ग्रह से 1 कला के अंतर पर हो। वर्तमान इत्थशाल में शीघ्रगति वाले ग्रह के अंश कम एवं मन्दगति ग्रह के अंश अधिक हों तथा दोनों की परस्पर दृष्टि हो। भविष्यत इत्थशाल तब होता है जबकि शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्तिम अंश में हो तथा दूसरी राशि पर मन्द गति ग्रह हो परन्तु मध्यान्तर दीप्तांशो के अन्तर्गत हों।

इस वर्ष आपकी भविष्यत् शीघ्र गति ग्रह चंद्र (कुंभ 08:10:53), एवं मन्दगति ग्रह शुक्र (धनु 08:33:27), के मध्य है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष आप बन्धुवर्ग से वांछित लाभ एवं सहयोग अर्जित करेगें तथा आपसी संबन्धों मे मधुरता का भाव होगा। इस समय दूर समीप की लाभदायक यात्राएं भी संपन्न होंगी। साथ ही आप स्वपराक्रम एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन आदि में वृद्धि होगी तथा यदि प्रकाशन आदि के इच्छुक है तो इस वर्ष में आपको वांछित सफलता मिलेगी।

इसराफ योग

यदि शीघ्रगामी ग्रह मन्दगामी ग्रह से आगे हो तो इसराफ योग होता है यह इत्थशाल का विपरीत होता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

नक्त योग

यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि न हो और उन दोनों के मध्य दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कर्मेश को देखता हो तो एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरों को देता है। इस योग में किसी तीसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य बनता है।

नक्त योग शुक्र तथा मंगल के मध्य है क्योंकि चंद्र शीघ्र गति ग्रह है तथा दोनों को देख रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस समय स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा अविवाहितों का विवाह होगा। साथ ही स्त्री के द्वारा भाग्योन्नति भी हो सकती है। धन वैभव अर्जित करने के लिए भी वर्ष उत्तम होगा तथा स्ववाक्चातुर्य से अपने प्रभाव में वृद्धि करेगें। उच्चाधिकारीवर्ग से आपको इस समय लाभ होगा तथा जो लोग राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय है वे राजनैतिक लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे।

यमया योग

यदि लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो और कोई मन्दगति वाला ग्रह दीप्ताशों के अन्तर्गत हो तथा दोनों को देखता हो तो वह शीघ्रगति ग्रह मन्दगति वाले ग्रह को दे देता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

मणऊ योग

यदि लग्नेश एवं कर्मेश में इत्थशाल हो किन्तु कोई पाप ग्रह दोनों को या एक को भी शत्रु दृष्टि से देखता हो तथा दीप्तांशों के अन्तर्गत हो तो मणऊ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कम्बूल योग

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो तथा इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

गैरी कम्बूल योग

लग्नेश एवं कार्येश दोनों का इत्शाल हो परंतु चन्द्रमा की इन पर दृष्टि न हो किन्तु वही चन्द्रमा बलवान होकर अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य बलवान ग्रह से इत्थशाल करे तो गैरी कम्बूल योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

खल्लासर योग

लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा किसी से इत्थशाल न करता हो तो खल्लासर नामक योग बनता है।

खल्लासर योग शुक्र और चंद्र के मध्य बन रहा है।

इस योग के शुभ प्रभाव से इस समय आपको सन्तति पक्ष से पूर्ण सुख की प्राप्ति होगी तथा अपने क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। सन्तति की अपेक्षा करने वालों को इस योग के शुभ प्रभाव से इस वर्ष में पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। राजनीति में सक्रिय लोग इस समय राजनैतिक लाभ अजित करेगें तथा अन्य जनों को सरकार या उत्तराधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य की वृद्धि होगी तथा परिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी बनी रहेगी। साथ ही अपने वाक्चातुर्य से सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए वर्ष वांछित सफलता प्रदान करेगा।

रदद योग

यदि लग्नेश और कार्येश में कोई ग्रह अस्त नीच शत्रु क्षेत्री अथवा 6, 8, 12 में हो और परस्पर इत्थशाली हो, कूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो रदद नामक योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

दुफालिकुत्थ योग

लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो (1) इन दोनों में से मन्दगति वाला ग्रह अपनी उच्च राशि /स्वराशि /नवांश / द्रेष्काण आदि में बलवान हो तथा (2) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च स्वराशि में न हो तथा निर्बल हो तो दुफालिकुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

दुत्थकुत्थीर योग

यदि लग्नेश और कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करें और उनमें से एक किसी ग्रह से जो अपने उच्च या स्वगृह में बैठा हो, बलवान हो इत्थशाल करे तो दुत्थकुत्थीर योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

तम्बीर योग

इस योग में लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं होती किन्तु इन दोनों में से कोई एक ग्रह राशि के अन्त में होता है एवं आगामी राशि में स्वगृही ग्रह से दीप्तांशों के अन्तर्गत इत्थशाल करता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

कुत्थ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश कार्येश बलवान हों तो कुत्थ योग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

दुरूफ योग

यदि वर्ष कुंडली में लग्नेश एवं कार्येश निर्बल हो तो दुरूफयोग बनता है।

आपकी वर्ष कुंडली में इस वर्ष इस योग की सृष्टि नहीं हो रही है।

अथ वर्षेशफलम्

वर्ष कुण्डली में जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, त्रिराशिपति एवं दिवारात्रिपति में से जो सबसे बलवान हो तथा लग्न पर दृष्टि रखता हो, वर्षेश कहलाता है। इसका अपना विशिष्ट महत्व होता है। यह अपने शुभाशुभत्व से वर्ष के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रभावित करता है क्योंकि यह वर्ष पंचाधिकारयों में बलवान तथा लग्न पर प्रभाव रखता है अतः इसकी स्थिति अन्य समस्त ग्रहों से प्रबल हो जाती है तथा अधिकाँश शुभाशुभ फल इसी के प्रभाव से प्राप्त होते हैं। पूर्णबली होने से सम्पूर्ण वर्ष में शुभ फल प्राप्त होते हैं, मध्यबली होने से शुभाशुभ मिश्रित फल तथा हीन बली होने से अनिष्ट फल अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। यथाः-

वर्षेश्वरो भवति यः स दशाधिपेऽब्दे।
ज्ञेयोऽखिलेऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम्।।

वीर्योन्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहुः।
हीनेत्वानिष्टफलता समता समत्वे।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। साथ ही इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मानसिक रूप से भी आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में प्रसन्नता की आप अनुभूति करेंगे। इस समय समाज में आप एक गुणवान पुरूष के रूप में समझे जाएंगे तथा सभी लोग आपको वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा का भाव रहेगा तथा यत्न पूर्वक धार्मिक कार्य कलापों का अनुपालन करते रहेंगे। इस समय आप कुएं या बगीचे आदि का निर्माण भी कर सकते है। समस्त भौतिक सुख संसाधनों की इस समय आपको प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इस वर्ष में आपको भूमि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा सुन्दर आवास स्थान के प्राप्ति के भी योग बनेंगे।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति की दृष्टि से वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय व्यापार में उन्नति तथा विस्तार होगा तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी तथा सभी लोग आपके पराक्रम तथा प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी । इस समय विदेशियों से अथवा अन्य भौतिक कार्यो से आप विशिष्ट धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सेवक वर्ग का भी पूर्ण रूप से सुख प्राप्त होगा अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा।

अथ मुंथाफलम्

जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुंथा होती है और प्रतिवर्ष एक एक राशि बढ़ती है। अतः गत वर्ष संख्या में जन्म लग्न जोडे से तथा 12 से भाग देने पर शेषांक मुंथा की वर्तमान राशि होती है। मुंथा प्रतिमाह ढाई अंश तथा प्रतिदिन पाँच कला बढ़ती जाती है। यदि मुंथा शुभ ग्रह व अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह या अपने स्वामी के साथ इत्यशाल करे तो शुभ फल की वृद्धि कर अशुभ फल का नाश करती है। यथाः-

शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्ययुक्तेन्थिहास्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना।
शुभं भावजं पोषयेन्नाशुभं साऽन्यथाभाव ऊह्यो विभृश्य।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में भी प्रसन्ता का भाव विद्य मान रहेगा। कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा नौकरी या राजनीति में आपको किसी महत्वपूर्ण पद के प्राप्ति की संभावना बनेगी। व्यापारिक क्षेत्र में भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में विस्तार करने तथा अन्य नवीन कार्यों को प्रारम्भ करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष में आपके शत्रु निर्बल रहेंगे अतः चुनाव मुकद्दमे,व्यापारिक क्षेत्र या प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित होगी।

इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों अथवा सरकारी उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित मात्रा में लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही समाज में आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्यो में भी वृद्धि होगी। साथ ही अन्य सांसारिक कार्यो में भी सफलता प्राप्त होगी एवं प्रसन्नता के समाचार भी मिलेंगे ।इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आपको संतति प्राप्ति की भी संभावना रहेगी या उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।साथ ही वाहन संबधी सुख की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः आप अपने अधिकाशं समय को आनन्द पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

अथ मुंथेशफलम्

वर्ष कुण्डली में मुंथा जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी मुंथेश कहलाता है। यह वर्ष के पंचाधिकारियों में एक प्रमुख ग्रह होता है। अतः शुभभावस्थ मुंथेश के प्रभाव से जातक विशिष्ट परिस्थितियों में उत्तम लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहता है। यदि वर्ष प्रवेश के समय मुंथेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश तथा चतुर्थ भाव में स्थित हो या अस्त, वक्री एवं पापग्रहों से युक्त हो अथवा क्रूर ग्रहों के स्थान से चतुर्थ या सप्तम स्थान में स्थित हो तो शुभ फलदायक न होकर अशुभफल, धनहानि या शरीर संबधी कष्ट प्रदान करता है। यथाः-

षष्ठेऽष्टमेन्त्ये भुवि वेन्थिहेशोऽस्तङ्गोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टियुक्तः।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम्।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा तथा यदा कदा इससे आपको कष्ट तथा परेशानी की अनुभूति होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मानसिक स्थिति भी आपकी अच्छी रहेगी एवं शान्तिपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। शत्रुपक्ष से इस समय आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा समस्याओं का समाधान तथा शत्रुओं का सामना करने में आप समर्थ रहेंगे तथा सफलता भी आपको प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से वर्ष सामान्य रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा परन्तु सामान्य स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। इस समय आपके कुछ रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा मानसिक संकल्पों में भी सफलता प्राप्त होगी।

इस वर्ष में व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति सामान्य रहेगी तथा यदा कदा इसमें समस्याएं भी उत्पन्न होंगी अतः ऐसे समय में अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या राजनीति में भी आप की पदोन्नति हो सकती है परन्तु इसमें विलम्ब हो सकता है। व्यापार के क्षेत्र में भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलताएं भी प्राप्त होंगी। इसके अतिरिक्त राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों तथा सरकार के उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति होगी। अतः सफलताएं अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

अथ वर्षलग्नेशफलम्

वर्ष लग्न के स्वामी को वर्षलग्नेश कहते हैं। वर्ष के पंचाधिकारियों में इसकी विशेष महत्ता है। अतः वर्ष की अनेक शुभाशुभ घटनाओं में लग्नेश का प्रभाव रहता है। साथ ही जातक के स्वास्थ्य, कार्य एवं भाग्य को वर्ष में यह विशेष रूप से प्रभावित करता है। यदि वर्ष लग्नेश पंचवर्गी बल से पूर्ण बलवान हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों या शुभ ग्रहों से युति हो और स्वयं केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो वह सम्पूर्ण अरिष्टों को नष्ट करके सुख और धन देता है। यथाः-

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षित युतोऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टम् नाशयेत्सुखवित्तदः।।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आप शारीरिक रूप से कष्ट तथा परेशानी की अनुभूति करेंगे। मानसिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में व्याकुलता तथा अशान्ति का भाव रहेगा । इस समय आपके विगत रुके हुए कार्य तथा मानसिक संकल्प अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता के लिए आपको अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी इस समय मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य कलह एवं मतभेद रहेंगे। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता कम ही रहेगी। अतः इस वर्ष में दाम्पत्य जीवन का सुख मध्यम रहेगा। इसके साथ ही यात्राओं से आपको विशेष लाभ नहीं होगा तथा इनमें व्यय ही अधिक होगा अतः लम्बी दूरी की यात्राओं की इस समय यत्नपूर्वक उपेक्षा करें। शत्रु वर्ग से भी इस समय परेशानी रहेगी तथा मित्रों एवं संबंधियों से विशेष सुख एवं सहयोग नहीं मिलेगा।

व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए वर्ष मध्यम रहेगा तथा अत्यंत ही परिश्रम एवं संघर्ष से आपको इसमें सफलता प्राप्त होगी। साथ ही नौकरी या राजनीति में भी पदोन्नति में व्यवधान तथा विलम्ब होगा तथा विरोधी भी प्रबल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से आपको कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा तथा समाजिक मान प्रतिष्ठा एवं यश भी मध्यम रहेगा । आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य रहेगी तथा यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको परेशानी हो सकती है। अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए तभी शुभ फलों की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम मास

06/02/2019 12:12:13 से 08/03/2019 06:48:23 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृष	कृतिका	05:33:07
सूर्य		मकर	श्रवण	23:03:19
चन्द्र		कुम्भ	शतभिषा	08:10:53
मंगल		मेष	अश्विनी	00:21:00
बुध		मकर	धनिष्ठा	28:21:30
गुरु		वृश्चिक	ज्येष्ठा	24:32:21
शुक्र		धनु	मूल	08:33:27
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	21:24:31
राहु	व	कर्क	पुनर्वसु	02:36:44
केतु	व	मकर	उत्तराषाढ़ा	02:36:44
मुंथा		वृष	कृतिका	05:33:07

मासाधिपति

मासाधिपति : शनि

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रूधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

द्वितीय मास
08/03/2019 06:48:23 से 07/04/2019 12:24:15 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कुम्भ	पू०भाद्रपद	29:28:52
सूर्य		कुम्भ	पू०भाद्रपद	23:03:19
चन्द्र		मीन	उ०भाद्रपद	08:19:28
मंगल		मेष	भरणी	20:25:12
बुध	व	मीन	उ०भाद्रपद	05:07:50
गुरु		वृश्चिक	ज्येष्ठा	28:30:43
शुक्र		मकर	श्रवण	13:25:26
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	24:12:11
राहु	व	कर्क	पुनर्वसु	01:23:04
केतु	व	मकर	उत्तराषाढ़ा	01:23:04
मुंथा		वृष	कृतिका	08:03:07

मासाधिपति

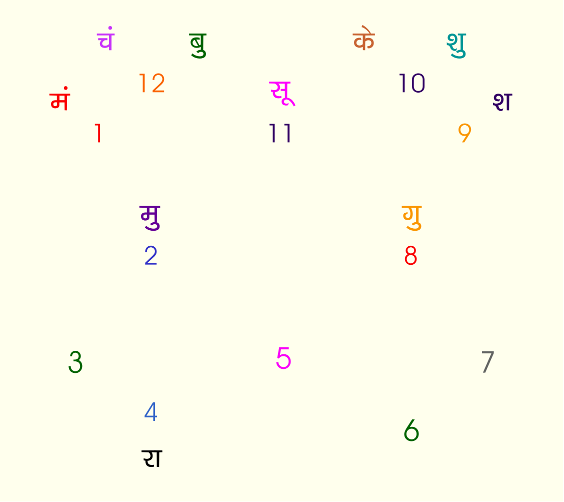

मासाधिपति : शनि

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

तृतीय मास
07/04/2019 12:24:15 से 08/05/2019 06:30:04 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कर्क	पुष्य	03:43:15
सूर्य		मीन	रेवती	23:03:19
चन्द्र		मेष	भरणी	15:16:45
मंगल		वृष	रोहिणी	10:31:27
बुध		कुम्भ	पू०भाद्रपद	25:54:18
गुरु		धनु	मूल	00:12:38
शुक्र		कुम्भ	शतभिषा	19:41:46
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	25:58:34
राहु	व	मिथुन	पुनर्वसु	28:22:57
केतु	व	धनु	उत्तराषाढ़ा	28:22:57
मुंथा		वृष	रोहिणी	10:33:07

मासाधिपति : चन्द्र

मासाधिपति

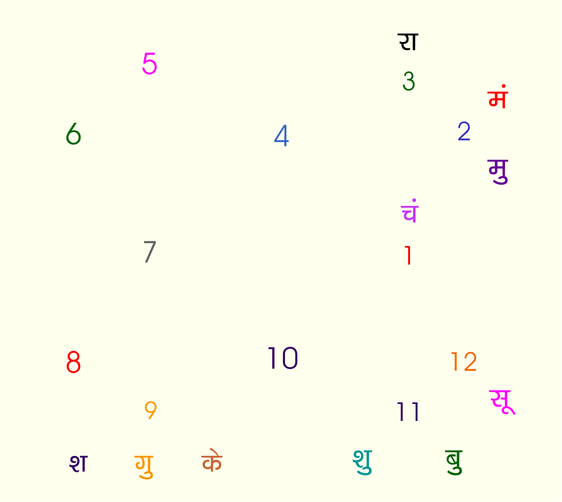

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

चतुर्थ मास
08/05/2019 06:30:04 से 08/06/2019 11:14:25 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		वृष	कृतिका	09:45:56
सूर्य		मेष	भरणी	23:03:19
चन्द्र		मिथुन	मृगशिरा	01:16:25
मंगल		मिथुन	मृगशिरा	00:38:19
बुध		मेष	अश्विनी	08:14:45
गुरु	व	वृश्चिक	ज्येष्ठा	29:05:31
शुक्र		मीन	रेवती	26:56:07
शनि	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	26:20:39
राहु	व	मिथुन	पुनर्वसु	25:15:51
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	25:15:51
मुंथा		वृष	रोहिणी	13:03:07

मासाधिपति : शुक्र

मासाधिपति

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पंचम् मास
08/06/2019 11:14:25 से 09/07/2019 21:43:37 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	मघा	11:34:25
सूर्य		वृष	रोहिणी	23:03:19
चन्द्र		कर्क	आश्लेषा	26:21:45
मंगल		मिथुन	पुनर्वसु	20:44:10
बुध		मिथुन	आर्द्रा	11:58:03
गुरु	व	वृश्चिक	ज्येष्ठा	25:39:44
शुक्र		वृष	कृतिका	04:52:02
शनि	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	25:13:23
राहु		मिथुन	पुनर्वसु	23:47:27
केतु		धनु	पूर्वाषाढ़ा	23:47:27
मुंथा		वृष	रोहिणी	15:33:07

मासाधिपति

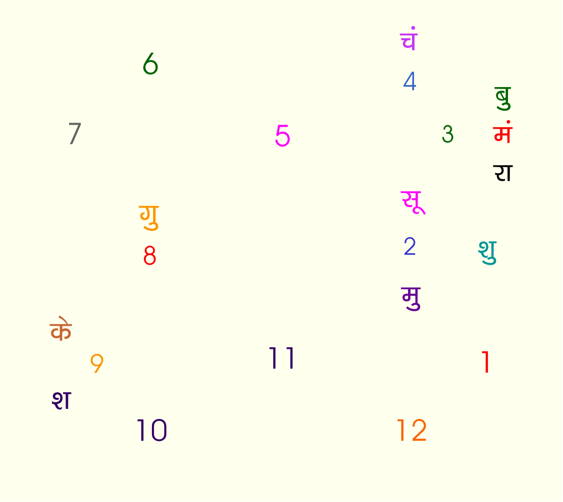

मासाधिपति : शुक्र

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगे तथा ये लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे।आपके कई विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा मित्रों एवं बन्धुओं के मध्य आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस समय सिद्ध होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस समय आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे।आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में संपूर्ण मास धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

षष्ठ मास
09/07/2019 21:43:37 से 10/08/2019 07:21:00 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कुम्भ	शतभिषा	10:00:28
सूर्य		मिथुन	पुनर्वसु	23:03:19
चन्द्र		कन्या	चित्रा	25:56:08
मंगल		कर्क	पुष्य	10:46:25
बुध	व	कर्क	पुष्य	10:13:31
गुरु	व	वृश्चिक	ज्येष्ठा	21:59:20
शुक्र		मिथुन	आर्द्रा	13:16:17
शनि	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	23:05:36
राहु	व	मिथुन	पुनर्वसु	23:30:35
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	23:30:35
मुंथा		वृष	रोहिणी	18:03:07

मासाधिपति

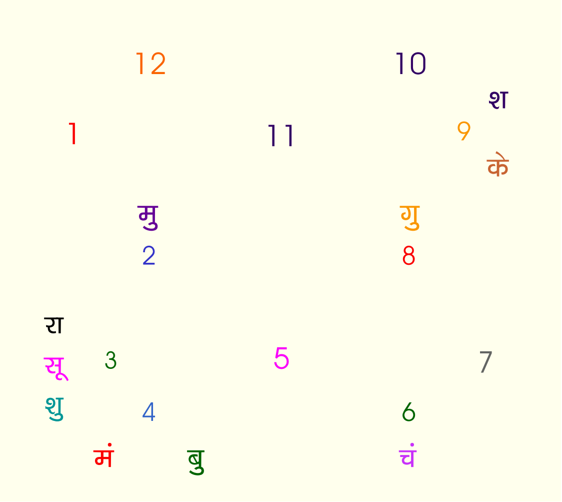

मासाधिपति : शुक्र

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

सप्तम् मास

10/08/2019 07:21:00 से 10/09/2019 09:44:29 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		सिंह	पू०फाल्गुनी	14:44:33
सूर्य		कर्क	आश्लेषा	23:03:19
चन्द्र		वृश्चिक	ज्येष्ठा	21:40:56
मंगल		सिंह	मघा	00:42:09
बुध		कर्क	पुष्य	04:03:27
गुरु	व	वृश्चिक	ज्येष्ठा	20:22:55
शुक्र		कर्क	आश्लेषा	21:54:07
शनि	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	20:57:45
राहु		मिथुन	पुनर्वसु	23:15:30
केतु		धनु	पूर्वाषाढ़ा	23:15:30
मुंथा		वृष	रोहिणी	20:33:07

मासाधिपति

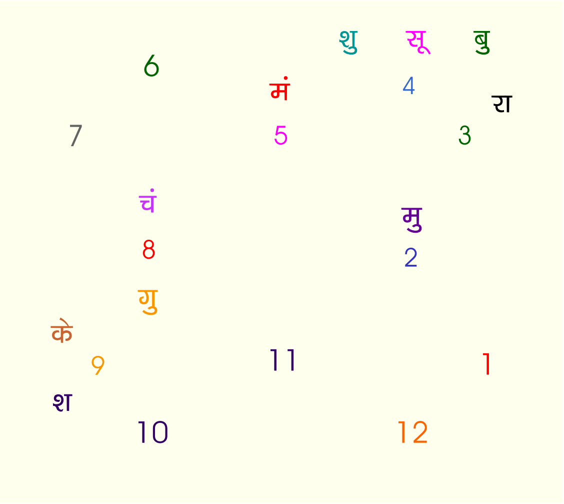

मासाधिपति : गुरु

इस महीने में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी।बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे। जिससे मानसिक रूप से प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप इनकी पूजा एवं सेवा करते रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश फैलेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभयोग बनते रहेंगे। इस मास में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं को पूर्ण करने में भी इस समय आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ तथा सुखार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगे।अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा भाग्यशाली सिद्ध होगा।

अष्टम् मास
10/09/2019 09:44:29 से 11/10/2019 00:40:04 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		तुला	स्वाति	13:53:05
सूर्य		सिंह	पू०फाल्गुनी	23:03:19
चन्द्र		मकर	उत्तराषाढ़ा	09:17:48
मंगल		सिंह	पू०फाल्गुनी	20:29:21
बुध		सिंह	उ०फाल्गुनी	28:33:09
गुरु		वृश्चिक	ज्येष्ठा	21:41:49
शुक्र		कन्या	उ०फाल्गुनी	00:25:00
शनि	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	19:50:11
राहु	व	मिथुन	पुनर्वसु	21:49:03
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	21:49:03
मुंथा		वृष	रोहिणी	23:03:07

मासाधिपति

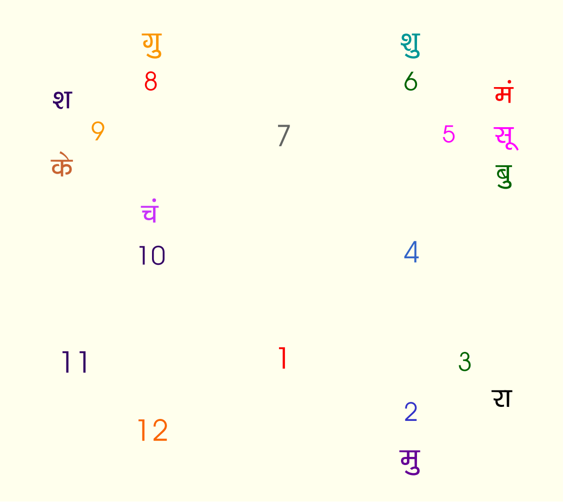

मासाधिपति : सूर्य

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

नवम् मास

11/10/2019 00:40:04 से 10/11/2019 03:08:15 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कर्क	पुष्य	10:24:44
सूर्य		कन्या	हस्त	23:03:19
चन्द्र		कुम्भ	शतभिषा	19:13:43
मंगल		कन्या	हस्त	10:08:07
बुध		तुला	स्वाति	15:59:30
गुरु		वृश्चिक	ज्येष्ठा	25:30:05
शुक्र		तुला	स्वाति	08:27:53
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	20:11:38
राहु	व	मिथुन	आर्द्रा	18:43:21
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	18:43:21
मुंथा		वृष	मृगशिरा	25:33:07

मासाधिपति : मंगल

मासाधिपति

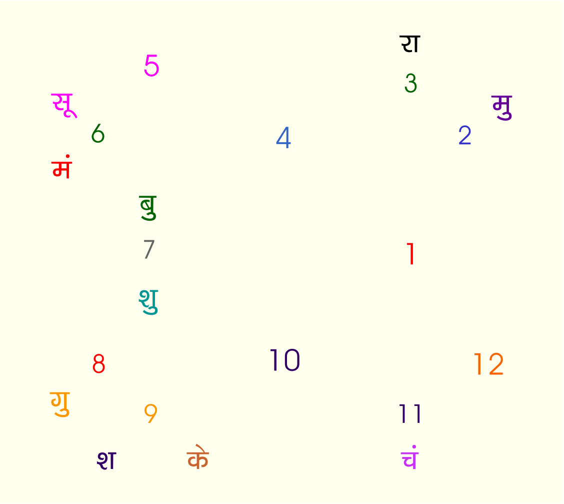

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रुप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रुके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रुचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

दशम् मास
10/11/2019 03:08:15 से 09/12/2019 19:28:14 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		कन्या	उ०फाल्गुनी	09:09:08
सूर्य		तुला	विशाखा	23:03:19
चन्द्र		मीन	रेवती	22:48:56
मंगल		कन्या	चित्रा	29:41:35
बुध	व	तुला	विशाखा	27:05:50
गुरु		धनु	मूल	00:58:56
शुक्र		वृश्चिक	अनुराधा	15:52:17
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	21:57:15
राहु	व	मिथुन	आर्द्रा	15:41:56
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	15:41:56
मुंथा		वृष	मृगशिरा	28:03:07

मासाधिपति

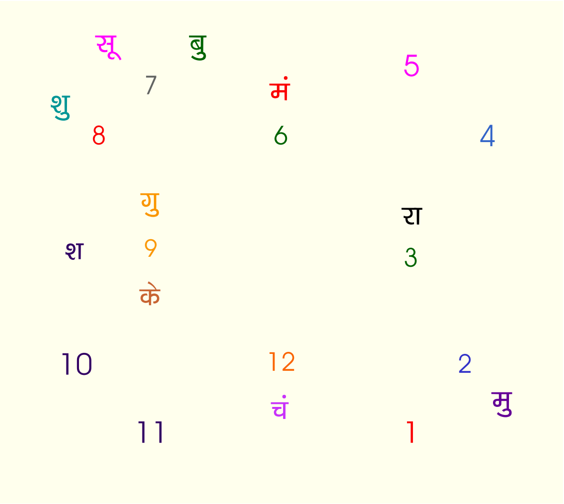

मासाधिपति : शुक्र

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

एकादश मास

09/12/2019 19:28:14 से 08/01/2020 06:30:44 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		मिथुन	पुनर्वसु	23:59:26
सूर्य		वृश्चिक	ज्येष्ठा	23:03:19
चन्द्र		मेष	भरणी	21:38:53
मंगल		तुला	स्वाति	19:15:55
बुध		वृश्चिक	अनुराधा	06:07:35
गुरु		धनु	मूल	07:24:00
शुक्र		धनु	पूर्वाषाढ़ा	22:39:56
शनि		धनु	पूर्वाषाढ़ा	24:44:25
राहु	व	मिथुन	आर्द्रा	14:23:10
केतु	व	धनु	पूर्वाषाढ़ा	14:23:10
मुंथा		मिथुन	मृगशिरा	00:33:07

मासाधिपति : मंगल

मासाधिपति

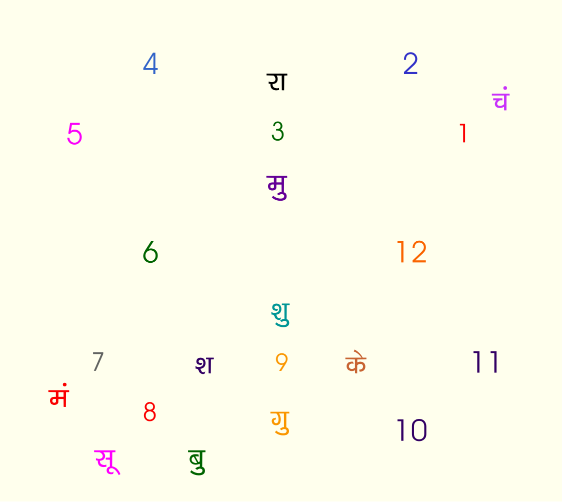

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

द्वादश मास
08/01/2020 06:30:44 से 06/02/2020 18:22:02 तक

ग्रह	व	राशि	नक्षत्र	अंश
लग्न		धनु	पूर्वाषाढ़ा	15:21:25
सूर्य		धनु	पूर्वाषाढ़ा	23:03:19
चन्द्र		वृष	रोहिणी	18:11:54
मंगल		वृश्चिक	अनुराधा	08:59:45
बुध		धनु	पूर्वाषाढ़ा	21:28:50
गुरु		धनु	पूर्वाषाढ़ा	14:09:28
शुक्र		मकर	धनिष्ठा	28:53:21
शनि		धनु	उत्तराषाढ़ा	28:05:29
राहु		मिथुन	आर्द्रा	14:17:48
केतु		धनु	पूर्वाषाढ़ा	14:17:48
मुंथा		मिथुन	मृगशिरा	03:03:07

मासाधिपति

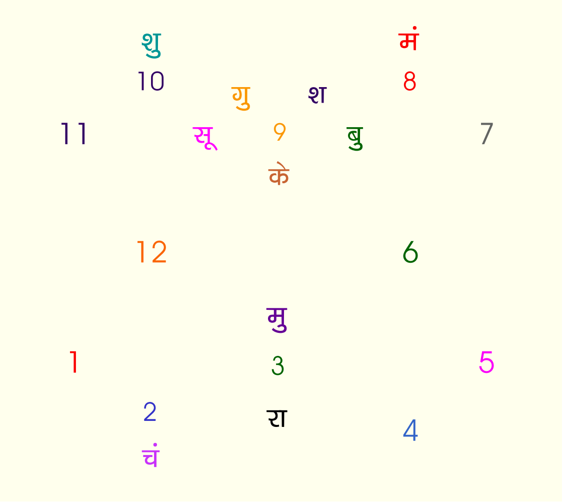

मासाधिपति : गुरु

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु पक्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।